भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ-ग्रन्थागार

"णाणं पयासयं"

कृपया—

(१) मैले हाथोंसे पुस्तकको स्पर्श न कीजिये। जिल्दपर काग़ज़ चढ़ा लीजिये।

(२) पन्ने सम्हाल कर उलटिये। थूकका प्रयोग न कीजिये।

(३) निशानीके लिये पन्ने न मोड़िये, न कोई मोटी चीज़ रखिये। काग़ज़का टुकड़ा काफ़ी है।

(४) हाशियोंपर निशान न बनाइये, न कुछ लिखिये।

(५) खुली पुस्तक उलटकर न रखिये, न दोहरी करके पढ़िये।

(६) पुस्तकको समयपर अवश्य लौटा दीजिये।

"पुस्तकें ज्ञानजननी हैं, इनकी विनय कीजिये"

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ-ग्रन्थागार

"णाणं पयासयं"

कृपया—

(१) मैले हाथोंसे पुस्तकको स्पर्श न कीजिये। जिल्दपर काग़ज़ चढ़ा लीजिये।

(२) पन्ने सम्हाल कर उलटिये। थूकका प्रयोग न कीजिये।

(३) निशानीके लिये पन्ने न मोड़िये, न कोई मोटी चीज़ रखिये। काग़ज़का टुकड़ा काफ़ी है।

(४) हाशियोंपर निशान न बनाइये, न कुछ लिखिये।

(५) खुली पुस्तक उलटकर न रखिये, न दोहरी करके पढ़िये।

(६) पुस्तकको समयपर अवश्य लौटा दीजिये।

"पुस्तकें ज्ञानजननी हैं, इनकी विनय कीजिये"



श्री १०८ आचार्य श्री शान्तिसागरजी (छाणी)
दि० जैन ग्रन्थमाला-ईडर [द्वितीय पुष्प]

दि० जैनव्रतोद्यापनसंग्रह

(प्रथम खण्ड)

हस्तलिखित ग्रंथो ऊपरथी संशोधक तथा संपादक-

दोशी फूलचन्द सुरचन्द-ईडर
(महीकांठा)

प्रकाशकः-
श्री ग्रंथमाला कमीटी तरफथी
दोशी फूलचन्द सुरचन्द,
मन्त्री श्र० आ० दि० जैन ग्रन्थमाला ईडर।

वीर संवत २४६३] [विक्रम सं० १९९३
प्रथम वृत्ति १००० मूल्य—रु० १॥)

“जैनविजय” प्रिन्टिंग प्रेस–सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया।

प्रस्तावना ।

आ ग्रंथमालानी स्थापना सं० १९८४ ना ज्येष्ट सुदी ५ एटले श्रुतपंचमीने दिने पूज्य १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजी (छाणी) ना हितोपदेशथी करवामां आवी हती, त्यारथी नियमीत रीते ग्रंथमाला पोतानुं कार्य करी रही छे. एनो मुख्य उद्देश्य प्राचीन दि० जैन धर्म-शास्त्रोने योग्य रुपमां प्रकाशमां लाववानो छे. ग्रंथमालामां प्रथम रत्न-पाळ रास प्रकाशित थई गयो छे जेने सर्वे वांचक वर्गे सहर्ष वधावी लीधो जेथी एनी प्रथमावृत्ति क्यारनी खपी जई नवी मांग थाय छे परन्तु द्रव्याभावे द्वीतियावृत्ति प्रकाशित थइ शकी नथी.

रत्नपाळ रास प्रकाशित थया पछी बीजे वर्षे बीजी भेट प्रका-शित करवानो विचार हतो परन्तु मारी भयंकर मांदगी वचमां आड रुप थई अने बीजा वर्षनुं काम आगळ धपाववुं पडयुं. प्रस्तुत ग्रंथमा-लामां बीजी भेट तरीके रास छपाववा विचार हतो, परन्तु ईडरना प्राचीन ग्रन्थभंडारमां तपास करतां कमीटीए रासनी जग्याए व्रतोद्या-पनो छपाववानुं योग्य धारी "व्रतोद्यापन संग्रह" प्रगट करवानी इच्छा जाहेर करी, कारणके हालमां व्रतोद्यापनो प्राचीन हस्तलिखित होइ तेमां घणीज अशुद्धिओ होई खास जाणकार सिवाय उद्यापननुं काम थइ शकतुं नथी तेथी उद्यापन इच्छुकोनी सरलताजी खातर व्रतोद्या-पनो छपाववानु शरु कर्युं.

ग्रंथमालामां रु. ५) अने तेथी वधु रकम आपनार ग्राहक तरीके दाखल करवामां आवे छे. हालमां ग्रन्थमालामां ग्राहकोनी संख्या २०० छे तेमने नीयमीत रीते ग्रन्थमालामां प्रगट थतुं पुस्तक भेट तरीके घेर बेठां मोकली आपवामां आवे छे. आमां एक पंथ अने दो काज छे. रु. ५) जेवी रकम आपवी कोइने पण वधु पडती नथी. आवी धार्मिक संस्थाओने मदद करवी ते दरेकनी फरज छे. वधुमां प्रतिवर्ष पुस्तक पण भेट मळी शके छे.

अंतमां दरेक जैन बंधुओ पोतानो उदार हाथ लंबावी ग्रंथमालाने चिरस्थायी बनावे अने ग्रंथमालामां प्रगट थतां पुस्तको वधु संख्यामां खरीदी बहोळो फेलावो करे एम इच्छी विरमुं छुं.

फूलचंद सुरचंद दोशी

मंत्री, श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागरजी (छाणी) दि० जैन ग्रंथमाला

ईडर, (महीकांठा)

आभार प्रदर्शन।

इस व्रतोद्यापन संग्रहके प्रकाशित होनेमें अजमेर निवासी श्रीमान् धर्म-प्रेमी धर्मवत्सल समाजगण्य शेठ श्री० टीकमचंदजी साहबने ४०१) और नातेपूते निवासी शेठ श्री० रामचन्द्रजी धनजी दावड़ाने ५०) प्रदान किए हैं। अतः उनको कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है।

फूलचन्द सुरचन्द दोशी, मंत्री।

उद्यापन करनेकी विधि।

सबसे पहिले उद्यापन करनेवालेको स्नान आदिसे शुद्ध होकर जैन मंदिरमें जाना चाहिये और जिस व्रतका उद्यापन करना हो उसका संकल्प करे या गुरुकी वर्तमानतामें गुरुकी आज्ञा लेनी चाहिये। बाद पूजनोपयोगी तथा मण्डलोपयोगी (साथियाके उपयोगी) हरेक द्रव्य सामग्री शुद्ध लाना चाहिए। फिर शुभ मुहूर्तमें जिस व्रतका उद्यापन करना होवे उसका मण्डल (साथिआ) नीचे लिखे माफिक कोष्टकका निकाले।

उद्यापनोंके कोष्टककी संख्या।

चारित्र शुद्धि (बारहसौ चौंतीस व्रत)	कोष्टक	१२३४
रविवार व्रतोद्यापन	,,	८१
षोड़शकारण व्रतोद्यापन	,,	२५६
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	,,	९३
अनंत व्रतोद्यापन	,,	१९६
अष्टाह्निक (नंदीश्वर) व्रतोद्यापन	,,	५२
दशलाक्षणिक व्रतोद्यापन	,,	१००

ऊपर लिखे माफिक व्रतोंके उद्यापनका मण्डल वर्तुलाकार या चतुष्कोण निकाले। मण्डलमें पांच प्रकारके रङ्ग पूरना चाहिये या

पांच प्रकारके धान्य (जैसे उड़द, मूंग, चनाकी दाल, सफेद चावल, पीले चावल) से सुशोभित बनावे ।

कोष्टक निकालनेवालेको याद रखना चाहिये कि मध्य कमल कर्णिकामें, सबसे प्रथम ॐकार निकाले । फिर उसके आगे पुष्पोंसे (पीले चावलसे) गोलाकार निकालकर उसके आगे अष्ट कोष्टक वर्तुलाकार निकाले । जो ज्ञानावरणादिक अष्टकर्म रहित सिद्ध परमेष्ठीके गिने जाते हैं या उसको अष्ट दर्भ कमल भी कहते हैं । वह कोष्टक उद्यापनके कोष्टककी गिनतीमें नहीं गिने जाते हैं । मण्डपके चारों तरफसे ध्वजाओंकी पंक्तियोंसे सुशोभित करे और तोरण चन्दोवा, वन्दनमाल (आशोपालवके पत्तोंके तोरण) और केलके स्तम्भोंसे सुशोभित बनावें । मध्य कर्णिकामें एक कटोरीमें या खोपराकी कटोरीमें खड़ीसक्कर (मिश्री) भरकर कुछ द्रव्य रक्खे और पुष्प आदि रक्खें । उसके ऊपर सिंहासन रक्खे, जिसमें अभिषेकके बाद भगवानकी प्रतिमा और यंत्र बिराजमान करे ।

उद्यापन करनेवालेको प्रथम स्नानकर शुद्ध वस्त्र (धोती दुपट्टा) धारण करके यज्ञोपवीत (पहलेका धारण किया हुआ उसको बदलकर) नवीन धारण करना चाहिये । फिर नीचे लिखे माफिक मंत्रपूर्वक स्नानशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, द्रव्यशुद्धि और भूमिशुद्धि करना चाहिये ।

स्नान शुद्धि मंत्र—' ॐ अमृते अ सि आ उ सा मम सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।"

(इस प्रकार बोलकर मस्तकपर जल सिंचन करे

वस्त्र शुद्धि मंत्र–" ॐ श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनरंजिनी परिधानोत्तरीय धारिणि हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं परिधानोत्तरियामि स्वाहा।" (वस्त्रके ऊपर जल सिंचन करे)

द्रव्य शुद्धि मंत्र–" ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सं अ सि आ उ सा पवित्र जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पुष्पादि पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।"

भूमि शुद्धि मंत्र–"ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।"
(ऊपरके स्नान आदि शुद्धिमें मंत्र पढ़कर दर्भसे जलके छींटे छांटे)

पश्चात पृष्ठ ३२ से ३९ तक दिया हुआ सकलीकरण करना चाहिये। सकलीकरणके बाद पृष्ठ ४ से ६ तक दिया हुआ करन्यास और अंगन्यास करना चाहिए। पश्चात् पृष्ठ १ से ३ तक लिखे हुए विधानसे अभिषेक और पूजनके कामके लिए जल लाना चाहिए। बाद पृष्ठ १७ में लिखे माफिक " ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते" इत्यादि०। (मंत्रसे उस जलको शुद्ध करना चाहिए)

बाद मण्डपमें वेदी स्थापन कर पृष्ठ १४ से अभिषेक प्रारम्भ करे। इन्द्र स्थापन क्रियाके पीछे पुराकर्म (वेदी प्रक्षालन श्रीकार लेखन आदि क्रिया) करके भगवानका और जिस व्रतका उद्यापन हो उसके यंत्रका स्थापन करना चाहिये। भगवानके स्थापन क्रियाके समय पृष्ठ ४२८ में दिया हुआ मंगलाष्टक पढ़ना चाहिए। फिर

नीराजन और पाद्याचमन क्रिया करके पृष्ठ २१ में दिया हुआ "ॐ ह्रीं अर्हं नम: परम ब्रह्मणे विनष्टाष्टकर्मणे अर्घं० ।" इत्यादि ।

मंत्रके पश्चात् पृष्ठमें ७ से १३ तक छपा हुआ दशदिग्पाल पूजन करना चाहिए। उसके बाद पृष्ठ २१ से क्षेत्रपाल पूजन करके चतु:कलश स्थापन और गंधोदक कलश स्थापन करके अभिषेक विधिसे पंचामृताभिषेक क्रमसे करना चाहिए। अंतमें पृष्ठ ४३० में दिये हुए शांति मंत्रसे अभिषेकके समय दक्षिण तरफ स्थापित किया हुआ पूर्ण कलश भगवानके ऊपर ढोलना चाहिए (शांति मंत्र और कलशजलक्षेपण साथ होना चाहिए।)

अभिषेक पूर्ण होनेके बाद भगवानकी प्रतिमाको और यंत्रको मंडलके बीचमें रक्खा हुआ सिंहासनके ऊपर स्थापन करना चाहिए। स्थापनविधिके बाद पृष्ठ ४०में लिखे माफिक 'ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमो अरहंताणं" इत्यादि पाठ करके सहस्र नाम पूर्ण पढना चाहिए। पश्चात् देव, शास्त्र, गुरुपूजा, सिद्धपूजा और कलिकुण्ड पूजा यह पञ्च पूजा करके उद्यापन प्रारंभ करे।

उद्यापन पूर्ण होने बाद पुण्याहवाचन आरती शांति और विसर्जन अनुक्रमसे करना चाहिए। शक्तिअनुसार उपकरण मंदिरमें देना चाहिए। आहार, औषध, शास्त्र और अभय यह चार प्रकारके दान करना चाहिए। पश्चात गुरुकी आशिष लेकर घर जाना चाहिए।

सेवक-फूलचंद सूरचंद दोशी-ईडर।

अर्पण पत्रिका।

प्रातःस्मरणीय परम पूज्य धर्मोद्योतकारी

श्री १०८ मुनिश्री सुधर्मसागरजी महाराज-

जिनने अपनी उत्कृष्ट विद्वत्तासे जैन साहित्यकी
अप्रतिम उन्नति की है और जिनके शुभ प्रयत्नने
दृढ़ीभूत कितनी ही जातिकी कुप्रथाएँ, कुरूढ़िया
और अज्ञानांधकार दूर करके ज्ञान पिपासु
श्रावकोंको सम्यक्‌मार्गमें प्रवर्तित किया है
और जिनके शुभ संस्कारसे मुझमें जैन
साहित्यकी सेवा करनेके कारणभूत
जो उल्लास रहता है ऐसे सकल
सद्‌गुणालंकृत पूज्य ज्ञानदाता
गुरुवर्यके पुनीत हस्तकमलमें
ग्रन्थ-मालाका यह द्वितीय
गुच्छ सप्रेम अनन्य-
भावेन समर्पण
करता हूँ।

आपका चरणसरोज शिष्य—

फूलचन्द सूरचन्द दोशी, ईडर।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
४	१	मईनां	महतां
३२	५	ह्य	ब्रह्म
३२	९	विघ्नोघा:	विघ्नौघ :
३२	१९	दिक्षर	वंक्षर
४१	१३	केवलोधा:	केवलैघा:
४४	१	स्पुर्द्धा	स्युर्द्धा
४४	८	सपुतं	संयुतं
,,	९	अदे–स्पुना	आदौ–स्युर्नो
,,	११	द्विरदं–वत्स्तु	द्विरदं–स्स्तु
,,	१७	स्पुर्निच्छा	स्युर्निच्छा
,,	१९	प्रोबधा	प्रोषधा
,,	२१	निक्षेपो	निक्षेरो
४५	४	स्पुर्चतुर्थकः	स्युर्चतुर्थकाः
,,	१०	स्पुश्चतु	स्युश्चतु
,,	११	रद्मेत्	रचरेत्
,,	१३	मंडयो·म	मडपोत्तम
,,	१७	द्यौ·ांबर	धौतांबर
४७	५	भवे:	भवैः
,,	६	वैयन	नैयन
,,	९	घूपैः	धूपैः
,,	१४	यूग	पूग
४८	२०	पादरे	बादरे
५०	१७	प्रर्याप्त	पर्याप्तः

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
५२	२२	हिसं म्	हिंसं म्
५३	१	मत्	दत्
,,	१३	मोदू म्	मोद म्
५४	४	त्वद्यम्	त्वघम्
,,	२०	वचनानुमोदित	कायकृत
५५	२	कायकारित	कायानुमोदित
,,	२३	कायकारित	कायकृत
५६	२	कायानुमोदित	कायकारित
,,	१२	मनयायं	मनसाघं
५७	१६	मनसाद्य	मनासाघं
५९	४	दूद्य	दूय
,,	२२	अयर्याप्त	अपर्याप्त
६२	१३	षञ्चा	पंचा
६३	२२	दञ्चा	पंचा
६५	५	द्विदशा	द्विदशा
६७	१	दाषेण	दोषेण
६७	१९	कायकारित	कायकृत
६९	१०	वीर	वारि
६९		निम्नलिखित श्लोक १६ रह गया	

कायेन कृत संत्यक्तं निज पक्षस्य वर्जितं ।

सत्यप्रसादकं चाये जिनं वारि मुखाष्टभिः ॥

ॐ ह्रीं कायकृतस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घं ।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
७०	३	मवचाविहित	वचनकृत
७०	९	मनोऽनुमति	वचोऽनुमति

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
७०	११	मनोऽनुमति	वचोऽनुमति
७१	१	त्यक्त	त्यक्तं
७२	१–५–९–१७–२१	क्त	क्तं
७३	१-५-९-१३-१६-२०	क्त	क्तं
७४	५–९–१३--१७-२१	क्त	क्तं
७५	१–४–९–१३–१७	क्त	क्तं
७७	१–५–९–१३–१७	क्त	क्तं
७८	१–५	क्त	क्तं
७८	३	वचनकारित	वचनानुमोदित
७९	२	जिद्रस्यनें	जिनेंद्रस्य
,,	५	डरी	दूरी
,,	११	कवबधिवितर्जित	कुवधिवर्जित
८०	....	इति पुष्पांजलिकी जगह	आह्वानन स्थापन
८१	४	जिनेंद्र	जिनेंद्रं
,,	१०	धूमा	धूम्रा
८२	८	मनोनुमोदित	मनः कारित
८५	३	स्तेयं	स्तेय
८८	२१	सद्व्र	सद्व्रत
९३	७	कुसं	कुत्रं
९४	१३-१६-१९	दिव्य	देव
९६	४	साक्ष्यं	सौख्यं
९६	१७	मनुष्य	मनुष्य
११६	२	मांडं	मांडं
,,	६	इति पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करनी

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
११७	२	धूयै	धूपै
११९	९	देहावयव	देहाकारक
१२३	९	भवङ्गगति	भवगति
१२४	१९	शाक्तिदा	शक्तिदा
१२७	१३	अस्नाना	अक्काना
१२८	१	भूशस्थ्यो	भूशय्यो
१३०	११	कायकृत	वचोऽनुमत
१३४	१६	ववसा	वचसा
१३५	११	मनः कारित	मनः कृत
१३७	१३	अप धान्या	उपधान्या
१३८	४	मनसा	वचसा
१४२	४	काय्यसि—संगो	कायसि—संगो
१४४	१४	ब्रह्म	ब्रह्म
१४५	१३	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करनी
,,	१६	जिनयं	जिनपं
१४६	७	दीर	दीपं
,,	९	हूम	धूम
१४७	७	समो	निशि
,,	९	दिनस्त	दिनास्त
,,	१४	दिव्यै	दिव्यैः
,,	२१	निवारं यति	निवारयंति
१४९	२	प्रोक्का	प्रोक्ता
,,	३	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करनी
,,	४	स्वर्गो	स्वर्गं

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
१४९	९	तारक	तारकं
१५०	९	मनासा	मनसा
१५२	१४	तत्वांथि	तत्वार्थ
,,	१६	विवर्जिता	विवर्जिता
,,	१८	धुप	धूप
१५३	६	वचनकारित	वचनकृत
१५५	१	नवकोटी पूजाकी	स्थापना करवी
,,	१८	लब्ध्यैः	लब्ध्यै
,,	२०	गुप्त्यैः—लब्ध्यैः	गुप्त्यै—लब्ध्यै
१५८	९	द्रुतक	द्रुतकं
,,	१२	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करना
१५९	४	नैवेद्यः	नैवेद्यैः
,,	१४	तन्नृत्य	तन्नृत्यं
१६१	२०	जयमालाहिं	जयमालाभिः
१६२	११	निमल	निर्मलः
,,	१३	पद्मः	पद्मैः
,,	१९	चंदनागर	चंदनागरु
१६४	२३	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करना
१७०	१२	पतीत	प्रतीत
१७२	१९	भिन्न	भिन्न
१७३	२१	तद्दोषं	तद्दोषघ्नं
,,	२२	वा सत्य	वासत्य
१७६	१२	सम्पतोक्त	सम्मतोक्त
,,	१४	सत्यतीत	सत्यप्रतीत
१७७	१७	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करना

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
१७८	१०	सुघूमै	सुघूम्रै
१७९	१२	दौर्षै–सब	दौषैः–सर्वं
१८३	७	जकदिचयैः	जकादिचयैः
१८५	११	निमलै	निर्मलै
१८६	१०	शुक्ष्माभ्या	शुक्ष्माभ्यां
१९०	२१	सुमहान्	सुमहान्
१९९	१४	कुसुमाद्यः	कुसुमाद्यैः
,,	१९	दूतकमकृत्	दूतकर्मकृत्
२०२	२१	ऽहं	ऽहं
२०३	२	एपुण्यं	पुण्यं
२०५-२०६-९		विधो	विधौ
२०९	६	नाम:	नाम
२१०	४	पूर्वतौ	पूर्वतो
,,	७	कृतो शमा	कृतोऽशना
२१२	६	दिवा	दिना
२१३	७	सोघदः	सोघदः
,,	८	चूणनामकः	चूर्णनामकः
२१५	२	सञ्ज्ञ	संज्ञ
२१७	३	नुमत	नुमतं
,,	१६	यहेयं	येहयं
,,	२०	मांहो	मंहो
२२०	७	भवौ	भवो
२२१	१२	य दीयते	यदीयते
२२३	५	कथं	कथं

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
२२३	१२	चरणोदकं	चणकोदकं
२२५	६	नादियं—तेयर्जनैः	नादिकं शुभजनं:
२२६	१	लिसहं	लिसाहं
२३३	१४	पुष्पांजलिकी जगह	स्थापना करना
२३७	१२	सदकै	कुसुमै
२४२	४	ही	हि
२४९	७	एचाटुक	एक चाटु
२६६	४	सवदा	सर्वदा
,,	१३	क्रया	क्रिया
२७६	१०	प्रथमे	द्वितीये
२८०	३	गायम	गोयम
२८५	२०	सत्त्व	सत्व
२८९	७	बुधैः	बुंधैः
,,	१४	तेयुकाय	तेजस्काय
,,	फुटनोटमां	समकक्ष	सतलक्ष
२९०	३	द्वेन्द्रिया	द्विन्द्रिया
२९५	१०	तपे यो	तपो यो
३०२	१६	निघोष	निर्घोष
३२१	१४	ज्ञय	ज्ञेयं
३२८	८	तत्प्रज्ञप्त	तत्प्रज्ञप्ति
३४२	१८	सप्तति	सप्तनि
३४३	१७	अथवा	अथवा
३८७	१७	सामुत्पन्ना	समुत्पन्ना
३८२	१५	रतेन	रत्नेन

पृष्ठ	लाइन	शुद्धि	अशुद्धि
४०१	४	जिनेंद्रः	जिनेंद्रैः
१३	१	मिनेन्द्र	जिनेन्द्र
,,	१०	मूर्तिन्	मूर्तीन्
१४	७-११	पद्मो	पद्मं
१९	२	पद्मे	पद्मं
२०	८	नन्दीश्वराख्यो	नन्दीश्वराख्ये

विषय-सूची।

* ॐ नमः सिद्धेभ्यः *

अथ व्रतोद्यापन संग्रहः ।

अथाभिषेकार्थं जलशुद्धिविधानम् ।

अभिषेक प्रारंभ करने के पहिले अभिषेक तथा पूजन के लिए जल आवश्यक है इसलिए सौभाग्यवती स्त्रियें अथवा कन्याएँ अपने २ माथे पर नारियल से ढके हुए कलश ले जावें और निम्नलिखित विधानपूर्वक जल लावें । नीचे के श्लोक प्रमाण जलाशय पर अर्घ चढ़ावे ।

पद्मापादनतो महामृतभवानंदप्रदानान्नृणाम् ।
जैनो मार्ग इवावभासि विमलो योगीव शीतीभवन् ॥
जैनेन्द्रस्नपनोचितोदकतया क्षीरोदवत्त्सताम् ।
पूज्यं त्वां शुभशुद्धजीवननिधिं कासार संपूजये ॥१॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमुख्यदेवीः कुलशैलमूर्धपद्मादिपद्माकरसद्मसक्ताः ।
पयः पटीराक्षतपुष्पहव्यप्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयच्छे ॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभृतिदेवताभ्यः इदं जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गंगादिदेवीरतिमंगलांगा गंगादिविख्यातनदोनिवासाः ।
पयः पटीराक्षत पुष्पहव्य प्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयच्छे ॥३॥

ॐ ह्रीं गंगादि देवीभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

सीतानदीविद्धमहाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।
पयः पटीराक्षतपुष्पहव्यप्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयच्छे ॥४॥

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

सीतोत्तरामध्यमहाह्रदस्थान् ह्रदेश्वरान्नागकुमारदेवान् ।
पयः पटीराक्षत पुष्पहव्यप्रदीपधूपोद्धफलैः प्रयच्छे ॥५॥

ॐ ह्रीं सीतोदाविद्ध महाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

क्षीरोदकालोदकतीर्थवर्तिश्रीमागधादीनमरानशेषान् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादि तीर्थ देवेभ्यः इदं जलादि० ।

सीतातदन्त्यद्वयतीर्थवर्ति श्रीमागधादीनमरानशेषान् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सीतासीतोदामागधादि तीर्थ देवेभ्यः जलादि० ।

समुद्रनाथांल्लवणोदमुख्यसंख्याव्यतीतांबुधिभूतिभोक्तृन् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं संख्यातीत समुद्रदेवेभ्यः जलादि अर्घं० ।

लोकप्रसिद्धोत्तमतीर्थदेवान्नंदीश्वरद्वीपसरः स्थितादीन् ।
पयः पटीराक्षत० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं लोकाभिमततीर्थ देवेभ्यः इदं जलादि अर्घं० ।

गंगादयः श्रीप्रमुखाश्चदेव्यः श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथाः ।
ह्रदेशिनोऽन्येऽपि जलाशयेशास्ते
सारयन्त्वस्य जिनोचितांभः ॥ १० ॥

ऊपर का "गंगादयः" आदि श्लोक मंत्र बोल कर जलाशय से जल निकालना चाहिये। कलशों पर चंदन लगाकर नीचे लिखा मंत्र बोल कलशों में जल भरना चाहिये।

ॐ ह्रीं श्री-ह्री-धृति-कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी-शांतिपुष्टयः श्री दिक्कुमार्यो जिनेन्द्रमहाभिषेककलशमुखेष्वेतेषु नित्यविहिता भवत भवतेति स्वाहा।

तीर्थेनानेन तीर्थान्तरदुरधिगमोदारदिव्यप्रभावः-
स्फूर्जत्तीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपतेः प्रेषितप्राभृताभान् ॥
श्री[illegible]ण्यरण्यातदेवीनिवहकृतमुखाद्यासनोद्भूतशक्ति-
प्रागल्भ्यानुद्धरामो जयजयनिनदे शातकुंभीयकुंभान् ॥११॥

ऊपर का श्लोक बोल जलशुद्धि विधान पूर्ण कर वे जल कलश सौभाग्यवती स्त्रियों अथवा कन्याओं के द्वारा मस्तक से धारण करा कर लाना चाहिये।

इति जलशुद्धिविधानम्।

अथ करन्यासः ।

हृदि न्यसेन्नमस्कारमों ह्राँ पूर्वक मर्हतां ।
पूर्वे शिरसि सिद्धानामों ह्रीं पूर्वां नमस्कृतिं ॥ १ ॥
ॐ ह्रूँ पूर्वकमाचार्यस्तोत्रं शीर्षस्य दक्षिणे ।
ॐ ह्रौं पूर्वमुपाध्यायस्तवं पश्चिमदेशतः ॥ २ ॥
ॐ ह्रः पूर्वां ततो वामे सर्वसाधुनमस्कृतिं ।
न्यसेत्पंचाप्यमून्मंत्रान् शिरस्येवं पुनः सुधीः ॥ ३ ॥

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं स्वाहा हृदये[1] । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ललाटे[2] । ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं स्वाहा शिरसो[3] दक्षिणे । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा[4] पश्चिमे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा [5]वामे ।

पुनस्तानिमान् मंत्रान् प्राग्भागे दक्षिणे पश्चिमे उत्तरे च क्रमेण विन्यसेत् ॥ इति प्रथमांगन्यासः ॥

प्राग्भागे शिरसो मध्ये दक्षिणे पश्चिमे तथा ।
वामे चैतेषु विन्यासक्रमो वारे द्वितीयके ॥ ४ ॥

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं स्वाहा शिर-मध्ये । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहो ललाटे । ॐ ह्रूँ आइरियाणं स्वाहा शिरसो

१ सकलीकरण करते समय हाथ जोड़, जुड़े हाथ से हृदय, कपाल, माथा, पश्चिम आदि जो शरीर के अवयवों के नाम आवें वहां वहां हाथ लगाना ।

दक्षिणे । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा पश्चिमे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा वामे ।

पुनरप्येवं नेव मंत्रान् शिरोमध्ये तत्पूर्वादिषु च विन्यसेत्

॥ इति द्वितीयांगन्यासः ॥

भुजयुग्मे च नाभौ च पार्श्वयुग्मे तृतीयके ।
कवचास्त्रतनुन्यासं कुर्यान्मंत्रेण मंत्रवित् ॥ ५ ॥

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं स्वाहा नाभौ । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा नाभेर्दक्षिणे । ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं स्वाहा नाभेर्वामे । ॐ ह्रौं णमो उवझ्झायाणां स्वाहा कवचाय ह्रूँ दक्षिण भाग भुजे । ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणंस्वाहा अस्त्राय फट् वामभुजे ।

ॐ णमो अरहंताणं क्ष्म्ल्व्यूँ मम हृदयं रक्ष २ ह्राँ स्वाहा । ॐ णमो सिद्धाणं ह्म्ल्व्यूँ मम शिरं रक्ष २ ह्रीं स्वाहा । ॐ णमो आइरियाणां छ्म्ल्व्यूँ मम शिखां रक्ष २ ह्रूँ स्वाहा । ॐ णमो उभझ्झायाणं म्म्ल्व्यूँ मम वज्राणि वज्र कवचं रक्ष २ ह्रौं स्वाहा । ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्म्ल्व्यूँ मम दुष्टं निवारय २ अस्त्राय फट् स्वाहा ।

॥ इति तृतीयांगन्यासः ॥

अथ अ,न्यास भेदः ।

तथा वामप्रदेशिन्यां न्यस्य पंच नमस्कृतिं ।
पूर्वादिदिक्षु रक्षार्थं दशस्वपि निवेशयेत् ॥ ६ ॥

अ सि आ उ सा एतानि पंचाक्षराणि तर्जन्यंगुल्यां संस्थाप्य .टबीजा।ने ।

(ऊपर के पांच बीजाक्षर दक्षिण हाथ की तर्जनी अंगुली ऊपर लिख नीचे लिखे दश मंत्र बोल नीचे मंत्र में बताई दिशाओं में हाथ दिखाना चाहिये) ।

आँ ह्राँ क्षाँ पूर्वे । ईं ह्रीं क्षीं अग्नो । ॐ ह्रूँ क्षूँ यमे ।
ॠँ ह्रैं क्षौं नैऋते । एँ ह्रैं क्षैं वरुणे । ऐं ह्रौं क्षौं वायव्ये ।
ओं ह्रौं क्षौं कुबेरे । ओं ह्रं ईशाने । अं ह्रः क्षः भूतले ।
अः ह्रीं क्षीं आकाशे । दिशा बंधनं ।

वर्मितोऽनेन मंत्रेण सकलीकरणे सुधीः ।
कुर्वन्निष्टानि कर्माणि केनाप्येनानि विन्यसेत् ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष २ ह्रूँ फट् स्वाहा ।

अनेन पुष्पाक्षतं सप्त वारान् प्रजाप्य परिचारकाणां शीर्षेषु क्षिपेत् ।

(ऊपर का मंत्र सात वक्त बोल सात वक्त पुष्प अक्षत साथ परिचारकों के मस्तक ऊपर क्षेपना ।)

ॐ ह्रूँ फट् किरीट घातय २ परविघ्नान् स्फोटय २ सहस्र खंडान् कुरु २ परमुद्रांछिद २ परमंत्रान् भिद २ क्षः फट् स्वाहा ।

(ऊपर का "ॐ ह्रूँ फट्" ए मंत्र बोल पुष्पाक्षत दश दिशाओं में सर्व विघ्नों की शांति के लिए क्षेपण करना ।

॥ इति सकलीप्रकरण विधानम् ॥

अथ दशदिक्पालपूजा ।

दिक्पाल तथा क्षेत्रपाल की पूजा के लिए सामग्री अलग रखना चाहिये ।

विस्तीर्णे स्वर्णपात्रे सलिलमलयजैश्चारु पुष्पाक्षतान्नैः
पक्वान्नैः क्षीरसर्पिर्दधिफलनिकरैरर्घ्यमुद्धार्य वर्यं ।
यज्ञांगैर्दीपधूपैः परमजिनपतेः पादयोस्त्रिः परीत्य
प्रत्येकं प्रार्थयेऽहं निखिलदिगधिपान् यज्ञनिर्विघ्नसिध्यै ॥१॥

दिगीशाः शब्दये युष्मानायात सपरिच्छदाः ।
अत्रोपविशतैत यजे प्रत्येकमादरात् ॥ २ ॥

पूर्वस्यां दिशि ।

द्वात्रिंशद्वक्त्रदंतह्रदनलिननटन्नाकयोषिन्निकायं
कांत्या कैलाशशैलच्छविमलिनिकराक्रांतदानाग्रगंडं ॥
आरुह्यैरावतं ह्री कुलिशधर इहैवागतः पूर्वकाष्ठा-
मध्याच्छच्य सहायो वरकनकरुचिर्वासवोऽर्हन्मखोर्वीम् ॥१॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे इन्द्रदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आँ०—अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । ॐ आँ० अत्र मम सान्निहितो भव २ वषट् स्वाहा ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्रपरिजनाय स्वाहा । इन्द्रानुचराय इ... महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरु-

णाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे इन्द्रदेव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं दीपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत् सदा ।
शांतिके पौष्टिके चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा ॥ २ ॥

शांतिधारा । इन्द्राह्वानं ।

अग्निकोणे ।

शुम्भज्जांबूनदाभा मणिगणविलसच्छृङ्गमुणायुमूढः ।
माशाहानो जपाभः करविधृतलसच्छक्तिरग्नींद्र एषः ॥
भास्वज्ज्वालाकलापः पुरयमककुभोरंतरालं प्रयातो ।
भूयात् स्वाहाप्रियोऽस्मिन् जिनपतिसवने दीपधूपादिकाले ॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं रक्तवर्णं प्रशस्तसर्वलक्षणसम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधूचिन्हसपरिवार हे अग्निदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आँ क्रों० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । ॐ आँ क्रों० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ अग्नीन्द्राय स्वाहा । अग्निपरिजनाय स्वाहा । अग्नींद्रानुचराय स्वाहा । अग्नीन्द्रमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे अग्नीन्द्र देव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां २ स्वाहा । यस्यार्थं क्रियेते पूजा० शांतिधारा ॥ २ ॥

दक्षिणस्यां दिशि।

जीमूतश्यामलांगं कलुषितनयनं कासरं चाधि रूढः।
छायाजायासहायः स्फुरदुरगमनोभूषणो माषवर्णः॥
अस्यामाहूयमानो मखभुवि यमराट् कुन्तलोदंबुदालिः।
सोऽयं दंडोद्घपाणिः प्रथयतु धरणीं दक्षिणाशावकाशां॥३॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं कृष्णवर्ण प्रशस्त सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे यमदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आँ क्रों ह्रीं० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। ॐ आँ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ यमाय स्वाहा। यम परिजनाय स्वाहा। यमानुचराय स्वाहा। यममहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। [illegible]य स्वाहा वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुव. स्वः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। हे यमदेव इदमर्घ्यं मित्यादि०। यस्यार्थं० क्रियते पूजा इत्यादि। शांतिधारा॥ ३॥

नैरृतकोणे।

धर्म ध्यानार्कभीत्यांतकवरुणदिशोरंतरेऽप्यैक्यदेशे।
पुञ्जीभूतांधकारांजनगिरिसदृशं श्यामरक्षोऽधिरूढः॥
नीलांगो यज्ञभू[illegible]निशित महामुद्गरव्याप्तमुष्टिः।
सोऽस्यां पायादपायान्निजदिशि वसुधां यातुधानप्रधानः॥४॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं श्यामवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुध-वाहनवधू चिन्ह सपरिवार हे नैरृतदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आँ० अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्वाहा। ॐ आँ० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ नैर्ऋताय स्वाहा । नैर्ऋत परिजनाय स्वाहा । नैर्ऋतानुचराय स्वाहा । नैर्ऋत महत्तराय स्वाहा । अग्नेये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे नैर्ऋतदेव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यमित्यादि० यस्यार्थं० । शांतिधारा ।

पश्चिमायां दिशि ।

तालस्थूलायतोऽथ धृतकरकरकां भोजनीनागहारो ।
नैवेद्याकल्परम्यं करिमकरमारुह्य कान्तासमेतः ॥
आयत्तोद्यध्वरोवर्मिरुणमणिगणालंकृतोद्दामवेषः ।
प्रत्यकाष्ठां प्रवालद्युतिरवतु पतियीदसां पाशपाणिः ॥ ५ ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे वरुणदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आं० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । ॐ आं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ वरुणाय स्वाहा । वरुणपरिजनाय स्वाहा । वरुणानुचराय स्वाहा । वरुण महत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे वरुणदेव स्वगुणपरिवारपरिवृत्त इदमर्घ्यं पाद्यं जलमित्यादि । यस्यार्थं० । शांतिधारा ।

वायव्यकोणे ।

पश्वचन्द्रा[illegible]त तुरगमरुजवं मुष्टिसम्मेयमध्यमारूढो वायुवेगी प्रिययुवतियुतः पादयात्तप्रशस्तः ॥

...ऽवतु वरुणधनाध्यक्षयोः श्रीगरिष्ठां
स्वां काष्ठां यागनिष्ठां परिमणितजगद्बन्धुरो मन्धवाहः ॥६

ॐ आँ क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्व लक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे पवनदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आँ० अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। अत्र मम संन्निहितो भवं भव वषट् स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ पवनाय स्वाहा। पवनपरिजनाय स्वाहा। पवनानुचराय स्वाहा। पवन महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। हे पवनदेव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यमित्यादि०। यस्यार्थं०। शांतिधारा ॥

उत्तरस्यां दिशि।

कुन्देन्दु...शद्युतिपटललसद्राजहंसायमानं
सौरभ्यामोदितांतर्भुवमणि विलसत्पुष्पकाख्यं विमानम्।
अध्यासीनः कुलस्त्रीनिवहपरिवृतो व्यावृतीऽयं नुयत्र
स्वामाशां पातु शश्वद्वितरितविभवस्तारकः कुकुबेरः ॥७॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण प्रशस्तसर्वलण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे धनदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आँ० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा। ॐ आँ० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ धनदाय स्वाहा। धनदपरिजनाय स्वाहा। धनदानुचराय स्वाहा। धनदमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा।

स्वधा स्वाहा । हे धनदेव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि० । यस्यार्थं । शांतिधारा ।

ईशानकोणे ।

भाङ्कारस्फारभेरी समदलनिनदं पांडुरांगं गवीन्द्रं
पार्वत्यामाधिरूढः शशिकरधवलः सर्वभूषाभिरामः ।
श्रीकंठः कालकंठो विमलविधुकलालोलमौली कदर्पी
शूली व्याहूयतेऽसौ धनदसुरदिशोरन्तरोर्वीब नेतुं ॥८॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुध-वाहनवधूचिन्ह सपरिवार हे ईशानदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा । ॐ आँ० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । ॐ आँ० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

ॐ ईशानाय स्वाहा । ईशानपरिजनाय स्वाहा । ईशानानुचराय स्वाहा । ईशानमहत्तराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । स्वधा स्वाहा । हे ईशानदेव स्वगुणपरिवार-परिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि० इस्यार्थं० । शांतिधारा ।

अधोभूमि दिशायां ।

आशामातङ्गकुम्भस्थलकठिनमहा कच्छपं धूपधूम्रं
पावत्या सहोढो जलधरपटलश्यामलं कोमलाङ्गं ॥
रक्तत्वक्त्णलक्ष्म्या हरिहरहरितोरंतराले मखोर्वी ।
भास्वत्सस्वस्तिकांको मकुटतरमणिद्योतिताशः फणीशः ॥९

ॐ आँ क्रों ह्रीं धवलवर्ण प्रशस्त सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुध-वाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे धरणोन्द्रं अत्रागच्छागच्छ

संवोषट् स्वाहा। ॐ आँ० अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्वाहा। ॐ आँ० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ धरणीन्द्राय स्वाहा। धरणीन्द्रपरिजनाय स्वाहा। धरणीन्द्रानुचराय स्वाहा। धरणीन्द्रमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः वाहा। स्वाधा स्वाहा। हे धरणीन्द्रदेव स्वगुणपरिवार परिवृत इदमर्घ्यं०। यस्यार्थं० शांतिधारा,

उपरि दिशायां।

उद्यत्तिग्मांशुभिः सुस्फुरितनिजजटाच्छादितस्कंधगौरं।
बालेन्दुस्पर्द्धिदंन्ष्ट्रांकुरकलितमहाभीष्मवक्त्रं मृगेन्द्रं॥
रोहिण्यामाधिरूढं भगवद्भिषवक्षीरगौरांशुभिश्च।
चाये लक्षांकितांगं निऋतवरुणयोरन्तरेकुन्तहस्तं॥१०॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण प्रशस्तसर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध-वाहन वधूचिन्ह सपरिवार हे सोमदेव अत्रागच्छागच्छ संवौषट् स्वाहा। ॐ आँ क्रों अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्वाहा। ॐ आँ क्रों ह्रीं० अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ सोमाय स्वाहा। सोमपरिजनाय स्वाहा। सोमानुचराय स्वाहा। सोममहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भूर्भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। हे सोमदेव स्वगुणपरिवारपरिवृत इदमर्घ्यं मित्यादि। यस्यार्थं। शांतिधारा, ॥ इति दशदिक्पाल पूजा॥

अभिषेक करने के स्थान पर जहां प्रतिमाजी स्थापन करना हो वहीं दश दिशाओं में दश दिक्पालों की स्थापना तथा उक्त रीति से पूजन करना चाहिये।

* श्रीवीतरागाय नमः *

श्रीमदाशाधरकृतः महाभिषेकः।

ॐ जय जय नमः सिद्धेभ्यः।

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सुदर्भाक्षते।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितास्तत्पादपुष्पस्रजः॥
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे।
मुद्राकंकणशेखरानपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे॥

॥ इति इन्द्रस्थापनं॥

ॐ कारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमोनमः॥ १॥
मंगलं भगवानर्हन् मंगलं भगवाञ्जिनः।
मंगलं प्रथमाचार्यो मंगलं वृषभेश्वरः॥ २॥
मंगलं प्रथमं लोकेषूत्तमं शरणं जिनं।
नत्वायमर्हतां पूजाक्रमः स्याद्विधि पूर्वकं॥ ३॥
विज्ञानं विमलं यस्य भासते विश्वगोचरं।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चितांघ्रये॥ ४॥

श्रीमज्जिनराजजन्मसमये स्नानक्रमप्रक्रियां
मेरोर्मूर्ध्निपयः पयोनिधिपयः पूर्णैः सुवर्णात्मकैः॥
कामं मत्प्रमितश्रियं घटशतैः शक्राचयश्चक्रिरे।
तामत्रार्यजनानुरागजननीं जातात्सत्रे प्रस्तुवे॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं भूः स्वाहा (प्रस्तावनाय पुष्पांजलिः) ।

श्रीमज्जिनेन्द्रकथिताय सुमङ्गलाय
लोकोत्तमाय शरणाय विनेजयन्तोः ।
धर्माय कायवचनादि त्रिशुद्धितोऽहं
स्वार्गापवर्गफलदाय नमस्करोमि ॥ ६ ॥

पुण्यबीजोर्जितक्षेत्रं स्नानक्षेत्रं जगद्गुरोः ।
शोधये शातकुम्भोरु कुंभ संभृत वारिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं क्ष्रीं भूः स्वाहा प्रवित्रतर जलेन भूमि शुद्धिं करोमि (जल के छींटों से भूमि शोधन करना चाहिये) ।

दुरंतमोह सन्तान कांतारदहन क्षमं ।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लवितांबरं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा (कर्पूर प्रज्वलन करके अग्नि प्रज्वलन करना चाहिये) ।

तुष्ठषष्टि सहस्रास्याप्यहीनां मोदहेतवे ।
सिञ्चामि सुधया भूमिं भव्यभानोर्महामहे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं क्ष्रीं भूः षष्टि सहस्र संख्येभ्यो नागेभ्योऽमृतांजलिं प्रसिञ्चामि स्वाहा (जल के छींटे देना) ।

[illegible]हानां धर्मनैश्चत्युदन्वतां ।
मरुधक्षेन्द्रमौलीनां दिक्षु दर्भान् क्षिपाम्यहं ॥१०॥

ॐ ह्रीं [illegible]य नमः स्वाहा । ब्रह्मादि दश दिक्षु दर्भाः । (दस दिशाओं में दर्भ क्षेपण करना) ।

तोय गन्धाक्षतैः पुष्पैः सन्नायैश्च यजामहे ।
यागभूमिं जिनेन्द्रस्य दीपधूपफलैरपि ॥११॥

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः । जलं । ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः । चन्दनं । ॐ ह्रीं अक्षतायनमः । अक्षतं । ॐ ह्रीं विमलायनमः । पुष्पं । ॐ ह्रीं परमसिद्धायनमः । नैवेद्य । ॐ ज्ञानोद्योतनायनमः । दीपं । ॐ श्रुतधूपायनमः स्वाहा । धूपं । ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः स्वाहा । फलं । ॐ ह्रीं भूर्भूमिदेवता इदं जलादिकमर्चनं गृह्णीध्वं २ नमः स्वाहा । अर्घं ।

यस्यार्थे क्रियते पूजा तस्य शान्तिर्भवेत् सदा ।
शातिंके पौष्टिकेचैव सर्व कार्येषु सिद्धिदा ॥१२॥

शांतिधारा । पुष्पांजलिः । मदीय परिणाम समान विमलतम सलिलस्नान पवित्री भूत सर्वाङ्गयष्टिः । सर्वाङ्गीणार्द्र हरिचन्दन सौगन्धि दिग्ध दिग्विवरो हंसांस धवलदुकूलांतरोयोत्तरीयः ।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रव हारिणी सर्वजन मनोरंजिनी परिधानोत्तरीय धार्गिण हं हं झं झं सं स तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा । वस्त्रावरणं ।

अतिनिर्मलमुक्ताफलललितं यज्ञोपवीतमतिपूतं ।
रत्नत्रयमिति मत्वा करोमि कलुषापहरणभिरामं ॥१३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रायनमः स्वाहा । अनेन मंत्रेण यज्ञोपवीतं धारयेत् ।

स्नातानुलिप्त सर्वाङ्गो धृत धौतांम्बरः शुचिः ।
दधे यज्ञोपवीतादीन् मुद्रा कंकण शेखरान् ॥१४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रायनमः स्वाहा । शेखरमंत्रः । तिलक मंत्रः ।

धृत्वा शेखरपट्टहारपदकं ग्रैवेयकालम्बकं ।
केयूरांगदमध्यबंधुरकटीसूत्रं च मुद्रान्वितं ॥

चंचत्कुंडलकर्णपूरममलं पाणिद्वये कंकणं ।
मञ्जीरं कटकं पदे जिनपतेः श्रीगंधमुद्रांकितं ॥१५॥

षोडशाभरणं ।

श्वेतसूत्रावृतान् पूर्णकुम्भान सदकभूषितान् ।
संस्थाप्य कोणकोष्ठेषु पुष्पाणि प्रक्षिपाम्यहं ॥१६॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशं स्थापयामि स्वाहा ।

॥ इति चतुःकलश स्थापनं ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्म तिगिंछकेशरी पुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगासिंधुरोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णकूलारूप्यकूला-रक्तारक्तोदाक्षीरांभोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितपरिपूरि-तनवरत्नगंधपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां ह्रीं असि आ उ सा नमः स्वाहा। इतिकल-शजलशुद्धिः । पुष्प अक्षत चंदन ले ऊपर मंत्र बोल कर चारो कलशों में क्षेपण करना ।

अभ्यर्च्य कलशांस्तोय प्रवाहैश्चन्दनैरहं ।
अक्षतैः कुसुमैश्चरुभिर्दीपधूपफलैरपि ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा । कल-शार्चनं । अर्घं ।

पाण्डुकाख्यशिलां मत्वा पीठ मेतन्महीतले ।
स्थापयामि जिनेन्द्रस्य मज्जनाय महत्तरं ॥१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठ स्थापनं करोमि स्वाहा । श्रीपीठ स्थापनं । भगवान स्थापन करने की जगह पुष्प क्षेपण करना ।

पादपीठकृतस्वर्गपादमूलजिनेशिनः ।
शैलेन्द्रस्नानपीठस्य पीठं प्रक्षालयाम्यहं ॥ १९ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठप्रक्षालनंकरोमि ।

क्षिपामि हरितान्दर्भान् पीठे पूतमनोहरान् ।
विधूताशेषसंतापान् दीप्तकांचननिर्मिते ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा॥ पीठे दर्भान्क्षिपेत् (दर्भक्षेपना)

प्रक्षाल्य पीठिकां प्रार्चे तोयैर्गंधैः सुतंदुलैः ।
प्रसूनैश्चरुभिर्दीपैर्धूपैर्नानाफलैरपि ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय नमः स्वाहा ।
पीठार्चनं । अर्घं ।

श्रीवर्णं विदधे शुभ्रैः सदर्कैः शुचिभिः फलैः ।
देवदेवस्य पीठेऽस्मिन् सर्वलक्षण संयुतैः ॥ २२॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीकार लेखनं करोमि । श्रीकार लेखनं ।

जलगंधाक्षतकुसुमैश्चरुप्रदीपधूपफलनिवहैः ।
जितकर्मरिपुं जिनपतिमर्चामि प्रबलया भक्त्या ॥२३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीयंत्रार्चनं करोमि स्वाहा । यंत्रार्चनं ।

जहां प्रतिमा अभिषेकार्थ स्थापित करनी हो उस जगह अर्घ चढ़ाना

जिनराज प्रतिबिंबं सकलजगद्भव्यपुण्यसंभावलम्बं ।
भक्त्या स्पृशामि परया निर्भूषमखिललोकभूषणममलं ॥२४॥

ॐ ह्रो धात्रे वषट्प्रतिमास्पर्शनंकरोमि स्वाहा । उपरका मंत्र बोल प्रतिमा स्पर्श करना और अभिषेकके लिए प्रतिमाजी लेना ।

द्वीपे नंदीश्वराख्ये स्वयममृतभुजोऽकृत्रिमांस्नापयेयु- ।
र्भावे भावार्हतो वा भवभयभिदया भाक्तिकाश्चैत्यगेहाः ॥
आनीयास्मिन् स्थवीयस्यतिविमलतमे कृत्रिमां स्नानपीठे ।
सद्भावैः स्थापयेऽर्हत्प्रतिकृतिमधुना यक्षयक्षीसमेतां ॥२५॥
प्रणमदखिलामरेश्वरमणिमुकुटतटांशुखचितचरणाब्जं ।
श्रीकामं श्रीनाथं श्रीवर्णे स्थापयामि जिनं ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वं शांतिं कुर्वंति श्रीवर्ण प्रतिमा स्थापनं करोमि स्वाहा । श्रीवर्णं प्रतिमा स्थापनं ।

श्रीपादपद्म युगलं सलिलैर्जिनस्य ।
प्रक्षाल्य तीर्थ जलपूततमोत्तमांगं ॥
आव्हानमंबुकुसुमाक्षतचन्दनाद्यैः
संस्थापनं च विदधेऽत्र च सन्निधानं ॥२७॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन श्रीपाद प्रक्षालनं करोमि स्वाहा । श्रीपाद प्रक्षालनं ।

करोमि परमां मुद्रां पञ्चानां परमेष्ठिनां ।
श्रीनिधेर्भव्यनाथस्य सन्निधौ त्रिजगद्गुरोः ॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं असि आ उ सा नमः पंचगुरुमुद्रावतरणं करोमि स्वाहा । पंचगुरु मुद्रावतरण ।

ॐ उसहाय दिव्वदेहाय सज्जोजादाय महापण्णाय अणंतचउठ्ठयाय परमसुहाय पइठ्ठियाय णिम्मलाय सयंभुवे अजरामरपदपत्ताय चउमुहाय परमेठ्ठिणे अरहंते तिलोयणा.ाय तिलोयपूजाय अठ्ठदिव्वदेवाय देवपरिपूजाय परमपद.. ममत्तहे सण्णिधाय स्वाहा ।

अनंतज्ञानदृग्वीर्य सुखरूप जगत्पते ।
पाद्यं समर्चयाम्यद्भिर्निर्मलैः पाद पंकजे ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हंत इदं पाद्यं गृह्णीध्वं २ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा। जलधारा। (भगवान ऊपर)।

कनत्कनकभृङ्गारनालाद्गलित वारिभिः ।
जगत्त्रितय नाथस्य करोम्याचमनक्रियां ॥३०॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं यं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं स्वाहा ।

॥ इति पाद्य आचमन क्रिया ॥

नीराजनविधिद्रव्यैर्वर्धमानैः फलैरपि ।
विदधामि जिनेंद्रावतारं पापोपशांतये ॥३१॥

ॐ ह्रीं समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि स्वाहा। दुरित-मस्माकमपनयतु भगवान् स्वाहा। नीराजनावतरणं। (कपूर जलाकर आरती करना)।

करोमिभक्त्या कुसुमाक्षताद्यैः सुसंभृतैः पाणिपवित्रपात्रे ।
जिनेश्वराणामिह पादपीठे प्रकाशमाह्वाननपूर्वमादौ ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अत्र एहि २ संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ट तिष्ट ठठः स्वाहा। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः जलं। ॐ ह्रीं परमात्मकेवलिभ्योनमः गन्धं। ॐ ह्रीं अनादिनिधनेभ्यो नमः अक्षतान्। ॐ ह्रीं सर्व नृसुरासुरपूजितेभ्यो नमः पुष्पं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त सुख-संतृप्तेभ्यो नमः चरुं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त दर्शनेभ्यो नमः दीपं।

ॐ ह्रीं अनन्तानन्त वीर्येभ्यो नमः धूपं। ॐ ह्रीं अनन्तानन्त सौख्येभ्यो नमः फलं।

सामोदैः स्वच्छतोयैरुपहिततुहिनैश्चन्दनै स्वर्गलक्ष्मी-
लीलाघ्यैरक्षतौघैर्मिलदलिकुसुमैरुद्गमैर्नित्यहृद्यैः ॥
नैवेद्यैर्नव्यजांबूनद मदद्मकैर्दीपकैः काम्यधूम-
स्तूपैर्धूपैर्मनोज्ञैर्गृहसुरभिफलैः पूजये त्वाऽर्हदीशं ॥३३॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परम ब्रह्मणे विनष्टाष्टकर्मणे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अथ क्षेत्रपाल पूजा।

अस्मिन् जैनमहामहोत्सवविधाविंद्रादिक्पालक
स्थित्यर्थंपरितो दिशास्वभिमुखं निक्षिप्यदर्भासनं।
आरोप्यार्घ्यमनर्घ्यमंत्र यजनैर्विघ्नौघविच्छित्तये
शक्राद्यैरभिपूज्यते तरुभुवि श्रीक्षेत्रपालाधिपः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण स्वायुधवाहनाचिन्हसपरिवार हे क्षेत्रपाल अत्रागच्छागच्छ संवौषट्स्वाहा। ॐ ह्रीं० अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्वाहा। ॐ ह्रीं० अत्रमम संन्निहितो भव भव वषट्स्वाहा।

सन्मंगलाद्यैर्वरभाजनस्थैः संपूर्णतोयादिसमन्वितैश्च।
रक्षन्तु चैत्यालयभूमिभागं श्रीक्षेत्रपालं परिपूजयामि ॥२॥

ॐ ह्रीं क्रों क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामि। शांतिधारा॥

अथ अर्हद्गद्यं।

निहतघनघातिदोषः, संप्राप्तातिशयपंचकल्याणः।
समवसृतिसभानाथो, जिनेश्वरोददातु मे बोधं॥

घातिघनपटल विघटनबात बिँबाय जातिजरारोगादि-दोषगिरिशंबाय कल्याणपंचकांचितवीतरागाय शल्यत्रया-तीतनित्यसुख बोधाय प्रातिहार्याष्टकालंकृतजिनेंद्राय भूतहित-समवसृतिराजितजिनेंद्राय समवसरणादिबहिरंगविभवेशाय । विमलगुणमणि गणविभूतिपरमेशाय द्रव्यगुणपर्याययुक्तचिद्रू-रूपाय भव्यजनवंदितानंदचिद्रूपाय वरगणधरप्रभृतिमुनि-निवहनाथाय निरुपमानंतबलकलितगुणयूथाय नवनरामर-सरसिजवहृत्कमलसूर्याय नवलब्धिलब्धशुद्धात्मसत्कार्याय त्रिषष्टिकर्ममलविलयनसमर्थाय दोषाष्टदशदूरपरमचित्स्वार्थाय दिव्यध्वनिप्रगटितात्मस्वरूपाय सुव्यक्तचैतन्यनित्यप्रभावाय स्याद्वादविद्याविलासिनीनंदाय विद्वज्जनानंदकंदनीकंदाय निर्मलनिजानंदभावार्थसौख्याय भर्माभतीर्थंकरपुण्यपुंजा-ख्याय चंद्रार्ककोटिसन्निभदिव्यदेहाय इन्द्रशतनमितवर-गुणगणसमूहाय लोकत्रयाशेषवस्तुविज्ञाताय नाकनायक-नमितपदकंजाताप परमपावनरूप देवाधिदेवाय परमकारु-ण्यरससंतृप्तजीवाय वृंदारकवृंदवंदनसमक्षाय वंदनामग-लोत्तम शरणभूताय जातात्मनेनमः । पूतात्मनेनमः । शुद्धा-त्मनेनमः ।

अथ बिरुदावलिः ।

श्रेयःपद्मविकासवासरमणिः स्याद्वादरक्षामणिः ।
संसारोरगदर्पगारुडमणिर्भव्यौघ चिंतामणिः ॥
अश्रांतान्वय शांतयुक्तिरमणिःसामंतमुक्तामणिः ।
श्रीमान् देवशिरोमणिर्विजयते श्रीवीतरागः प्रभुः ॥१॥

आहाराभयभेषज्यशास्त्रदानदत्तवधानानां खंडस्फुटित-जीर्णजिनचैत्यचैत्यालयोद्धारणैकधीराणां यात्राप्रतिष्ठादि

सप्तक्षेत्रधनवितरणैकशीलानां तर्कव्याकरणच्छन्दोऽलंकार-साहित्यसंगीतकाव्यनाटकाभिधान शास्त्रसरोजरसास्वादनमदो-त्करमधुकरसमाभरणानां निजकुल कमलविकाशनैक मार्तंडा-वताराणां श्रीकरवीरक्षेत्र श्रीवृषभदेवपदकमलाराधकानां श्री जैनसंघपुण्यार्थं मंगलार्थं तुष्टिपुष्ट्यारोग्यार्थं भव्यजन-क्रियमाणे जिनेश्वराभिषेके सर्वेंजनाः सावधाना भवंतु। पूर्वा-चार्येभ्यो नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥

अथ कलशोद्धारणम् ।

सूर्यगीतस्तुति ध्वानव्रातैः सद्धलिरोदसी ।
मया जिनाभिषेकाय पूर्णं कुम्भोऽयमुद्धृतः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशोद्धारणम् । पूर्ण कलश भगवान् के दक्षिण तरफ स्थापन करना । उसमें पुष्प अक्षत चन्दन ये द्रव्य (ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमः ते भगवते श्रीमते पद्म महा०) यह मंत्र बोल कर क्षेपण करना कलश ऊपर श्रीफल रखना चाहिये ।

अथ जलाभिषेकः ।

मर्तैरिव जिनेन्द्रस्य वारिभिस्तापहारिभिः ।
निर्मलं स्नापयामीशं विशुद्धं मद्विशुद्धये ॥ १ ॥

श्रीमद्भिः सुरसैर्निसर्गविमलैः पुण्याशयाभ्याहृतैः
शीतैश्चारुघटाश्रितैरवितथैः सन्तापविच्छेदकैः ।
तृष्णोद्रेकहरैरजः प्रशमनैः प्राणोपमैः प्राणिनां
तोयैर्जैनवचोमृतातिशयिभिः संस्नापयामो जिनं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं हं हं सं सं तं तं

पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रावय द्रावय नमः ते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

इति जलस्नपनं ।

शीतैर्जलैर्मलयजैर्बहुलैरखंडैः
शाल्यक्षतैः सुखकरैः कुसुमैर्हविर्भिः ॥
दीपप्रदीपपटलैः रुचिरैर्विचित्रैः
धूपैः फलैरपि यजे जिनमर्चयामि ॥

अर्घं ।

अथ नालिकेरादिरसाभिषेकः ।

सुस्निग्धैर्नवनालिकेरफलजै राम्रादि जातैस्तथा ।
पुण्ड्रेक्ष्वादिसमुद्भवैश्च गुरुभिर्पापापहैरञ्जसा ॥
पीयूषद्रवसन्निभैर्वररसैः संज्ञानसम्प्राप्तये ।
सुस्वादैरमलैरलं जिनविभुं भक्त्याऽनघं स्नापये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नालिकेराम्रकदलीद्राक्षादिरस स्नपनं ।

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नालिकेररसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । नालिकेर-स्नपनं नारीयेल केला द्राक्ष आदि से अभिषेक करना ।

वनसुनन्दसदक्षत पुष्पकैर्मनसि जातसुहव्यप्रदीपकैः ।
अनुपमागरुधूपसुसत्फलैर्जिनपतेः पदपद्मयुगं यजे ॥ ३ ॥

अथ आम्ररसाभिषेकः ।

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकादिभिः ।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर चूतरसेन जिनमभिषेचयामि । आम्ररस स्नपनं ।

उदक चन्दनतंदुल पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुलैर्जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

अर्घं ॥

अथ शर्कराभिषेकः ।

मुक्त्यंगनानामविकीर्यमाणैरिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः ।
माधुर्यधुर्यैर्वरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि ॥१॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरशर्करौघेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ॥ शर्करास्नपनं ॥

जलेन गंधेन सदक्षतैश्च पुष्पेण शाल्यन्नचरुष्करेण ।
दीपेन धूपेन फलेन भक्त्या सुरासुरार्च्यं जिनमर्चयामि ॥२॥

अर्घं ॥ २ ॥

अथ इक्षुरसाभिषेकः ।

देवानीकैरनेकैः स्तुतिशतमुखरैर्वीक्षिता याऽतिहृष्टैः ।
शक्रेणोच्चैः प्रयुक्ता जिनचरणयुगे चारुचामीकराभा ॥
धारांभाजस्रितीक्षुप्रचुरवररसश्यामला वो विभूत्यै ।
भूयात् कल्याणकाले सकलकलिमलक्षालनेऽतीवदक्षा ॥१॥

प्राणिनां प्रीणनं कर्त्तुं दक्षैरिक्षुरसैर्मुदा ।
सौवर्णकलशैः पूर्णैः स्नापयेऽहं निरंजनं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं पवित्रतरेक्षुरसेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

॥ इक्षुरसस्नपनम् ॥

शीतोदकैर्मंजुलगंधलेपैः सत्तंडुलैः पुष्पवरैश्च हव्यैः ।
दीपैश्च धूपैरुचिरैः फलौघै रंचामि भक्त्या जिननाथमेनम् ॥

अर्घं ॥ ३ ॥

अथ घृताभिषेकः ।

दंडीभूततडिद्गुणप्रगुणया हेमाद्रिवत्स्निग्धया ।
चञ्चच्चम्पकमालिकारुचिरया गोरोचनापिंगया ॥
हेमाद्रिस्थलसूक्ष्मरेणुविलसद्वातूलिकालीलया ।
द्राघीयोघृतधारया जिनपतेः स्नानं करोम्यादरात् ॥१॥
कनत्कनकसंजातपालिकारुचिरत्विषा ।
प्राज्येनाज्येन निर्वाणराज्यार्थं स्नापयाम्यहं ॥२॥
ॐ ह्रीं पवित्रतरघृतेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । घृतस्नपनं ।
अंचामि सलिलमलयजतंडुलपुष्पान्नदीपधूप फलनिवहैः ।
नमदमरमौलिमालालालितपदकमलयुगलमर्हंतं ॥३॥

अर्घं०

अथ क्षीराभिषेकः ।

माला तीर्थकृतः स्वयंवरविधौ क्षिप्ताऽपवर्गश्रिया ।
तस्येयं सुभगस्य हारलतिका प्रेम्णा तया प्रेषिता ॥

वर्त्मन्यस्य समीक्षितेति बिनतद्दग्वीथि शंकाकृता ।
कुर्मः शर्म समृद्धये भगवतः स्नानं पयोधारया ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरक्षीरेण जिनमभिषेचयामि स्वाहा । क्षीरस्नपनं ।

सलिलघनसारसदकप्रसवहविर्दीपधूपफलनिवहैः ।
नमदमरमौलिमालालालितपदकमलयुगलमर्हतं ॥ ३ ॥

अर्घं० ।

अथ दध्यभिषेकः ।

शुक्लध्यानमिदं समृद्धिमथवा तस्यैव भर्तुर्यशो
राशीभूतमितं स्वभावविशदं वाग्देवतायाः स्मितं ।
आहो श्वेतसुपुष्पवृष्टिरियमित्याकारमातन्वता
दध्नैनं हिमखंडपांडुररुचा संस्नापयामो जिनं ॥१॥

लोकत्रयपतेः कीर्तिमूर्तिसाम्यादिव स्वयं ।
संलब्धस्तब्धभावेन दध्ना मज्जनमारभे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरदध्ना जिनमभिषेचयामि स्वाहा । दधिस्नपनम् ।

सलिलमलयजसदक कुसुमसान्नायप्रदीपधूपफलैः ।
तवक शांतिधाराद्यस्र ! मंगलद्रव्यैराराधयामि ॥ ३ ॥

अर्घं० ।

अथ कल्कचूर्णोद्वर्तनम् ।

पिष्टैश्च कल्कचूर्णैश्च गंधद्रव्यसमुद्भवैः ।
जिनांगं संगताज्याद्यैः स्नेहपूतं करोम्यहं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर कल्कचूर्णेन जिनांगोद्वर्तनं करोमि स्वाहा। सुगन्ध कल्कचूर्णोद्वर्तनम्।

सुगन्धित द्रव्योंसे भगवान की प्रतिमाजीका लेपन करना।

अथ लाजादिचूर्णोद्वर्तनम्।

सुगन्धित (खस आदि) से लेपन करना।

सकलकलमलाजैर्मल्लिकाफुल्लजातै-
रिव सितसमवर्णैर्लाजचूर्णप्रपूर्णैः।
बहुलपरिमलौघैर्हारहारिद्रचूर्णै-
र्जिनपतिमहमुच्चैः संप्रसिंचे रजोभिः॥ १॥

ॐ ह्रीं पवित्रलाजादिचूर्णोद्वर्तनम्।

अथ नीराजनावतरणम्।

वर्णानां प्रमुखैर्द्रव्यैर्जिनेन्द्रमवतारये।
संसारसागरोत्तारं पूतं पूतगुणालयं॥ १॥

ॐ ह्रीं समस्त नीराजनद्रव्यैर्दुरितमस्माकमपनयतु भगवान् स्वाहा। नीराजनावतरणं। कर्पूर अगरादि से भगवान की आरती करना।

अथ कषायोदकस्नपनम्।

कंकोलैर्ग्रन्थिपर्णागरुहिनजटाजातिपत्रैर्लवंगैः
श्रीखंडैलादिचूर्णैः प्रतनुभिरवधूलींदुधूलीविमिश्रैः॥
आलिप्तोद्वर्तशुद्धैः समलयजरसैः कालमैः पिष्टपिंडैः
प्लक्षादित्वक्कषायै जिनतनुमभितः स्नेहमाक्षालयामि॥१॥

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधिप्रवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेवं
कालेयकुंमकुरसोत्कटचारुपूरैः ॥ ३ ॥

क्षीरभूरुहसंजातत्वक्कषायजलैरहं ।
मज्जातमलविच्छित्यै मज्जनं विदधे विभोः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतर कषायोदकेन जिनमभिषेचयानि स्वाहा । इति सर्पौषधिरस स्नपनं ।

अथ चतुष्कोणकुम्भोदकस्नपनं ।

हृद्योद्वर्तनकल्कचूर्णनिवहैः स्नेहापनोदं तनोः
वर्णाढ्यैर्विविधैः फलैश्च सलिलैः कृत्वाऽवतारक्रियां ।
संपूर्णैः सकृदुद्धृतैर्जलधराकारैश्चतुर्भिर्घटैः
रंभःपूरितदिङ्मुखैरभिषवं कुर्मस्त्रिलोकीपतेः ॥ १ ॥

अम्भोभिः सम्भृतैः कुम्भैरंभोधरनिभैः शुभैः ।
कोणस्थैरभिषिंचामि चतुर्भिर्भुवनप्रभुं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पवित्रतरचतुष्कोणकुंभोदकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा । चतुः कलशस्नपनं ।

अथ चन्दनानुलेपनम् ।

संसिद्धशुद्धया परिहारशुद्ध्या कर्पूरसंमिश्रितचंदनेन ।
जिनेंद्रदेवे सुरपुष्पवृष्टिं विलेपनं चारु करोमिभक्त्या ॥

चन्दनानुलेपनम् ॥

अथ पुष्पोद्धारणम् ।

वासंतिकाजातिशिरीषवृन्दैर्बधूकवृन्दैरपि चंपकाद्यैः ।
पुष्पैरनेकैरलिभिर्हृताग्रैः श्रीमज्जिनेंद्रांघ्रियुगं यजेऽहं ॥१॥
पुष्पोद्धारणम् ॥

अथ गंधोदकस्नपनं ।

कर्पूरोल्बणसांद्रचंदनरसप्राचुर्यशुभ्रत्विषा
सौरभ्याधिकगंधलुब्धमधुपश्रेणीसमाश्लिष्टया ।
सद्यः संगतगांगयामुनमहास्रोतोविलासश्रिया
सद्गंधोदकधारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियै ॥१॥
गंधोदकैर्भ्रमद्भृङ्गसंगीतध्वनिबन्धुरैः ।
अभिषिंचामि सम्यक्त्वरत्नाढ्यविमलप्रभुम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तयेनमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा पवित्रतर गन्धोदकेन जिनमभिषिंचामि। मम सर्वशांतिं कुरु कुरु । तुष्टिं कुरु कुरु। पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा । गंधोदक स्नपनं ।

स्नानानंतरमर्हतः स्वयमपि स्नानांबुशेषार्द्रितो
वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैर्दीपैः सुधूपैः फलैः ।
कामोद्दामगजांकुशं जिनपतिं स्वभ्यर्च्य संस्तौति यः
स स्यादारविचंद्रमक्षयसुखः प्रख्यातकीर्तिध्वजः ॥१॥
इति अर्घं, अर्चनाफलम् ।

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं ।
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकम् ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंबृद्धिसंपादकं ।
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकं ॥१॥

स्नानस्य गंधोदकं। गंधोदक लेना।

इति महाभिषेकः।

अथ पूजा प्रारभ्यते। तत्र स्वस्ति मंगल विधानं।

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु। णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं। णमो उवज्झायाणं, णमो लोये सव्व साहूणं। ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। पुष्पांजलि क्षिपेत्। चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं। सिद्धमंगलं साहुमंगलं। केवलिपण्णत्तोधम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा- अरहंतलोगुत्तमा। सिद्धलोगुत्तमा। साहूलोगुत्तमा। केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि। अरहंत सरणं पव्वज्जामि। सिद्ध सरणंपव्वज्जामि। साहु- सरणं पव्वज्जामि। केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ २ ॥

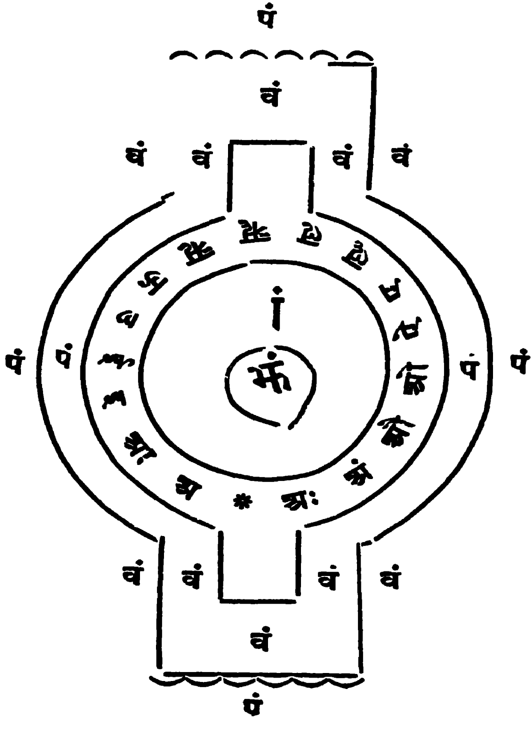
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ४ ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतःप्रणम्याम्यहं ॥ ५ ॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ६ ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

अथ सकली करणम् ।

स्वयंभुवं महादेवं ब्रह्माणं पुरुषोत्तमं ।
जिनेन्द्रचंद्रमानम्य वक्ष्ये देवार्चनक्रमं ॥ १ ॥
इंद्रश्चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यज्ञांगसज्जनम् ।
यागमंडलपूजार्थं परिकर्माचरेदिदं ॥ २ ॥
स्नानानुस्नानभागंतधौतवस्त्रो रहःस्थितः ।
कृतेर्यापथ संशुद्धिः पर्यङ्कस्थोऽमृतोक्षितः ॥ ३ ॥
दहनप्लावने कृत्वा दिव्यस्वांगे दीक्ष्य च ।
न्यस्य पञ्चनमस्कारान् प्रयुक्तगुरुमुद्रिकः ॥४॥

[illegible] पूरकेण व्याप्ताशेषजगत्त्रयं ।
[illegible] स्फटिकसंकाशं प्रातिहार्यादिभूषितं ॥५॥
पादांतेन नमद्विश्वं स्फूर्जंतं ज्ञानतेजसा ।
परमात्मानमात्मानं ध्यायन् जप्त्वाऽपराजितं ॥६॥
परिणामविशुद्ध्या [illegible] पुण्यपुञ्जभाक् ।
ध्वस्तपापचयः कुर्याज्जिनयज्ञांगसंविधीन् ॥ ७ ॥



झं ठं स्वरावृतं तोय मंडलद्वय वेष्टितं।
तोये न्यस्याग्रतर्जन्या तेनानुस्नानमावहे. ॥ १ ॥
अर्धचंद्रघटीरूपं पंचपत्रांबुजाननं।
नांतलांताप्तदिक्कोणं धवलं जलमंडलं ॥ २ ॥

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। इत्यमृतस्नान मंत्रः अनुस्नानं।

इस मंत्र से अमृत स्नान करे।

इस मंत्र को एक रकाबी में लिखे और सकलीकरण करनेवाला जीमणां हाथ की तर्जनी अंगुली से ऊपर का मंत्र बोल माथे ऊपर छांटै—

पृथग्विद्वैकवाक्यांतमुक्तोच्छ्वासं जपेन्नव।
वारान् गाथान् प्रतिक्रम्य निषिध्यालोचयेत्तथा ॥१॥

पडिक्कमामि भंते ईरियावहियाए। विराहणाए। अणागुत्ते। आइग्गमणे। णिग्गमणे। ठाणे गमणे। चक्कमणे। पाणुग्गमणे। बीजुग्गमणे। हरिदुग्गमणे। उच्चारपस्सवण खेल सिंहाणय-वियडिपइट्ठावणियाए। जे जीवा। ए इंदिया वा। वी इंदिया वा। ति इंदिया वा। चउरिंदिया वा। पंचेंदिया वा। पणोल्लिदा वा। पिल्लिदा वा। संघट्टिदा वा। संघादिदा वा। ओद्दाविदा वा। परिदाविदा वा। किरिंछिदा वा। लेस्सिदा वा। छिंदिदा वा। भिंदिदा वा। ठाणदो वा। ठाणचक्कमणदो वा। तस्स उत्तरगुणं। तस्स पायच्छित्तकरणं। तस्स विसोही-करणं। णमोकारं पज्जुवासं करेमि। तावकायं। पावकम्मं। दुच्चरियं वोस्सरामि। ॐ णमो अरहंताणं। णमो सिद्धाणं।

णमो आइरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमोलोए सव्वसाहूणं।
(णमोकार मंत्र का नव बार जाप करना)

ॐ नमः परमात्मने नमोऽनेकांताय शांतये।

ईर्यापथि प्रचलताद्यमया प्रमादा-
देकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा।
निर्वर्तिता यदि भवेद्युगांतरीक्षा
मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥ १ ॥

इच्छामिभंते ईरियावहमालोचेउं। पुव्वुत्तरदक्षिणपश्चिम चउदिसु। विदिसासु। विहरमाणेण। जुगुत्तरदिट्ठिणा। दठ्ठवा। डवडवचरियाए। पमाददोसेण। पाणभूद जीव-सत्ताणं। एदेसिं उवघादो। कदोवा। कारिदो वा। किरन्तो वा। सयणुमणियं। तस्समिच्छामि दुक्कडं।

पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना।
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितं॥
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र! भवतः श्रीपादमूलेऽधुना।
निंदापूर्वमहं जहामि सततं निर्वृत्तये कर्मणां॥

ईर्यापथ शोधनं।

गुरुमुद्राग्रे भूः झं वं ह्वः पोहोभ्योऽमृतैः स्वकीयप्रवहद्भिः सिच्यमानं स्वं ध्यायन्मंत्रमिमं पठेत्। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां ह्रीं ह्रीं द्रावय द्रावय हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

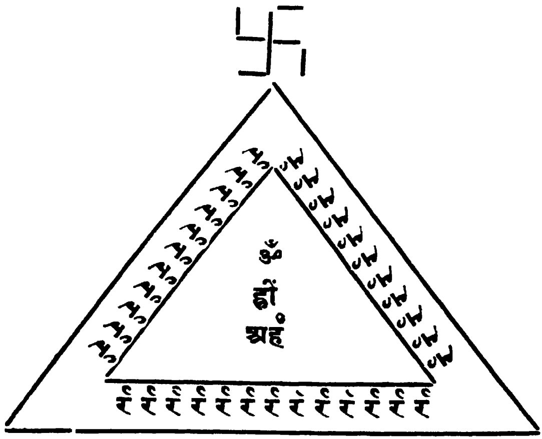
(यह मंत्र अमृत स्नान का है)

दोनों हाथों की पांचों अंगुलियां लम्बी कर के दाहिने हाथ की सब अंगुलियों पर अंगुष्ठ की तरफ से अ सि आ उ सा लिखना चाहिये और अ सि आ उ सा के ऊपर की

तरफ सं वं ह्वः पः हः लिखना चाहिये । फिर दोनों हाथ जोड़ मस्तक नमा कर हाथ माथे पर रख और पूर्वोक्त यंत्र से जल ले उक्त मंत्र बोल माथे पर छींटना चाहिये ।

अग्निमंडलमध्यस्थरेफैर्ज्वाला शतांकुरैः ।
सर्वांगदेशगैर्विश्वग्धूयमानैर्नभस्वता ॥

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते जिन भास्करस्य बोध सहस्र किरणैर्ममकर्मेन्धनद्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा । द्रव्य शोषणं ।



(अग्नि मंडल) यह यंत्र पान पर लिख कपूर जलाना चाहिये ।

[illegible]कोणांतर्गतरेफं शिखावृतं ।
अग्निमंडलमोंकारं गर्भरक्ताभमास्थितं ॥
सप्तधातुमयं देहं देहेन्द्रं प्रार्चिषां चयैः ।
सर्वाङ्गदेशगैर्विश्वग्धूयमानैर्नभस्वता ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः ॐ ४ रं ४ हम्ल्व्र्यूं जं २ सं २ दह २

विकर्ममलं दह २ दुःखं दह २ हूं फट् घे २ स्वाहा। इत्युच्चार्य कर्मेन्धनानि स्मरेत्। दहनं॥

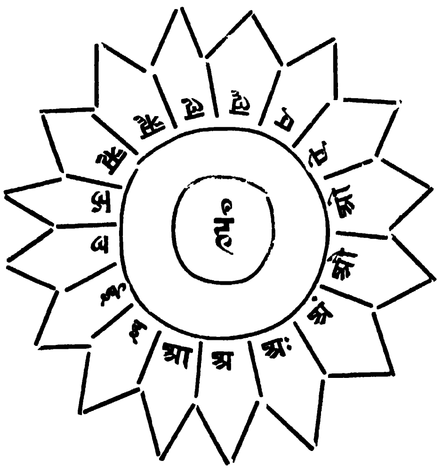
(ऊपर का मंत्र बोल यंत्र जो प्रथम पान ऊपर लिखा है उस पर जो कर्पूर जलै उससे यह समझना चाहिये कि ये कर्म जल रहे हैं।

नाभिस्तु सुस्वरद्व्यष्ट पत्राब्जांतरमर्हतः।
दहेद्दीपौघरुद्यद्भिरष्टकर्ममयं वपुः॥

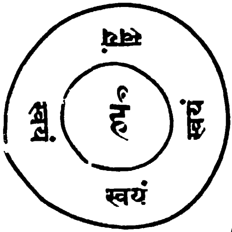
वृत्तात्सबिन्दुदिक्कोण स्वायाद्गोमूत्रिकाकृतेः।
कृष्णाद्वायुपुराद्वातैः प्रेरयेद्भस्मवायुभिः॥

व्योमव्यापिघनासारैः स्वमालाव्यामृतस्रुतं।
स्वे स्वं ध्यायन् सृजेद्देवममृतैरन्यदिंदुवत्॥

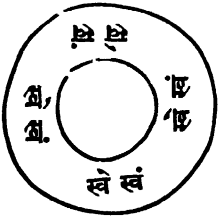
नाभि मंडल।



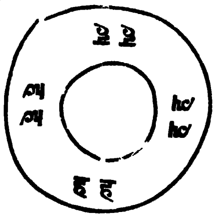
वायु मंडल।



वरुण मंडल।



आकाश मंडल।



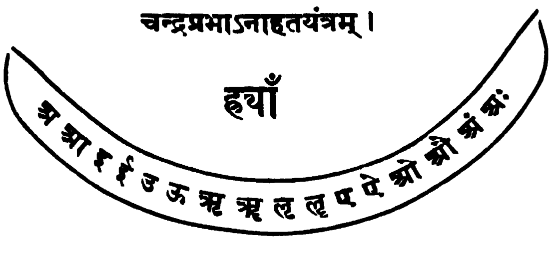
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिन प्रभञ्जनाय कर्मभस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा।

ऊपर का मंत्र बोल कर कर्म भस्म हुये बाद उसकी राख उड़ गई ऐसा विचार करना चाहिये और उक्त अग्निमंडल आदि पांचों यंत्रों का मन में ध्यान करना चाहिये।

अथ हस्त संघटनम्।

करमध्ये लिखेद्यंत्रं काश्मीरादिसुमिश्रितैः।
रविसोमसमुद्धार्यं तन्मध्ये च स्वनाहतं॥ १॥

चन्द्रप्रभाऽनाहतयंत्रम्।



प्रद्मप्रभाऽनाहतयंत्रम् ।



ऊपर के दोनों यंत्रों को सकलीकरण करने वाला एक को दाहिने ओर एक को वाम हाथ में लिखे । यदि ऐसा न करे तो पान पर लिख कर पानों को दोनों हाथों में रखले ।

हस्तद्वयकनीयस्याद्यंगुलीनां यथाक्रमं ।
...लरेखात्रयस्योर्ध्वमग्रे च युगपत्सुधीः ॥
न्यसेोंह्रामादि होमाढ्यान् नमस्कारान् करौ मिथः ।
संयोज्यांगुष्ठयुग्मेन व्यस्तान् स्वांगेषु विन्यसेत् ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा हस्त संघटनं करोमि स्वाहा । हस्त संघटनं ॥

ऊपर के दोनों यंत्रों से उल्लिखित हाथों को पांचों अंगुलियां लम्बी कर दाहिने हाथ की पांच अंगुलियों ऊपर अंगुलियों के मूल में अंगूठा के अनुक्रम से

"ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा, ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं स्वाहा, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा ।

(इस प्रमाण णमोकार मंत्र लिख हाथ जोड़ना) ।

इति सकलीकरणम् ।

सकली करण किये बाद जिन सेनाचार्य कृत सहस्र नाम बोल एक एक दशक के दश अर्घ चढ़ाना।

सहस्र नाम के पाठ के पश्चात् नीचे प्रमाण स्वस्तिविधान बोलना।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु—
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाऽभ्यधायिं ॥ १ ॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभावमहिमोदय सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जितदृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥ २ ॥

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥ ३ ॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवलान्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमियज्ञम् ॥ ४ ॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तमपावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।

अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ

पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ ५ ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः । श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः । श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः । श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः । श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः । श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः । श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः । श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः । श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः । श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः । श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः । श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः

स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।

दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १ ॥

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं

संभिन्नसश्रोतृपदानुसारि ।

चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ २ ॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा-

दास्वादनघ्राणविलोकनानि ।

दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः

स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ३ ॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः
प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ४ ॥
जंघावलिश्रेणिफलांबुतन्तु—
प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः ।
नभोंऽगणस्वैरविहारिणश्च
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ५ ॥
अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि
लघिम्नि शक्ता कृतिनो गरिम्णि ।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ६ ॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं
प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं
घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशी-
र्विषंविषादृष्टिविषं विषाश्च ।

सखिल्ल विड्जल्लमलौषधीशाः
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ९ ॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो
मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥

इति स्वस्ति मङ्गल विधानम् ।

स्वस्ति मंगल विधान पीछे जो उद्यापन करना हो तो प्रथम देवपूजा, शास्त्रपूजा, गुरुपूजा, सिद्धपूजा, कलिकुंड-पूजा, इस प्रमाण से पांच पूजाएं करना और पीछे उद्यापन प्रारम्भ करना ।

अथ चरित्र शुद्धि विधानम् ।

शक्रेणाभ्यर्चितं पूज्यं सिद्धं तद्वक्त्रजां गिरम् ।
गौतमादीन्नमस्कुर्वे प्रारब्धव्रतसिद्धये ॥ १ ॥
चारित्रशुद्धिसंज्ञं स्याद्व्रतं त उपवासकाः ।
चतुर्दशसु जीवस्थानेष्वहिंसार्थमेव हि ॥ २ ॥
मनो वाक्कायजैर्योगै कृतादित्रिविधैस्तथा ।
चतुर्दशोपवासा गुणिता आद्यमहाव्रते ॥ ३ ॥
भवंति व्रतिनां सर्वे षट्त्रिंशत्यधिकं शतम् ।
दयाव्रतस्य संपूज्यास्तद्दलेषु यथाक्रमम् ॥ ४ ॥
भैद्यास्वपत्तपैशून्यक्रोधलोभात्मशंसनाः ।
परनिंदा इमेथष्ट भेदाः संवर्तितंस्त्रिभिः ॥ ५ ॥

योगैः कृतादिभिः सर्वे स्पुर्द्वासप्ततिरेवहि ।
सत्य व्रतविशुद्धयर्थं संपूज्यास्तद्दलेषु च ॥ ६ ॥
ग्रामारण्यखलैकान्तैरन्यत्रोपध्यनुक्तकैः ।
संपृष्ट ग्रहणैः प्राग्वत् द्वासप्ततिरमी मता ॥ ७ ॥
महाव्रत तृतीयस्योपवासाः शर्मसागराः ।
अचौर्यव्रतशुद्धयर्थं संपूज्यास्तद्दलेषु च ॥ ८ ॥
नृदेवाचित्त तिर्यक्स्त्रीरूपे पंचेन्द्रिया हने ।
नवघ्ने ब्रह्मचर्ये खुः शतं तेऽशीति संपुतं ॥ ९ ॥
आद्यौ चतुःकषायाः स्पुर्नोकषायास्तथा नव ।
मिथ्यात्वेन सहैतेऽभ्यंतरा ग्रन्थाश्चतुर्दश ॥ १० ॥
क्षेत्रं वस्तु धनं धान्यं द्विपदं च चतुष्पदम् ।
आसनं शयनं कुप्यं भांडं बाह्या इमे दश ॥ ११ ॥
योगादिभिर्नवघ्नाश्च चतुर्विंशपरिग्रहाः ।
द्विशतं षोडशाग्रं स्युः प्रोषधा मिलिता दले ॥ १२ ॥
सर्वे शुद्धिकरा बाह्याभ्यंतरादिमलापहाः ।
अन्त्य महाव्रतस्यैव मुनीनां सुखवार्द्धयः ॥ १३ ॥
षष्ठे दशोपवासाः स्पुरनिच्छा नवकोटिभिः ।
अणुव्रते निशाभुक्तिदोषहान्यै सुयोगिनाम् ॥ १४ ॥
मनोवाक्कायगुप्तीनां प्रत्येकं प्रोषधा नव ।
सर्वे गुप्तिविशुद्धयर्थं सप्तविंशतिरेवहि ॥ १५ ॥
ईर्याग्रहणनिक्षेपोत्सर्गाख्यसमितित्रिके ।
समितिविशुद्ध्यर्थं सर्वे ते सप्तविंशतिः ॥ १६ ॥

सम्मतव्यवहारप्रतीत्यसंभावनोपमाः ।
भावो जनपदो नाम स्थापनारूपसंज्ञकाः ॥ १७ ॥
सुभाषायामिमे सत्यप्रकारा दश एवहि ।
नवभिर्गुणिताः सर्वे नवतिः स्युर्चतुर्थकाः ॥ १८ ॥
एषणा समितौ दोषाः षट्चत्वारिंशदेवहि ।
नवघ्नास्तेऽखिला एवं ह्यपवासा दलेषु च ॥ १९ ॥
चतुः शतानि शुद्ध्यर्थं चतुर्दशयुतान्यपि ।
एषणासमितेः कृत्स्नदोषनाशकराः पराः ॥ २० ॥
सर्वे पिंडीकृताः प्रोषधाश्चारित्रविधायिनः ।
शतानि द्वादशैव स्युश्चतुस्त्रिंशद्युतान्यपि ॥ २१ ॥
स्वस्तिकं रचमेत्प्रातः सहस्रं द्विशतान्वितं ।
चतुस्त्रिंशद्युतं चाब्जमध्ये चापि सकर्णिकम् ॥ २२ ॥
आदौ यवारकं कर्म क्रियते मंडयोतमः ।
ततो गंधकुटी पूजा जिनसिद्धर्षिपूजनम् ॥ २३ ॥
कुमार द्वारपालादि परमेष्ठिप्रपूजनम् ।
तथा निष्क्रमणं चापि करणीयं विशेषतः ॥ २४ ॥
सुसामग्रीं विलोक्यादौ धृतधौतांबरः सुधीः ।
स्नानानुस्नान संयुक्तः पूजयेत्पंडितो जनः ॥ २५ ॥

एतत्पाठं पठित्वा श्रीजिनोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।
स्व भिन् सं ौषडिदित्यादिना आह्वाननं स्थापनं सन्निधि करणं च विधयेम् ।

अथाष्टकम् ।

कर्पूरपूरवर मिश्रित चारुनीरै-
स्तीर्थोदकैः कनककुँभभृतैसुयूतैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

काश्मीरजन्महिमचंदनसद्रसौचैः-
सद्गंधलुब्धमधुपाश्रितझंकृतैस्तैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेन्द्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनेंद्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीजीरसालजनितैर्विशदैरखंडै
हृद्घ्राणनेत्रतनुतृप्तिकरैर्मनोज्ञैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
तंपूजमामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
अक्षतम् ॥

सच्चंपकैर्वरवसन्तसुमध्यिकाब्जैर्जा-
तीजपावकुलकेलद्विजैः प्रसूनैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
पुष्पम् ॥

सत्फेणिकावटकमंडकघेवराद्यैः
सद्ग्रंथजनैर्घृतदधीक्षुरसैर्विशुद्धैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
नैवेद्यम् ॥

कर्पूरजैर्घृतभवैः शुभरत्नदीपै-
र्दूरीकृतांधतमसैर्वयनप्रमोदैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
दीपम् ॥

कृष्णागुरुत्रिदशदारुसुचंदनोत्थैर्धूपैः
प्रधूपितदिगेणदृगाननाब्जैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
धूपम् ॥

श्रीमातुलिंगसुरसाल कुकुंदराल-
द्राक्षासुपूगकदलीभवसत्फलौघैः ।
चारित्रशुद्धिसुविधौ हि जिनेंद्रवर्यं
संपूजयामि भवसंभवतापशांत्यै ॥
फलम् ॥

वार्गंधतंदुललतान्तचरुप्रदीपैर्धूपैः
फलैर्विरचितैःशुभहेमपात्रैः ।

संपूजयामि जिननाथमहं सुभक्त्या

त्रैलोक्यमंगलकरं सततंमहार्घैः ॥

अर्घम् ॥

अथ दयाव्रत पूजा ।

(दयाव्रतस्य १२६ भेदास्तेषां प्रत्येकपूजनम् ।)

बादरैकाक्षपर्याप्तमनसा कृतहिंसनम् ।

तद्दोषघ्नं यजाम्यत्र जलगंधाक्षतादिभिः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तस्थूलैकेन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय जलाद्यर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर्याप्तबादरैकाक्षमनसा कारिताघकम् ।

तद्दोषघ्नं यजाम्यत्र जलगंधाक्षतादिभिः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तबादरैकेन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसानिवारकाय जिनायार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

पर्याप्तबादरैकाक्षमनसाप्यनुमोदनम् ।

तद्दोषघ्नं यजाम्यत्र जलगंधाक्षतादिभिः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तबादरैकेन्द्रियजीवमनसानुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।

बादरैकाक्षपर्याप्तवचसाकृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तवचनकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ।

पर्याप्तबादरैकाक्षवचसाकारिताघकम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तवचनकारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ।

सुपूर्णबादरैकाक्षसुवचोनुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तवचोनुमोदितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥

सुपूर्णबादरैकाक्षकायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तकायकृतहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥

पर्याप्तबादरैकाक्षकायेन कारिताघकम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरपर्याप्तैकेन्द्रियजीवकायकारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ८ ॥

सुपूर्णबादरैकाक्षकायतोऽप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं बादरपर्याप्तकेन्द्रियकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ९ ॥

सुसूक्ष्मैकाक्षपर्याप्ते मनसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १० ॥

पर्याप्तसूक्ष्मकैकाक्षे मनसा कारिताघकम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ११ ॥

पर्याप्तसूक्ष्मकैकाक्षे मनसाप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनोऽनुमोदित हिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १२ ॥

पर्याप्तसूक्ष्मकैकाक्षे वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्त सूक्ष्मैकेन्द्रियजीव वचः कृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १३ ॥

सुसूक्ष्मैकाक्षपर्याप्ते वचसा कारिताघकम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव वचन कारितहिंसा निवारकाय जिनायार्घम् ॥ १४ ॥

सुसूक्ष्मैकाक्षपर्याप्ते वचसाऽप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीववचोनुमोदितहिंसा निवारकाय जिनायार्घम् ॥ १५ ॥

पर्याप्त सूक्ष्मकैकाक्षे कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्त सूक्ष्मैकेन्द्रियजीव कायकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १६ ॥

सूक्ष्मपर्याप्तकैकाक्षे कायेनाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवकायकारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १७ ॥

सूक्ष्मपर्याप्तकैकाक्षे कायेनाप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायानुमोदितहिंसानिवार-काय जिनायार्घम् ॥ १८ ॥

द्व्यक्षपर्याप्तजंतूनां मनसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवमनःकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ १९ ॥

जीवे पर्याप्तकेद्व्यक्षे मनसा कारिताघकम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ २० ॥

पर्याप्तद्व्यक्षजंतूनां मनसाप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवमनोऽनुमोदितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ २१ ॥

पर्याप्तके द्व्यक्षजीवे वचसा कृत हिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ २२ ॥

पर्याप्तद्व्यक्षजंतूनां वचसाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रियजीववचनकारितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ २३ ॥

द्व्यक्षपर्याप्तजंतूनां वचसाऽप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ २४ ॥

पर्याप्तद्व्यक्षजंतूनां कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रियकायकृतहिंसानिवारकाय जिनाया-र्घम्० ॥ २५ ॥

द्व्यक्षपूर्णकजंतूनां कायेनाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्त द्विन्द्रियकायकारितहिंसानिवारकाय जिना-यार्घम् ॥ २६ ॥

पूर्णकद्व्यक्षजंतूनां कायेनाऽप्यनुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तद्वीन्द्रिय कायानुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २७ ॥

त्र्यक्षपर्याप्तजंतूनां मनसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २८ ॥

पर्याप्तत्र्यक्ष जंतूनां मनसाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २६ ॥

जीवपर्याप्तकत्र्यक्ते मनसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवमनोऽनुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३० ।।

सुपूर्णत्र्यक्षजंतूनां वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्त त्रीन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ।। ३१ ।।

पर्याप्त त्र्यक्तजंतूनां वचसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रिय जीववचनकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३२ ।।

त्र्यक्षसंपूर्णजंतूनां वचसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३३ ।।

त्र्यक्षपर्याप्तजंतूनां कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३४ ।।

सुपूर्ण त्र्यक्तजंतूनां कायेन कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकायकारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३५ ।।

त्र्यक्ष संपूर्णजंतूनां कायेनाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३६ ।।

पूर्णतुर्याक्षजंतूनां मनसाकृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ।। ३७ ।।

तुर्याप्तपूर्णजंतूनां मनसा कारितं च मत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३८ ॥

तुर्याप्तजंतुपूर्णेषु मनसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवमनाऽनुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३९ ॥

पूर्णानां चतुरक्षाणां वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रिय जीववचनकृतहिंसा निवारकाय जिनायम् ॥ ४० ॥

पर्याप्तचतुरक्षाणां वचसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीववचनकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ४१ ॥

चतुरक्षेषु पूर्णेषु वचसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रिय जीववचनानुमोदितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ४२ ॥

पूर्णचतुरक्षाणां कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रिय जीवकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ४३ ॥

पर्याप्तचतुरक्षाणां कायेनाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीव कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ४४ ॥

पर्याप्तचतुरक्षाणां कायेनाघानुमोदम् । तद्दोषघ्न०

ॐ ह्रीं पर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवकायानुमोदितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ४५ ॥

संज्ञिपंचाक्षपूर्णेषु मनसाकृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रिय जीवमनः कृतहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ४६ ॥

पूर्णसंज्ञिसुपंचाक्षे मनसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रिय जीवमनः कारितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ४७ ॥

संज्ञिपंचाक्ष पूर्णेषु मनसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवानुमोदितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ४८ ॥

पंचाक्षसंज्ञिपूर्णेषु वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेंद्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ४९ ॥

संज्ञिपंचाक्षपूर्णेषु वचसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचनकारितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ५० ॥

पूर्णसंज्ञिसुपंचाक्षिवचसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ५१ ॥

पंचाक्षसंज्ञिपूर्णेषु कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसा निवारकाय अर्घम् ॥ ५२ ॥

सुपूर्णसंज्ञिपंचाक्षे कायेनाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेंद्रियजीवकायकारित हिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ५३ ॥

पंचाक्षसंज्ञिपूर्णेषु कायेनाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेंद्रियजीवकायकारित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५४ ॥

असंज्ञिपंचाक्ष पूर्णे मनसाकृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं पर्याप्तसंज्ञिपंचेंद्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ५५ ॥

असंज्ञिपूर्णपंचाक्षे मनसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेन्द्रियजीवमनः कारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५६ ॥

असंज्ञिपूर्णपंचाक्षे मनसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्त पंचेंद्रिय जीवमनोऽनुमोदित हिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५७ ॥

असंज्ञिपंचाक्षपूर्णे वचसा कृत हिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्त पंचेंद्रिय जीव वचः कृत हिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५८ ॥

असंज्ञिपंचाक्षपूर्णे वचसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेंद्रियवचनकारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५९ ॥

असंज्ञिपंचाक्षपूर्णे वचसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेंद्रिय वचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६० ॥

असंज्ञिपंचाक्षपूर्णे कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेंद्रियकायकारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६१ ॥

असंज्ञिपूर्णे पंचाक्षे कायेनाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेंद्रियकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६२ ॥

असंज्ञिपूर्णपंचाक्षे कायेनाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं असंज्ञिपर्याप्तपंचेंद्रियकायानुमोदितहिंसानिवार-काय जिनाय अर्घम् ॥ ६३ ॥

एवं पर्याप्त भेदाः ६३

(अथ अपर्याप्तभेदाः ६३ तेषां पृथक् पृथक् अर्घम् ।)

अपूर्णे बादरैकाक्षे मनसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त बादरैकेन्द्रिय जीवमनःकृतहिंसाविनाशकाय जिनायार्घम् ।। ६४ ॥

अपूर्णे बादरैकाक्षे मनयाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तबादरैकेन्द्रियजीवमनःकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६५ ॥

अपूर्णे बादरैकाक्षे मनसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त बादरैकेन्द्रियजीवमनोऽनुमोदितहिंसा निवारकाय जिनायार्घम् ।। ६५ ।।

अपूर्णे बादरैकाक्षे वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तबादरैकेन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय-जिनाय अर्घम् ॥ ६७ ॥

अपर्याप्तेबादरैकाक्षे वचसा कारितं च यत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तबादरैकेन्द्रिय जीववचनकारितहिंसानिवा-रकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६८ ॥

अपूर्णस्थूलकैकाक्षे वचसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तबादरैकेन्द्रिय वचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६९ ॥

अपूर्णबादरैकाक्षे कायेन कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त बादरैकेन्द्रियकायकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ७० ॥

अपर्याप्तस्थूलकैकाक्षे कायेन कारितं च यत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त बादरैकेन्द्रिय जीवकायकारितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ७१ ॥

अपूर्णबादरैकाक्षे कायेनाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त बादरैकेन्द्रिय जीवकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७२ ॥

अपूर्णसूक्ष्मकैकाक्षे मनसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७३ ॥

अपूर्णसूक्ष्मकैकाक्षे मनसाघं च कारितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ७४ ॥

सूक्ष्मैकाक्षेष्वपूर्णेषु मनसाघानुमोदनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रियजीवमनोऽनुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७५ ॥

सूक्ष्मैकाक्षेष्वपूर्णेषु वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७६ ॥

अपूर्णसूक्ष्मकाक्षेषु वचसाघं च कारितम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं सूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियजीववचनकारितहिंसानिवार-काय जिनाय अर्घम् ॥ ७७ ॥

अपूर्णसूक्ष्मैकाक्षेषु वचसाघानुमोदनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचोऽनुमोदित हिंसानि-वारकाय जिनयार्घम् ॥ ७८ ॥

अपूर्णसूक्ष्मकैकाक्षे कायेन कृतहिंसनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्त सूक्ष्मैकेन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७९ ॥

अपूर्णसूक्ष्मकैकाक्षे कायकारितहिंसनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायकारितहिंसानिवार-काय जिनाय र्घम् ॥ ८० ॥

अपूर्णसूक्ष्मकैकाक्षे कायेनाघानुमोदनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवकायानुमोदितहिंसानिवा-रकाय जिनायार्घम् ॥ ८१ ॥

अपूर्णद्व्यक्षजीवेषु मनसाकृतहिंसनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रियजीवमनः कृत हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८२ ॥

द्व्यक्षेष्वपूर्णजीवेषु मनः कारितहिंसनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८३ ॥

द्व्यक्षेष्वपूर्णजीवेषु मनसा चानुमोदनम्। तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवमनोऽनुमोदितहिंसानिवारकाय अर्घम् ॥ ८४ ॥

अपर्याप्तद्व्यक्षजीवे वचसा कृतहिंसनम् । तद्दोष॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८५ ॥

द्व्यक्षजीवेष्वपूर्णेषु वचसा कारितं च यत् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रिय जीववचनकारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८६ ॥

अपूर्णद्व्यक्षजीवेषु वचसाघानुमोदनम् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवकायवचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८७ ॥

अपूर्णद्व्यक्षजीवे च कायेन कृतहिंसनम् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ८८ ॥

अपूर्णद्वीन्द्रियेषूच्चैः कायकारितहिंसनम् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवकायकारितहिंसा निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८९ ॥

अपर्याप्तद्वीन्द्रियेषु कायेनानुमतं च यत् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तद्वीन्द्रिय जीवकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ९० ॥

अपर्याप्तत्रीन्द्रियेषु मनसा कृतहिंसनम् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९१ ॥

अपर्याप्तत्रीन्द्रियेषु मनसा कारिताघकम् । तद्दो॰

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रिय मनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९२ ॥

अपर्याप्तेषु त्र्यक्षेषु मनसाद्यानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रिय जीवमनोऽनुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९३ ॥

अपर्याप्तत्रीन्द्रियेषु वचसा कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९४ ॥

अपूर्णेषु त्रीन्द्रियेषु वचः कारितहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीववचः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९५ ॥

अपर्याप्तत्रीन्द्रियेषु वचसाद्यानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९६ ॥

अपूर्णत्रीन्द्रियेषूच्चैः कायेन कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनान अर्घम् ॥ ९७ ॥

अपूर्णत्रीन्द्रियेषूच्चैः कायकारितदुष्कृतम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकाय कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९८ ॥

अपर्याप्तत्रीन्द्रियेषु कायेनाद्यानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तत्रीन्द्रियजीवकायानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ९९ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु मनसा कृतकिल्बिषम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०० ॥

अपर्याप्तचतुष्केषु मनः कारितकल्मषम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०१ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु मनसाधानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रिय जीवमनोऽनुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०२ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु वचसा कृतदुष्कृतम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०३ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु वचः कारितकिल्बिषम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीववचनकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०४ ॥

अपर्याप्तचतुष्केषु वचसाघानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०५ ॥

तुर्याक्षेष्वपर्याप्तेषु कायेन कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०६ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु कायकारितपंककम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तचतुरिन्द्रियजीवकायकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०७ ॥

अपूर्णचतुरक्षेषु कायेनानुमतं त्वघम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय जीवकायानुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०८ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे मनसा कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त संज्ञिपंचेन्द्रियजीव मनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १०९ ॥

अपूर्णासंज्ञिपञ्चाक्षे मनसाकारितं त्वघम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११० ॥

अपूर्णासंज्ञिपञ्चाक्षे मनसाऽनुमतं च यत् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रियजीवमनोऽनुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १११ ॥

अपूर्णासंज्ञिपञ्चाक्षे वचसा हिंसनं कृतम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११२ ॥

पञ्चाक्षासंज्ञ्यपर्याप्ते वचसाघं च कारितम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रिय जीववचनकारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११३ ॥

पञ्चाक्षासंज्ञ्यपर्याप्ते वचसाघानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११४ ॥

असंज्ञ्यपूर्णपञ्चाक्षे कायेन कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रिय जीवकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११५ ॥

असंज्ञ्यपूर्णपञ्चाक्षे कायकारितहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रियजीवकारित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११६ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे कायेनानुमतं च यत् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तासंज्ञिपंचेन्द्रियजीवकायानुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११७ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे मनसाकृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियमनः कृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११८ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे मनः कारितहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियमनः कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११९ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे मनसा चानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त संज्ञिपंचेन्द्रिय मनाऽनुमोदित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२० ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे वचसा कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचनकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२१ ॥

अपूर्णसंज्ञिपञ्चाक्षे वचः कारितहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचन कारितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२२ ॥

पञ्चाक्षसंज्ञ्यपर्याप्ते वचसाद्यानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीववचनानुमोदितहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२३ ॥

पञ्चाक्षसंज्ञ्यपर्याप्ते कायेन कृतहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवकायकृतहिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२४ ॥

पश्चात्तसंज्ञ्यपर्याप्ते कायकारितहिंसनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्त संज्ञिपंचेन्द्रियजीवकायकारित हिंसानिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १२५ ॥

अपूर्णसंज्ञिपश्चात्ते कायेनाघानुमोदनम् । तद्दो०

ॐ ह्रीं अपर्याप्तसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवकायानुमोदितहिंसानिवारक य जिनाय अर्घम् ॥ १२६ ॥

इत्थं चतुर्दशसमासगणैः सुभेदाः
योगैः कृतादिभिरथाहतकाः समस्ताः ।
चाये जलादिभिरथाष्टभिरत्र यज्ञे
चारित्रशुद्धिसुविधेः सुमहे नितान्तम् ॥१२७॥

इति नवकोटि-शुद्धाहिंसाव्रतपरिपालकाय महाघ निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

जय जिनपजिनेन्द्रो भुवनदिनेशः सततशतेन्द्रस्तुतचरणः ।
जलनिधिसुगभीरोऽमरगिरिधीरो निर्जितजन्मजरामरणः ॥१॥
जय चन्द्रसुरेन्द्रनरेन्द्रपूज्य जय सिद्धसमिद्ध सुबुद्धिपूज्य ।
जय ध्यानवह्निघातंशघात जय संयमभारसुनष्टपात ॥२॥
जय शोकनाशवरवृक्षशोभ जय देवविहितवरपुष्पक्षोभ ।
जय सर्वभाषदिव्यात्मभाष जय लोकोत्सवकरदिव्यशाख ॥३॥
जय चामरचतुःषष्टिकवीज्यमान जय असुरसिंहकराजमान ।
जय वेदांगुल प्रोन्नत आसतेस्म जय भामंडलभादीप्तेस्म ॥४॥

जय भेरीरवगर्जनशब्दयुक्त जय सुन्दरछत्रत्रयसुयुक्त ।
जय दिव्ययशोमंदिर जिनेश जयताद्दिनेशशोभामहेश ॥५॥
जय दृष्टिज्ञानसत्सौख्यवीर्य जय सौख्यकूप प्रकटितसुधैर्य ।
जय द्रव्यषट्कपंचास्तिकाय वरसप्ततत्वसार्थकनिकाय ॥६॥
द्विदशाश्रुतांबुधिवृद्धिचन्द्र जय मुक्तिगकोटिरविप्रभेन्द्र।
जय शुक्लध्याननिर्धूतकर्म जीयादनंतजिनराजधर्म ॥७॥

घत्ता ।

इति वरनुतपूजं विदितसुभुवनं ज्ञानरूपजिनराजपतिम् ।
पूजतु शुभलोको वीतसुशोको ज्ञानभूषवरस्तुतचरणम् ॥८॥

इति जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति अहिंसाव्रतपूजा समाप्ता ।

अथ सत्यव्रतपूजा ।

(तत्र ७२ कोष्ठाः)

हितं मितमसंदिग्धं स्पष्टं निन्दाविवर्जितम् ।
निष्ठुरादिकुभाषाभिर्दशभिर्वर्जितं वदेत् ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पयोजधारया रम्यैः सत्तीर्थोदकवारिभिः ।
चाये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥

ॐ ह्रीं सत्यव्रताय जिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमैश्चन्दनै रम्यै पीतवर्णसुशालिभिः ।
चाये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥चन्दनम्॥

सुगंधशालितत्पुंजैः कलमैरक्षतैर्नवैः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥अक्षतम्॥
प्रसूनकैरनूनैश्च मल्लिकाकुंदकाब्जकैः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥ पुष्पम् ॥
पयोघृतेक्षुसुरसैः खज्जकैर्लड्डुकादिभिः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥ नैवेद्यम् ॥
सुधाकरद्रवैर्दीपैरत्नदीपैर्मनोहरैः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥ दीपम् ॥
सुगंधवस्तुधूपैश्च काकतुंडादिजैर्वरैः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥ धूपम् ॥
कपित्थकाम्रपूगाद्यैः सुफलैर्मोक्षसत्फलैः ।
चार्ये सत्यव्रतं रम्यं जिनेंद्रं च मदोज्झितम् ॥ फलम् ॥
पयः सुगंधसदकैः प्रसूनामृतदीपकैः ।
धूपैः फलैः सदर्घैश्च चार्ये सत्यव्रतान्वितम् ॥ अर्घम्॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

भैक्ष्यदोषेण संत्यक्तं मनसा कृतमुत्तमम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मनः कृतभिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ १ ॥

भिक्षादोषेण संत्यक्तं मनसा कारितेन च ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मनः कारितभिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

भिक्षादाषेण संत्यक्तं मनसानुमतेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितभिक्षादोषरहित सत्यप्रतिपादिकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३ ॥

भिक्षादोपेण संत्यक्तं वचसा कृतकेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतभिक्षादोपरहित सत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

भिक्षादाषेण संत्यक्तं वचसा कारितेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितभिक्षादाषरहित सत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

भिक्षादोषेण संत्यक्तं वचसा कारितेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमादित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

भिक्षादाषेण संत्यक्तं कायेन कृतकेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितभिक्षादाषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

भिक्षादोषेण संत्यक्तं कायकारितकेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितभिक्षादाषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

भिक्षादोषण संत्यक्तं कायेनानुमतेन च ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितभिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

इति भिक्षादोषविचारः ।

स्वपक्षदोषसंत्यक्तं मनसा कृतवर्जनम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं मनः कृतस्वपक्षदोषरहितासत्यप्रवादकाय जिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

स्वपक्षदोषसंत्यक्तं मनः कारितवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं मनः कारितस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रवादकजिनाय अर्घम् ॥ ११ ॥

मनोऽनुमतिसंत्यक्तं स्वपक्षदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतिरहित स्वपक्षदोषवर्जितसत्यप्रवादक जिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

वचःकृत स्वपक्षस्य दोषसंवर्जितं च यत् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतस्वपक्षदोपरहितसत्यप्रतिपादकायार्घम् ।१३

वचः कारितपक्षस्य निजस्य स्थापनायुतम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं वचन कारितस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रति पादक जिनायार्घः ॥ १४ ॥

वचोऽनुमोदसंत्यक्तं निजपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदनस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

कायकारित संत्यक्तं स्वकीयपक्षमुक्तकम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितस्वपक्षदोषरहितसत्यप्रवादक जिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

कायानुमतिसंत्यक्तं स्वकीयपक्षमुक्तकम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वीरमुखाष्टभिः ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्वपक्षदोषरहित सत्यप्रवादक जिनायार्घम् ॥ १८ ॥

इति स्वपक्ष दोष विचारः ।

परपक्षवचोमुक्तं मनः कृत विवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं मनः कृत परपक्षदोषरहित सत्य प्रवादक जिनाय अर्घम् ॥ १९ ॥

मनः कारितसंत्यक्तपरपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं मनः कारितपरपक्षदोषरहितसत्यप्रवादक जिनायार्घम् ॥ २० ॥

मनोऽनुमतिसंत्यक्तपरपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतिविवर्जित परपक्षदोषरहितसत्यप्रवादक जिनायार्घम् ॥ २१ ॥

वचः कृतेन संत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं म वचाविहितपरपक्षरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

वचः कारितसंत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरपक्षरहितसत्य प्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ २३ ॥

मनोऽनुमतिसंत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमति रहित परपक्षविवर्जित सत्यप्रवादकाय जिनाय अर्घम् ॥ २४ ॥

कायेन कृतसंत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं कायकृत परपक्ष विवर्जित सत्य प्रति पादकाय जिनायार्घम् ॥ २५ ॥

कायेन कारितत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरपक्षविवर्जितसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घम् ॥ २६ ॥

कायानुमतिसंत्यक्तं परपक्षविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमतपरपक्षरहितसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घम् ॥ २७ ॥

इति परपक्षरहितविचारः ।

पैशून्यवचनानिंद्यं मनः कृतविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं मनः कृतपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ २८ ॥

पैशून्यवचनोन्मुक्तं मनः कारितवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं मनः कारितपैशून्यदोषरहित सत्यप्रतिपादकाय जिनायार्घम् ॥ २९ ॥

पैशून्यवचनत्यक्तमनोऽनुमतिवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमतिपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ३० ॥

वचः कृतेन संत्यक्तं पैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ३१ ॥

वचः कारितसंत्यक्तं पैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपैशून्यदोषरहित सत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ३२ ॥

वचोऽनुमतिसंत्यक्तं पैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमतिपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घम् ॥ ३३ ॥

कायेन कृतसंत्यक्तपैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं कायकृत पैशून्य दोष रहित सत्य प्रति पादक जिनायार्घम् ॥ ३४ ॥

कायेन कारितोन्मुक्तपैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनायार्घम् ॥ ३५ ॥

कायानुमतिसंत्यक्तपैशून्यदोषवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमतिपैशून्यदोषरहितसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घम् ॥ ३६ ॥

क्रोधस्य वचनं त्याज्यं मनसा कृतदोषतः ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं मनः कृतक्रोधवचनदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३७ ॥

मनः कारितसंत्यक्तक्रोधवाक्येन वर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं मनः कारितक्रोधदोषरहिताय सत्यरूपकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३८ ॥

मनोऽनुमतिसंत्यक्तक्रोधवाक्यविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमति क्रोधवचनरहितसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घम् ॥ ३९ ॥

वचसाकृतसंत्यक्तक्रोधभावस्य वर्जनम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतक्रोधवचनरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४० ॥

वचसा कारितोन्मुक्तक्रोधवाणीविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४१ ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४१ ॥

वचसाऽनुमतोन्मुक्तक्रोधभावविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४२ ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमतक्रोधदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४२ ॥

कायेन कृतसंत्यक्तक्रोधभावस्य वर्जनम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं कायकृतक्रोधदोषरहितसत्यप्रवादकजिनायार्घम् ॥ ४३ ॥

कायकारितसंत्यक्तक्रोधभावस्य वर्जनम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४४ ॥
ॐ ह्रीं कायकारितक्रोधभावरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४४ ॥

कायानुमतिसंत्यक्तक्रोधवाक्यस्य वर्जनम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं कायानुमतक्रोधदोषरहितसत्यप्रतिपादकाय जिनायार्घम् ॥ ४५ ॥

लोभस्य वचनं त्याज्यं मनसा कृतदोषतः ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतलोभदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४६ ॥

मनःकारितसंयुक्तलोभवाक्यविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं मनः कारितलोभरहितसत्यप्रतिपादितजिनायार्घम् ॥ ४७ ॥

मनोऽनुमतिसंयुक्तलोभवाक्यविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४८ ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमतियुक्तलोभरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४८ ॥

वचः कृतेन संयुक्तलोभदोषविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ४९ ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतलोभदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ४९ ॥

वचः कारितसंयुक्तलोभाश्रयविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितलोभदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५० ॥

वचोऽनुमतिसंयुक्तलोभावासविनाशकम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५१ ॥
ॐ ह्रीं वचोऽनुमतिसंयुक्तलोभदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५१ ॥

कायकृतेनसंयुक्तलोभवाक्यनिर्वारितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५२ ॥
ॐ ह्रीं कायकृतलोभरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥५२॥

कायकारितसंयुक्तलोभवाक्यत्रिवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५३ ॥
ॐ ह्रीं कायकारितलोभरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५३ ॥

कायानुमतिसंयुक्तलोभवाक्यविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५४ ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभदोषरहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५४ ॥

मनसाकृतसंयुक्तमात्मप्रशंसाविनिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५५ ॥
ॐ ह्रीं मनः कृतात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५५ ॥

मनसा कारितयुक्तमात्मप्रशंसाबहिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं मनः कारितात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५६ ॥

मनसाऽनुमतं यच्चाऽत्मप्रशंसाविनिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५७ ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमताऽऽत्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादर्कजिनायार्घम् ॥ ५७ ॥

वचसा कृतसंयुक्तमात्मशंसाबहिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५८ ॥

वचसा कारितयुतमात्मशंसाविनिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ५९ ॥

वचसाऽनुमतित्यक्तमात्मशंसाविनिर्गतम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं वचाऽनुमोदितात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ६० ॥

कायेन कृतसंयुक्तमात्मशंसनमुक्तकम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं कायकृतात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ६१ ॥

कायकारितसंयुक्तमात्मशंसनवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६२ ॥

कायानुमतिसंयुक्तमात्मशंसनवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्चे जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितात्मप्रशंसारहितसत्यप्रतिपादकाय जिनायार्घम् ॥ ६३ ॥

मनसा कृतसंयुक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६४ ॥

मनसा कारितयुतपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६५ ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ६५ ॥

मनसाऽनुमतोद्युक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरनिंदाविवर्जितसत्यप्रतिपादक जिनायार्घम् ॥ ६६ ॥

वचसा कृतसंयुक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६७ ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ६७ ॥

वचः कारितसंयुक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चार्ये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६८ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घम् ॥ ६८ ॥

वचोनुमतिसंयुक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ६६ ॥

कायेन कृतसंयुक्तपरनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनायार्घम् ॥ ७० ॥

कायेन कारितयुतं परनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ७१ ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घम् ॥ ७१ ॥

कायेनानुमतं रम्यं परनिंदाविवर्जितम् ।
सत्यप्रवादकं चाये जिनं वारिमुखाष्टभिः ॥ ७२ ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरनिंदारहितसत्यप्रतिपादकाय जिनायार्घम् ॥ ७२ ॥

इत्थं द्विसप्ततिमिताः खलु सत्यभेदाः
प्रोक्ता जिनेन करणत्रिभिरेव योगैः ।
चाये जिनेंद्रगदितं विमलस्वरूपं
सत्यव्रतं वसुभिदायुतमस्तकर्म ॥ ७३ ॥

ॐ ह्रीं सत्यव्रतप्रतिपादकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७३ ॥

अथ जयमाला ।

जयमाला जिद्रस्यनें सर्वविघ्नहरा परा ।
क्रियते सिद्धिदा रम्या लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥
मिथ्योपदेशवाक्यप्रमुक्त, जय रहोऽभ्याख्यसंख्यानमुक्त ।
जय कूटलेखलेखादित्यक्त, न्यासापहार दूरीकृतोक्त ॥२॥
साकारमंत्रभदप्रणष्ट, जय सत्यधर्मविहताष्टनष्ट ।
हितसुप्रमेय संदिग्धमुक्त, स्पष्टार्थमिष्ट शुभभेदयुक्त ॥३॥
जय सत्यदशक संख्याविशिष्ट, संप्रीणित सकलाभीष्टशिष्ट ।
जयकटुकपरुषभेदादित्यक्त, जय कर्कशवाक्यविवर्जितमहित।४।
जय प्राप्तसमस्तरहस्यशास्त्र, जय ज्ञाननिवारितदुष्टशास्त्र ।
जय कुमतिकुशास्त्रश्रुतिविमुक्त जय क्ववधिवितर्जितसुमतिप्रोक्त५
जय सुश्रुतसुश्रुतसुश्रुतास्थ, दुःश्रुतदुःश्रुतहारितास्थ ।
जय लक्ष्यसुलक्षणज्ञानचार, जय तर्कप्रत्यभिज्ञानवीर ॥ ६ ॥
जय पंचज्ञानवोधाधिपत्य जय पंचाचार समित्यपत्य ? ।
जय पंचमगति राजाधिराज जय पंचभावनाभावराज ॥७॥
जयमाला सत्यधर्मविशिष्टा प्रतिपादिता ।
द्विसप्ततिमलातीता पूर्णार्घैः सुखदा भवेत् ॥

ॐ ह्रीं द्विसप्ततिमलातीतसंपूर्ण सत्यव्रतप्रतिपादकाय जिनाय जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथाचार्यव्रतगुणपूजा।

ग्रामारण्यखलैकान्त्यैरन्यत्रोपध्यनुक्तकैः।
अपृष्टग्रहणैः प्राग्वत्तद्वासप्ततिरमी मताः॥

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टकम्।

सुगांगेयकुंभस्थ गंगाजलौघैः
कजामोदयुक्तैर्गलद्घर्ममुक्तैः।
जगद्देवदेवं कृतेन्द्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्ताय जिनाय जलं निर्व० स्वाहा।

सुगंधाश्रितैः शुभैः संदर्शितांकैः
लसच्चंदनैश्चारुचंद्रादिमिश्रैः।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं॥ २ ॥ चंदनम्॥

सुशालीयतंदुलपुंजैः पवित्रैः
स्वतेजोजितेंदुप्रभाहारतारैः।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं॥ ३ ॥ अक्षतम्॥

वसंताब्जकुंदादिकैः सुप्रसूनै-
र्भ्रमद्भृङ्गपुंजाहितश्लक्ष्णरावैः।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादि सेवं
यजेहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं॥ पुष्पम्॥

पयः सर्पिरिक्षुद्रवैः पायसान्नैः
सुगांगेयपात्रार्पितैः सन्निवेद्यैः ।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं ।। नैवेद्यम् ।।

जितामर्त्यरत्नैः शुभैर्धामरत्नैः
कृतध्वांतजातप्रणाशप्रयत्नैः ।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं ।। दीपम् ।।

सुकालागुरूद्भूतधूपैरदभ्रै-
र्जनानां सुधूमाभिकर्मातिभ्रंशैः ।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं ।। धूपम् ।।

रसालोल्लसत्पूगसद्बीजपूरैः
फलौघैः सुभक्तव्रजाभीष्टपूरैः ।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रं ।। फलम् ।।

कुशाद्यैः कुशोल्लासिसिद्धार्थदूर्वैः
कनत्कांचनस्थालसुस्थैः सदर्घैः ।
जगद्देवदेवं कृतेंद्रादिसेवं
यजेऽहं जिनेंद्रं गतातंकतंद्रम् ।। अर्घम् ।।

अथ प्रत्येक पूजा ।

ग्रामाश्रिताः नव भेदाः ।

ग्रामेऽप्यदत्तादानं यन्मनसा च कृतं महत् ।
तद्दोषघ्नं जिनं चार्चे जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं मनः कृतग्रामचौर्यविनाशकाय जिनायार्घम् ॥ १ ॥

ग्रामे नष्टस्य चादानं मनसा कारितं च यत् ।
तद्दोषघ्नं जिनं चार्चे जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितग्राम चौर्यविनाशकार्यजिनायार्घम् ॥२॥

ग्रामे पतितस्यादानं मनसानुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितग्रामचौर्यविनाशक जिनाय अर्घम् ॥३॥

ग्रामेऽप्यदत्तादानं यद्वचसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकृत ग्रामचौर्यविनाशक जिनायार्घम् ॥ ४ ॥

वचसाकारितं स्तेयं ग्रामे नष्टादिसद्गृहे । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकारित ग्रामचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ५ ॥

वचसानुमतं स्तेयं अदत्तस्य गृहेऽपि च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ६ ॥

कायेनादत्तसंग्राहो ग्रामेऽपि कृततः कृतः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृतग्रामचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ७ ॥

ग्रामेऽपि च कृतादत्तसंग्राहः कायकारितः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकारितग्रामचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ८ ॥

ग्रामेऽप्यदत्तादानं यत् कायेनाऽनुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ९ ॥

अथ वनाश्रिता नव भेदाः ।

अरण्येऽदत्तकादानं मनसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कृतवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १० ॥

अरण्येऽदत्तकादानं मनसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कारितवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ११ ॥

अरण्येऽदत्तसंग्राहे मनसाऽनुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १२ ॥

अरण्येदत्तकादानं वचसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकृतवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १३ ॥

विपिनेऽदत्तकादानं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकारितवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १४ ॥

वचोऽनुमोदितं ज्ञेयं वने स्तेयमदत्तकम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १५ ॥

गहनादत्तकादानं कायेन कृतकं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृतवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १६ ॥

गहनादत्तकादानं कायेन कारितं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकारितवनचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १७ ॥

काननेऽदत्तकादानं कायेनाऽनुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदितवनचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥ १८ ॥

अथ खलाश्रित भेदाः ।

खलेऽप्यदत्तादनं च मनसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कृत खलचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ १९ ॥

मनसा कारितं चापि खलादत्तग्रहोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनःकारित खलचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥ २० ॥

खलेऽप्यदत्तादानं च मनसाऽनुमतं हि यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितखलचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ २१ ॥

खलेऽप्यदत्तादानं च वचसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकृत खलचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ २२ ॥

वचसा कारितं चौर्यं खलेऽदत्तग्रहेण च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकारितखलचौर्यविनाशकायजिनायार्घम् ॥ २३ ॥

वचसाऽनुमतं चौर्यं खलादत्तग्रहेण च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनानुमोदित खलचौर्यविनाशकार्थजिनायार्घम् २४

कायेन कृतकं चौर्यं खलादत्तग्रहेण च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृत खलचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ २५ ॥

कायेन कारितं चौर्यं खलादत्तग्रहेण च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकारित खलचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥ २६ ॥

कायेनाऽनुमतं चौर्यं खलादत्तग्रहेण च । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदित खलचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥२७॥

अथ एकान्ताश्रित भेदाः ।

एकान्तजातकं स्तेयं मनसा कृतकं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कृतैकान्तचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ २८ ॥

एकान्तादत्तगं स्तेयंमनसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कारितैकान्तचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥२९॥

एकान्तादत्त संग्राहे मनसाऽनुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितैकान्तचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥३०॥

एकान्तादत्तकं स्तेयं वचसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतैकान्तचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥ ३१ ॥

वचसा कारितं स्तेयमेकान्तादत्तसंग्रहे । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचन कारितैकान्त चौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥३२॥

वचोऽनुमतकं स्तेयमेकान्तादत्तसंग्रहे । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितैकान्तचौर्य विनाशक जिनायार्घम्॥३३॥

कायेन कृतकं स्तेयमेकान्तादत्त संग्रहे । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतैकान्तचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥३४॥

कायेन कारितं स्तेय मदत्तग्रहणे रहः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितैकान्तचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥३५॥

कायेनानुमतं स्तेयमदत्ताग्रहणे रहः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमादितैकान्त चौर्य विनाशक जिनायार्घम्॥३६॥

अथऽन्यत्र कृतादि भेदाः ।

शून्यागारादिसंजातं स्तेयं च मनसा कृतम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकृतान्यत्रजात चौर्य विनाशकाय जिनायार्घम्॥३७॥

अन्यत्र जातं यत्स्तेयं मनसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकारितान्यत्रचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥३८॥

अन्यत्र जातं यत्स्तेयं मनसानुमतं च यत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितान्यत्रचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥३९॥

वचसा च कृतं स्तेयमन्यत्र भवनोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतान्यत्रचौर्य विनाशक जिनायार्घम् ॥४०॥

वचसा कारितेनापि चान्यत्र भवनोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितान्यत्रचौर्य विनाशकजिनायार्घम् ॥४१॥

वचसानुमतेनापि चान्यत्र भवनोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितान्यत्रचौर्यविनाशक जिनायार्घम्॥४२॥
कायेनकृतकेनापि चान्यत्राश्रयतो भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृतान्यत्रचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ४३ ॥
कायेन कारितेनापि चान्यत्राश्रयतो भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकारितान्यत्रचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ॥ ४४ ॥
कायेनानुमतेनापि चान्यत्राश्रयतो भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदितान्यत्रचोर्यविनाशकाय जिनायार्घम् ४५

अथोपध्याश्रित भेदाः ।

क्षेत्रवास्त्वाद्युपधिजं मनसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं
ॐ ह्रीं मनःकृतोपधिदोष जनितचौर्य विनाशकजिनायार्घम्४६
हिरण्य स्वर्णमोषादि मनसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनःकारितोपधि जनितचौर्य बिनाशक जिनायार्घम्४७
क्षेत्रवास्त्वाद्युपधिजं मनसाऽनुमतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनाऽनुमोदितोपधि जनितचौर्य विनाशक जिनायार्घम्
वचसा च कृतः संगः वाह्याभ्यंतर संगजः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं बचनकृतोपधि जनितचोर्य विनाशकाय जिनायार्घम्४८
बचसाकारितः संगः वाह्याभ्यंतर संगजः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्री वचनकारितोपधि जनितचौर्य विनाशकजिनायार्घम्५०
बचसाऽनुमतः संगः वाह्याभ्यंतर संगजः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनानुमतोपधि जनितचौर्य विनाशक जिनायार्घम्५१
कायेन च कृतः संगः वाह्याभ्यंतर संगजः । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृतोपधि जनितचौर्य बिनाशक जिनायार्घम् ५२

कायेनकारितः संगः बाह्याभ्यंतरसंगजः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितोपधि जनितचौर्यविनाशक जिनायार्घम् ॥५३॥

कायेनानुमतः संगः बाह्याभ्यंतरसंगजः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितोपधि जनितचौर्य विनाशक जिनायार्घम्

अथानुक्ताश्रित भेदाः।

परिग्रहानुक्तदानं मनसा च कृतं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृतानुक्त परिग्रहचौर्य विनाशकाय जिनायअर्घम्

अनुक्त संगस्यादानं मनसाकारितं महत। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितानुक्तपरिग्रहचौर्यविनाशकजिनायार्घम्

मनसानुमतं दोषं चानुक्तसंगतो भवम्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितानुक्त परिग्रहचौर्य विनाशकजिनायार्घम्

अनुक्तसंगस्यादानं वचसा च कृतं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतानुक्त परिग्रहचौर्य विनाशक जिनायअर्घम् ५८

अनुक्त संगस्या दानं वचसा कारितं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितानुक्त परिग्रहचौर्य विनाशक जिनायार्घम्

अनुक्त संगस्या दानं वचसानुमतं च यत्। तद्दोषघ्नं

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितानुक्त परिग्रहचौर्य विनाशक जिनायार्घम्

कायेन कृत संजात मनुक्तस्यापि चाहृतेः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतानुक्त परिग्रहचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ६१

कायकारित संजातमनुक्तस्यापि चाहृतेः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यविनाशकजिनायार्घम्

कायानुमत संजातमनुक्तस्यापि चाहृतेः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यविनाशकजिनायार्घम्

अथ संपृष्टाग्रहणाश्रित भेदा :

संपृष्टाग्रहणं स्तेयं मनसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कृतसंपृष्टाग्रहणचौर्य विनाशकार्यजिनायार्घम् ६४

संपृष्टाग्रहणं तद्वन्मनसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनः कारितसंपृष्टाग्रहण चौर्यविनाशकजिनायार्घम् ६५

संपृष्टाग्रहणं पूर्वं मनसानुमतं महत । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितसंपृष्टाग्रहणचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ६६

संपृष्टाग्रहणं कर्त्तुं वचसा च कृतं यदि । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकृतसंपृष्टाग्रहण चौर्यविनाशकजिनायार्घम् ६७

संपृष्टाग्रहणं स्तेयं वचसा कारितं त्वघम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनकारितसंपृष्टाग्रहणचौर्य विनाशकजिनायार्घम्

संपृष्टाग्रहणं स्तेयं वचसानुमतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितसंपृष्टाग्रहणचौर्यविनाशकजिनायार्घम्

संपृष्टाग्रहणं स्तेयं कायेन च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकृतसंपृष्टाग्रहणंचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ७०

कायेन कारितं स्तेयं संपृष्टाग्रहणोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायकारित संपृष्टाग्रहणचौर्यविनाशकजिनायार्घम् ७१

कायेनानुमतं स्तेयं संपृष्टाग्रहणोद्भवम् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदित संपृष्टाग्रहणचौर्यविनाशकजिनायार्घम्

इत्थं द्विसप्ततिमिता गदिताः सुभेदा-
अस्तेयसद्व्रतवरस्य जिनागमोक्ताः ।
चारित्रशुद्धिसुविधेः सुमहे नितान्तं
पूज्या जिनाः सदकचारुनिवेद्यमुख्यैः ।७३।

ॐ ह्रीं पूर्णचौर्यव्रतपरिपालकजिनायार्घम् ॥ ७३ ॥

अथ जयमाला ।

भेदाभेदप्ररूपकं जिनवरं स्याद्वादविद्यापतिं
लोकालोकविलोकनं गतमदं संसारतापापहम् ।
मुक्तिश्रीपरिरंभनिर्भरसुखं संप्राप्तमत्केवलं
तं वन्दे वदतांवरं वसुगुण विश्वेश्वरैरर्चितम् ॥१॥

सकलामरखचराधिपवंद्यं वरचरणं नरभूपतिवंद्यम् ।
गुणनिधिभवसागरगतपारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् २
विदितसुलोकालोकप्रकारं गणधरनुतपदवर्जितमारम् ।
संश्रितसमवसृतिविनिहारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् ३
शोकभिदं सदशोकसुयुक्तं छत्रत्रयमंडितमरिभययुक्तम् ।
कृतसुरसुमनोवृष्टिमुदारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् ४
मिथ्यामतभेदनदंडप्रचंडं प्रबलजलं भवजलप्रतरंडम् ।
गतमलकर्मरिपुप्रविदारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् ५
सकलसुविद्यावारिधिचंद्रं वदनविनिर्जितराकाचन्द्रम् ।
वर्जितभूषं विगतविहारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् ६
सुभगं मंदिरगरिमाधीरं विमलं वारिधिमिवगंभीरम् ।
कमनीयं वरकरुणागारं नौमि जिनं त्रिभुवनसुखकारम् ॥७॥
शंकरसेवितविगतविरामं परमानंदं जगदभिरामम् ।
मुक्तिरमागलकंदलहारं नौमिजिनं त्रिभुवसुखकारम् ॥८॥
चारित्रशुद्धेः सुमहं नितांतं स्तेयापहारे युगसप्ततिमानम् ।

दोषान् परित्यज्य भजे जिनेंद्रं चारित्रवृद्धयैगुणसिद्धि पूर्त्यैं।९।

ॐ ह्रीं परमपूर्णाचोर्यव्रतपरिपालकजिनायार्घम् ॥ ९ ॥

अथ ब्रह्मचर्यव्रत पूजा ।

नृदेवाचित्ततिर्यक्स्त्रीरूपे पंचेंद्रियाहते ।
नवघ्ने ब्रह्मचर्येस्युः शतं तेऽशीतिसंयुतम् ॥ १ ॥

इत्थं १८० भेदाः ।

कमलपत्रोपरि ब्रह्मचर्यगुणान् संस्थाप्य पुष्पांजलिंक्षिपेत्

अथाष्टकम् ।

सुजलैर्वरचंद्रमिश्रितैः रजताद्युत्तमकुम्भसंभवैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय जलं निर्वयामीति स्वाहा जलं ॥

हरिचंदनजै रसै ! शुभैः सुरवाक्लिप्तिक्रृतालिपुंजकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभोप्सितवस्तुदायकम् ॥चंदनं॥

विशदाक्षतपुण्यपुंजकैः सुजनस्वांतसुनेत्ररंजकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम्॥अक्षतं॥

बकुलांबुजनीपचंपकैः कुसुमैर्वा कुसुमेषुवारकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम्॥पुस्पं॥

चरुभिर्वटकान्नमोदकैः परमान्नप्रमुखैर्घृतान्वितैः ।
नवब्रह्मयुतंजिनाधिपंप्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम् ॥नैवेद्यम्॥

घृतसंभवदीपवृंदकैस्तिमिरव्रातनिघातवृंहकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिप प्रयजेऽभोप्सितवस्तुदायकम् ॥दीपं॥

अगुरुप्रमुखैः सुवस्तुजैः शुभधूपैर्मुद्‌वह्निसंगतैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम् ॥ धूपं॥
वरचिर्भटमोचचोचकैः सुफलैर्मुक्तिफलार्पणोत्सुकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम् ॥फलं॥
जलगंधसुतंदुलोद्गमैः प्रभृतिद्रव्ययुतैः शुभार्घकैः ।
नवब्रह्मयुतं जिनाधिपं प्रयजेऽभीप्सितवस्तुदायकम् ॥अर्घम्॥

अथ प्रत्येक पूजनम् ।

नृस्त्रीस्पर्शोद्भवं सौख्यं मनसा च कृतं बहु ।
तद्दोषघ्नं जिनं चाये जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीस्पर्शनेंद्रियसुखमनः कृतदोषनिवारक जिनायार्घम् ॥ १ ॥

नृस्त्रीरसोद्भवं सौख्यं मनसा च कृतं वहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

नृस्त्रीघ्राणोद्भवं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीरूपघ्राणेन्द्रिय सुखमनः कृतदोषनिवारक जिनायार्घं ॥ ३ ॥

नृस्त्रीचक्षुर्भवं सौख्यं मनसा च कृतं वहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीरूपचक्षुरिन्द्रिय सुखमनः कृतदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

नृस्त्रीकर्णोद्भवं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्री श्रोत्रेन्द्रिय सुखमनः कृतदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

देवस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकाय जिनायार्घम् ॥ ६ ॥

देवस्त्रीरसजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवस्त्रीरसनेन्द्रिय सुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

देवस्त्रीघ्राणजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवस्त्रीघ्राणेन्द्रिय सुखमनः कृतदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

दिव्यस्त्रीनेत्रजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनारूपनेत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९ ॥

दिव्यस्त्रीकर्णजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकर्णेन्द्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसौख्यं मनसा च कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीरूपस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥

अचित्तस्त्री रससुखं मनसा च कृतं बहु । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीरसनेंद्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

अचित्त स्त्रीघ्राणसुखं मनसा चकृतं बहु । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीघ्राणेंद्रियसुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रसौख्यं मनसा चकृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीनेत्रसुखमनः कृतदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १४ ॥

अचित्तस्त्रीश्रोत्रसौख्यं मनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीश्रोत्रसुखमनः कृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५ ॥

तिर्यक्स्त्री स्पर्शजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीस्पर्शसुखमनः कृत दोष निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

तिर्यक्स्त्री रसनासौख्यं मनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्ची रसनेंद्रियसुखमनः कृतदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

तिर्यक्स्त्रीघ्राणजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृत तिरश्चीनासिकासुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १८ ॥

तिर्यक्स्त्रीनेत्रजं सौख्यंमनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृततिरश्चीनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १९ ॥

तिर्यक्स्त्रीकर्णजं सौख्यं मनसा च कृतं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृततिर्यक्स्त्रीकर्णसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

एवं मनः कृतभेदाः।

मर्त्यस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं मनसा कारितं बहु। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितमनुष्यस्त्रीरूपस्पर्शनेंद्रियदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥

नृस्त्रीरसोद्भवं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्रीरसनेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

मर्त्यस्त्रीघ्राणजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ २३ ॥

मर्त्यस्त्रीनेत्रजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितमनुष्यस्त्री नेत्रेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ २४ ॥

मर्त्यस्त्रीकर्णजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितमनुष्यस्त्री श्रोत्रेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ २५ ॥

दिव्यस्त्रीस्पर्शजं सौख्यंमनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारित देवांगनास्पर्शनेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ २६ ॥

दिव्यस्त्रीरसनासौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितदेवांगनारसनेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनायअर्घम् ॥ २७ ॥

दिव्यस्त्रीघ्राणजंसौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मन कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ २८ ॥

दिव्यस्त्रीनेत्रजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितदेवांगनाचक्षुरन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ २९ ॥

दिव्यस्त्रीकर्णजंसौख्यं मनसाकारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसौख्यं मनसाकारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेंद्रियसुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३१ ॥

अचितस्त्रीरससुखं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितरसनेंद्रिय सुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३२ ॥

अचितस्त्रीघ्राणसौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ३३ ॥

अचितस्त्रीनेत्रसौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ३४ ॥

अचितस्त्रीकर्णसौख्यंमनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितश्रोत्रेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ३५ ॥

तिर्यक्स्त्रीस्पर्शजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दो०

ॐ ह्रीं मनः कारित तिरश्चीस्पर्शनेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३६ ॥

तिर्यक्स्त्रीरसनासौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारित तिरश्ची रसनेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३७ ॥

तिर्यक्स्त्रीघ्राणजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारिततिरश्चीघ्राणेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३८ ॥

तिर्यक्स्त्रीनेत्रजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारिततिरश्चीनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ३९ ॥

तिर्यक्स्त्रीश्रोत्रजं सौख्यं मनसा कारितं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारिततिरश्चीश्रोत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४० ॥

एवं मनः कारितभेदाः ।

मनुष्यस्त्रीस्पर्शसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनानुमोदितस्पर्शसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४१ ॥

मनुष्यस्त्रीरससौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनानुमोदितमनुष्यस्त्रीरसनेंद्रिय सुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४२ ॥

मनुष्यस्त्रीघ्राणसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४३ ॥

मनुष्यस्त्रीनेत्रसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीश्रोत्रेंद्रियसुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४४ ॥

मनुष्यस्त्रीश्रोत्रसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीश्रोत्रेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४५ ॥

देवांगनास्वर्शसुखं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनास्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४६ ॥

देवांगनारससौख्यं मनसाऽप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्री मनोऽनुमोदित देवांगनारसनेंद्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४७ ॥

देवांगनाघ्राणसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतदेवांगनाघ्राणेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४८ ॥

देवांगनानेत्रसौख्यं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतदेवांगनानयनेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४९ ॥

देवांगनाकर्णसौख्यं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित देवांगनाकर्णेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५० ॥

अचित्तस्त्री स्पर्शसौख्यं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितेचित्तस्त्रीस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५१ ॥

अचित्तस्त्रीरससुखं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीरसनादोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं मनसाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीमनोनुमोदितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ५३ ॥

अचितस्त्रीनेत्रसौख्यं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीमनोनुमोदितनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५४ ॥

अचित्तस्त्रीश्रोत्रसुखं मनसानुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीमनोनुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५५ ॥

तिर्यक्स्त्रीस्पर्शजं सौख्यं मनसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियमनोऽनुमोदितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५६ ॥

तिरश्चीरसनासौख्यं मनसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीमनोऽनुमोदितरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं मनसाऽनुमतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीमनोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं मनसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिर्यक्स्त्रीमनोनुमोदितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५९ ॥

तिरश्चीकर्णजं सौख्यं मनसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिर्यक्स्त्रीमनोऽनुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ६० ॥

एवं मनोऽनुमोदितभेदाः ।

मनुष्यस्त्रीस्पर्शसौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतस्पर्शदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६१ ॥

नरस्त्रीरसनासौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ६२ ॥

नरस्त्रीघ्राणजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ६३ ॥

नरस्त्रीनेत्रजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ६४ ॥

नरस्त्रीश्रोत्रजंसौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतश्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ६५ ॥

देवांगनास्पर्शसौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकृतस्पर्शदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६६ ॥

देवांगनारससौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकृतरसनादोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६७ ॥

देवांगनाघ्राणसौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकृतघ्राणेन्द्रियदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६८ ॥

देवांगनानेत्रसौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकृतनेत्रेन्द्रियदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६९ ॥

देवांगनाकर्णसुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकृतकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७१ ॥

अचित्तस्त्रीरससुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक अर्घम् ॥ ७२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रसुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७४ ॥

अचित्तस्त्रीश्रोत्रसुखं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतश्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७५ ॥

तिर्यक्स्त्रीस्पर्शजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिर्यक्स्त्रीवचनकृतस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७६ ॥

तिर्यक्स्त्रीरसजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीरसनेन्द्रियजनितवचनकृतदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकृतघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकृतनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७९ ॥

तिरश्चीकर्णजं सौख्यं वचसा च कृतं महत् । यद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकृतकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८० ॥

एवं वचनकृतभेदाः ।

नरस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीवचनकारितस्पर्शनेन्द्रिय सुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८१ ॥

नरस्त्रीरसनासौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रियदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८२ ॥

नरस्त्रीघ्राणजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ८३ ॥

नरस्त्रीनेत्रजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ८४ ॥

नरस्त्रीश्रोत्रजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८५ ॥

देवांगनास्पर्शजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवाङ्गनावचनकारितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८६ ॥

दिव्यस्त्रीरसनासौख्यं वचसाकारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८७ ॥

दिव्यस्त्रीघ्राणजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८८ ॥

दिव्यस्त्रीनेत्रजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८९ ॥

दिव्यस्त्रीश्रोत्रजंसौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शजंसौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९१ ॥

अचित्तस्त्रीरससौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९४ ॥

अचित्तस्त्रीकर्णजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितश्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९५ ॥

तिर्यक्स्त्रीस्पर्शजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकारितस्पर्शनेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९६ ॥

तिर्यक्स्त्रीरससौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकारितरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं वचसा कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं यचसा कारितं बहु । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनकारितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९९ ॥

तिरश्चीकर्णजं सौख्यं वचसा कारितं वहु । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिर्यक्स्त्रीवचनकातिकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०० ॥

एवं वचनकारितभेदाः ।

नरस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं वचसाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्री वचोऽनुमोदितस्पर्शसुखदोषनिवारकाय अर्घम् ॥ १०१ ॥

नृस्त्रीरसभवं सौख्यं वचसाऽप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीवचनानुमोदितरसनेन्द्रियदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १०२ ॥

नृस्त्रीघ्राणोद्भवं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीवचनानुमोदितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०३ ॥

नृस्त्रीनेत्रोद्भवं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीवचनानुमोदितनयनेन्द्रियनेत्रजनितसुखदोष-निवारकजिनाय अर्घम् ॥ १०४ ॥

नृस्त्रीकर्णोद्भवं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनानुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०५ ॥

देवांगनास्पर्शसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनानुमोदितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १०६ ॥

दिव्यस्त्रीरसनासौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनानुमोदितरससुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १०७ ॥

देवांगनाघ्राणसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनानुमोदितनासिकासुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०८ ॥

देवांगनानेत्रसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनानुमोदितनेत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०९ ॥

देवांगनाकर्णसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनावचनानुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितस्पर्शनेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १११ ॥

अचित्त स्त्रीरससुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितरसनेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ११२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितनासिकासुखदोष निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ११३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितनेत्रसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११४ ॥

अचित्तस्त्रीकर्णसुखं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११५ ॥

तिरश्चीस्पर्शजं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनानुमोदितस्पर्शनेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११६ ॥

तिरश्चीरसजं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं चिरश्चीवचनानुमोदितरसनेंद्रियजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनानुमोदितघ्राणेंद्रियजनितसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ११८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनानुमोदितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ११९ ॥

तिर्यक्स्त्रीकर्णजं सौख्यं वचसा चानुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीवचनानुमोदितकर्णेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२० ॥

एवं वचनानुमोदितभेदाः ।

नृस्त्रीस्पर्शभवं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतस्पर्शनेंद्रियजनितसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२१ ॥

नरस्त्रीरसनासौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकृतरसनेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२२ ॥

नरस्त्रीनासिकासौख्यं कायेनापि कृतंमहत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकृतघ्राणेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२३ ॥

नरस्त्री नेत्रजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकृतनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२४ ॥

नरस्त्री कर्णजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं नरस्त्री कायकृत कर्णेन्द्रिय सुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १२५ ॥

देवांगनास्पर्शसौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२६ ॥

दिव्यस्त्री रसजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतरसनेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १२७ ॥

दिव्यस्त्रीनासिकासौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतनासिकासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२८ ॥

दिव्य स्त्रीनासिकासौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२९ ॥

सुरस्त्रीकर्णजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतकर्णसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतस्पर्शजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १३१ ॥

अचित्तस्त्री रससौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतरससुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तकायकृत घ्राणेन्द्रिय सुखदोष निवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रसुखं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतनेत्रसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३४ ॥

अचित्तस्त्रीकर्णसुखं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतश्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३५ ॥

तिरश्चीस्पर्शजंसौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकृतस्पर्शनेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३६ ॥

तिरश्चीरसनासौख्यं कायेनापि कृतं बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकृतरसनेन्द्रियजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १३७ ॥

तिरश्चीनासिकासौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकृतनासिकसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकृतनेत्रजनितसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३९ ॥

तिरश्चीकर्णजं सौख्यं कायेनापि कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकृतकर्णेन्द्रियजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १४० ॥

एवं कायकृतभेदाः ।

नरस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०
ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४१ ॥

नरस्त्रीरसनासौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकारितरसनासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४२ ॥

नरस्त्रीघ्राणजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकारितघ्राणेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४३ ॥

नरस्त्रीनेत्रजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकारितनेत्रेंद्रियजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १४४ ॥

नरस्त्रीकर्णजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं नरस्त्रीकायकारितकर्णेंद्रियसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३५ ॥

देवस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं देवस्त्रीकायकारितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४६ ॥

देवांगनारससुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितरसनासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४७ ॥

देवस्त्रीनासिकासौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितनासिकासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४८ ॥

देवस्त्रीनेत्रजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनायकायकारितनेत्रजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १४९ ॥

देवस्त्रीकर्णज सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितकर्णेन्द्रिय सुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायकारितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५१ ॥

अचितस्त्रीरससुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायकारितरसनेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५३ ॥

अचितस्त्रीनेत्रसुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायकारितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५४ ॥

अचितस्त्रीश्रोत्रसुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायकारितकर्णेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५५ ॥

तिर्यक्स्त्रीस्पर्शसुखं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनितसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५६ ॥

तिरश्चीरसनासौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकारितरसनासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकारितनासिकासुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५८ ॥

तिरश्चीनेत्रजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकारितनेत्रजनितसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५९ ॥

तिरश्चीकर्णजं सौख्यं कायेन कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायकारितनेत्रजनितसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६० ॥

एवं कायकारित भेदाः ।

नरस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६१ ॥

नरस्त्रीरसनासौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितरससुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६२ ॥

नरस्त्रीघ्राणजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितघ्राणसुख निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १६३ ॥

नरस्त्रीनेत्रजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितनेत्रसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६४ ॥

नरस्त्रीश्रोत्रजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितकर्णसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६५ ॥

देवस्त्रीस्पर्शजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितस्पर्शसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६६ ॥

देवस्त्रीरसजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितरसनासुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६७ ॥

देवांगनाघ्राणसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितघ्राणसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६८ ॥

देवांगनानेत्रसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितनेत्रसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६९ ॥

देवांगनाश्रोत्रसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं देवांगनाकायानुमोदितकर्णसुखनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १७० ॥

अचित्तस्त्रीस्पर्शसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १७१ ॥

अचित्तस्त्रीरससुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् १७२ ॥

अचित्तस्त्रीघ्राणसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेंद्रियसुखदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७३ ॥

अचित्तस्त्रीनेत्रसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७४ ॥

अचित्तस्त्रीकर्णसुखं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितकर्णसुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १७५ ॥

तिरश्चीस्पर्शजं सौख्यंकायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायानुमोदितस्पर्शनेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७६ ॥

तिरश्चीरसजंसौख्यंकायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायानुमोदितरससुखदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १७७ ॥

तिरश्चीघ्राणजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायानुमोदितघ्राणेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७८ ॥

तिरश्ची नेत्रजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चीकायानुमोदितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७९ ॥

तिरश्चीकरणजं सौख्यं कायेनाप्यनुमोदितम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं तिरश्चकायानुमोदितनेत्रेंद्रियसुखदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १८० ॥

एवं कायानुमोदित भेदाः ।

जलगंधसदकपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिकरैः ।
चारित्रशुद्धिसुमहे ब्रह्मणि चाये व्रतेजिनं भक्त्या ॥१८१॥

ॐ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यव्रतपरिपालकाय जिनाय महार्घम् १८१

अथ जयमाला ।

वंदे वरशीलं गुणगणनीलं मंगललीलं सुखकरणं ।
पापव्रजदरणं शिवशिववरणं भवनिस्तरणं गुणधरणम् ॥
मदमदनविदारं दोषनिवारं शुभमतिकारं विधिहरणं ।
तत्वार्थविचारं भवनिस्तारं परपदसारं मुनिशरणम् ॥१॥
जय शीलधर्मतरुबीजसार, सुखसदनमदनमदमोहजार ।
मंगलकर शमदभयमनिलीन, पावनमतिसाधन पापहीन॥२॥
मुनिजनजीवन भवसिंधु तार, आपद्धर वरसुखमंगकार ।
स्त्रीसंगविवर्जित वीतराग, नवधाब्रह्म कृतव्रतविभाग ॥३॥
इन्द्रियगणविषयविदारशूर, परमागमचिंतनज्ञानपूर ।
चेतोजविकारविहीनचित्त, स्वपरानुक्रोशशुभधर्मवित्त ॥४॥
विज्ञानसार शोषितविकार, तपसा तापित तनुधर्मधार ।
जिनवचनामृतपोषितसुबोध, कृतकर्मदहन शोधनविरोध॥५॥

अभ्यासितसुखकर शुद्धतत्त्व, निजचिंतन चिंतितनिर्ममत्व ।
बुधपूजितधर्मनिधानभूत, कल्याणधाम शिवशर्महूत ॥६॥
गुणगणमणिसागर सार सार, निजधर्मधामगुणसारकार ।
जयकर्म कलंक विकारदार, जय ब्रह्मसुमतिपदसौख्यधार॥७॥
समरसवशसाधित शुद्धतत्त्व, परमात्मरूप नाशितममत्व ।
जय पावन निर्भय निर्विचार, परमेश निरंजन निर्विकार॥८॥
जय जगतीनायक धरणधीर, गतरागद्वेष विकारचीर ।
मित वीतबाधवसदृष्टिशर्म जय निर्जरसरसिकनष्टकर्म ॥९॥

घत्ता ।

भवभयदुखहरणं शिवसुखकरणं बुधजनशरणं गुणधरणं,
इंद्रियगणदमनं शुभगतिगमनं जिनपदनमनं शिवरमणम् ।
पापानलशमनं जितवरमदनं गुणगणसदनं विधिकदनं
शीलव्रतभरणं वंदितचरणं विधिवरदहनं गदहरणम् १०

ॐ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यपरिपालकाय जिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति ब्रह्मचर्यव्रतपूजा समाप्ता ।

अथ ऽऽकिंचन्यमहाव्रतपूजा ।

क्षेत्रं वास्तु धनं धान्यं द्विपदं च चतुष्पदम् ।
आसनं शयनं कुप्यं मांडं बाह्या इमे दश ॥ १ ॥
सर्वेऽशुद्धिकराश्चैते योगादि नवभिर्हताः ।
चतुर्विंशप्रमाः संगाः द्विशतं षोडशान्विताः ॥ २ ॥

एवं २१६ भेदाः ।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टकम् ।

क्षेत्रादिदशधाबाह्यपरिग्रहविवर्जितः ।
ध्यानस्थसन्मुनेश्चित्तं नैसंग्यं च जलैर्यजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं आकिंचन्यधर्मधारकाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥
रागद्वेषहिरण्यादि साम्यभावसमाश्रितम् ।
ममत्त्वरहितं सारं गंधेनाकिंचनं यजे ॥ चंदनम् ॥
वेदत्रयविकारेण हीनं ज्ञानस्वरूपकम् ।
विधिना संगनिर्मुक्तं चर्चे सदकराशिभिः ॥ ३ ॥ अक्षतम् ॥
मिथ्यात्वपंचकैर्हीनं सत्यभावप्ररूपकम् ।
नैः संग्यं विधिना चार्ये पुष्पैः सद्गंधशालिभिः ॥४॥ पुष्पम्
हास्यादिरहितं शुद्धचारित्रपरिपोषकम् ।
नैःसंग्यं विधिना चार्ये नैवेद्यैः स्वादसंयुतैः ॥ नैवेद्यम् ॥
क्रोधादिरहितं ज्ञानपूर्णं चारित्रशुद्धिदम् ।
नैः संग्यं विधिना चार्ये दीपैरुद्योतिताखिलैः ॥ दीपम् ॥

ममतारहितं सारं महाव्रतविशुद्धिदम् ।
नैः संग्यं विधिना चाये धूपैर्धूपितदिङ्मुखैः ॥ धूपम् ॥
समतासहितं पूतं विरोधपरिवर्जितम् ।
नैः संग्यं विधिनाचाये फलैरिन्द्रिय तृप्तिदैः ॥ फलम् ॥
दृष्टिशुद्धं बुधैर्बोध्यं वीर्याचार पवित्रितम् ।
नैः संग्यं विधिनाचाये सदर्घैः पुष्टिदैः परैः ॥ अर्घम् ॥

अथ प्रत्येक पूजनम् ।

मनसा च कृतः क्रोध आभ्यन्तर परिग्रहः ।
तद्दोषविनिवृत्यर्थं चायेऽहं जिनपुंगवम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मनः कृताभ्यन्तरपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकायजिनाय अर्घम् ॥ १ ॥

मनसा कारितो मन्युरभ्यंतर परिग्रहः ॥ तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारिताभ्यंतर परिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ २ ॥

मनोऽनुमोदितो मन्युरभ्यंतर परिग्रहः ॥ तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताभ्यंतरपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ३ ॥

वचसा च कृतः क्रोधश्चांतरंगपरिग्रहः ॥ तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतान्तरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४ ॥

वचसा कारितो मन्युरन्तरंगपरिग्रहः ॥ तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितान्तरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५ ॥

वचोऽनुमोदितो मन्युरन्तरंगपरिग्रहः ॥ तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितांतरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ६ ॥

कायेन च कृतो मन्युरन्तरंगपरिग्रहः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतान्तरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७ ॥

कायेन कारितो मन्युरन्तरंगपरिग्रहः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकरितान्तरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८ ॥

कायानुमोदितो मन्युरन्तरंगपरिग्रहः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरंगपरिग्रहक्रोधदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९ ॥

एवं क्रोधाश्रित भेदाः ।

मनसा च कृतो मानो मदाष्टक समन्वितः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मन कृतान्तरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १० ॥

मनसा कारितो मानो मदाष्टकसमन्वितः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितांतरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ११ ॥

मनोऽनुमोदितोमानोऽहंकारस्य प्रवर्द्धकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितान्तरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२ ॥

वचसा च कृतो मानोऽखर्वगर्वमदो बहु । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतान्तरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३ ॥

वचसा कारितो मानः कष्टकोटिप्रदायकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितान्तरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १४ ॥

वचोऽनुमोदितो मानोऽनर्थसंघातकारकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितान्तरंगपरिग्रहमानदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १५ ॥

कायेन च कृतोमानो देहावयवविकृतिः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतान्तरंगपरिग्रहमानदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १६ ॥

कायेन कारितो मानोऽप्यपमानस्य कारकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकारितान्तरंगपरिग्रहमानदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ १७ ॥

कायानुमोदितोमानो वेणुस्तंभसमानकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरङ्गपरिग्रहमानदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १८ ॥

मनसा च कृता माया बहुदुःखप्रदा नृणाम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कृत मायाकषायान्तरंगपरिग्रहदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ १९ ॥

मनसाकारितामाया संसारांबुधिवर्द्धिनी । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितमायाकषायांतरंगपरिग्रहदोष निवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २० ॥

मनोऽनुमोदिता माया बहुकष्टप्रदा सदा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमायाकषायांतरंगपरिग्रहदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २१ ॥

वचसा च कृता माया तिर्यग्योनिप्रदा भृशम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतमायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ २२ ॥

वचसा कारिता माया वहुकौटिल्यसंयुता । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितमायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारक जिनायार्घम् ॥ २३ ॥

वचोऽनुमोदिता माया निस्त्रपत्वप्रदायिनो । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारकजिनायार्घम् ॥ २४ ॥

कायेन हि कृता मायाऽप्यंगविकारकारिणी । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृत मायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारक जिनायार्घम् ॥ २५ ॥

कायेन कारिता माया बहुसंसारदुःखदा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायाकारितमायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ २६ ॥

कायानुमोदितामाया भववृद्धिप्रदा भृशम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमायाकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ २७ ॥

मनसा च कृतो लोभो द्रव्यादिजनितोऽशुभः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कृतलोभकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोष निवारक जिनायार्घम् ॥ २८ ॥

मनसा कारितो लोभो पिण्याकस्य यथाभवम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितलोभकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोषनिवारक जिनायार्घम् ॥ २९ ॥

मनोऽनुमोदितो लोभः करभद्रस्य तद्यथा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितलोभकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोषनिवारक जिनायार्घम् ॥ ३० ॥

वचसा च कृतो लोभः फणहस्तस्य यद्यथा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतलोभकषायान्तरङ्गपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३१ ॥

वचसा कारितो लोभो धनदेवस्य चाभवत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३२ ॥

वचोऽनुमोदितो लोभः सत्यघोषस्य तद्यथा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३३ ॥

कायेन च कृतो लोभः श्मश्रुसर्पिर्यथाभवत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३४ ॥

कायेन कारितो लोभः कुवेरप्रियसंभवः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ३५ ॥

कायानुमोदितो लोभो बहुदुर्गतिदुःखदः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभकषायांतरंगपरिग्रहदोष निवारक जिनायाघम् ॥ ३६ ॥

मनसा च कृतं हास्यं बहुसंक्लेशकारणम् ।

ॐ ह्रीं मनः कृतहास्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ ३७ ॥

मनसा कारितं हास्यं भूरिदुर्गतिकारणम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितहास्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ ३८ ॥

मनोऽनुमोदितं हास्यं बहुदुःखप्रदं भुवि । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितहास्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ३९ ॥

वचसा च कृतं हास्यं पांडवैश्च यथा हरेः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतहास्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४० ॥

वचसा कारितं हास्यं तत्कालक्लेशकारणम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितहास्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम ॥ ४१ ॥

वचोऽनुमोदितं हास्यं भूरिदुःखस्य कारणम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितहास्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४२ ॥

कायेन च कृतं हास्यं बहुविद्वेषकारणम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४३ ॥

कायेन कारितं हास्यं प्रीतिभंजनकारणम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकारितहास्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ४४ ॥

कायानुमोदितं हास्यं चतुर्गतिषु दुःखदम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितहास्यपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४५ ॥

मनसा च कृता पूजा रतिः शुभापरान्यथा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ ४६ ॥

मनसा कारिता दुष्टा रतिर्भवविवर्द्धिनी । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितरत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ ४७ ॥

मनोऽनुमोदितभावा रतिर्भवदुर्गतिप्रदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोष निवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४८ ॥

वचसा विहिता रम्या रतिः स्यादपराम्यथा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ४९ ॥

वचसा कारिता यत्र रतिः स्याद्दुःखकारिणो । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५० ॥

वचोऽनुमोदनभवा रतिर्भवसुकष्टदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनाऽनुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ५१ ॥

कायेन च कृता यत्र रतिः स्यात्प्रीतिवर्द्धिनी । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतरतिपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम्॥५२॥

कायेन कारितायत्र रतिः स्यात्प्रीतिकारिणो । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितरतिपरिग्रहदोषनिवारकजिनायअर्घम्५३

कायानुमोदिता रम्या रतिर्जाता शुभापरा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमतरत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५४ ॥

मनसा च कृता यत्रारतिः स्यादशुभात्मिका । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृतारत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५५ ॥

मनसा कारिता दुष्टाप्यरतिश्च विरक्तिदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५६ ॥

मनोऽनुमोदनभवाऽप्यरतिर्भवदुःखदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितारत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५७ ॥

मनसा च कृता रम्या दुष्टा स्यादरतिः परा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५८ ॥

वचसा कारिता यत्रारतिः स्याद्दुःखकारिणी । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ५९ ॥

वचसानुमता यत्रारतिः स्याद्भवशक्तिदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६० ॥

कायेन च कृता यत्रारतिः स्यादिष्टघातिनी । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतारत्यभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ६१ ॥

कायेन कारिता यत्रारतिः स्याद्रतिप्रदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६२ ॥

कायानुमोदिता यत्रारतिः स्याद्भवकष्टदा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६३ ॥

मनसा च कृतः शोकः स्वपरोभयसंभवः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६४ ॥

मनसा कारितः शोकः लोकानामार्तिदायकः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६५ ॥

मनसानुमतः शोकः परत्रेहत्र दुःखदः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ६६ ॥

वचसा च कृतः शोकः स्वपरोभयसंभवः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृताभ्यंतरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६७ ॥

वचसा कारितः शोकः कलहादिककष्टदः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारिताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ६८ ॥

वचसानुमतः शोक आर्तरौद्रविधायकः । तद्दोघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदिताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजि-नाय अर्घम् ॥ ६९ ॥

कायेन च कृतः शोकः श्वभ्रतिर्यग्गतिप्रदः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७० ॥

कायेन कारितः शोकः श्रमखेदप्रवर्त्तकः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारिताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७१ ॥

कायानुमोदितः शोको वहुसंक्लेशकारकः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदिताभ्यन्तरशोकपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ७२ ॥

चारित्रशुद्धिसुविधौ मनसा च कृतं भयम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७३ ॥

जिनचारित्रसिद्ध्यर्थं मनसा कारितंभयं । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ७४ ॥

स्वपरोभयसंजातं मनोऽनुमतकं भयम् । तद्दोषघ्नं

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितभयनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७५ ॥

भयं दुःखप्रदंलोके वचसा च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतभयाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७६ ॥

स्वेष्टवियोगसंजातं वचसा कारितं भयम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितभयाभ्यन्तर[illegible]दोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७७ ॥

इहलोकादिसंजातं वचसानुमतं भयम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्री वचनानुमोदितभयाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकाय जिनाय अर्घम् ॥ ७८ ॥

अगुप्त्यत्राणसंजातं कायेन।कृतकं भयम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ७९ ॥

वेदनादिकसंजातं कायकारितकं भयम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८० ॥

आकस्मिकं सुसंजातं कायानुमोदितं भयम् ।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक-जिनाय अर्घम् ॥ ८१ ॥

अस्नानादिकसंजाता जुगुप्सा मनसा कृता । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८२ ॥

उपवासानाचमाच्च जुगुप्सा कारिता हृदि । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनः कारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८३ ॥

खेदप्रस्वेदमलजा जुगुप्सा हृदि मोदिता । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८४ ॥

दन्तधावनसंत्यागाज्जुगुप्सा वचसा कृता । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतजुगुप्साभ्यंन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८५ ॥

भूशय्योधूलिसंजाता जुगुप्सा कारितोक्तिजा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितजुगुप्साभ्यंन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८६ ॥

अचेलास्नानसंजाता जुगुप्सानुमतोक्तिजा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ८७ ॥

लोचत्यागभवा निंद्या जुगुप्सा कायतः कृता । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८८ ॥

कायेन कारिता निंद्या जुगुप्सा ग्लानिभावजा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ८९ ॥

कायानुमोदिता जाता जुगुप्साभ्यन्तरोद्भवा । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९० ॥

स्त्रीवेदोऽभ्यन्तरोभावो मनसा कृत आदृतः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकृतस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९१ ॥

स्त्रीवेदोदयसंजातो मनसा कारितो ग्रहः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकारितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ ९२ ॥

मनसानुमतो भावः स्त्रीवेदोदयसंभवः । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमादितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ९३ ॥

वचसा च कृतो भावः शाठ्यमायादिसंभवः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम्॥ ९४॥

वचसा कारितो भावः स्त्रीवत् स्त्रीवेदसंभवः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजि-अर्घम्॥ ९५॥

वचोऽनुमोदितः संगः स्त्रीवेदोदयलक्षणः। तद्दोषघ्नं

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम्॥ ९६॥

कायेन च कृतः संगः स्त्रीवेदाभ्यंतरग्रहः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम्॥ ९७॥

कायेन कारितः संगः स्त्रीवेदाभ्यन्तरोद्भवः। तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकारितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम्॥ ९८॥

कायानुमोदितः संग स्त्रीवेदाभ्यन्तरोद्भवः। तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम्॥ ९९॥

मनसा च कृतः संगः पुरुषान्वयलक्षणः। तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकृतपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम्॥ १००॥

मनसा कारितः संगः पुरुषभागशये रतः। तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकारितपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजि-नाय अर्घम्॥ १०१॥

मनसाऽनुमतः संगः पुरुषत्वगुणोदयः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १०२ ॥

वचसा च कृतः संग पुरुषाह्वयवेदजः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतपुरुषवेदाभ्यन्तरदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १०३ ॥

वचसा कारितः संगः पुरुषाभ्यंतरोदयः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ १०४ ॥

वचोऽनुमोदितः संगः पुरुषाभ्यन्तरोद्भवः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १०५ ॥

कायेन च कृतः संगः मार्दवादिगुणे रतः । तद्दषा०

ॐ ह्रीं कायकृतपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १०६ ॥

कायेन कारितः संगः पुरुषे पौरुषमदः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकारितपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १०७ ॥

कायेनाऽनुमतः संगः पुरुषे पौरुषात्मकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपुरुषवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १०८ ॥

षंढवेदो भयरुचिर्मनसा कृत भावकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकृतनपुंसकवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १०९ ॥

न स्त्री न च पुमान्नैव मनः कारितभावकः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं मनःकारितनपुंसकवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ ११० ॥

मनसानुमतो भावः षंढवेदस्य भावतः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितनपुंसकवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १११ ॥

षंढवेदभवो भावो वचसा कृत उन्नतः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं वचनकृतनपुंसकवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ ११२ ॥

वचसा कारितोभावः षंढवेदभवोऽधमः । तद्दोषघ्नं

ॐ ह्रीं वचनकारितनपुंसकवेदाभ्यन्तरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११३ ॥

वचोऽनुमोदितो भावः षंढवेदभवोऽधमः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं वचनानुमादितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११४ ॥

कायेन च कृतोभावः षंढवेदात्मकोऽपरः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं कायकृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११५ ॥

कायेन कारितो भावः षंढवेदप्रजोऽवरः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं कायकारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११६ ॥

कायेनाऽनुमतो भावः षंढवेदप्रजोऽवरः । तद्दोष°

ॐ ह्रीं कायानुमादितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहदाषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११७ ॥

पंचमिथ्यात्वजो भावो मनसा च कृतोऽधमः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं मनःकृतमिथ्यात्वपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ ११८ ॥

गृहीतमिश्रजो भावो मनसा कारितोऽधमः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं मनः कारितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारक जिनाय अर्घम् ॥ ११९ ॥

अगृहीताश्रयो भावो मनसानुमतो महान्। तद्दोष०
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविना[illegible] अर्घम् ॥ १२० ॥

एकान्तो विपरीतो यो भावस्तु वचसाकृतः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं वचनकृतमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १२१ ॥

वैनयिकः सांशयिको भावस्तुवचः कारितः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं वचनकारितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १२२ ॥

अ[illegible] भावो वचसानुमतो महान्। तद्दोष०
ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १२३ ॥

मध्वस्थभावतो वापि कायेन कृतकं परम्। तद्दोष०
ॐ ह्रीं कायकृतमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १२४ ॥

मिश्रविभ्रमजो भावः कायेनकारितो महान्। तद्दोष०
ॐ ह्रीं कायकारितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १२५ ॥

अनध्यवसितो भावः कायानुमतको महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यंतरपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १२६ ॥

क्षेत्रपरिग्रहो बाह्यः मनसा कृतवर्द्धकः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १२७ ॥

निजापरक्षेत्रसंगः मनसा कारितो महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनःकारितक्षेत्रपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १२८ ॥

उभयक्षेत्रसंयोगो मनसाऽनुमतो महान् । तद्दोष०

अर्घम् ॥ १२९ ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितक्षेत्रपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय

बाह्यक्षेत्रभिधः संगः वचसा च कृतो महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३० ॥

बाह्यक्षेत्राभिधः संगः वचसा कारितो महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितबाह्यक्षेत्रपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १३१ ॥

ग्रामक्षेत्राभिधः संगो वचसानुमतो महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् १३२ ॥

निजपरक्षेत्रसंगः कायेन च कृतो महान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३३ ॥

उभयक्षेत्रजनितो भावः कायेन कारितः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकारितक्षेत्रवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३४ ॥

वाह्यक्षेत्राभिधः संगः कायेनानुमतो महान् तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्षेत्रवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३५ ॥

वास्तु स्वपरजं ज्ञेयं द्विविधं मनसाकृतम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कृतवास्तुनामपरिग्रहवाह्यदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३६ ॥

निजापरद्वयं वास्तु मनसा कारितं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितवास्तुनामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १३७ ॥

मनसाऽनुमतं वास्तु स्वपरद्वयजं तथा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित वास्तुनामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १३८ ॥

वचसा च कृतो दोषा वास्तुवाह्यपरिग्रहे । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतवास्तुनामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १३९ ॥

वचसा कारितो दोषा वास्तुवाह्यपरिग्रहे । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १४० ॥

वचसानुमतं ज्ञेयं वाह्यं वास्तु द्विधात्मकम् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवास्तुनामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशक जिनाय अर्घम् ॥ १४१ ॥

कायेन च कृतं वास्तु स्वपरद्रव्यजं तथा। तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४२ ॥

कायेन कारितं वास्तु स्वपरद्रव्यजं तथा। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितवास्तुनामपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४३ ॥

कायेनानुमतं वास्तुर्द्विधा बाह्यपरिग्रहः। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमतवास्तुनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४४ ॥

धनं च गोधनं ज्ञेयं स्वपरद्रव्यजं तथा। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकारितधननामबाह्यपरिग्रहदोषबिनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४५ ॥

गोधनं द्विविधं संगं मनसा कारितं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनःकारितधननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४६ ॥

धनं स्यात्तद्धिरण्यं वा हैमं वा मनसा मतम्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४७ ॥

धनं हिरण्यं हैमं वा वचसा च कृतं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकृतधननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४८ ॥

धनं द्विविधमादेयं वचसा कारितं महत्। तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचनकारितधननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १४९ ॥

धनं स्वपरनं ज्ञेयं वचसानुमतं परम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितधननामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५० ॥

धनं कांचनरूप्यादि कायेन च कृतं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकृतधननामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५१ ॥

धनं स्वर्णसुतारादि कायकारितकं महत् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायकारितधननामवाह्यपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५२ ॥

धनं कनकरत्नादि कायेनानुमतं परम् । तद्दोषघ्नं०

ॐ ह्रीं कायानुमतधननामवाह्यपरिग्रहदोषनिवारकजिनाय अर्घम् ॥ १५३ ॥

धान्यं गोधूमव्रीह्यादिसंगश्च मनसाकृतः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कृतधान्यनामपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५४ ॥

धान्याष्टादशसंग्राहो मनसा कारितोऽवरः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनः कारितधान्यनामपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५५ ॥

धान्यौषधोपधान्यं हि संगोप्यानुमतं हृदा । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधान्यनामपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५६ ॥

धान्यसंगसमादानं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतधान्यनामपरिग्रहदोषविनाशकजिनाय अर्घम् ॥ १५७ ॥

धान्योपधान्यसंगश्च वचसा कारितो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधान्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं ॥ १५८ ॥

तिलशिवादिधान्यादौ वचसानुमतो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितधान्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय जलादि अर्घं ॥ १५९ ॥

अष्टादशान्नभेदानां संगः कायकृतो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतधान्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं ॥ १६० ॥

उपधान्याष्टादशानां च कायकारितसंग्रहः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितधान्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं ॥ १६१ ॥

अपधान्याष्टादशानां च कायानुमतसंग्रहे । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधान्यनामपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६२ ॥

द्विपदोदासदास्यादि संगोऽपि मनसा कृतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६३ ॥

द्विपदस्य समादानं मनसा कारितं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६४ ॥

पुत्रमित्रकलत्रादिसंगो हृदनुमोदितः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६५ ॥

द्विपदस्य समाहारः वचसा च कृतो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६६ ॥

द्विपदस्य समादानं मनसा कारितो महन् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६७ ॥

वचसानुमतं यच्च द्विपदानां समाकृतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६८ ॥

द्विपदानां समादानं कायेनापि कृतं महन् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १६९ ॥

कायेन कारितं यच्च द्विपदादानमंभ्रमं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७० ॥

कायेनानुमतं यच्च द्विपदादानमहूतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७१ ॥

चतुष्पदगजाश्वादिसंगोऽपि मनसा कृतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७२ ॥

चतुष्पदसमादानं मनसा कारितं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७३ ॥

रथजयानवाहनादि मनसानुमतं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७४ ॥

चतुष्पदसमादानं वचसा च कृतं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७५ ॥

चतुष्पदसमाहारो वचसा कारितो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७६ ॥

चतुष्पदसमादानं वचनानुमतं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७७ ॥

चतुष्पदसमाहारः कायेन च कृतो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७८ ॥

गजाश्वादिसमाहारः कायेन कारितो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १७९ ॥

गजाश्वादिसमाहारः कायेनानुमतो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशनाय जिनाय अर्घं० ॥ १८० ॥

आसनं पीठभद्रादि मनसा च कृतं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकृतआसननामबाह्यपरिग्रहदोष विनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८१ ॥

आसनस्य समाहारो मनसा कारितो महान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८२ ॥

आसनस्य समादानं मनसानुमतं महत् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८३ ॥

वचसा च कृतः संगो बाह्यार्थासनकस्य च । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८४ ॥

वचसा कारितः संगो बाह्यार्थासनकस्य च । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८५ ॥

वचसानुमतः संगो बाह्यार्थासनकस्य च । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८६ ॥

कायेन च कृतः संगो बाह्यार्थासनकस्य च । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८७ ॥

कायेन कारितः संगो बहिरर्थासनोद्भवः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८८ ॥

कायेनानुमतः संगो बहिरर्थासनोद्भवः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १८९ ॥

शयनं चाष्टकाष्ठं च तत्संगो मनसा कृतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकृतशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९० ॥

मनसा कारितः संगः शयनस्य च कारितः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९१ ॥

मनसानुमतः संगः हंसतूलस्य नामतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९२ ॥

वचसा चोपधानाख्यशयनस्य कृतः श्रयः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९३ ॥

वचसा कारितः संगः गद्दिकागल्लसूरिणः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितशय्यानामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९४ ॥

वचसानुमतः संगः हंसतूलसुगर्भिणः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९५ ॥

शयनस्याष्टकाष्ठस्य कायेन कृतसंगकः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९६ ॥

कायेन कारितः संगः शयनस्योपधेरपि । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितशयननामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९७ ॥

कायेनानुमतः संगः शयनस्य तु मंचवान । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९८ ॥

कुप्यकाप्यसिक्षोमादि सगोऽपि मनसा कृतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १९९ ॥

कुप्यं क्षौमदुकूलादिसंगोऽपि कारितो हृदा । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०० ॥

कुप्यं बाह्यपदार्थस्य मनसानुमतं कृतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०१ ॥

वचसा च कृतः संगः बाह्यकुप्यस्य नामतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०२ ॥

वचसा कारितः संगः बाह्यकुप्यस्य चेलिनः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०३ ॥

वचसानुमत्तः संगः बाह्यकुप्यस्य भेदतः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०४ ॥

कायेन च कृतः संगः बाह्यकुप्यस्य तुलिनः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतबाह्यकुप्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०५ ॥

कायेन कारितः संगः वाह्यकुप्यस्य भेदतः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितबाह्यकुप्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०६ ॥

कायेनानुमतः संगः वाह्यकुप्यस्य भेदतः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितबाह्यकुप्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०७ ॥

मनसानुकृतः संगः भांडपात्रादिकं महत्। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनकृतभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥

मनसा कारितः संगः भांडपात्रादिकं धनं। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनकारितभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २०९ ॥

मनोनुमोदितः संगः ताम्ररजतभांडकः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २१० ॥

वचसा च कृतः संगः भांडस्य क्रयविक्रये। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥

वचसा कारितः संगः तारस्वर्णजभांडके। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २१२ ॥

वचोनुमोदितः संगः भांडस्य बहुभेदनः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचोनुमोदितभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशनाय जिनाय अर्घं० ॥ २१३ ॥

कायेन च कृतः संगः भांडस्य कारभेदनः। तद्दोष० ॥
ह्रीं कायकृतभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशनाय जिनाय अर्घं ॥ २१४ ॥

कायेन कारितः संगः भांडस्थालादिकं ततः। तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशकाय जिनाय अर्घं ॥ २१५ ॥

कायेनानुमतः संगः भांडस्य बहुभेदतः। तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदनभांडनामबाह्यपरिग्रहदोषविनाशनाय जिनाय अर्घं० ॥ २१६ ॥

इत्थं परिग्रहविमुक्तव्रतस्य भेदाः।
प्रोक्ताः शतद्वयमर्थं जिनराजदेवैः ॥
सम्यक् विचार्य हृदये मुनिभिः प्रधार्य।
पूज्याः पृथग् दलमिदानु महे नितांतं ॥ २१७ ॥

ॐ ह्रीं आकिंचन महाव्रताय महार्घं० ।

अथ जयमाला ।

जैनं धर्म स्थाकिंचन्यं भक्त्या वन्दे निस्संगं।
करुणायुक्तं मोहत्यक्तं कुज्ञानं सानन्दं ॥
रागद्वेषैर्मिथ्याक्लेशैः पापाचारैर्निर्मुक्तं।
क्षेमाधारं शर्म्मागारं मुक्तेः मार्गो संस्तुत्यं ॥ १ ॥

सदकिंचन जय जिनधर्मसार, सर्वोपधि वर्जित विजितमार।
व्रत-समिति-गुप्ति-संयम-विहार, कृत मम-दम-यम-नियम-प्रसार॥
अनुभव चिंतित निज तत्त्व सार, भव भोग शरीर विराग कार।
इंद्रियगणविषय विकार हीन, रत्नत्रय पोषित योग लीन ॥
तपसा तनु शोषित निष्कषाय, परिपरिणतिरहित विहीनमाय।
मूलोत्तरगुणजितचित्त चार, निज बोध ध्वस्त विकारभार ॥

जय भव भय हर धर्मोगसार, तपसा द्योतित सद्बोध चार ।
जय परमागम शुभ सारभूत, शिवसुख दायक वर पुण्य पूत ॥
जिनधर्म विधारक बुध शरण, वर भव्य तरण जय गुण धरण ।
जय पावन पुरुषाकार धार, जय व्रत समिति गुप्ति प्रचार ॥
समता रस कृत निज शुद्ध तत्व, परमात्म स्वरूप नाशित ममत्व ।
सोऽहं प्रतीति कर ध्यान धार, गत राग द्वेष कर निर्विकार ॥

॥ घत्ता ॥

मदमोहविहीनं विधिगणक्षीणं समरसलीनं पापहरं ।
परमागमसारं पुण्यविचारं, शिवसुखधारं सार तरं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्यधर्मांगाय जयमाला महार्घं० ।

॥ इति पंचम परिग्रह प्रमाणव्रत पूजा समाप्त ॥

षष्ठे दशोपवासाः स्युर निच्छानवकोटिभिः ।
अणुव्रते निशाभुक्तिः दोपहान्यै सुयोगिनां ॥

॥ इति पुष्पांजलिं क्षिपेत ॥

॥ अथाष्टकं ॥

व्योमापगादिवारिभिः सुवर्णभृंगारनालिकाचयैः ।
पूतैः चाये षष्ठे वृत्तेः निशासु भुक्तिक्षये जिनयं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्तिवर्जकाय जिनाय जलं० ॥ १ ॥

कृष्णागरु सद्धूपैः कर्पूर व्रजसु पूरितैर्गंधैः । पूतै० ॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्तिवर्जकाय जिनाय गंधं० ॥ २ ॥

कुंदोज्वलशुभसदकैरक्षयपददैः सुगंधिभिर्नित्यं । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० अक्षतान् ॥ ३ ॥
जातीकुंदकदंवकमंदारसुमल्लिकादिघनपुष्पैः । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० पुष्पं० ॥ ४ ॥
पक्वान्नपायैः सौधैः शाल्यन्न व्यंजनैर्घृतदुग्धैः । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० नैवेद्यं० ॥ ५ ॥
दीपर्दीपितलोकैः कर्पूरघृतादिजन्यैरदीपैः । पूतै० ।
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० दीपं० ॥ ६ ॥
श्रीखंडचतुष्काद्यैः धूपैरहृमधुपिताळिगणैः । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० धूपं० ॥ ७ ॥
दाडिममोचकपूगैः कपित्थनारंगकाम्रसच्चोचैः । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० फलं० ॥ ८ ॥
वार्गंधाद्यैर्द्रव्यैः दूर्वासिद्धार्थस्वस्तिकाद्यैश्च । पूतै० ॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति० अर्घं० ॥ ९ ॥

चतुर्विधनिशाभुक्तिः मनसा च कृता यदि ।
तद्दोषस्य निवृत्यर्थं चार्येऽहं जिनपुंगवं ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥
मनसा च कारिता यदि चतुर्विधाया निशीभवाभुक्तिः ।
तद्दोषनिवृत्यर्थं चार्येऽहं मुक्तिदं जिनं द्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥२॥
मनसानुमोदिता यदि चतुर्विधा रात्रिसंभवा भुक्तिः । तद्दोष०
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥३॥
वचसा च कृता यदि चतुर्विधा तामसीभवा भुक्तिः । तद्दोष०
ॐ ह्रीं वचनकृतरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥४॥

वचसा च कारिता यदि चतुर्विधा सूर्यक्षयाभवा भुक्तिः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं वचनकारितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥५॥

वचसानुमोदिता यदि चतुर्विधाहारभुक्तिः निशिजाता। तद्दोष०
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥६॥

कायेन कृता यदि सा चतुर्विधा विभावरीभवा भुक्तिः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं कायकृतरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

कायेन कारिता यदि चतुर्विधा सभी भवा भुक्तिः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं कायकारितरात्रिभुक्तदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

कायानुमोदिता यदि चतुर्विधाहारदिनस्त संभुक्ति। तद्दोष०
ॐ ह्रीं कायानुमोदितरात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय अर्घं०॥९॥

चतुराहारसमिछा पूर्वं जाताप्यगारिणो बहुधाः। तद्दोष०
ॐ ह्रीं रात्रिभवचतुर्विधाशनानिशासूचक जिनाय अर्घं० ॥१०॥

इत्थं रात्रिसुभुक्तिः दशधा त्यागेन सूचिता दिव्याः।
नित्यं जलादिकाद्यैः प्रयजे भावेन भक्तितो दिव्यैः॥
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्तिदोषनिवारकाय जिनाय महार्घं ॥

अथ जयमाला।

सुसम्यक्त मूलं तपःस्कंध वंद्यं, महाव्रतशाखं सदाचार गन्धं।
शुभ ध्यानपत्रं प्रवालं विशालं, वरज्ञानपानीय शक्ति सुमालं॥
गुणव्रात पुष्पं दयाशीलछायं, फलंमुक्ति सौख्यं शुभं नष्टभाव।
यतिव्रातं पाथश्रितं साधु पक्षं, श्रयध्वं सदा धर्मसद्वृक्षदक्षं॥

भजंति ये सुसद्व्रतं निवारं यति ते भयं।
दृगादिरत्नभूषितं जिनेश सूक्ति पोषितं॥ १ ॥

प्रमाददोषदूरगं, सुसौख्य सिन्धु पूरगं ।
मनः प्रचारवारकं, खगार्थ कक्षजारकं ॥ ४ ॥
सुजीव षट्करक्षकं, सुसत्यसंघ पक्षकं ।
अदत्तत्याग सगुणं, सुब्रह्मचर्य रंजितं ॥ ५ ॥
अकिंचनत्वसूचकं, सुगुप्तगुप्तरोचकं ।
गुणौघभारधारकं, चरित्र मोहदारकं ॥ ६ ॥
तपः प्रभावसंजितं, क्षमादिभावसंयुतं ।
कषायकूपशोषकं, यमादियोगपोषकं ॥ ७ ॥
विकारभावरोधकं, विरागभावबोधकं ।
निजात्मरूप शोधकं, प्रशान्तचित्तमोदकं ॥ ८ ॥
अभेदबोधदायकं, विशेषवृत्तनायकं ।
परीषहार्तिनाशकं, सुतत्त्वरूप भासकं ॥ ९ ॥
परार्थ स्वार्थ-साधकं, भवप्रचारबाधकं ।
नरत्व सार्थकारकं, सुमुक्तिरूप धारकं ॥ १० ॥
विकारकोटि खण्डनं, त्रिशल्यदण्ड दण्डनं ।
सुसाधु संघ मण्डनं, विधिप्रसार मण्डनं ॥ ११ ॥
यमादि योग भूषितं, विभावभाव दूषितं ।
स्वसौख्यवीर्यनायकं, सुदृष्टि बोधदायकं ॥ १२ ॥

घत्ता ।

जय शिवसुख साधक भवभय बाधक भव्याराधक दोषहरं ।
षट्जीवदयाभर चित्तरव कृशकर संयम सुखकर बोधसरं ॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्तिपरित्यागव्रताय जयमाला महार्घं ।

अथ गुप्तित्रय पूजा लिख्यते ।

मनोवाक्कायगुप्तीनां प्रत्येकं शोधका नव ।
मेवं: गुप्तिविशुद्ध्यर्थं सप्तविंशतिभेदकाः ॥
इति पुष्पाजलि ।

मनसो गुप्तिः सारा स्वर्गानरादेः सुखाश्रया भूताः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे सुजलैः सद्गन्ध-मिश्रैश्च ॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय जलं ॥ १ ॥

रागद्वेषविकारसत्त्या सारा मनोभवा गुप्तिः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे गन्धैः संसारतारक स्वच्छैः ॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय गन्धं ॥ २ ॥

दशविधिधर्मसमाहूति सुतत्परा सा मनोभवा गुप्तिः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे सदकैः खण्डनत्वविमुक्त्यै ॥ अक्षतं ॥
पंचातिचारमुक्त्या पंचविधाचार तत्परा गुप्तिः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे कुसुमैः परिजातकुंदाद्यैः ॥ पुष्पं० ॥
षड्विधकायसुरक्षा षड्विधदमने सुतत्परा गुप्तिः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे सुधापदैः शुद्धचरुभिश्च ॥ चरुं० ॥
नवकोटि सद्विशुद्धा नवविधपुण्या सुसप्तगुणयुक्तः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे दीपैः कर्पूरमाणमयः सारैः ॥ दीपं० ॥
षट्चत्वारिंशत्सतरसमेषणादोष वर्जिता गुप्तिः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे धूपैः श्रीखंडमुख्यसद्रव्यैः ॥ ७ ॥ धूपं ॥
द्वात्रिंशदंतरायक चतुर्दशकमलविमुक्तमनसा सा ।
तद्धर्तारं प्रयजे सारैः सुफलैर्नवीनफललब्ध्यै ॥ फलं ॥८॥

जलगंधसदक्षकुसुमैश्चरुभिर्दीपैः सुधूपफलनिकरैः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे मनसो गुप्तेः शिवस्य संलब्ध्यै ॥ अर्घ ॥९॥

मनसा कृतापि सम्यक् मनसो गुप्तेः कथंचिदपि लब्धाः ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे द्रव्यैः सद्व्रत सिद्धि वृद्ध्यर्थं ।

ॐ ह्रीं मनकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

मनसापि कारिता सा मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ ॥ २ ॥

मनसानुमोदिता सा मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ।
तद्धर्त्तारं प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

वचसा कृतापि सम्यक् मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ॥
तद्धर्त्तारं प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ ॥ ४ ॥

वचसापि कारिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ॥
तद्धर्त्तारं प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ ॥ ५ ॥

वचसानुमोदिता सा मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्धर्त्तारं०

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ ॥६॥

कायेन कृता सम्यक् मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्धर्त्तारं०

ॐ ह्रीं कायकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ० ॥ ७ ॥

कायेन कारिता सा मनसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्धर्त्तारं०

ॐ ह्रीं कायकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घ० ॥ ८ ॥

कायानुमोदिता सा मनसो गुप्ति कथंचिदपि ढच्धा । तद्धर्त्तारं०
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥९॥
एवं नवविधपुण्या मनसो गुप्ति कथंचिदपि लब्धा । तद्धर्त्तारं०
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिप्रतिपालकाय महार्घं ।

अथ जयमाला ।

विधिगणाश्रवकारण वर्जित, प्रवरसंवरहेतु विवर्धितं ।
जिनवरागमकोविदयोगिनां मनसो गुप्तेः गुणागमवस्थितं ॥१॥
जय गुप्तिधर्म मिथ्या निवार, तनु चित्तवचन वैषम्य दार ।
चेतो भवीक विषय पहीण षट्काय जीव करुणा प्रवीण ॥२॥
मद लोभ कोप माया प्रहार, हास्यादि दोष गत जगति सार ।
माया निदान मिथ्या प्रनष्ट, तनु रोग दोष विकथाव भ्रष्ट ॥३॥
द्वादश तपसा शोषत शरीर, जय दृष्टि ज्ञान चारित्र वीर ।
नय भेद धर्म विधि विविध नीर, जय कर्म दोष मल शमन वीर ॥४
समतारसभररंजित स्वचित्त चारित्र दृष्टि गुण बोध चित्त ।
जय सर्व सत्व मैत्री विधान, मुनिजन प्रमोद कर सुख निधान ॥५
दुर्गति दुःखित कारुण्य कार, विपरीत वृत्ति माध्यस्थ चार ।
निःशेष परीषह सहन धीर, पर परिणति वर्जित गुण गंभीर॥६
जय विषय विरक्त सुशीलसाल, जय विमल चित्त पोषित गुणाल।
जय पंच परम गुरुदत्त भाव, तपसा तनु लालित विगत हाव ॥७

घत्ता ।

शुभ खग गण बोधे पशुगण बोधे समतादिक वर सत्करणे ।
कविज्ञान सुभूषण मुनिगण भूषण चित्तगुप्ति वरपांशु यजे ॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिप्रतिपालकाय जयमाला महार्घं ।

अथ वचोगुप्ति पूजा ।

वचसो गुप्ति सारा दशविध सत्याश्रया महागुप्तिः ।
तद्रक्षार्थं प्रयजे रुचिरैः सुजलैर्घनचित्तसंयुक्तैः ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय जलं ॥ १ ॥

दशविध दुर्गतभाषा त्यक्ता सारा वचोभवा गुप्ति । तद्रक्षार्थं०
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय चन्दनं० । २ ॥

हितमित संशयवर्जितभाषायुक्ता वचोभवागुप्तिः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय अक्षतं० ॥ ३ ॥

पंच महाव्रतयुक्ताः पंचसमित्याख्यपालने शक्ताः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय पुष्पं० ॥ ४ ॥

संयमसप्ततियुक्ताः सप्ततत्वप्ररूपिका गुप्तिः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय नैवेद्यं० ॥ ५ ॥

अष्टमदनाशरूपा अष्टमभूमिप्रदाष्टगुणसंयुक्ता । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय दीपं० ॥ ६ ॥

नव तत्वार्थ विचारा नवनयकुशला वचोभवागुप्तिः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय धूपं० ॥ ७ ॥

दशविध सत्यसुधात्री दोषा लोचनविवर्जिता गुप्तिः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय फलं० ॥ ८ ॥

जलगन्धसदक्षकुसुमैश्चरुभिर्दीपैः सुधुपफलनिकरैः । तद्र० ॥
ॐ ह्रीं वचोगुप्तिधराय अर्घं० ॥ ९ ॥

मनसा कृतापि सम्यक् वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ।
तद्रक्षार्थं प्रयजे द्रव्यैः सद्वृत्तिसिद्धिः वृद्ध्यर्थं ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

मनसापि कारिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं मनःकारितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥
मनसानुमोदिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥
वचसा कृतापि सम्यक्वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा तद्ध०
ॐ ह्रीं वचनकारितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥
वचसापि कारिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं वचनकारितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥
वचसानुमोदिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं वचोनुमोदितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं ॥ ६ ॥
कायेन कृता सम्यक् वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं कायकृतवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं ॥ ७ ॥
कायेन कारिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं कायकारितवचोगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं ॥ ८ ॥
कायानुमोदिता सा वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा । तद्ध०
ॐ ह्रीं कायानुमोदितवचोगुप्तिप्रतिपालाय जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥
एवं नवविधकोटिर्वचसो गुप्तिः कथंचिदपि लब्धा ॥ तद्ध० ॥
ॐ ह्रीं नवविधिवचोगुप्तिधराय महार्घं० ॥

अथ जयमाला ।

महत्कर्मकक्षाग्निरूपं विचारं, वरं मर्त्यदेवादि शर्मप्रचारं ।
बुधा गोप्यते ज्ञाननेत्रेण सांगं, वचो द्वादशांग प्रकारं वृषांग॥१॥

जय जय दश विध सत्य धार, जय दश विध दुर्भाषा निवार।
जय हित मित निःसंदिग्ध वाक्य, जय मिष्ट शिष्ट प्रकटादि वाक्य॥

जय जय मासाद्युपवास धार, कवलैकाहार कर प्रचार।
जय दशविध वैयावृत्य सार, रस रस परिहार विनष्ट मार॥३॥

एकाकी शय्यासन विहार, जय कायक्लेश तप सुधार।
सुर सेवित प्रायश्चित्त कार, विनय प्रकृष्ट गत कर्म भार॥४॥

वर वैयावृत्य विनष्ट मान, स्वाध्याय पंचकर सद्विधान।
व्युत्सर्ग ध्यान शोषित शरीर, अणु महाविरति धर दिशा चीर॥५

ममता मति वर्जित परम धीर, रत्नत्रय भूषित वीर वीर।
इंद्रिय गण दंडन चित्त क्षीण, करुणारस पूरण भावलीन॥६॥

वनवास निरास कषाय नग्न, भिक्षा भोजन रागादि भग्न।
स्थल भू शय्या शयनैक चित्त, दश सम करुणाभर धीर चित्त॥७॥

वैराग्य क्षमाधर विगत दंभ, उपधि प्रपच हर नष्ट जंभ।
दुर्गति हर सद्गति सौख्य धाम, जिन कथित तप शिवशर्म्म नाम॥८

घत्ता।

वचो गुप्तिदं पापहं बोधबुद्धं, परं द्वादशं द्विप्रकारं विशुद्धं।
भवातापहं शर्म्मदं मार मारं, जिनेन्द्रादि भूति प्रदत्तं तपश्च॥

ॐ ह्रीं वचोगुप्तिव्रताय जयमाला महार्घं॥

अथ नवकोटि कायगुप्ति पूजा ।

तनुजा गुप्तिः सारा मूलोत्तरगुणाश्रया गुप्तिः ।
तद्धातारं प्रयजे सुजलैर्गंधसंयुतैः पूतैः ॥
ॐ ह्रीं कायगुप्तिधराय जलं ॥ १ ॥

दश पंच प्रमादातिगा गुप्तिः साशतनोर्भवा सम्यक् ।
तद्गुप्तिधरं प्रयजे गंधैः संसारतारकं सघनैः ॥ चंदनं ॥२॥

दशविधधर्म समाहृतिः सु तत्परा सा तनोर्भवा गुप्तिः ।
तद्धातारं प्रयजे सदकैः खंडत्वनिर्मुक्तयैः ॥ अक्षतान ॥३॥

पंचमगतिपददक्षा पंचविधधृतबोधदा गुप्तिः ।
तद्धातारं प्रयजे कुसुमैर्मंदारकुंदाद्यैः ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

षड्विधलेश्याज्ञायकतनुरक्षासप्तभयकसंयुक्ताः ।
तद्धातारं प्रयजे चरुभिः सुसुधाप्रदैर्भक्त्या ॥ चरुं० ॥५॥

नवविध कोटि विशुद्धत्रिकाल लोकत्रयी प्रकाशा सा ।
तद्धातारं प्रयजे दीपैः कर्पूरमणिमयैः सारैः ॥ दीपं० ॥६॥

षट्कारण सन्नियम त्रिकाठि पादशक गोपका गुप्तिः ।
तद्धातारं प्रयजे धूपैः श्रीखण्डमुख्यद्रव्यैः ॥ धूपं० ॥७॥

चतुराशीत्यासादननाथाध्ययनादिकरण संदक्षा ।
तद्धातारं प्रयजे सारैः सुफलैः सुनिर्वृतेर्लब्ध्यैः ॥ फलं० ॥८॥

जलगन्धसदककुसुमैश्चरुभि दीपैः सुधूपफलनिकरैः ।
तद्धातारं प्रयजे कायसुगुप्त्यैः शिवस्य संलब्ध्यैः ॥ अर्घं० ॥९॥

मनसापि कृता सम्यक् कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा।
तद्धातारं प्रयजे द्रव्यैः सद्वृत्तसिद्धिवृध्यर्थं ॥

ॐ ह्रीं मनकृतकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

मनसापि कारिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं मनकारितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

मनसानुमोदिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥३॥

वचसा कृतापि सम्यक् कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं वचनकृतकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

वचसापि कारिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं कायकारितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥५॥

वचसानुमोदिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥६॥

कायेन कृता सम्यक् कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं कायकृतकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

कायेन कारिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं कायकारितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥८॥

कायानुमोदिता सा कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा। तद्ध०

ॐ ह्रीं कायानुमोदितकायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय अर्घं० ॥९॥

एवं नव विधकोटि कायसुगुप्तिः कथंचिदपि लब्धा।
तद्धातारं प्रयजे द्रव्यैः सद्वृत्तवृद्धि सिध्यर्थं ॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय जिनाय ॥ महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

भज भव्य सुगुप्ति करुणायुक्तां, जिनवरमुख निर्गति ममक्तां ।
योगं भवनारं परम विचारं, सारासार विवेक फलं ॥
जय गुप्ति काय गत वृत्ति धार, मणिमालि यतीश्वर शीर्ष जार ।
जय सर्वयोग हृदि गुप्ति कार, जय मदन विध्वंसन जैन पार ॥
जय वचोगुप्ति दृष्टांत सार, भूषण पंचक गत देह भार ।
निर्वाण यथागत देह धीर, नवकोटि शुद्धि धर विधि गंभीर ॥
दोषाष्टक वर्जित दृष्टि मूल, गत दोष रोष जन हृदय शूल ।
अतुलवृत्त भाव समुद्रतार, सुखहेतु नरभव सफल कार ॥३॥
भवभंजन भोग निधान हार, कल्याण करण विपदा निवार ।
गुणगणमिश्रो हे निर्विकार, हितमित कोमल वर वचन धार ॥
परबाधा दुःख निवार सार, समतामृत सागर पाप जार ।
जल वह्नि सर्प नृप भय विदार दुर्जन गज व्यंतर भीति वार ॥
विष शस्त्र नारि विकार हार, जय केशरि गिरि चौपद पसार ।
जिन धर्म भजन शुभ मूल काय, गत छद्ममान छल दंभ माय ॥
परमात्म प्रकाशक कष्ट दूर, भय हर सुखकर ज्ञान पूर ।
सम्यक् सुमित्र समबोध शुद्ध, चारित्र पात्र प्रत्यय निरुद्ध ॥७॥
दुर्भाग्य दैन्य दारिद्र वार, अपयश कीर्ति स्वरूप सार ।
वर शर्म्म पुंज नुत वारवार, गत भैष्यज रोग विकार सार ॥
पाप व्रज हर प्रीति धार, बल वीर्यवृद्धि कर चरण धार ।
सौख्याकर हितकर प्रेम धाम, सुकृत सवृद्धिकर शौर्य काम ॥
चारित्र शुद्धिकर परम बुद्ध, जय निर्भय निर्मद शुद्ध बुद्ध ।
दीर्घायु ज्ञान गुण बल प्रसार, संपत्कर तरवर सार सार ॥१०॥

॥ घत्ता ॥

चारित्रशीलपोषणं, कुकर्मनीरशोषणं ।
विनयशिक्षभूषणं, सुभव्यपद्मपूषणं ॥
सुज्ञान भूषणं वरं, सुकायगुप्तिगोपनं ।
मनो वचः सुकाय गुप्ति गोपनं शिवश्रियं ॥
ॐ ह्रीं कायगुप्तिवराय जयमाला महार्घं ।

अथ इर्यासमिति पूजा ।

युगमर्मितसुध्यानं वीक्ष्य निर्जंतुभूमिकं ।
शनैर्मौद्गुनक गच्छेदीर्यायामविलंबितः ॥ १ ॥
ईर्याग्रहणनिक्षेपोत्सर्गाख्यसमितित्रिके ।
समितित्रयशुद्ध्यर्थं सर्वे ते सप्तविंशतिः ॥ २ ॥
ईर्याया नव कोटिश्च संपूज्याः पूर्वतो दले ।
व्युत्सर्गो दानंनिक्षेपौ द्वे पूज्ये ततः परं ॥३॥ पुष्पांजलि ॥

अथाष्टकम् ।

ईर्यासमितिकां सारां यतिनामपि दुर्लभां ।
कर्मघ्नां मुनिभिः सेव्यां जलेन पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं ईर्यासमितये जलं ॥ १ ॥

क्षमादि सहितां सारां समिति भववारणां ।
कर्मघ्नां मुनिभिः सेव्यां गंधेन पूजयाम्यहं ॥ चंदनं ॥ २ ॥
सामायिकादि रक्षायै पापतापापहां परां ।
यतिनां चाति रम्यां च निर्मल्यां चाक्षतैर्यजे ॥अक्षतान्॥ ३ ॥

जपोभिर्दुष्करैर्युक्ता समितिं मोहभंजिकां ।
सत्यसार्थकरां पुष्पैः पूजयामि शिवश्रिये ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
मुलोत्तरगुणाख्यानां संयतानां समुक्तिदां ।
समितिं धर्मिभिः सेव्यां नैवेद्यः पूजयाम्यहं ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
मिथ्यात्वाद्युर्जितां सारां समितिमुक्तिकारणं ।
योगिभिः पूजितां नित्यं दीपैर्दीपैर्गणैर्यजे ॥ दीपं ॥ ६ ॥
मदप्रमादरहितां युगाध्वसत्वशोधिनीं ।
सेवितां मुनिभिर्धीरैः धूपैः संपूजयाम्यहं ॥ धूपं ॥ ७ ।
अष्टांगयोग संयुक्तयामीर्यां संशुद्धिकारिणं ।
पालयंति सदा धीरास्तदंगां सुफलैर्यजे ॥ फलं ॥ ८ ॥
श्रद्धानैः सहितां पूतां पापसंतापनाशिनीं ।
ज्ञानविज्ञानसंपन्नां महार्घैः समितिं यजे ॥ अंर्घ ॥ ९ ॥

सम्यक्तेन विना नृणां समितिर्दुर्लभां भुवि ।
तां प्राप्य नेन तन्नृत्व सफलं क्रियतां बुधैः ।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितये महार्घं० ॥ १ ॥

चेतः कृतां सुखाधारां समितिं पापनाशनीं ।
तां कुचारित्रमोहाभ्यां वर्जितां पूजयाम्यहं ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतईर्यासमितये अर्घं० ॥ २ ॥

चेतसा कारितां सारां कषायदोषदूरगां ।
साधुभिः साधितां पूतां समितिं प्रीणयाम्यहं ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ३ ॥

चेतोऽनुमोदितां शुद्धामीर्याख्यां कर्मवारणीं ।

अनृतत्रातरहितां जलाद्यैः पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ४ ॥
वाक्कृतां समितिं साधु जनानां प्रीतिकारणं ।
कषाय वन्तुपानीनां जलाद्यैः पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतईर्यासमितये अर्घं० ॥ ४ ॥
सद्वाचा कारितां तथ्यां प्रमादैः परिवर्जितां ।
मुनिचेतो गतमान्यां जलाद्यैः पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ५ ॥
वचनानुमोदितां पथ्यां पंचसंसारनाशिकां ।
योग त्रिकैर्धृतां सद्भिः जलाद्यैः पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ६ ॥
कायकृतां क्रियाक्रातां धर्मदां समितिं परां ।
विकाररहितां शांतभावाद्यैः पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं कायकृतईर्यासमितये अर्घं० ॥ ७ ॥
कायेन कारितां शुद्धां समितिं शीलभूषितां ।
शल्यत्रयविनिर्मुक्तां जलाद्यैः संयजाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं कायकारितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ८ ॥
कायानुमोदितां सारां समितिं योगिभूषितां ।
मूलोत्तरगुणोपेतां संयजामि जलादिकैः ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितईर्यासमितये अर्घं० ॥ ९ ॥
नवभेदयुतां दांतां शांतां कांतां कृपापरां ।
कर्माक्षाग्निसुसादृश्यामुदकप्रमुखैर्यजे ॥
ॐ ह्रीं नवभेदसहितईर्यासमितये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

ईर्यासमितिभेदस्य जयमालां ब्रुवेऽधुना ।
निर्वाणराज्यपट्टस्य बध्वे तां पुष्पमालिकां ॥ १ ॥

जय सार्ध सप्त त्रिशत सहस्र, वर भेद प्रमादत मिश्र यस्र ।
अष्टादश शील सहस्र पात्र, चतुर्थकाशीतिक गुणसुपात्र ॥
उत्तरगुण लक्षक सन्निवास, वर मूलगुणाष्टक विंशवास ।
जय एक निरंजन शुद्ध तत्व, संसार मुक्त युग भेद सत्व ॥
जय रत्नत्रय वरभेद युक्त, चतुराराधन या नित्य मुक्त ।
जय पंचसमितिकर ज्ञान कोश, षट् जीवकाय लेश्या विशेष ॥
जय सप्त तत्व नय पूत नित्य, जय कर्म मुक्त गुण काष्ठ कृत्य ।
जय नव पदार्थ नय भेद सप्त, जय दशविध धर्म समिद्ध सत्य ॥
जय एकादश प्रतिमा प्रकाश, जय द्वादश भावना सद्विलास ।
जय त्रिकदश सत्कृत्य प्रमाण, जय तुर्य दशक गुण मार्ग स्थान ॥
जय पंचदश प्रतिपाद हार, जय षोडशकारण सन्विहार ।
जय सप्तदशक संयम विलास, क्षुत्तृट मुख दश वसु दोष नाश ॥
एकोनविंश जीव समास, विंशति प्ररूपण सद्विलास ।
द्वाविंशति सु परीषह विनाश, जय तुर्य विंश तत्व प्रकाश ॥८
तेऽनंतशक्तिनोऽनंतगुणा तेऽनंतधर्मनोऽनंतभावा ।
इत्येवमादितत्व प्रचार चारित्रशुद्धि सुविधेविचार ।९ ॥

घत्ता ।

इत्येव जयमालाहिं चेर्यासमिति संभवा ।
भव्यानां लोकसंघस्य सर्वस्य सुखकारणा ॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितये महार्घ्यं० ॥

अथ भाषासमिति पूजा।

स्वान्येषां च हितं सारं मितं धर्माविराधि यत्।
वचनं ब्रूयते दक्षैः सा भाषा समितिर्मता ॥ १ ॥
सत्यं जनपदाख्याद्यं संमतं स्थापनाह्वयं।
नामरूप प्रतीतं संभावनां सत्य संज्ञकं ॥ २ ॥
व्यवहाराभिधं भावमुपमा सत्यमेव च।
दशधेति वचो वाचं सत्य सत्यांगमोद्भवं ॥ ३ ॥
नवभिर्गुणिताः सर्वे नवति स्युश्चतुर्थका।
सुभाषायामिमे सत्य प्रकाश दश भेदतः ॥ ४ ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

क्षीरोदनिर्मलर्नीरैः मिश्रहिमकरवासितैः।
सत्यभाषाधरं चार्ये जिनकर्माष्टनाशनं ॥ जलं ॥
कुंकुमैर्मलयोत्पन्नः गंधैर्दुर्गंधनाशनैः।
सत्यभाषाधरं चार्ये० ॥ चंदन ॥
राजाई,परिमोदाग्र सदकांजलिपुंजकैः ॥सत्य भाषा॥ अक्षतम् ॥
कुंदचंपकवाणाद्यैः केतकी मदनोद्भवैः। सत्य भाषा० ॥पुष्पम॥
पक्वान्नमोदकैः क्षीरैः शर्कराघृतदुग्धकैः। सत्य भाषा० ॥नैवेद्यं॥
रत्ननिर्मितसद्दीपैः कर्पूरघृतसंभवैः। सत्यभाषा० ॥ दीपं ॥
चंदनागर श्रीखंडधूपधूमैरितालिभिः। सत्यभाषा० ॥ धूपं ॥
आम्रनिंबुजमीराद्यैर्द्राक्षादाडिमसत्फलैः। सत्यभाषा० ॥फलं॥
नीरगंधाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपफलार्धकैः।
सधूपैः श्रीजिनं चार्ये सिद्धार्थकुशदर्भकैः ॥ अर्घं ॥

अथ दशभेद प्रत्येक पूजा।

नानादेशादिभाषाभिः कथ्यते यत् शुभाशुभं।
वस्तुतत्त्वविरुद्धं न सत्यं जनपदाभिधं ॥ १ ॥

यथा च प्रोच्यते लोकैः सर्वभाषाभिरोदनं।
चोरोद्रविडभाषाभिर्न विवादोऽत्र विद्यते ॥२॥पुष्पांजलिः॥

नानादेश सुभाषा निरूपकं जनपदं च यत सत्यं।
तत्र च मनः कृतदुरितं तद्दोषघ्नं जिनं प्रयजे ॥

ॐ ह्रीं मनकृतदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

वस्तु शुभाशुभकथकं जनपद सत्यं यथा च राजादौ।
मनसा कारित दुरितं तद्दोषघ्नं जिनं प्रयजे ॥

ॐ ह्रीं मनकारितदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

यत्र च देशविरुद्धं वचनं मन्यते च तत्सत्यं।
मनसानुमत दुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

यत्र च राजा राणा महाराजश्चेति मन्यते सत्यं।
तत्र च वाक्कृत दुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

विश्वा मागध सुंढी नानादेशस्वरूपतो भाषा।
वाक्कारितकं दुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥

आर्यानार्य सुदेशोद्भवा सुभाषा कुभाषिका सत्यं ।
वचमानुमतं सत्यं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

द्वात्रिंशद्देशेष्वपि प्रत्येकं चार्यमथवानार्य ।
कायकृत सदुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

संस्कृत प्राकृत राक्षस पैशाच्याद्या सुभाषिका सत्यं ।
कायसुकारित दुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

पारसीक यवनोद्भव भाषा सत्यं सुजनपदं रव्यातं ।
कायानुमत दुरितं तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमतदोषविनाशकभाषासमितिनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

जनपदसत्यं प्रथमं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं भक्तिभावेन ॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिनिरूपकाय महार्घं० ॥

बहुभिः समतं यत्तत्सत्यं संमतमुच्यते ।
मनुष्येपि यथा लोके महादेवी निगद्यते ॥ पुष्पांजलि ॥

मनसा कृत दोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

हृत्कारित दोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषासमिति० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

संमतसत्ये जातं हृदयेऽप्यनुमोददोषभावेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा कृतदोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

वाक्कारितदोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥

संमतसत्ये जातं वचनस्यानुमतदोषभावेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमतदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

वपुकारितदोषघ्नं संमतसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

संमतसत्ये जातं कायस्यानुमतदोषभावेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकसंमतसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

संमतसत्यं द्वितीयं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं भक्तिभावेन ॥

ॐ ह्रीं संमतसत्यभाषासमितये महार्घं ॥

स्थाप्यते प्रतिबिंबं यत् स्थापनां सत्यमेव हि ।
यथार्हन्मुनिसिद्धानां प्रतिमा च जगत्त्रये ॥ पुष्पांजलि० ॥

मनसा कृत दोषघ्नं स्थापनसत्यस्य चापि वक्तारं ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकस्थापनासत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

हृत्कारितदोषघ्नं स्थापनसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकस्थापनासत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

स्थापनसत्ये जातं हृदयस्यानुमत दोषभावेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशकस्थापनासत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा कृतदोषघ्नं स्थापनसत्यस्य चापि वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकस्थापनासत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

वाक्कारितदोषघ्नं स्थापनसत्यस्य चापि देष्टारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकस्थापनासत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥

स्थापनसत्ये जातं वचसानुमत दोष भावेन। भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचोनुमतदोषविनाशकस्थापनासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं स्थापनसत्यं प्रपादकं दिव्यं। भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकस्थापनासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

वपुः कारित दोषघ्नं स्थापनसत्यं प्रपादकं दिव्यं। भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकस्थापनासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

स्थापनसत्ये जातं कायानुमोदितजनितपुण्येन। भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकस्थापनासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

स्थापनसत्यं तृतीयं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः। भाषा० ॥
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं भक्तिभावेन ॥

ॐ ह्रीं स्थापनसत्यभाषासमितये महार्घं ॥

....

गुणैस्तथ्यं सत्यं वा नाम यत्क्रियते नृणां।
नाम सत्यं तदेवात्र देवदत्तो यथा पुमान् ॥ पुष्पांजलिं ॥
मनसा कृत दोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं।
भाषासमिति विधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

हृत्कारितदोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं। भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

आख्यानसत्यजातं हृदयस्यानुमतदोषभावेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसाकृतदोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

वाक्कारितदोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥

आख्येय नाम सत्यं वागनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकनामसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

तनुकारित दोषघ्नं त्वभिधानस्यापि चाशु वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकनामसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

तन्नामधेय सत्य तन्वनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकनामसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

आख्यान तुर्य सत्यं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं नामसत्यभाषासमितये महार्घं ॥

मुख्यवर्णेन यद्रूपं रूपसत्यं तदुच्यते ।
यथा श्वेताबलाकाख्ये सति वर्णांतरे परे ॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसा कृतदोषघ्नं वस्तु सुरूपस्य सत्यवक्तार ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ।

हृत्कारितदोषघ्नं वस्तुसुरूपस्य सत्यवक्तारं । भाषासमिति० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ।

रूपाभिधानसत्यं हृदनुगतं मोददोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा कृत दोषघ्नं वस्तुसुरूपस्य सत्य वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ॥

वचःकारित दोषघ्नं वस्तुसुरूपस्य सत्यवक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ॥

रूपाभिधानसत्यं वागनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादक जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं वस्तुसुरूपस्य सत्यवक्तारं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ॥

तनुकारितदोषघ्नं वस्तुसुरूपस्य सत्यवक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ॥

रूपाभिधानसत्यं तन्वनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकरूपसत्यप्रतिपादकजिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

पंचम रूपमुमत्यं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्धभावेन ॥ महार्घं ॥

अन्यं ह्यपेक्ष्यसिद्धं प्रतीतं सत्यमेव तनुः ।
यथा दीर्घोऽयमन्यं ह्रस्वमपेक्षात्र कथ्यते ॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसा कृत दोषघ्नं प्रतीतसत्यं स्वभाव वक्तारं ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं ॥१॥

हृत्कारितदोषघ्नं प्रतीतसत्यं स्वभाव वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनकारितदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं ॥२॥

सत्यप्रतीतकथकं हृदयस्यानुमतदोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशक प्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥३॥

वचसाकृतदोषघ्नं प्रतीतसत्यं स्वभाववक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥४॥

वाक्कारितदोषघ्नं प्रतीतसत्यं स्वभाववक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥५॥

सत्यप्रतीतकथकं वागनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥

कायकृतदोषघ्न प्रतीतसत्यस्य भाववक्तारं । भाषा ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं ॥७॥

तनुकारित दोषघ्नं प्रतीतसत्यस्य भाव वक्तारं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

सत्यं प्रतीतकथकं तन्वनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकप्रतीतसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥९॥

षष्ठम प्रतीतसत्यं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्धभावेन ॥ महार्घं० ॥

शक्याशक्यद्विभेदाभ्यां कार्यकर्तुं यदीहते ।
संभावनाभिधं सत्यं दोर्भ्यां तर्तुं यथांबुधिम् ॥ १ ॥
शिरसा स्फोटयेदद्रिं भुजाभ्यां द्वीपमुद्धरेत् ।
कैलाशंचेति मंत्राच्यं सत्यसंभावनाभिधं ॥२॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसा कृतदोषघ्नं संभावनसत्यकथकं जिनदेवं ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥

हृत्कारितदोषघ्नं संभावनसत्यकथकं जिनदेवं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

संभावनसत्यगदं हृदयस्यानुमतदोषनाशेन ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥३॥

वचसाकृतदोषघ्नं संभावनसत्यकथकमर्हतं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

वाक्कारितदोषघ्नं संभावनसत्यकथकं जिनदेवं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥५॥

सम्भावनसत्यगदं वागनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वागनुमोदनदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥६॥

कायकृतदोषघ्नं सम्भावनसत्यकथकं जिनदेवं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥

तनुकारितदोषघ्नं सम्भावनसत्यकथकं जिनदेवं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

सम्भावनसत्यकथकं तन्वनुमोदस्य दोषनाशेन । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकसंभावनसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

सत्यसम्भावनकं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनप प्रयजेऽहं शुद्ध भावेन । महार्घं ।

व्यवहारेण कार्यादौ प्रोच्यते यद्वचो जनैः ।
व्यवहाराख्यसत्यं तद्यथा तन्दुलः पच्यते ॥ पुष्पांजलि ।

मनसाकृतदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यदेष्टारं ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥

हृत्कारितदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यवक्तारं ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

व्यवहारसत्यकथकं हृदयस्यानुमतदोषनाशेन ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा कृतदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यवक्तारं ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

वाक्कारितदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यवक्तारं ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥५॥

व्यवहारसत्यकथकं वागनुमोदस्यदोषनाशेन ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यवक्तारं ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

तनुकारितदोषघ्नं व्यवहाराभिधसुसत्यवक्तारं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०॥

व्यवहारसत्यकथकं तन्वनुमोदस्य दोषनाशेन ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशकव्यवहारसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

अष्टमव्यवहाराख्यं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्धभावेन ॥ महार्घं० ॥

हिंसादिदोषदूरं यन्सत्यं वा मसमुच्यते ।
भावसत्यं च तल्लोके दृष्टश्चौरो यथात्र न ॥ पुष्पांजलिं० ॥

मनसा कृतदोषघ्नं प्रासुकमप्रासुकभावसत्यं च ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥

ॐ ह्रीं मनकृतदोषविनाशकभावसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ॥१

कृन्कारितदोषघ्नं कल्प्यमकल्प्यं च भावसत्यं च ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं मनकारितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०

चेतोनुमोददोषप्रघातकर्तारमेव भावभवं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपक जिना अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा कृतदोषघ्नं पथ्यमपथ्यं च भावसत्यमिदं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकभावसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०

वाक्कारितदोषघ्नं योग्यमयोग्यं च भावसत्यं तव ॥भाषा०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपकजिनाय अर्घं०

वागनुमोदजदोषप्रघातकर्तारमेव भावभवं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं वागनुमोदितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपक जिना अर्घं ॥ ६ ॥

कायकृतदोषघ्नं भावाभिधसत्यकथकमरिहंत ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकभावसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ।

तनुकारितदोषघ्नं भावाभिधसत्यकथकजिनदेवं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

तन्वनुमोदजदोषप्रघातकर्तारमेव भावमिदं ॥ भाषा० ॥

ॐ ह्रीं कायानुयोदितदोषविनाशकभावसत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

नवमं भावमुसत्यं योगैः करणैश्च नवविधं सत्यं ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्धभावेन ।। महार्घं ।।

उपमेयेन संयुक्तं ब्रूयते वचनं च यत ।
उपमासत्यमेवैतद्यथा पल्यौपमाद्यः ।। पुष्पांजलि ।।

मनसा कृतदोषघ्नं पल्यौपमसागरादिघनमूची ।
भाषासमितिविधाने प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ।।

ॐ ह्रीं मनकृतदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ।।१।।

हृत्कारितदोषघ्नं श्रेणीरज्जुत्रिलोकघनमूची । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं मनकारितदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं०।।२।।

चेतोऽनुमोददोषप्रघातकर्त्तारमेवसमयविदं । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ।। ३ ।।

वचसा कृतदोषघ्नं सूच्यंगुलप्रतरमानघनसूची । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपक जिनाय अर्घं० ।।

वाक्कारितदोषघ्नं संख्यातादिकप्रमाणघनसूची । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं वाक्कारितदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपकजिनाय अर्घं० ।।

वागनुमोदजदोषप्रघातकर्त्तारमेव समयविदं । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं वागनुमोददोषविनाशकउपमासत्यनिरूपकाय जिनाय अर्घं० ।। ६ ।।

कायकृतदोषघ्नं भावाविधसमयमेवमुपमानं । भाषा० ।।

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपकजिनाय अर्घं ।।७।।

ननुकारितदोषघ्नं पल्योपमसागरोपमादि कथकं । भाषा० ॥

ॐ ह्रीं ननुकारितदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपक जिनाय अर्घ्यं० ।। ८ ।।

नन्वनुमोदजदोषप्रघातकर्त्तारमेव समयविदं भाषा० ।।

ॐ ह्रीं नन्वनुमोदजदोषविनाशकउपमासत्यनिरूपक जिनाय अर्घ्यं० ।। ९ ।।

दशमं समयाख्यानं नवभेदं स्यात्कृतादिभिर्योगैः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं शुद्ध भावेन ।। महार्घं ।।

अथ जयमाला ।

भाषा समितिजा भागा जयमाला विधीयते ।
चारित्रशुद्धिजोद्योते तपःशुद्धिविधायिनी ।। १ ।।

सम्मत बहुजन सम्पतोक्त, पंकज भू जल भव तरणोक्त ।
व्यवहार सत्यलोक प्रसिद्ध, तंदुल पाचन करोति सिद्ध ।। २ ।।
दीर्घोलघुरिति सत्यनीत, परसापेक्षक साध्य नीत ।
सम्भावन सम्भावन भाव, पयोधि नग शक्त द्रय बाहु ।।३।।
चन्द्रमुखी चन्द्र प्रभादि, उपमा समयागम सुवादि ।
प्राशुकम प्राशुकमथोक्त, भावाभिध तत्व निरूपणोक्त ।। ४ ।।
नानाविध देश सु वचन नाद, राजा गणा बहुविध निनाद ।
सन्नाम पुरंदर शक्र इंद्र, पद्म सु लक्षण हरि रामचन्द्र ।। ५ ।।
जिन नाम भणंति तन्नाम, प्रतिबिंबमपि स्थापन सु नाम ।
द्यूतांगे सारी हय गजादि, राजा सामंत सुकरभकादि ।। ६ ।।

श्वेतवलाका ध्वज समान, हारावश्या यश किरण मान ।
पल्योपम सागर सूचिकादि, समयोपम सत्य कथा सु वादि ॥
संमत व्यवहार युग भेद, सापेक्षा स्वतः परतोऽव्यपेक्ष ।
लोकप्रतीत संभावनादि, उपमा बुधजन समयवादि ॥ ८ ॥
भावे जनपदको युग सुपक्ष, नाम स्थापन युग भुवि प्रत्यक्ष ।
रूपाभिधान सत्य स्वरूप, दशविध सत्य कथार्हरूप ॥ ९ ॥
भाषा दशविध सत्य रूप, दुर्भाषा दश परुषादि रूप ।
सत्यमृषा तदितर निरूप, इत्यादि यथा जिन कथित रूप ॥१०॥

घत्ता ।

नवति भेदयुता समितिः पारादश त्रिधैर्वरसत्यगणैर्युता ।
जिनपमर्चितुमिच्छुरहं सद् वचनमिच्छुरहो शुभभाषया ॥

ॐ ह्रीं भाषासमितये अर्घम् ला महार्घं ॥

अथ एषणा समिति पूजा ।

एषणासमितिदोषाः षट्चत्वारिंशदेव हि ।
नवग्रासनेऽशिला हेयं उपवासाद्लेपु च ॥ १ ॥
चतुःशतानि शुद्ध्यर्थं चतुर्दशगुनान्यपि ।
एषणासमितेः कृत्स्नदोषनाशकराः पराः ॥२॥ पुष्पांजलिं॥

क्षीरोदतीर्थोद्भववारिधारया सुचन्द्रमच्चंदनगंधसारया ।
जिनेंद्रचन्द्रं प्रयजे सदाहमन्वेषणासमिति वृत्तधरं सदार्हं ॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय जिनाय जलं ॥ १ ॥

सत्कुंकुमाद्यैर्वरगंधयुक्तैः सुगन्धतालुब्धकभृंगवृन्दैः ।जिनेंद्रचंद्रं०।

ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय जिनाय चंदनं ॥ २ ॥

सुभूपभोग्यैर्वरखंडमुक्तैः सुशालिजैरक्षयलब्धिलब्ध्यैः ॥

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ अक्षतान् ॥ ३ ॥

सुकुन्दमन्दारसुजातिजातैः सुकेतकीचम्पकसत्प्रसूनैः ॥

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

पक्वान्नशाल्यन्नदधीक्षुभक्ष्यैः सद्व्यंजनैर्मदकरै रसाद्यैः ॥

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

कर्पूरसुस्नेहभवैः प्रदीपैःरुद्योतिनाशेषहरित्सुचक्रैः ॥

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ दीपं ॥ ६ ॥

श्रीखण्डकृष्णागरुसिल्हकादिधूपैः सुधूपैरवनीशमोदैः ।

जिनेन्द्र चन्द्र० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

सद्दाडिमीपूंगसुमोचचोचकपित्थनारिंगसुजंभकाद्यैः ।

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ फलं ॥ ८ ॥

कबन्धसद्गन्धशुभाक्षतोघैः प्रसूनसद्दीपसुधूपकाद्यैः ।

जिनेन्द्रचन्द्र० ॥ अर्घं० ॥ ९ ॥

षट् चत्वारिंशद्दोषाः के इति प्रश्ने कथ्यते ।

आद्य उद्देशिको दोषो द्वितीयोऽध्यर्धिनामकः ॥

पूतिमिश्राभिधो दोषः स्थापितो बलिसंज्ञकः ॥ १ ॥

प्रावर्तिताह्वयप्राविष्करणक्रीत एव च ।

ततः प्रामित्यदोषोऽथ परिवर्तकसंज्ञक ॥ २ ॥

दोषोऽभिघट उद्भिन्नौ मालारोहसमाह्वयः ।

आछेद्याख्योऽप्यनीशार्थोऽमी दोषाः षोडशोद्गमाः ॥३॥

धात्री दूतो निमित्ताख्यो दोषः आजीवनाह्वयः ।
वनीपक वचोदोषश्चिकित्सादोष एव च ॥ ४ ॥
क्रोधो मानस्तथा माया लोभश्च पूर्वसंस्तुतिः ।
पश्चात् संस्तुति दोषोऽत्र विद्यामन्त्रसमाह्वयः ॥ ५ ॥
चूर्णो योगाभिधो मूलकर्म ते षोडशा शुभाः ।
ज्ञेया पात्राश्रितो दोषा उत्थापनसमाह्वयाः ॥ ६ ॥
संकितो मुषितो दोषो निक्षिप्तः विहिताभिधः ।
दोषोऽथ व्यवहाराख्यो दायकोमिश्रसंज्ञको ॥ ७ ॥
तथा परिणतो लिप्तः परित्य जननामकः ।
दर्शनेशनदोषा हि यत्र त्याज्या मुमुक्षुभिः ॥ ८ ॥
संयोजनोऽप्यप्रमाणः अंगारो धूमसंज्ञकः ।
अमीभिस्तुर्यकैर्दोषैः संयुक्ताः सर्वदोषकाः ॥ ९ ॥
पुष्पांजलि ।

अथ षोडश उद्गम दोष परिहार पूजा।

नागादिदेवपाखण्डिदीनाद्यर्थं च यत्कृतं ।
उद्दिश्यान्नं गृहस्थैस्तदुद्देशिकमिहोच्यते ॥ १ ॥
सामान्यांश्च जनांन्कांश्चिन्तथा पाखण्डिनोऽखिलान् ।
श्रमणाश्च परिव्राजकादीन्निर्ग्रंथसंयतान् ॥ २ ॥
उद्दिश्य यत्कृतं चान्नं उद्देशिकं चतुर्विधं ।
तत्सर्वं मुनिभिस्त्याज्यं पूर्वं सावद्यदर्शनात् ॥ पुष्पांजलिं

मनसा कृतस्तु दोषः एषणसमितौ समुद्भूतः ।
पूर्वमुद्देशिकदोषहरं प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥४॥
ॐ ह्रीं मनःकृतउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥
मनसा कारितदोष एषणसमितौ समुद्भूतः ।
पूर्वमुद्देशिकदोषहरं प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥
मनसानुमोददोष एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥
वचसा कृतस्तुदोष एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥
वचसा कारितदोष एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥
वचसानुमोददोष एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥
कायेन कृतो दोष एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥
कायेन कारितदोषो एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं कायकारित उद्देशिकदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥
कायानुमोदितदोषो एषणसमितौ समुद्भूतः । पूर्वं० ॥
ॐ ह्रीं कायानुयोदितउद्देशिकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥
नवविधदोष विमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
उद्देशिकदोषच्युतं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं उद्देशिकदोषहरायजिनाय महार्घं० ॥

दानार्थं संयतान् दृष्ट्वा निक्षेपो यस्तुतन्दुलैः ।
अन्येषां तन्दुलानां स दोषोऽध्याधिसमाह्वयः ॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसा कृतस्तु दोषः एषणसमितौ समुद्भतः ।
अध्याधिदोषहरं तं प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १० ॥
मनसाकारितदोषः एषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ११ ॥
मनसानुमतो दोषः एषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ।
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १२ ॥
वचसाकृतस्तु दोषः एषणसमितौ समुद्भत । अध्यधि० ।
ॐ ह्रीं वचनकृतअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १३ ॥
वचसाकारितदोषः एषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १४ ॥
वचसानुमतो दोषः एषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १५ ॥
कायेन कृतो दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १६ ॥
कायमुकारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १७ ॥
कायानुमोददोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः । अध्यधि० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितअध्यधिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १८ ॥
नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
अध्यधिदोषविमुक्तं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥ महार्घं ॥

अन्नपानादिकं मिश्रं यदप्राशुकवस्तुना ।
पूतिदोषः स एव स्यात् पंचभेदऽघकारकः ॥
रधन्यूखलिमार्जादि भोजनं गंध एव हि ।
पूति दोषा इमे ज्ञेयाः पंचसावद्य कारिणः ॥ पुष्पांजलि ॥

मनसा कृतस्तु दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः ।
पूतिकदोषहरं तं प्रयजे जिनपं हि शुद्धभावेन ॥
ॐ ह्रीं मन:कृतपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १९ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं मनकारितपूतिदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २० ॥

मनसानुमोददोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २१ ॥

वचसा कृतस्तु दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २२ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २३ ॥

वचसानुमोददोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २४ ॥

कायेन कृतो दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २५ ॥

कायमुकारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २६ ॥

कायानुमोददोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः । पूतिक० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितपूतिदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २७ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ प्रु तत्परं जिनपं ।
पूतिकदोषविमुक्तं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं पूतिदोषहरायजिनाय महार्घं० ॥

मुनिभ्यो दातुमुद्दिष्टं निष्पन्नमशनं च यत् ।
सार्द्धं पाखंडिसागारैर्मिश्रदोषोऽत्र सोघदः ॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसाकृतदोषहरं विशदं, शुभमेषणदोषसमुद्गमकं ।
प्रयजे शुभमिश्रकुदोषहरं, जिनपं वर शुद्धजलादिचयैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २८ ॥

विशदं हृत् कारितदोषहरं शुभमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं मनकारितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ २९ ॥

मनसाप्यनुमोदितदोषहरं वरमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३० ॥

वचसा कृतदोषहरं विशदं वरमेषणदोष समुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३१ ॥

लपितेन च कारितदोषहरं शुभमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे०
ॐ ह्रीं वचनकारितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३२ ॥

वचसाप्यनुमोदितदोषहरं शुभमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३३ ॥

वपुषा कृतदोषहरं विशदं शुभमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३४ ॥

तनुकारितदोषहरं विशदं शुभमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३५ ॥

वपुषाप्यनुमोदितदोषहरं वरमेषणदोषसमुद्गमकं । प्रयजे०।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमिश्रदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३६ ॥

नवविधदोष विमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मिश्राभिधदोषहरं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मिश्रहरायजिनाय महार्घं ॥

पाकभाजनतोऽन्यस्मिन भाजने स्थापितं च यत् ।
अन्यं स्वान्यस्य गेहे वा सदोषः स्थापिताह्वयः ॥ पुष्पांजलिं ।

मनसा कृत दोषो यदेषणायां समुद्गमे ।
प्रयजे दोष हंतारं तं जिनं निष्क्रमाप्तये ॥

ॐ ह्रीं मनःकृत स्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३७ ॥

मनसा कारितो दोषोऽप्येषणाय समुद्गत । प्रयजे० ।

ॐ ह्रीं मनःकारितस्थापितदोषहरायजिनायअर्घं० ॥ ३८ ॥

मनसानुमतो दोषोऽप्येषणाय समुद्गतः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ३९ ॥

वचसा च कृतो दोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ४० ॥

वचसा कारितो दोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ४१ ॥

वचसानुमतो दोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ४२ ॥

कायेन च कृतोदोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ४३ ॥

कायेन कारितो दोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितस्थापितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४४ ॥

कायानुमोदितो दोषः स्थापितोऽप्येषणाभवः । प्रयजे० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्थापितदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ ४५ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
स्थापितदोषहरंतं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं स्थापितदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

यक्षनागादिदेवानां निमित्तं यः कृतो बलिः ।
तस्य दोष स प्रज्ञप्त उपचारेण वा बलिः ॥ पुष्पांजलिं ॥

मनसा कृतदोषोयोऽप्येषणसमितौ समुद्भवः सुबलिः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृत बलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४६ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भवः सुबलिः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४७ ॥

मनसानुमतो दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः सुबलिः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४८ ॥

वचसा कृतदोषो योऽप्येषणसमितौ समुद्भतः सुबलिः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४९ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः सुबलिः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५० ॥

वचसानुमतो दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भतः सुबलिः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५१ ॥

कायेन कृतो दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः सुबलिः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकृतबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९२ ॥

वपुषा कारितद्दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः सुबलिः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकारितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९३ ॥

कायानुमोदद्दोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः सुबलिः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितबलिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९४ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
बलिनामककुदोषहरं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं बलिदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

द्विधा प्राभृतकं बादरसूक्ष्माभ्यां प्रकीर्तितं ।
बादरं द्विविधं काल हानिवृद्धि द्विभेदतः ॥ १ ॥
सूक्ष्मं प्राभृतकं द्वेधोऽक्तं कालहानिवृद्धितः ।
अथ षां विस्तरेणैतान् भेदान् शृणु ब्रुवेऽधुना ॥ २ ॥
परावृत्य दिनं पक्षं मासं वर्षं च दीयते ।
दानं यदुत्सवाद्यैस्तत् स्थूलं प्राभृतकं द्विधा ॥ ३ ॥
वेलां पूर्वाह्णमध्याह्नापराह्णादिं विहाय यत् ।
ददाति हानिवृद्धिभ्यां सूक्ष्मप्राभृतकं च तत् ॥ ४ ॥
इदं प्रावर्तितं दोषं हिंसाक्लेशकारणं ।
त्यजन्तु सर्वथा सर्वं बहुभेदं शिवार्थिनः ॥ पुष्पांजलिः ॥

प्रावर्तितद्दोषो योऽप्येषणसमितौ मनः कृतः सुमहान् ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९५ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ सु प्राभृतो दोषः । तद्दो०

ॐ ह्रीं मनःकारितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५६ ॥

मनसानुमतो दोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥५७॥

वचसा कृतस्तुदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं वचनकृतप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५८ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकारितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ५९ ॥

वचसानुमतो दोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ६० ॥

वपुषा कृतस्तु दोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं कायकृतप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ६१ ॥

वपुषा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं कायकारितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ६२ ॥

वपुषानुमतो दोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राभृतो दोषः तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितप्रावर्तितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ६३ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
प्रावर्तितदोषहरं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं प्रावर्तितदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

प्राविष्कारो द्विधासंक्रमणप्रकाशनोद्भवः ।
भाजनानां तथा भोजनादीनां चाघकारकः ॥ १ ॥
आहारभाजनादीनामन्यसर्वप्रदेशतः ।
अन्यत्रानयनं भक्तं दिनानि [illegible]तं च यत्र ॥ २ ॥

प्रदीपज्वालनं मंडपादिप्रद्योतनं हि सः ।
प्राविष्कारोऽखिलो दोषः पापारंभादिवर्धकः ॥ ३ ॥

। पुष्पांजलिः ।

प्राविष्कारकृद्दोषोऽप्येषणसमितौ मनःकृतस्तु महान् ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चार्येऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६४॥

मनसा कारितदोषोप्येषणसमितौ सुप्राविषादिकरः ॥तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६५॥

मनसानुमतदोषोऽप्येषणके प्राविषादिकरसंज्ञः ॥ तद्दोषघ्नं० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६६॥

वचसा कृतस्तु दोषः प्राविष्काराह्वयश्च सुमैषणकेतः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६७॥

वचसा कारितदोषः प्राविष्काराह्वयः सुमैषणकेतः ॥तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६८॥

वचसानुमतदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राविषादिकरः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥६९॥

वपुषा कृतस्तु दोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राविषादिकरः ॥तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकृतप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥७०॥

वपुषा कारितदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राविषादिकरः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकारितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥७१॥

वपुषानुमतदोषोऽप्येषणसमितौ सुप्राविषादिकरः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितप्राविष्कारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥७२॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
प्राविष्करदोषहरं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं प्राविष्कारदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

स्वकीयं परकीयं वा द्रव्यं गच्छतनेनरं ।
दत्वा प्रगृह्यचाहारं पात्रेभ्यो दीयते तथा ॥ १ ॥
स्वमंत्रं परमंत्रं वा दत्वा दयाशनं च यत् ।
तत्सर्वं क्रीतदोषत्वं जानीहि क्लेशपापदं ॥ २ ॥

॥ पुष्पांजलि ॥

मनसा कृतः कुदोषः क्रीतोऽप्येषण समुद्भूतः सुमहान ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥७३॥

मनसा कारितदोषः क्रीतोऽप्येषण समुद्भूतः सुमहान् । तद्दोष०

ॐ ह्रीं मनसाकारितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥७४॥

मनसानुमतदोषः क्रीतोऽप्येषणसमुद्भवः सुमहान् तद्दोषघ्नं०।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७५ ॥

वचसाकृतः कुदोषोऽप्येषणसमितौ समुद्भूतः सुमहान् तद्दोष०।

ॐ ह्रीं वचनकृतक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७६ ॥

वचसा कारितदोषः क्रीतोऽप्येषणसमुद्भूतः सुमहान् । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७७ ॥

वचसानुमतदोषः क्रीतोऽप्येषणसमुद्भूतः सुमहान् । तद्दोषघ्नं० ।

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७८ ॥

वपुषाकृतदोषो यः क्रीतोऽप्येषणसमुद्भूतः सुमहान् । तद्दो०॥

ॐ ह्रीं कायकृतक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ७९ ॥

वपुषा कारितदोषः क्रीतोप्येषणसमुद्भूतः सुमहान् । तद्दोषघ्नं० ।

ॐ ह्रीं कायकारितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८० ॥

वपुषानुमतदोषः क्रीतोप्येषणसमुद्भूतः सुमहान् । तद्दोषघ्नं० ।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रीतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८१ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुनत्परं जिनपं ।

क्रीत कुदोषहरंतं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं क्रीतदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

ऋणेनानीय दाता यत्र परान्नं परगेहतः ।

भक्त्या ददाति पात्राय दोषः पामित्य एव सः ॥पुष्पां०॥

मनसा कृतस्तुदोषः पामित्थोऽप्येषणाभवोनिष्टः ।

तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८२ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्येषणजो दोषानिष्टः पामित्थः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८३ ॥

मनसानुमतदोषः पामित्थोऽप्येषणाभवो निष्टः । तद्दोषघ्नं० ।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥८४॥

वचसा कृतकुदोषोऽप्येषणजोनिष्टः नामपामित्थः तद्दोषघ्नं० ।

ॐ ह्रीं वचनकृतपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८५ ॥

वचसा कारितदोषः पामित्थोऽप्येषणाभवः सुमहान् । तद्दोष०।

ॐ ह्रीं वचनकारितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८६ ॥

वचसानुमतदोषो पामित्थोऽप्येषणाभवः सुमहान् । तद्दोष० ।

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥८७॥

वपुषाकृतदोषो यः पामित्थोऽप्येषणाभवः सुमहान् । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकृतपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥८८॥

वपुषा कारितदोषः पामित्थोऽप्येषणाभवः सुमहान् । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं कायकारितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ८९ ॥

वपुषानुमतदोषोऽप्येषणजोनिष्टनामपामित्थः तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपामित्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९० ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सु तत्परं जिनपं ।
पामित्थकुदोषहरं चार्येऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं पामित्थदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

स्वान्नं दत्वान्यगेहादानीयान्नं प्रवरं च यत् ।
यतिभ्यो दीयते भक्त्या सद्दोषः परिवर्तितः ॥ पुष्पांजलिः

मनसा कृतः कुदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चार्येऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९१ ॥

मनसा कारितदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९२ ॥

मनसानुमतदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९३ ॥

वचसा कृतदोषो यः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः । तद्दोष०

ॐ ह्रीं वचनकृतपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९४ ॥

वचसा कारितदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं वचःकारितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ ९५ ॥

वचसानुमतदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः। तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ ९६ ॥

वपुषा कृतदोषो यः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः। तद्दोष०

ॐ ह्रीं कायकृत-परिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९७ ॥

वपुषा कारितदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९८ ॥

वपुषानुमतदोषः परिवर्तनसंज्ञकोऽपि चैषणजः। तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरिवर्तनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९९ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसंमतौ सुतत्परं जिनपं।
परिवर्तनदोषहरं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं परिवर्तनदोषरहित जिनाय अर्घं।

द्विधाभिघटसंज्ञोक्तं देशसर्वप्रभेदतः।
तद्देशाभिघटं द्विधा योग्यायोग्यप्रकारतः ॥ १ ॥
द्वित्र्यादिसप्तगेहेभ्यः पंक्तिरूपेण वस्तु यत्।
आगतं चान्नपानादि तद्योग्यं योगिनां मतं ॥ २ ॥
यस्मात्कस्माद्गृहं त्यक्त्वा विनावाष्टमगेहतः।
आगतं चान्नवस्त्रादि सर्वाभिघटमेव तत् ॥ ३ ॥
चतुर्विधं पारतेयं स्वपाटकान्यपाटकान्।
उदनादियतां नीतं स्वगृहाभिघटं हि तत् ॥ ४ ॥
एवं सर्वोऽपि संत्याज्यो दोषोऽभिघटसंज्ञकः।
संयतैः संयमार्थं हि यातयातांगिवाधनात् ॥ ५ ॥

। पुष्पांजलिं।

मनसा कृतदोषो योऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं प्रयजेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०० ॥

मनसा कारितदोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०१ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० । १०२॥

वचसा कृतसद्दोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०३ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०४ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१०५॥

कायकृतदोषोयोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०६ ॥

कायसुकारितदोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०७ ॥

कायानुमोददोषोऽप्यभिघटसंज्ञः शुभैषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितअभिघटदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०८ ॥

नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
अभिघटदोषहरंतं चार्येऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं अभिघटदोषरहितजिनाय महार्घं० ॥

घृतादिभाजनं कर्दमादिना मुद्रितं दृढं ।
उद्भिद्य यच्च देयं स उद्भिन्नदोषनायकः ॥ पुष्पांजलिः॥

मनसा कृतदोषो य उद्भिन्नाह्वः शुभैषणाजनितः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १०९ ॥
मनसा कारितदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११० ॥
मनसानुमतदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १११ ॥
वचसा कृतदोषो योऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११२ ॥
वचसा कारितदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११३ ॥
वचसानुमतदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११४ ॥
कायेन कृतदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११५ ॥
उद्भिन्नाह्वयोदोषो वपुषापि च कारितः सदेषणजः ॥तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं कायकारितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११६ ॥
वपुषानुमतदोषोऽप्युद्भिन्नाह्वः सदेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितउद्भिन्नदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११७ ॥
नवविधदोषविमुक्तं एषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
उद्भिन्नाघहरन्तं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं उद्भिन्नदोषरहित जिनाय अर्घं० ॥

निःश्रेण्यादिकमारुह्य द्वितीयगृहभूमितः ।
आनीतं वस्तुयद्देयं स मालाराहणो मळः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसापि कृतो दोषो मालारोहाभिधःसदुद्भमजः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनकृतमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११८ ॥

मनसा कारितदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसा कारितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ११९ ॥

मनसानुमतदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२० ॥

वचसापि कृतो दोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२१ ॥

वचसा कारितदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२२ ॥

वचसानुमतदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः । तद्दो० ।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ १२३

वपुषापि कृतदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः । तद्दो० ।

ॐ ह्रीं कायकृतमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ १२४ ॥

वपुषा कारितदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः । तद्दो० ।

ॐ ह्रीं कायकारितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं । १२५ ॥

वपुषानुमतदोषो मालारोहाभिधः सदुद्भमजः । तद्दो० ।

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमालारोहणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२६

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मालारोहहरंतं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मालारोहणदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

मंयतमागतं दृष्ट्वा राजचोरादिजाद्भयात् ।
जनैर्यद्दीयते दानमाछेद्यो दोष एष सः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चार्येऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२७ ॥
मनसाकारितदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः तद्दो०
ॐ ह्रीं मनःकारितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १२८ ॥
मनसानुमतदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः । तद्दो०
ॐ ह्रीं मनःअनुमोदितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ १२९ ॥
वचसा कृतस्तु दोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः। तद्दो०
ॐ ह्रीं वचनकृतआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३० ॥
वचसा कारितदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ॥ तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं वचनकारितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३१ ॥
वचसानुमतदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१३२॥
कायेन कृतो दोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३३ ॥
वपुषा कारितदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३४ ॥
वपुषानुमतदोषोऽप्याछेद्याह्वः शुभैषणा जनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितआछेद्यदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३५ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
आछेद्याघहरं तं प्रयजेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं आछेद्यदोषरहितजिनाय महार्घं० ॥

मारक्षेणेश्वरेणैवानीश्वरेण च दीयते ।
व्यक्ताव्यक्तेन दानं यद्दोषोऽनीशार्थ एव सः ॥
एको दानं ददात्यन्यो निषेधयति यद्भुवि ।
इत्यादि सोऽखिलो ज्ञेयो दोषोऽनीशार्थसंज्ञकः ।।पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषोऽनीशार्थाह्व सदैषणां जनितः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चार्चेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनकृतअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३६ ॥

मनसा कारितदोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनकारितअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३७ ॥

मनसानुमतदोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१३८॥

वचसा कृतस्तुदोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १३९ ॥

वचसा कारितदोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४० ॥

वचसानुमतदोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं०॥१४१॥

वपुषा च कृतो दोषोऽनीशार्थाह्वः सदैषणा जनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४२ ॥

वपुषाकारितदोषोऽनीशार्थाह्वः सदेषणा जनितः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितअनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४३ ॥

वपुषानुमतदोषोऽनीशार्थाह्वः सदेषणा जनितः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितनीशार्थदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१४४॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणमश्नन्तौ सुतत्परं मुनिपं ।
सारक्षदोषनाशं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं अनीशार्थदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

उद्गमाख्या अमी दोषाः दातृपात्रजनाश्रिताः ।
षोडशैव परित्याज्याः सद्भिः क्लेशादिकारिणः ॥

इत्याशीर्वादः ।

अथ षोडशोत्पादनदोष परिहार पूजा ।

मज्जनं मण्डनं क्रीडनं क्षीरपानकारणं ।
तथा स्वापय विधिं बालकानां युक्तोपदेशनैः ॥ १ ॥
गृहिणामुपदिश्योत्पाद्यान्नं धात्रीवयदुभुवि ।
संयतैर्गृह्यते निद्यः धात्री दोषः स चोच्यते ॥१॥ पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषो धात्रीदोषादुपादितः समितौ ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४५ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्युत्पादितो धात्रीकाभिधः समितौ । त०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४६ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४७ ॥

वचसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । त०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४८ ॥

वचसा कारितदोषे ऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १४९ ॥

वचसानुमत दोषोऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १५० ॥

कायेन कृतो दोषोऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । तद्दो०॥

ॐ ह्रीं कायकृतधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १५१ ॥

वपुषाकारितदोषेऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । तद्दो०॥

ॐ ह्रीं कायकारितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १५२ ॥

वपुषानुमतदोषोऽप्युत्पादित धात्रीकाभिधः समितौ । तद्दो० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधात्रीदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १५३ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चषणसमितौ पुनत्परं जिनपं ।

धात्रीदोषहरं तं प्रयजेऽहं वारिगन्धकुसुमाद्यैः ॥

ॐ ह्रीं धात्रदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

स्वापरग्रामदेशादिभ्योऽत्र सागारिणां क्वचित् ।

आनीय शुभसंदेशं निवेद्य नेन गेहिभिः ॥

जातहर्षैः प्रदत्तं यदन्नदानमयुक्तिजं ।

भुज्यते साधुभिर्दूत तद्दोषः दूतकर्मकृत ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् ।

तद्दोषहरं जिनपं च येऽहं निर्मलैर्वसु.द्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १५४ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९५ ॥
मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९६ ॥
वचसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९७ ॥
वचसा कारितदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् त०॥
ॐ ह्रीं वचनकारितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९८ ॥
वचसानुमत दोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९९ ॥
वपुषा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् त० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १६० ॥
वपुषा कारितदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १६१ ॥
कायानुमतदोषोऽप्युत्पादितदूतसंज्ञकः सम्यक् । त० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितदूतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १६२ ॥
नवविधदोष विमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
दूताभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्य भावेन ॥
ॐ ह्रीं दूतदोषहराय जिनाय महार्घं ।

व्यजनांगेस्वरं छिन्नौ भौमांतरिक्षसंज्ञके ।
लक्षणं च ततः स्वप्नं निमित्तमष्टधेति वै ॥ १ ॥
एतैरष्टनिमित्तोपदेशैरुत्पाद्य साधुभिः ।
भिक्षा या गृह्यते लोके निमित्तदोष एव सः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् ।
तद्धरणं जिनपं चाऽयेह निर्मलैर्महाद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतनिमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ १६३ ॥

मनसाकारित दोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । तद्धा ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितनिमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ १६४ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिमित्तदोषहराय जिनाय अ० ॥१६५॥

वचसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतनिमित्तदोषहराय जिनाय अ० ॥ १६६ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितनिमित्तदोषहराय जिनाय अ० ॥ १६७ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितनिमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१६८॥

कायेन कृतदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतनिमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १६९ ॥

वपुषा कारितदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितनिमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७० ॥

वपुषानुमतदोषोऽप्युत्पादितसन्निमितजः सम्यक् । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितनिमित्तदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥ १७१ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
दोषनिमित्तहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं निमित्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥

जातिकुलतपशिल्पकर्मनिर्देशचात्मनः ।
करोत्याजीवनं योऽत्र स आजीवनदोषभाक् । पुष्पांजलिः

मनसा च कृतोद्दोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः ।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७२ ॥

मनसा कारितद्दोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७३ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दोषघ्नं० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१७४॥

वचसा च कृतो दोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७५ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१७६॥

वचसानुमतदोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१७७॥

कायेन कृतोद्दोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७८ ॥

वपुषा कारितद्दोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १७९ ॥

वपुषानुमतदोषोऽप्याजीवनसंज्ञकः शुभैषणजः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितआजीवनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१८०॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
आजीवनदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं आजीवनदोषरहितजिनाय महार्घं० ॥

पाखंडिकृपणादीनामतिथीनां च दानतः।
एपुण्यं भवेन्न चात्रेति पृष्टो दाता मुनिः क्वचित् ॥
पुण्यं भवेदिदं चोक्तं ह्यनुकूलं वचो शुभः।
दातु गृह्णाति दानं यो दोषो वनीपको हि सः ॥पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः।
तद्दोषघ्नं जिनपं चायेऽहं निर्मलैर्महाद्रव्यैः॥
ॐ ह्रीं मनःकृतवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १८१ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं मनसाकारितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १८२ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१८३॥

वचसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं वचनकृतवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १८४ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १८५ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१८६॥

कायेनकृतदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १८७ ॥

वपुषाकारितदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१८८॥

वपुषानुमतदोषोऽप्युत्पादितवनीपकाह्वयो निष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितवनीपकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१८९॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
वनीपकदोषहरं तं प्रयजेऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥

ॐ ह्रीं वनीपकदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

अष्टभेदैश्चिकित्सा शास्त्रैः कृत्वोपकृति नृणां ।
भिक्षुभिर्गृह्यतेऽन्नं यच्चिकित्सा दोष एव सः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्युत्पादित चिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९० ॥

मनसा कारितदोषोऽप्युत्पादित चिकित्साभिधोऽनिष्टः त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९१ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१९२॥

वचसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९३ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१९४॥

वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादित चिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१९५॥

कायेनकृतोदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१९६॥

तनुनाकारितदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९७ ॥

तनुनानुमतदोषोऽप्युत्पादितचिकित्साभिधोऽनिष्टः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचिकित्सादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥१९८॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
दोषचिकित्साघातं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं चिकित्सादोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

क्रोधेनोत्पादने भिक्षा या क्रोधदोष एव सः ।
तत्त्यागेन भवेत श्रेयः वृत्तशुद्धिविधो परं ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ १९९ ॥
मनसा कारितदोषोप्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०० ॥
मनसानुमतदोषोह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०१ ॥
वचसा च कृतदोषोह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०२ ॥
वचसा कारितदोषोह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०३ ॥
वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितमनुरेषणाजनितः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमतक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०४ ॥
तनुना कृतदोषोऽयं ह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०५ ॥
तनुनाकारितदोषोह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०६ ॥
तनुनानुमतदोषोह्युत्पादितमनुरेषणाजनितः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रोधदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०७ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
क्रोधाभिधदोषहरं प्रयजेऽहं भक्तिभावेन ॥
ॐ ह्रीं क्रोधदोषरहितजिनाय महार्घं० ॥

मानेनोत्पद्यते भिक्षा मानदोषः स एव हि ।
तत्त्यागेन भवेत श्रेयः वृत्तशुद्धिविधो परं ॥ पुष्पांजलि ॥

मनसा च मानदोषो ह्युत्पादितएषणासमित्संगः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २०८ ॥
मनसाकारितदोषो ह्युत्पादित एषणासमित्संगः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२०९॥
मनसानुमनदोषो ह्युत्पादित एषणासमित्संगः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२१०॥
वचसा च कृतोदोषो ह्युत्पादित एषणासमित्संगः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २११ ॥
वचसा कारितदोषो ह्युत्पादित एषणासमित्संगः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१२ ॥
वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितमानएषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१३ ॥
कायेन कृतोदोषोऽप्युत्पादितमानएषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१४ ॥
कायेन कारितोऽपि चोत्पादितमानएषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१५ ॥
कायेनानुमतोऽपि चोत्पादितमानएषणाजनितः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमानदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१६ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मानाभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं मानदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

मायाकौटिल्यभावं च कृत्वाहारादिकं भुवि ।
उत्पाद्य भुज्यते यैस्तेषां मायादोष एव हि ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषोह्युत्पादितमायकाभिधो निंद्यः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१७ ॥
मनसा कारितदोषोह्युत्पादितमायकाभिधो निंद्यः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१८ ॥
मनसानुमतदोषो ह्युत्पादितवंचनाभिधो निंद्यः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २१९ ॥
वचसा च कृतोदोषो ह्युत्पादितमांचरीभवो निंद्यः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२० ॥
वचसा कारितदोषोह्युत्पादितकुटिलता प्रजोवरकः । तद्दोष० ।
ॐ ह्रीं वचनकारितमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२१ ॥
वचसानुमतदोषो ह्युत्पादितवंचनाभवः कुत्स्यः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२२ ॥
तनुना च कृतोदोषो ह्युत्पादितवंचनाभवः कुत्स्यः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतमायादोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २२३ ॥
तनुना कारितदोषो ह्युत्पादित वंचनाभवो निंद्यः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितमायादोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २२४ ॥
तनुनानुमतदोषो ह्युत्पादितवंचनाभवो निंद्यः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमायादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२५ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मायादोषहरं तं प्रयजेऽहं भक्ति भावेन ॥
ॐ ह्रीं माय दोषहराय जिनाय महार्घं ॥

लोभं प्रदर्श्य भिक्षां उत्पादयति भूतले ।
स्वात्मनो लोभिनस्तस्य लोभदोषोऽशुभप्रदः ॥पुष्पांजलिः।

मनसा च कृतो लोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२६ ॥
मनसा कारितलोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२७ ॥
मनसानुमतलोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२८ ॥
वचसा च कृतोलोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २२९ ॥
वचसा कारितलोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३० ॥
वचसानुमतलोभोऽप्येषणसमितौ महाघदः कष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३१ ॥
कायेन कृतो लोभोऽप्येषणसमितिप्रजो महादुःखं । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३२ ॥
तनुना कारितलोभोऽप्येषणसमितिप्रजो महादुःखं । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३३ ॥
तनुनानुमतो लोभोऽप्येषणसमितौ समाहृतः कष्टं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३४ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
लोभाभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं लोभदोषहराय जिनाय महार्घं।

प्रयतने यद्यशोदानग्रहणात्पूर्वमूर्जितं ।
दातुरग्रे सुदानाय स दोषः पूर्वसंस्तुतिः। पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादित पूर्वसंस्तुतिनामः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३५ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्युत्पादित पूर्वसंस्तुतिर्नाम ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२३६॥

मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादित पूर्वसंस्तुतिर्नाम ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२३७॥

वचसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादित पूर्वसंस्तुतिर्नाम । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २३८ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्युत्पादितपूर्वसंस्तुतिर्नाम । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २३९ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितपूर्वसंस्तुतिर्नाम । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२४०॥

तनुना च कृतोदोषोऽप्युत्पादितपूर्वसंस्तुतिर्नाम । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २४१ ॥

तनुना कारितदोषोऽप्युत्पादितपूर्वसंस्तुतिर्नाम । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २४२ ॥

तनुनानुमतदोषोऽप्युत्पादितपूर्वसंस्तुतिर्नाम । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२४३॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनप ।
पूर्वस्तुतिदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ।
ॐ ह्रीं पूर्वसंस्तुतिदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

गृहीत्वा पूर्वतो दानं पश्चाद्दानादिजान् गुणान् ।
दातुः स्तुतिगिरा यः सः पश्चात्संस्तुतिदोषभाक् ॥
॥ पुष्पाञ्जलिः ॥

पश्चात्संस्तुतिदोषो मनसा च कृतो शमाश्रयसमितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २४४ ॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो हृत्कारितकोशनाश्रयः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२४५॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो मनोऽनुमतकोशनाश्रयः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२४६॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो वचसा च कृतैषणप्रजः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२४७॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो वचसा कारितैषणाभवः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२४८॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो वचोऽनुमतकोशनाश्रयः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२४९॥
पश्चात्संस्तुतिदोषो कायकृतकोशनाश्रयः समितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२५०॥
तनुना कारितदोषः पश्चात्स्तवसंश्रयो महासमितौ । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२५१॥

तनुनानुमतदोषः पश्चात्स्तवसंश्रयो महासमितौ । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय अर्घं०॥२९२॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।

पश्चात स्तुतिदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं पश्चात्संस्तुतिदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

विद्यासाधयितुं सारं ने दास्यामीति यो मुनिः ।

आशयोत्पादयेद्दिक्षां विद्यादोषोऽत्र तस्य सः ॥ पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतोदोषो विद्यानामैषणाभवः स्पृष्टः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतविद्यारोहणदं षहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९३ ॥

मनसा कारितदोषो विद्यानामैषणाभवः स्पृष्टः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९४ ॥

मनसानुमतदोषो विद्यानामैषणाभवः स्पष्टः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २९५॥

वचसा च कृतोदोषो विद्याश्रयएषणाभवप्रसदः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९६ ॥

वचसा कारित दोषो विद्याश्रयएषणाभवः प्रसरः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९७ ॥

वचसानुमतदोषो विद्याश्रयएषणाभवः प्रकटः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं ॥ २९८ ॥

तनुना च कृतो दोषो विद्याश्रयएषणाभवः प्रकटः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९९ ॥

तनुना कारितदोषो विद्याश्रयएषणाभवः प्रकटः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०० ॥

तनुनानुमतदोषो विद्याश्रयएषणाभवः प्रकटः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितविद्यादोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६१ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ॥

विद्याभवं दोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं विद्यादोषरहितजिनाय अर्घं० ॥

गृहिणां सिद्धसमंत्रदानाशाकरणादिवा ।

उत्पाद्य गृह्यतेऽन्नं यन्मंत्रदोषः सदोषदः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषो मंत्राख्यो लोकगर्हितोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनकृतमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६२ ॥

मनसा कारितदोषो मंत्राख्यो लोकगर्हितोऽप्यशुभः तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६३ ॥

मनसानुमतदोषो मंत्राख्यो दोषदायकोऽप्यशुभः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६४ ॥

वचसा च कृतोदोषो मंत्राख्यो दुःखदायकोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६५ ॥

वचसा कारितदोषो मंत्राख्यो लोकगर्हितोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६६ ॥

वचसानुमतदोषो मंत्राख्यो दुःखदायकोऽप्यशुभः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६७ ॥

तनुना च कृतोदोषो मंत्राख्यो दुःखदायकोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६८ ॥

तनुना कारितदोषो मंत्राख्यो लोकरंजकोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६९ ॥

तनुनानुमतदोषो मंत्राख्यो लोकरंजकोऽप्यशुभः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमंत्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७० ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मंत्राभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं मंत्रदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

नेत्रांजनवपुः संस्कारहेतुचूर्णदानत ।
या भिक्षोत्पाद्यते लोके चूर्णदोषो हि सौघदः ॥पुष्पांजलिः ।

मनसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकः सततं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७१ ॥
मनसाकारितदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७२ ॥
मनसानुमतदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामको निंद्यः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७३ ॥
वचसा च कृतोदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७४ ॥
वचसाकारितदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० मे २७५ ॥
वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७६ ॥
तनुना च कृतोदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७७ ॥
तनुना कारितदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७८ ॥

तनुनानुमतदोषोऽप्युत्पादितचूर्णनामकोऽप्यधमः । तद्दो० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचूर्णदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २७९ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
चूर्णाभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं चूर्णदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

दानाय क्रियते यद् वशीकरणमंजसा ।
अवशानां जनानां च मायावाक्यादि जल्पनैः ॥
योजनं वै प्रयुक्तानां तथा दृष्टीयते भुवि ।
यत्सर्वं भवेन्मूलं कर्मदोषोऽशुभप्रदः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषो मूलादिककर्म एषणाजनितः तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८० ॥

मनसाकारितदोषो मूलादिककर्म एषणाजनितः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८१ ॥

मनसानुमतदोषो मूलादिककर्म एषणाजनितः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२८२॥

वचसा च कृतोदोषो वशीकराख्यो महाघखानि सः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८३ ॥

वचसाकारितदोषो वशीकराख्यो महान् दुरितखानिः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८४ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्युत्पादितमूलकर्मजनितमघं । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२८५॥

तनुना च कृतो दोषोऽप्युत्पादितमूलकर्मजनितमघं । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८६ ॥

कायेन कारितं यत उत्पादितमूलकर्मजनिमतघं । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८७ ॥

कायेनानुमतं यत उत्पादितमूलकर्मजनितमघं । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमूलकर्मदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८८ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
मूलकर्मदोषहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं मूलकर्मदोषरहितजिनाय महार्घं ।

अथ दश अशनदोषपरिहार पूजा।

एतच्चतुर्विधाहारं किमघैः कर्मणोद्भवं ।
नवेति शंकया भुक्ते यः सः शंकितदोषवान ॥ पुष्पांजलिः ।

ॐ ह्रीं मनःकृतशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २८९ ॥

मनसा च कृतं चांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूत । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९० ॥

मनसा कारितमांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९१ ॥

वचसा च कृतं चांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९२ ॥

वचसा कारितमांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९३ ॥

वचनानुमतचांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९४ ॥

तनुना च कृतं चांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९५ ॥

तनुना कारितमांगं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९६ ॥

तनुनानुमतसंज्ञं शंकितसंज्ञं तथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितशंकितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९७ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
शंकितदोषहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं शंकितदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

कड्छकेन हस्तेन स्निग्धेन भाजनेन च ।
यद्देयं गृह्यते लोके दोषो मुक्षित एव सः । पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽशनं संभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९८ ॥

मनसा कारितदोषोऽशनं संभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २९९ ॥

मनसानुमतचांगंऽशनं संभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०० ॥

वचसा कृतस्त्वंगंऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०१ ॥

वचसा कारितमंहोऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०२ ॥

वचसानुमत चांहोऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३०३॥

कायेन कृतं चांहोऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०४ ॥

तनुना कारितं चांहोऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०५ ॥

कायानुमतं चांहोऽशनसंभूतं तथैव मुषिताख्यं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमुषितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०६ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
मुक्षितदोषहरं तं चार्येऽहं निर्मलैर्वसुद्रव्यैः ॥
ॐ ह्रीं मुक्षितदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

दूर्वादिषु सचित्तेषु तेजो तेषु त्रसेषु च ।
हरितेषु च बीजेषु चेतनालक्षणात्मसु ॥
यद्देयं वस्तु निक्षिप्तं साधुभ्यो दीयते जनैः ।
सचित्तदोषदो निंद्यो दोषो निक्षिप्त एव सः ॥पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०७ ॥

मनसा कारितमांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३०८ ॥

मनसानुमतं चांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३०९॥
वचसा च कृतमंहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१० ॥
वचसाकारितं चांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३११ ॥
वचसानुमतं चांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३१२॥
कायेन कृतमंहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१३ ॥
तनुना कारितं चांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१४ ॥
तनुनानुमतं चांहो निक्षिप्ताभिधमथाशनोद्भूतं तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितनिक्षिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१५ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
निक्षिप्तदोषहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ।
ॐ ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितजिनाय महार्घं ।

सचित्तनाप्यचित्तेन गुरुकेण च वावृतं ।
दीयते मुनये दानं यद्दोष पिहितोऽत्र सः । पुष्पांजलिः ।

मनसा च कृतो दोषः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१६ ॥
मनसा कारितमंहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१७ ॥

मनसानुमतदोषः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१८ ॥

वचसा च कृतो दोषो पिहिताभिधमशनकरणसंभूतः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३१९ ॥

वचसा कारितचांहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२० ॥

वचसानुमतं चांहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३२१॥

तनुभावकृतमंहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२२ ॥

तनुना कारितचांहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२३ ॥

तनुनानुमतं चांहः पिहिताभिधमशनकरणसंभूतं त० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितपिहितदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३२४॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
पिहिताभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं पिहितदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

दानाय व्यवसायं च लभ्यं जनादिकात्मना ।
कृत्वा विधीयते दानं वत्स्यात्स व्यवहारजः ॥पुष्पांजलिः॥

व्यवहारतो यं मनसा विहितोऽप्यशनमघदोषं त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२५ ॥

मनसा कारितदोषो व्यवहारज अशनजो महानिंद्यः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२६ ॥
मनसानुमतदोषो व्यवहारज अशनजो महामलिनः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३२७॥
व्यवहारजदोषोऽयं वचसापि हितोऽपि चैव अघदोषः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३२८ ॥
व्यवहारजदोषोऽयं वचसा कारितभवो महामलिनः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३२९॥
व्यवहारजदोषोऽयं वचोऽनुमतसम्भवो महामलिनः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३३०॥
तनुना च कृतदोषो व्यवहारज अशनजो महामलिनः । तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं कायकृतव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३१ ॥
तनुना कारितदोषो व्यवहारज अशनजो महामलिनः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३३२॥
तनुनानुमतदोषो व्यवहारज अशनजो महानिंद्यः । तद्दोषघ्नं० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितव्यवहारजदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३३३॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
व्यवहारजदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं व्यवहारजदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

सूत शौंडी तथा रोगी मृतकश्च नपुंसकः ।
पिशाचो नग्न एवान्न उच्चारो यतिनस्ततः ॥ १ ॥
वातोंगिरुधिरात्क्तांगः वेश्यादासी तथार्यिका ।
अतिबालातिवृद्धाश्चमागाभ्यंगनकारिणी ॥ २ ॥

उत्सृष्टागर्भिणीचांधलिंकाद्यंतरितांगना ।
उपविष्टा तथोच्चस्थानीचप्रदेशमस्थिता ॥ ३ ॥
एवं विधो नरः स्त्री वा यदि दान ददाति च ।
तदा दायकदोषः स्यात् मुनेस्तत् सेविनोऽशुभः ॥ ४ ॥
वह्नौ मधूक्षणं प्रज्वालनमुत्कर्षणं तथा ।
प्रच्छादनं च विध्यापनं निर्वातं च घट्टनं ॥ ५ ॥
इत्याद्यग्निकार्यं च कृत्वारम्भं हि यागता ।
तस्या हस्तेन न ग्राह्यं दानं दायकदोषदं ॥ ६ ॥
लेपनं मार्जनं स्नानादिकं कर्मविधाय च ।
स्तनपानं पिबंतं बालकं निक्षिप्यमागता ॥ ७ ॥
इत्याद्यपरसावद्यकर्मकृत्वात्र दातृभिः ।
दानं य दीयते सर्वोदोषो दायकाभिधः ॥ पुष्पाञ्जलिः ॥

मनसा च कृतो दोषो दायकनामाशनप्रजो निंद्यः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३४ ॥
मनसा कारितदोषो दायकनामाशनप्रजो निंद्यः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३५ ॥
मनसानुमतदोषो दायकनामाशनप्रजोऽप्यघदः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३६ ॥
वचसा च कृतो दोषो दायकनामाशनप्रजोऽप्यघदः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३७ ॥
वचसा कारितदोषो दायकनामाशनोद्भवो निंद्यः ॥ तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३८ ॥

वचसानुमतदोषो दायकनामाशनोद्भवो मलिनः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३३९ ॥

तनुना च कृतोदोषो दायकनामाशनोद्भवो निंद्यः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४० ॥

तनुना कारितदोषो दायकनामाशनमजोऽप्यघदः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४१ ॥

तनुनानुमतदोषो दायकनामाशनोद्भवो मलिनः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदायकदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४२ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
दायकदोषहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं दायकदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

पृथ्व्यांबुना च बीजेन हरितेन त्रसांगिभिः ।
यो देयो मिश्र आहारो दोषश्चान्मिश्र एव सः । पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्यहारमिश्रसंभवो निंद्यः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४३ ॥

मनसा कारितदोषो उन्मिश्राभिधमशेषमतिं निंद्यः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४४ ॥

मनसानुमतं चांहः उन्मिश्राभिधमशेषदोषकरं । त० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४५ ॥

वचसा कृतस्तु दोषो उन्मिश्राभिधमशेषदोषकरः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४६ ॥

वचसा कारितं चांहः उन्मिश्राभिधमशेषपापखानिः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४७ ॥

वचसानुमतं चांहः उन्मिश्राभिधमशेषयति कुत्स्यं तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३४८॥

कायेन कृतमाया उन्मिश्राभिधमशेष पापकरी । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३४९ ॥

तनुना कारितं चांहः उन्मिश्राभिधमघालयं निंद्यं । तद्दो० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३५० ॥

तनुनानुमतं चांहः उन्मिश्राभिधमशेषपापखानि । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितउन्मिश्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३५१॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं जिनपं ।
उन्मिश्रदोषहरं तं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं उन्मिश्रदोषहराय जिनाय महार्घं ।

तिलोदकं तथा तन्दुलोदकं चरणोदकं ।
पुष्पोदकचिरान्नीरतप्तं शीतत्वमागतं ॥ १ ॥
विभीतकहरीतकादिकचूर्णैस्तया विधं ।
स्वात्मीयरसवर्णादिमिश्रापरिणतं जलं ॥ २ ॥
न ग्राह्यं संयतैर्जातु सदा ग्राह्याणि तानि च ।
परीक्ष्य चक्षुषा सर्वाण्यहो परिणतानि च ॥ ३ ॥
सतप्तं वा जलं ग्राह्यं कृतादिदोषदूरगं ।
तथा परिणतं द्रव्यैर्नानावर्णैर्मुमुक्षुभिः ॥ ४ ॥
योत्रापरिणतान्येव तानि गृह्णाति मूढधीः ।
तस्याः परिणतो दोषो जायते सत्वघातकः ॥ ५ ॥

तथा चोक्तं वट्टकेरस्वामिभिर्बृहन्मूलाचारे ॥

तिलतन्दुलउसिणोदयचणोदयं तु सोदयं ।
अविद्धत्थं अणं तथा विदं वा अपरिणदणे णगिए हेज्जो ॥

॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९२ ॥

मनसा कारितं चांहोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९३ ॥

मनसानुमतं चांहोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टं । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९४ ॥

वचसा कृतस्तुदोषोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९५ ॥

वचसा कारितं चांहोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९६ ॥

वचसानुमतं चांहोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९७ ॥

तनुना कृतस्तुदोषोऽप्यपरिणताख्यं जिनागमोद्दिष्टः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९८ ॥

तनुना कारितं चांहोप्यपरिणताख्य जिनागमोद्दिष्टः। तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९९ ॥

तनुनानुमतं चांहोऽप्यपरिणताख्यं नवादि सद्द्रव्यैः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितअपरिणतदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३६० ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
अपरिणताघहरंतं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं अपरिणतदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

आमपिष्टेन चूर्णेनापक्वशाकेन चांबुना ।
खटिकाहरितालादिद्रव्यैरार्द्रकरेण वै ॥
भाजनेनात्रदेयं यदन्नादियं नयेर्जनैः ।
लिप्तदोषः स एव स्यात्सूक्ष्म जंत्वादिघातकः ॥पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतदोषो लिप्ताहो लिप्तदर्विकाद्यैश्च । तदो० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६१ ॥
मनसा कारितदोषो लिप्ताहोऽप्यार्द्रकरभवो दुष्टः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥२६२॥
मनसानुमतदोषो लिप्तोऽप्यार्द्रणभाजनेनैव । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६३ ॥
वचसा च कृतदोषो लिप्ताहोलेपदः सदा चित्ते । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६४ ॥
वचसा कारितदोषो लिप्ताहो लिप्तकरशरीरपदः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६५ ॥
वचसानुमतदोषो लिप्ताहोलेपदः सदा लोके । तदो० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६६ ॥
कायेन कृतचांहो लिप्ताहं कर्मदं मुनींद्राणां । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६७ ॥
वपुषा कारितदोषो लिप्ताहः कर्मदसतींद्राणां । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ २६८ ॥

तनुनानुमतं चांहो लिप्तहं लेपदं सदा चित्ते । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३६९ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैवमनिमित्तौ स्तुतहरं मुनिपं ।

लिप्ताभिधदोषहरं प्रयजेऽहं भक्तिभावेन ॥

ॐ ह्रीं लिप्तदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥

दीयमानं यमाहारं घृततक्रोदकादिभिः ।

वरं परिगलंतं स छिद्रपाणि पुटेन च ॥

श्रवंतं यदि गृह्णाति संयतोऽसंयमप्रदः ।

तदा स कथ्यते दोषः परित्यजनसंज्ञकः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतः दोषः परित्यजनसंज्ञकः श्रवद्ग्रहणः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरित्यजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३७० ॥

मनसा कारितं चांहः परित्यजनसंज्ञकः श्रवद्ग्रहणः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरित्यजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३७१ ॥

मनसानुमतं चांहः परित्यजनसंज्ञकं श्रवद्ग्रहणं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरित्यजनदोषहराय जिनाय अ० ॥ ३७२ ॥

वचसा कृतस्तुदोषः परित्यजनसंज्ञकः श्रवद्ग्रहणः । त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपरित्यजनदोषहराय जिनाय अ० ॥ ३७३ ॥

वचसा कारितं चांहः परित्यजनसंज्ञकं श्रवद्ग्रहणं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरित्यजनदोषहराय जिनाय अ० ॥ ३७४ ॥

वचसानुमतं चांहः परित्यजनसंज्ञकं श्रवद्ग्रहणं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपरित्यजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३७५ ॥

कायेन कृतदोषः परित्यजनसंज्ञकः श्रवद्ग्रहणः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरित्यजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३७६ ॥

तनुना कारितदोषः परित्यजनसंज्ञकः अवद्धहणः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरित्यजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३७७॥

तनुनानुमतं चांहः परित्यजनसंज्ञकं अवद्धहणं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरित्यजनदोषहरायजिनाय अर्घं० ॥३७८॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
परित्यजनाघहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषहराय जिनाय महार्घं ॥

इति षोडश उत्पादन पश्चात् दश एषणादोष परिहार पूजा समाप्तः ।

संयोजयति यो भक्तं शीतमुष्णेन वारिणा ।
शीतोदकेन वोष्णान्नं तस्य संयोजनो मलः । पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतो दोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं मनःकृतसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३७९ ॥

मनसा कारितदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३८०॥

मनसानुमतदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥ तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३८१॥

वचसा च कृतदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥ त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८२ ॥

वचसा कारितदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥ त० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८३ ॥

वचसानुमतदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥ त० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३८४॥

कायेन कृतोदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८५ ॥

तनुना कारितदोषः संयोजनसंज्ञको मलोऽप्यशुभः ॥ त० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८६ ॥

तनुनानुमतदोषः संयोजनसंज्ञको मलो दोषः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितसंयोजनदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३८७॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणयमितौ सुनत्परं मुनिपं ।
संयोजनदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं संयोजनदोषहराय जिनाय महार्घं० ॥

उदरस्यार्द्धमन्नेन तृतीयांशं जलादिभिः ।
पूरयेद्यश्चतुर्थांशं धत्तेरिक्तं सदा यमी ॥ १ ॥
प्रमाणभूतमाहारस्तस्य निद्राजयो भवेत् ।
शुभध्यानं च सिद्धांत पठंत कर्मनिर्जरा ॥ २ ॥
अस्मात्प्रमाणतोऽन्नादिमतिमात्रं भजेन्मुनिः ।
यस्तस्यात्रा प्रमाणाख्य दोषो रागो समाधिनाः ॥पुष्पांजलिः॥

मनसा च कृतो दोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८८ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३८९ ॥

मनसानुमतदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३९०॥

वचसा च कृतदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकृतअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९१ ॥

वचसा कारितदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९२ ॥

वचसानुमतदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३९३॥

कायेन कृतोदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । त० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९४ ॥

वपुषा कारितदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९५ ॥

देहानुमतदोषोऽप्यतिमात्रः स प्रमाणतोऽन्नादेः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितअप्रमाणदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३९६॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
दुरिताप्रमाणनाशं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषरहितजिनाय महार्घं० ॥

अगृद्ध्यामूर्छितो यः प्रभुक्तेऽत्राहारमंजसा ।
मन्दबुद्धिर्भवेत्तस्यांगारदोषोऽशुभार्णवः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषोऽप्यंगाराख्यो महाशने लोलः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनःकृतअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ३९७ ॥

मनसा कारितदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने सदाश्लीलः । त० ॥

ॐ ह्रीं मनःकारितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३९८॥

मनसानुमतदोषोऽप्यंगाराख्यो महाघखनिरेषः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥३९९॥

वचसा च कृतदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने महातृष्णः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥४००॥

वचसा कारितदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने सदा तृष्णः ।तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥४०१॥

वचसानुमतदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने महागृध्नुः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥४०२॥

तनुना च कृतदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने महालुब्धः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥४०३॥

तनुना कारितदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने महातृष्णः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०४ ॥

तनुनानुमतदोषोऽप्यंगाराख्योऽशने सदा लोभः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितअंगारदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०५ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणमामतौ सुतत्परं मुनिपं ।
चांगारकृदोषहरं प्रयजेऽहं द्रव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं अंगारदोषरहितजिनाय अर्घं० ॥

सरसान्नाद्य लोभेन निंदन्दातॄन् गिराशनं ।
भुनक्ति योऽधमो निंद्यं धूमदोषं लभेत सः ॥ पुष्पांजलिः ॥

मनसा च कृतोदोषो धूमाभिध एष दातृनिंदनकृत । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतधूमदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०६ ॥

मनसा कारितदोषो धूमाभिध एष मरसनिंदनकः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितधूमदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०७ ॥

मनसानुमतदोषो धूमाभिध एष सरसनिंदनकः । त० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधूम्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०८ ॥
वचसा च कृतदोषो धूमाभिध एष अशननिंदनकः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतधूमदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४०९ ॥
वचसा कारितदोषोऽधूमाभिध एष धूमनिंदनकः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितधूम्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४१० ॥
वचसानुमतदोषोऽधूमाभिध एष अन्नमनिंदनकृत । त० ॥
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधूम्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४११ ॥
कायेन कृतदोषो धूमाभिध एष दातृनिंदनकृत । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतधूमदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४१२ ॥
वपुषा कारितदोषो धूमाभिध एष दातृनिंदनकः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितधूमदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४१३ ॥
देहानुमतदोषो धूमाभिध एष दातृनिंदनकृत । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितधूम्रदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ४१४ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चैषणसमितौ सुतत्परं मुनिपं ।
धूमाभिधदोषहरं प्रयजेऽहं दिव्यभावेन ॥
ॐ ह्रीं धूमदोषहराय जिनमहार्घं० ॥

इत्थं चतुःशतच दशभेदयुक्ता ।
चैषासमित्यशनकेषणका प्रसिद्धाः ॥
तद्दोषकष्टपरिहारकरं मुनीशं ।
चार्ये चरित्रवरशुद्धिकरं गुणेशं ॥
ॐ ह्रीं एषणासमितये जय० पूर्णार्घं० ॥

अथ जयमाला।

एषणासमिति प्रोक्तां विधिधर्तारमद्भुतं।
चारित्रशुद्धि कर्तारं नत्वा चारातिकां ब्रुवे॥ १॥

उद्देशिक पूत्यध्यधि विनाश, जयमिश्रस्थापित बलि प्रणाश।
प्रावर्तित प्राविष्करणहार, जयक्रीतसु पामित्य प्रहार॥ २॥

परिवर्तकदोषाभिघटहार, जय देशसर्वयुमल प्रहार।
उद्भिन्नमालरोहाधिवार, आछेद्यदुरित सारसहार॥ ३॥

षोडशकिल्विष उद्गम निवार, उत्पादित षोडश सद्विचार।
जय धात्री पंचविध प्रचार, जय दूतनिमिताष्टक निवार॥४॥

आजीवन वनीपक दोषघात, जय बहुविध सुचिकित्सित विघात।
जय क्रोधमानमायापहार, जय लोभपूर्वसंस्तुति निवार॥५॥

जय पश्चात्संस्तुतिदोषहार, विद्यासुमंत्र दुरित प्रहार।
जय चूर्णयोगकृत चूर्णयोग, जयमूलकर्महति सिद्धयोग॥६॥

षोडशव्युत्पादित दोषहार, चतुरशनजनित दशदोषहार।
जय शंकितमुक्षितदोषहन, निक्षिप्तपिहित हाजिनभञ्जन॥७॥

व्यवहारदायकायप्रहार, उन्मिश्र तथा परिणत विहान।
जय लिप्तपरित्यजनप्रघात, दशदोष भोजनामत्र घात॥ ८॥

संयोजन संयोजन निवार, जय सुप्रमाण विप्रमाणहार।
अङ्गार चोशमाशक्तिहार, जय दातृज निंदक धूमहार॥ ९॥

जय दोषपट्कतुर्याभि घात, काकादिद्विश्रिमत्युहत्रात।
नख रोम मृतकमलदोषवार, जय तुर्यदशकमल सर्वहार॥१०॥

नव कोटि विशुद्धि सुसमितिसार, नवविध पुण्य सुभक्ति सार।
जय दातृ सप्तगुणयुक्त शुद्ध, षट्कारणजनितादानबुद्ध ॥११॥
षट्कारणजनिताहार साग, रत्नत्रयदेह सु धरणराग।
जय सैषणयुक्तोभवविराग, जय चुत्यैषणप्रतिकूद्धभाग ॥१२॥
षष्ठाष्टम दशमक पक्षत्याग, वर्णयितु कः प्रभुरिष्ट भाग।
ऋद्धिप्रभावरसत्याग युक्त, अनशनव्रत सुखातिभुक्त ॥१३॥
जय अवमौदर्य सु कायक्लेश, जय विविक्तशयनकाशनविशेष।
गिरि कंदरप्रेतवनाधिवास, जय ध्यानासिद्धिकर मुक्तिवास ॥

एषणासमिति प्रोक्तं, वर्णनायं मुनीश्वरं।
महार्घ दानतश्चाये, वृत्तशुद्धि करं परं ॥

ॐ ह्रीं एषणासमितये जयमाला पूर्णार्घं।

अथादान निक्षेपण समिति पूजा।

कुंडापिच्छादिवस्तुनामादानं क्षेपणं तथा।
प्रतिलिख्यं च कुर्वीतादाननिक्षेपणां भवेत ॥पुष्पांजलिः॥

व्योमापगाच्युतमवारिधारया सुचंद्रसद्गंधसुगंधसारया।
यतींद्रचंद्रं प्रयजे सदाहमादाननिक्षेपणबद्धकक्षं ॥
ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितये जलं० ॥ १ ॥

सद्घुसृणाद्यैर्वरगंधयुक्तैः सुगंधनायातद्विरेफवृंदैः।
यतींद्रचंद्रं० ॥ चंदनं ॥ २ ॥
आमोदमोदितसुभूपगणैरखंडैः सुशालिजैः सत्कलमादिकाक्षतैः।
यतींद्रचंद्रं० ॥ अक्षतान् ॥ ३ ॥

सत्केतकीचंपककुंदजाती पुजातिमंदारवराहिमपुष्पैः ।
यतींद्रचंद्र० मो पुष्पम् ॥ ४ ॥
सदोदनैर्व्यंजनकैरसाद्यैः पक्वान्नकैर्दुग्धदधीक्षुभक्ष्यैः ॥
यतींद्रचंद्र० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
कर्पूररत्नजघृतादिभवैः प्रदीपैरुद्योतिताशेषगणैः प्रकाशैः ।
यतींद्रचंद्र० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
श्रीखंडकालागरुसिल्हकादिधूपैः सुगन्धितसमस्तदिगंतरौघैः ।
यतींद्र० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
सुपुंगसन्मोचकचोचकाद्यैः सदाडिमचूर्णकपित्थजंभैः ।
यतींद्र० ॥ फलं ॥ ८ ॥
वार्गंधशुद्धाक्षतमत्प्रसूनैः पक्वान्नदीपसुधूपकैः फलैः ।
यतींद्र० ॥ अर्घं ।

मनसा च कृतदोषोऽप्यादाननिक्षेपसमितौ च तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ १ ॥

आदाननिक्षेपसमितौ मनसा कारितो दोषस्तद्दोषः ॥
ॐ ह्रीं मनःकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ २ ॥

आदाने मद्गृहणे निक्षेपे वस्तुनः मनोनुमतः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनानुमतआदाननिक्षेपसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ ३ ॥

वचसा च कृतदोषोऽप्यादाननिक्षेपणे चर्या जातः तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥४॥

आदाने निक्षेपे वाचितो वचसा च कारितो दोषः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ ५ ॥

आदाने च गृहणे निक्षेपे वस्तुनो वचोऽनुमतं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

तनुना च कृतदोषोऽप्यादाने क्षेपणे तथा जातः । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

तनुना कारितदोषोऽप्यादाने क्षेपणे तथा जातं । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषनाशकाय जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

तनुनानुमतदोषोऽप्यादाने वस्तुनो हि निक्षेपे । तद्दोष० ॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषहराय जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

नवविधदोषविमुक्तं चादानक्षेपसमितिकर्त्तारं ।
चायेऽहं सुखमायं जलमुख्यार्घैर्मुमुक्षुवृन्देः ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमिति पूर्णार्घं० ॥

अथ जयमाला ।

जयमाल जिनेन्द्रस्य पूर्वजातस्य सन्मुनेः ।
आदाननिक्षेपणभवा जयमाला स्तूयते मया ॥

जय शीलशुद्धगुणगण सुशील, जय जिनवर सुखकर भद्रलील ।
जय पाप वज्रदारक गुणेश, जय दिक्षा शिक्षा लुंचनेश ॥२॥

जय भव निस्तारक दोषवार, जय शिववर पिच्छसु कर सुचार।
जय मदनविदारक खाद्यवार, जय दुष्कषाय गण बल निवार॥३
जय मोहरागद्वेष प्रहार, शौचार्थ यतींद्र सु कुंडि सार
तत्वार्थविचारक धर्ममूल, उत्थापित पंच मिथ्या त्रिशूल ॥४॥
जय मुनिपद परपद सारभूत, शुभ मतिकर विधि हरणभूत।
सुखसदन विषयगण मोहजार, जयधर्मसदन शीलादि सार॥५
मंगलकर समदमयम विलीन, पालन मूढत्रय मद विहीन।
षडनायतनादिक विनाश, शंकादिक वसु विध दोष नाश॥६
संवेग गुणाष्टक चित्त लीन, त्रिशत त्रिषष्टि पाषंडि चीर्ण।
धर्मागम चिंतन ज्ञान पूर, विज्ञान शून्यवादि प्रमूर॥ ७॥
भौतिक नाथागत खंडनेश, विज्ञानसार नवगुण नवेश।
तपसा तप्यत तनु हृदय धार, नैयायिक वैशेषिक विदार ॥८॥
अभ्यासित सुखकर शुद्ध तत्व, निज चिंतन चिंतक निर्ममत्व।
जय कर्मकलंक विकारहार, निजधर्म धाम गुण वार कार ॥९॥
आदान योग्य वस्तु गृहेश, प्रतिलेखन निक्षेपित विशेष।
विनवीत बाध बलदृष्टि शर्म, जय निर्जरकर मुनि नष्टकर्म ॥१०॥

॥ घत्ता ॥

जय भवभय दुःखहर शिवसुख करवर, समिति पालने सोधर्मवर।
हे करूणाकर विषय दुरितहर, रक्ष रक्ष जिन भव तरकर॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिपालकाय जिनाय जयमाला महार्घं०॥

अथ उत्सर्ग समिति प्रतिपालक मुनि पूजा ।

शुचौ निर्जंतुके देशे स्त्रीपुंषंढविवर्जिने ।
मलमूत्रपरित्यागः व्युत्सर्गसमितिर्भवेत् ॥ पुष्पांजलिः ॥

मिथ्यात्वाद्यंतरंगादि क्षेत्रादिबाह्यवर्जितं ।
ध्यानस्थंमुनिमुत्सर्गभाजनं सज्जलैर्यजे ॥
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रापकाय मुनये जलं ॥ १ ॥
रागद्वेषसुवर्णाश्मतृणरत्नसमाश्रितं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं घुसृणैर्यजे । चंदनं० ॥ २ ॥
गंधवेदत्रयविकारेण हीनं ज्ञानमयात्मकं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं सदक्षैर्यजे ॥ अक्षतान्० ॥ ३ ॥
मिथ्यात्वपंचमन्नाशं पंचेंद्रियनिवारकं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं सदकैर्यजे ॥ पुष्पम्० ॥ ४ ॥
षट्कायरक्षकं लेश्याद्रव्यभावनिरूपकं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजिनं चरुभिर्यजे ॥ नैवेद्यं० ॥ ५ ॥
सप्ततत्वप्रणेतारं सप्तभंगनिरूपकं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं दीपकैर्यजे ॥ दीपं० ॥ ६ ॥
अष्टकर्मविघातार्हं सिद्धाष्टगुणचिंतकं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं धूपकैर्यजे ॥ धूपं० ॥ ७ ॥
नवार्थनयवेत्तारं समतासहितं परं ।
ध्यानस्थं मुनिमुत्सर्गभाजनं सुफलैर्यजे ॥ फलं० ॥ ८ ॥
समित्युत्सर्गपातारं वीर्याचारपवित्रितं ।
ध्यानस्थं मुनिमीशानं जलाद्यैः प्रयजेऽन्वहं ॥ अर्घं० ॥

मनसा च कृतदोषोऽप्युत्सर्गसमित्यवनचेत्तारं । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनःकृतउत्सर्गसमितिदोषविनाशकाय मुनये अर्घं० ॥१॥
मनसा कारितदोषः समिति व्युत्सर्गसंज्ञिका यातः । तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं मनःकारितउत्सर्गसमितिदोषविनाशकाय मुनये अर्घं० ॥२॥
मनसानुमतदोष समितिव्युत्सर्गसंज्ञिका यातः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदित उत्सर्गसमितिदोषविनाशकाय मुनये अर्घं० ॥३॥
वचसा च कृतदोषो व्युत्सर्गसुसमितिपालने जातः । तद्दोष०॥
ॐ ह्रीं वचनकृतउत्सर्गसमितिदोषविनाशकाय मुनये अर्घं० ॥४॥
वचसा कारितदोष समितिव्युत्सर्गसंज्ञिका यातः । तद्दोष० ॥
ॐ ह्रीं वचनकारितउत्सर्गसमितिदोषविनाशकाय मुनये अर्घं० ॥५॥
वचसानुमतदोषो व्युत्सर्गसुमितिपालने जातः । त० ॥
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउत्सर्गसमितिदोषहराय मुनये अर्घं० ॥६॥
कायेन कृतदोषो व्युत्सर्गसुसमितिपालने जातः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकृतउत्सर्गसमितिदोषहराय मुनये अर्घं० ॥७॥
तनुना कारितदोषो व्युत्सर्गसुसमितिपालने जातः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायकारितउत्सर्गसमितिदोषहराय मुनये अर्घं० ॥८॥
तनुनानुमतदोषो व्युत्सर्गसुसमितिपालने जातः । त० ॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदित उत्सर्गसमितिदोषहराय मुनये अर्घं० ॥९॥

नवविधदोषविमुक्तं उत्सर्गसुसमितिपालने दक्षं ।
द्विकत्रयकृतपूरं तं चायेऽहं दिव्यभावेन ॥

ॐ ह्रीं उत्सर्गसमितिपालकाय मुनये महार्घं ॥

॥ इति ॥ [illegible]

अत्र समितिद्वये मुनिमेवग्राह्यमिति तीर्थंकर जिनस्य नास्ति नीहारः। आगमे तेषां निहारादि निषेधनात् ॥

उक्तं च " तित्थयरा तिप्पयरा हलधर चक्कीय वासुदेवाय पडिवासुव भोगभूमिय आहारो अत्थिणत्थि णीहारो।" इति वचनात जिनस्योपचारमात्रसमितिद्वयमस्ति ॥

अथ जयमाला।

शक्र इंद्रनरेंद्रवंद्यचरणाः प्राप्तश्रियं शाश्वतीं।
ये तीर्थंकरसंज्ञका जितहृदो शुत्तादिशुद्धिकराः ॥
त्रैकाल्यं त्रिषु लोकजीवसहितं षट्कायलेश्याः परा।
पंचैवास्ति सुकायसुविनयकाश्रीतिनास्तेऽर्चिताः ॥ १ ॥

जय वीतराग निर्ग्रंथ भाव, जय सर्व स्त्री तजिन हावभाव।
एकांत प्रदेश निहार सार, श्री पंचनमस्कृति शौच सार ॥२॥
जल शौच हरन मित पात्र सार, अस्नान गुणान्वित देह सार।
व्रत पंचसमिति पंचक नियुक्त, जय पंच निरोधसांग्रम सुयुक्त ॥
जय लुंचन भूशयन प्रधार, चेलादि विवर्जित संगहार।
कृत सामायिक षट् गुण समस्त, कालत्रय विहितावश्यवश्य ॥
जय दंतधवन सत्यागकार, अभ्यंग विलेपनकृत निकार।
स्थित भुक्त चेक भक्त प्रसिद्ध, द्वात्रिंशदोष शुद्धप्रसिद्ध ॥३॥
व्युत्सर्गाकरण संवर्द्धकृच्छ, अप्रासिक दोष समस्त नष्ट।
जय वंदन प्रत्याख्यान युक्त, जयसंस्तुति प्रतिक्रम भावयुक्त ॥

गुप्तिपालन सुभकाश्य शल्य, त्रयनाशन चिद्रिकाश दंड ।
जय दुष्ट मूढताश्रय विमुक्त, त्रैकालत्रिलोक विवेकयुक्त ॥ ७ ॥
चतुराराधनकर मद्रकार, आज्ञादिदशक सम्यक्त धार ।
नैसर्गाधिगमज दृष्टसार, उपशम वेदक क्षायिक सुसार ॥८॥
सामायिकादि वर पंच भेद, व्रत समिति गुप्ति धृत भेदभेद ।
चारित्रशुद्ध नैष्ठिक प्रवीण, यतिगणपूजित मुनिवर महीन ॥९॥

इत्थं सांगस्य वृत्तस्य स्तवनं रचयेत्सुधीः
प्राप्नोति सर्वकल्याणं स्वर्गाभ्युदयसौख्यदं ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्सर्ग समितिपालकाय मुनये पूर्णार्घं० ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे व्रतराजमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं चारित्रशुद्धिमहाव्रताय पूर्णार्घं० ॥

अथ जाप्य १०८ लवंगादिना जपेत् । जाप्य मंत्र–" ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः "

इतिश्री ज्ञानभूषाकिंत सुमतिब्रह्मसहाय्यसापेक्षे ।
चारित्रशुद्धिविधान बारसोचौबीसविधाने समाप्तम ॥

बारसौ चौतीस व्रत विधान समाप्तम् ।

॥ ॐ ॥

अथ रविवारव्रत उद्यापनम् ।

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सर्वज्ञं सुखदायकम ।
वक्ष्ये सूर्यव्रतं यस्य पूजा सौख्यं प्रदायिनी ॥ १ ॥
आदौ गंधकुटीपूजा ततस्नपनमाचरेत् ।
पश्चात् कोष्टगता पूजा कर्तव्या विबुधोत्तमः ॥ २ ॥
पार्श्वनाथजिनेन्द्रस्य प्रतिमां परमां शुभाम् ।
आह्वाननादिविधिना स्थापयेत स्वस्तिकोपरि ॥ ३ ॥
पश्चात् पूजा प्रकर्तव्या विधिवदष्टधा मुदा ।
उत्तमां सर्वसामग्रीं मेलयित्वा त्रिशुद्धितः ॥ ४ ॥

इति जिनपूजनप्रतिज्ञा नाम जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत ।

अथ स्थापना ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य, द्विष्ठं नेनोटङ्कितस्थापनस्य ।
स्वामिन् निर्नेतु वषट्कार जागृत,सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टसिद्धिप ॥

ॐ ह्रीं श्री चिंत मणिपार्श्वनाथ अत्र अवतर अवतर संवौषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा (स्थापनं)

अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नन्द नन्द, वर्धस्व वर्धस्व, विजयस्व विजयस्व, अनुसाधि अनुसाधि, पुनीहि पुनीहि, पुण्याहं पुण्याहं, प्रियंताम् प्रियंताम्, मंगलं मंगलं, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टकम् ।

क्षीरहीरगौरनीरपूर्ववारिधारया ।
कुन्दकुन्दचन्दनादिमिश्रसारया ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्यचिन्त्यतार्थदं ह्री पार्श्वनायकं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणिपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षतैर्वर्जनैरनर्घचन्दनद्रवैः ।
कुंकुमादिमिश्रितैरनल्पषट्पदाश्रितै ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

औषधेन सिन्धुफेनहारभासमुज्वलै-
रक्षितैः सुलक्षितैरजोतखण्डवर्जितैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

पारिजातवारिजातकुन्दहेमकेतकैः ।
मालतीसुचंपकादिसारपुष्पमालया ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्यंजनेन पायसादिभिः समं च षट्रसैः ।
मोदकौदनादिभिः सुवर्णभाजनस्थितैः ॥

चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नसोमसर्पिषादिदीपकैः कृतोज्ज्वलैः ।
वातघाततोपकोपकंपरूपवर्जितः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सीलिकासितागुरुप्रधूपकैः शुभप्रदैः ।
वानमानवर्धमानमाननीमनोहरैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनु कल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफलाम्रकर्कटीसुदाडिमादिभिः फलैः ।
वर्णमिष्टसौरभादिचक्षुरादिमोदनैः ॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम् ।
पूजयाम्य० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवनीसिनागुरुद्रवाक्षतैः प्रसूनकैः ।
शुभेश्वरुप्रदीपकैः सुधूपरूपसत्फलैः ॥
सुवर्णभाजनस्थितैर्मारमारमाभिधैः ।
[illegible] पणार्चके महा[illegible]निगर्वीक्षिते ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येक पूजा ।×

(१)

आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमो रविवासरः ।
तद्दिने प्रोषधं कुर्यात सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतप्रथमोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्रीजिनेन्द्राय जल-चंदनाक्षतपुष्पचरुदीपधूपफलार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीयादित्यवारे च प्रोषधं यः तपस्यति ।
पूर्वसूरिसदाचारी सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

तृतीयादित्यवारे च प्रोषधं हि करोति यः ।
तस्य स्यात सर्वसिद्धिश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

त्रिशुद्ध्या प्रोषधं कुर्यात चतुर्थे रविवासरे ।
पुण्येन तेन संसिद्धिः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थोपवासप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

यः कुर्यात प्रोषधं भव्यं पंचमे सूर्यवासरे
धनधान्यागमस्तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

षष्ठे हि रविवारे च प्रोषधं परमादरात ।
यः करोति स धन्यश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि०

× श्रीफल साथिया पर चढावणा ।

सप्तमे रविवारे च प्रोषधो हि करोति यः ।
सर्वसिद्धिर्गृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि०

अष्टमे रविवारे च प्रोषधं सुखदायकम् ।
सुखार्थं कुरुते नित्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥
ॐ ह्रीं सूर्यव्रताष्टमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

प्रोषधं सुखदं कुर्यात् नवमे रविवासरे ।
सर्वसंपद्गृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥
ॐ ह्रीं सूर्यव्रतनवमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि० ।

अषाढशुक्लादारभ्य नवेति सूर्यवासराः ।
प्रोषधेन समं कुर्यात् स नरः सुखमेधते ॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथमवर्षे रविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(२)

आषाढमासे खलु शुक्लपक्षे, सूर्यादिवारे द्वितीये च वर्षे ।
आचाम्लभुक्तं पुनरेकवारं करोति यः सर्वसुखं लभेत ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे प्रथमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीयवर्षसम्बंधिद्वितीये सूर्यवासरे ।
कांजिकाहारकं कुर्यात् स्वर्गसोपानप्राप्तये ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे द्वितीयकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीयवर्षसम्बंधितृतीये रविवासरे ।
तद्दिने कांजिकाहारं कुर्वन्तु व्रतसिद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे तृतीयकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीये खलु वर्षे च चतुर्थे रविवासरे।
तद्दिने कांजिकाहारं कर्तव्यं भव्यसत्तमैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे चतुर्थकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसम्बंधि पंचमे सूर्यवासरे।
कांजिकाहारं कुर्यात् सुखसंपत्तिहेतवे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे पंचमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि०।

द्वितीये वर्षके रम्ये षष्ठे च रविवासरे।
कांजिकाहारभोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे षष्ठमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं नि०।

वर्षे द्वितीये भो भव्याः कांजिकाहारमुत्तमं।
कुर्वन्तु सर्वदा नित्यं सप्तमे सूर्यवासरे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे सप्तमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षे संजाते रविवारे चाष्टमे पुनः।
कांजिकाहारभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतशुद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्विती० वर्षे अष्टमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसंजाते नवमे रविवासरे।
संप्रोक्तं कांजिकाहारं व्रतसिद्धयै दिगंबरैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयवर्षेनवमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूर्यव्रतस्य सम्बंधि कांजिकाहारकाष्टकं ।
कृत्वा च द्वितीये वर्षे पार्श्वनाथं च पूजयेत ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयेवर्षे कांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ।

(३)

वर्षे तृतीये पुनरागते च क्षारं रसं त्याज्य करोति भुक्तिम् ।
आषाढमासे प्रथमे च पक्षे सूर्यादिवारे लभते सुखं स ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितप्रथमैकभुक्तिः प्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृतीयवर्षे सम्बंधि द्वितीये रविवासरे ।
तद्दिने चैकभुक्तं च कर्तव्यं लवणं विना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितद्वितीयभुक्तप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृतीये रविवारे च तृतीये वर्षे पुनः
लवणेन रहिता भुक्तिः कर्तव्या व्रतसिद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहिततृतीयैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थे रविवारे च तृतीये वर्षे मुदा ।
लवणेन विना भुक्तिः कार्येत सुविचक्षणः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितचतुर्थकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमे सूर्यवारे तृतीये वर्षे तृतीये पुनः
लवणेन विना भुक्तिः करोति व्रतधारकः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितपंचमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठे हि रविवारे च लवणेन विना नरः ।
भुक्तिं कुर्यान्न स पूतात्मा तृतीये वर्षे मुदा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहित षष्ठैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमे सूर्यवारे च वत्सरे हि तृतीयके ।
लवणेन विना भुक्तिं कुर्वंतु व्रतसिद्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितसप्तमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

अष्टमे सूर्यवारे च तृतीये वत्सरे पुमान् ।
लवणेन विना भुक्तिं यः करोति स धर्मभाक् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितअष्टमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि०

तृतीये वत्सरे जाते नवमे रविवारे ।
लवणेन विना भुक्तिं कुर्वंतु हितचिंतकाः ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितनवमैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ॥

अमुना हि प्रकारेण कुर्वंति ये नराः शुभम् ।
व्रतमादित्यमङ्गं च ते नराः धर्मनायकाः ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ॥

(४)

आषाढमासे खलु शुक्लपक्षे वर्षे चतुर्थे पुनरागते च ।
सूर्यादिवारे चटुकप्रमाणं भोक्तव्यमन्नं व्रतधारकेण ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे प्रथमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थे वत्सरे जाते द्वितीये रविवासरे ।
चाटुकमन्नं भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रत चतुर्थवर्षे द्वितीयैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं नि० ।

वर्षे चतुर्थसंजाते तृतीये रविवारे ।
एचाटुकप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतसिद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे तृतीयैकचाटुप्रोषधद्योतनाय अर्घं नि० ।

वर्षेचतुर्थे चतुर्थे हि वासरे रविसंज्ञके ।
चाटुप्रमाणमन्नं च भोक्तव्यं व्रतशुद्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चतुर्थैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

चतुर्थे वत्सरे जाते पंचमे सूर्यवासरे ।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे पंचमैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

चतुर्थे हि समायाते षष्ठे रविदिने तथा ।
चाटुप्रमाणं भोक्तव्यं रविव्रतविशुद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे षष्ठैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

वर्षे चतुर्थे संजाते सप्तमे रविवासरे ।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं परमादरात् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे सप्तमैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

अष्टमे रविवारे च वर्षे चतुर्थे मुदा ।
चाटुकमन्नं भोक्तव्यं सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षेऽष्टैकचाटुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

वर्षे चतुर्थे नवमे च वासरे सूर्यसंज्ञके ।
चाट्टुमपाणं भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे नवमैकचाट्टुप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
चतुर्थवर्षमध्ये च सूर्ये सूर्ये हि वासरे ।
नवमं चाट्टुकं कृत्वा पार्श्वनाथं प्रपूजयेत् ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतचतुर्थे वर्षे चाट्टैकभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।

(५)

आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमादित्यवासरे ।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं वर्षपंचमे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे प्रथमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
वर्षे पंचमे जाते द्वितीये सूर्यवासरे ।
निवेडनामभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतधारिणा ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमवर्षे द्वितीयनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं नि० ।
तक्रोदनं हि भोक्तव्यं वत्सरे पंचमे तथा ।
तृतीये सूर्यवारे च सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे तृतीयनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
वर्षे पंचमके भव्यैः कर्तव्यं हि निवेडकं ।
चतुर्थे सूर्यवारे च रविव्रतविशुद्धये ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे चतुर्थनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
पंचमेऽब्दे समायाते पंचमे रविवासरे ।
निवेडनामभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतधारकैः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे पंचमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेष्टे समायाते षष्ठे च रविवासरे ।
निवेडप्रोषधं कुर्यात सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे षष्ठमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमे रविवारे च निवेडं च प्रकारयेत् ।
पंचमे वत्सरे भव्यः आदित्यव्रतसिद्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे सप्तमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे सूर्यवारे च पंचमे वत्सरे मुदा ।
निवेडभुक्तिमादाय पार्श्वनाथं प्रपूजयेत् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे अष्टमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेष्टे समायाते नवमे रविवासरे ।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं व्रतधारिणा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे नवमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निवेडं नवमे प्रोक्तं पंचमे वत्सरे शुभे ।
पूजनं पार्श्वनाथस्य स्मरणं भजनं कुरु ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतपंचमे वर्षे निवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(६)

एकान्नं च भोक्तव्यं वर्षे षष्ठे समागते ।
आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमे रविवासरे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे प्रथमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठे संवत्सरे जाते द्वितीये रविवासरे ।
एकान्नमेव भोक्तव्यमपरान्नं न सर्वथा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रततृतीयवर्षे द्वितीयैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यप्रमाणवर्षे हि तृतीये सूर्यवासरे ।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे तृतीयैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थे सूर्यवारे च वर्षे षष्ठे तथैव च ।
एकान्नभुक्तिः संभोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे चतुर्थैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्षे षष्ठे समायाते पंचमे रविवासरे ।
एकान्नमेव भुंजीत सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे पंचमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

एकान्नभुक्तिः संभोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः ।
षष्ठे वर्षे प्रयाते च षष्ठे मार्तण्डवासरे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे षष्ठैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठेष्ठे सम्प्रयाते च सप्तमे भानुवासरे ।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे सप्तमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति० ।

अष्टमे रविवारे च षष्ठे वर्षे सुखार्थिभिः ।
एकमन्नं हि भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रकाङ्क्षैः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे अष्टमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति० ।

षष्ठे संवत्सरे जाते नवमे सूर्यवासरे ।
एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता सूर्यव्रतप्रकाङ्क्षैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे नवमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति० ।

षष्ठे वर्षे प्रकर्तव्या नव चैकान्नभुक्तयः ।
आषाढमाससमारम्भ सूर्ये सूर्ये च वासरे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतषष्ठमे वर्षे एकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति० ।

(७)

आषाढमासे शुभशुक्लपक्षे मार्तण्डवारे खलु सप्तमाब्दे ।
निगोरसं भोजनमेकवारम् कर्तव्यमादित्य व्रताय भव्यैः ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत सप्तमवर्षे प्रथमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति० ।

सप्तमेऽष्टे समायाते द्वितीये रविवासरे ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं दधिदुग्धघृतादिकं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे द्वितीयनिगोर[illegible]भुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमे वत्सरे जाते तृतीये सूर्यवासरे ।
गोरसेन विना सर्वं भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमवर्षे तृतीयनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थे रविवारे च वर्षे सप्तमके तथा ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे चतुर्थनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमेऽब्दे समायाते पंचमे रविवासरे ।
दुग्धं दधि घृतं नैव भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रत सप्तमवर्षे पंचमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठे हि रविवारे च वर्षे सप्तमके ध्रुवं ।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सप्तमे वर्षे संप्राप्ते सप्तमे रविवासरे ।
गोरसं नैव भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे सप्तम निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति० ॥

अष्टमे रविवारे हि सप्तमे वत्सरे मुदा ।
दधिदुग्धघृतं त्याज्यं सूर्यव्रतविधायके ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे अष्टमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

संजाते सप्तमे वर्षे नवमे रविवासरे ।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे नवम निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्व० ।

सप्तमे वर्षमध्ये हि विना गोरसभोजनं ।
कुर्वंति जनास्तेषां सुखं स्यात सर्वमोक्षजं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतसप्तमवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(८)

अष्टमाब्दे समायाते रूक्षाहारस्तु कारयेत ।
आषाढशुक्लमासस्य प्रथमे रविवासरे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रताष्टमे वर्षे प्रथम रूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे हायने जाते द्वितीये रविवासरे ।
भोजनं एकवारं च घृततैलविना बुधैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे द्वितीय रूक्षाहार प्रोषध द्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते तृतीये रविवासरे ।
रूक्षाहारो हि कर्तव्यो सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वेष तृतीय रूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते चतुर्थे भानुवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे चतुर्थरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्वत्सरेऽष्टमे प्राप्ते पंचमे रविवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमे वर्षे पंचमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्षाष्टमे हि संजाते षष्ठे मार्तण्डवासरे ।
घृततैलं हि संत्याज्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे षष्ठमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमे सूर्यवारे च वसु संवत्सरे गते ।
रूक्षाहारं च कर्तव्यं प्रासुकैः व्रतधारिकैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे सप्तमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे हायने प्राप्ते रविवारेऽष्टमे पुनः ।
रूक्षाहारं हि कर्तव्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे अष्टमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमेऽष्टे समायाते नवमे रविवासरे ।
रूक्षाहारस्तु कर्तव्यः रविव्रतविशुद्धये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे नवमरूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे वर्षमध्ये च रूक्षाहारस्तु कारयेत् ।
घृततैलं च संत्याज्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रताष्टमे वर्षे रूक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(९)

आषाढ़मासे खलु शुक्लपक्षे मार्त्तण्डवारे नवमे हि वर्षे।
भुक्तिश्च कुर्यात्खलु चैकवारं एषा विधिः श्रीमुनिभिः प्रयुक्ता ॥१

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे प्रथमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमेऽब्दे समायाते द्वितीये सूर्यवासरे।
एकस्थानं च कर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे द्वितीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हायने नवमे जाते तृतीये रविवासरे।
एकस्थानं विधेयं च सूर्यव्रतविशुद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमे वर्षे तृतीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे वत्सरे प्राप्ते चतुर्थे सूर्यवासरे।
एकस्थानं प्रकर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे चतुर्थैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे वर्षे मध्ये च पंचमे रविवासरे।
तद्दिने युगपद्ग्राह्यं भोजनं व्रतशुद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमेवर्षे पंचमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे हायने प्राप्ते षष्ठे मार्तण्डवासरे।
—कस्थानं प्रकर्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे षष्ठैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवमे च वर्षे मासे दिने सूर्याभिधानके ।
सप्तमे युगपद्ग्राह्यं भोजनं व्रतधारिणा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रत नवमेवर्षे सप्तमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमे भानुवारे च नवमेष्टे प्रकारयेत् ।
एकस्थानं हि भो भव्याः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे अष्टमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवमे वत्सरे जाते नवमे सूर्यवासरे ।
युगपद् भोजनं ग्राह्यं सूर्यव्रतविधायकैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे नवमैकप्रोषधोद्योतनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमुना हि प्रकारेण कर्तव्यं सूर्यसद्व्रतम् ।
पूजनं पार्श्वनाथस्य नववर्षप्रमाणकम् ॥ १० ॥
जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैः दीपधूपकैः ।
फलार्घेण समभ्यर्च्य पूर्णव्रतं समाचरेत् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री सूर्यव्रतनवमे वर्षे एकस्थान प्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जाप्य मंत्र ।

ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतिसहिताय दुष्टग्रहशोकसर्वज्वररोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्यप्रभघोषाय नमः ।

उपरोक्त मंत्रका १०८ वार जाप करना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

त्रिभुवनपतिपूज्यं देवदेवेन्द्रवन्द्यं ।
जननमरणहारं पापसंतापवारं ॥
सकलसुखनिधानं सर्वदोषावसानं ।
फणिमणिसहितं त संस्तुवे पार्श्वनाथम् ॥ १ ॥

× × ×

अमरासुर नर सेवितचरणं, वन्दे पार्श्वजिनं नरशरणं ।
दूरीकृतनरपापाचरणं, संसृति संभवजनदुखहरणं ॥ १ ॥

क्रोध मान माया संवरणं, संसाराम्बुधि तारण तरणं ।
वारित जनम जरा भय मरणं, तर्जित दर्शन ज्ञानावरणं ॥२॥

कृत पंचेंद्रिय द्विप वशकरणं, दर्शनज्ञानं चारिताभरणं ।
येन सुविहितं सेतूद्धरणं, यत्र न स्यात जरापाचरणं ॥३॥

धर्माराम विवर्धनमेहं, नीलमणि प्रभु शोभित देहं ।
सिद्धिवधू संभावित नेहं, नागनरामर वन्दित देहं ॥४॥

धर्माधर्म प्रकाशन धीरं, मोहमहारिपु भंजन वीरं ।
दुःख दावानल शमन सुनीरं, दर्शित जनता भवजल तीरं ॥५॥

महीचन्द्र यतिराजैर्महितं, मेरुचन्द्र स्तुतिवाक्यैः सहितं ।
पापतिमिरनाशन रविभूरं, जयसागर वांछित सुख पूरं ॥६॥

घत्ता-इति वरजयमाला, ये पठंति त्रिशुद्ध्या ।
रविव्रत सुखकारं, कुर्वते ये नराश्च ॥
दिविजखगनरा वा ते लभंते नितान्तं ।
सकलसुखसमाजं मोक्षसौख्यास्पदं च ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय दुष्टग्रह शोकसर्वज्वररोगाकालमृत्यु विनाशनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतिं पुष्टिं च तुष्टिं च, कल्याणं कमलाकरं ।
पार्श्वनाथप्रसादेन, देयात् पद्मावती च मा ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति भट्टारक श्रीमहीचन्द्र शिष्य ब्रह्मश्री जयसागरविरचितं रविव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम् ।

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ षोडशकारणोद्यापनं ।

पीठिका ।

आदौ नमामि वृषभं जिनेन्द्रं, ततो गणिंद्रं श्रुतमंगपूर्वं ।
विद्याविभूषं व्रतिनां वरिष्ठं, श्रीभूषणं शारदचन्द्रकीर्ति ॥१॥

जिनसेनादयो देवा ये भवा मोक्षमार्गगाः ।
ते सर्वे मे शुभं दद्युः पूजा प्रारम्भ कर्मणि ॥ २ ॥
नत्वा जिनं श्रुतं चैव गुरुं चापि विशेषतः ।
वक्ष्ये बुद्ध्यानुसारेण व्रतं षोडशकारणं ॥ ३ ॥
पूजाकारकैः भव्यैः आदौ श्रीमज्जिनालये ।
गत्वा नत्वा गुरुं देवं कर्तव्या प्रार्थना परा ॥ ४ ॥
भो स्वामिन ! कर्तुमिच्छामि व्रतस्योद्यापनं महत् ।
तत्कथं क्रियते भव्यैः मोक्षाप्त्यै कर्महानये ॥ ५ ॥
गुरुस्ततोऽवदद्वाक्यं गम्भीरं गुणगर्भितं ।
उपकाराय भव्यानां पापघ्न मोक्षदायकं ॥ ६ ॥
वर्षषोडशपर्यन्तं कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ।
पूजाद्रव्यविधानैश्च ध्येयाः षोडशभावना ॥ ७ ॥
अभिषिच्यामृतैः सारैः पूजाद्रव्यैश्च पूजयेत् ।
गद्यपद्यनुतिस्तोत्रैर्जयमाला प्रकीर्तनैः ॥ ८ ॥
जाते षोडशमे वर्षे व्रतोद्यापनमाचरेत् ।
चतुर्विधमहासंघैः साक्षीकृत्य महोत्सवैः ॥ ९ ॥

---

१ पंचामृतैः ।

गीतनर्तमहावाद्यैश्चन्द्रोपकविराजितैः ।
छत्रचामरसंकीर्णैर्नानारंगविचित्रितैः ॥ १० ॥
सुशब्दार्थभरैस्तोत्रैः पंडितैश्च विशारदैः ।
पुष्पचन्दनकर्पूरैः केशरैश्चाक्षतैः फलैः ॥ ११ ॥
नाळिकेरलवंगादिसामग्री प्रथमं रचेत् ।
मंडलं विशदं कार्यं चतुष्कोणं स्फुरत्प्रभं ॥ १२ ॥
रम्यैर्मणिमयैश्चूर्णैः सुकोष्ठं चिंतितार्थदं ।
संख्यायं दिव्यरूपं च रसं वांण कळाधरैः× ॥१३॥
विधानं परमं कार्यं मंत्रोच्चारणपूजितैः ।
तांबूलैस्तिलकैर्वस्त्रैः कुर्यात्संघस्य चर्चनं ॥ १४ ॥
अनेकविधिना सारं तीर्थेशपदकारणं ।
व्रतं संपाद्यते भव्यैः प्रीणितं परमेश्वर ॥ १५ ॥

॥ इति पिठिका विधानं ॥

अथ पूजा ।

अनंतसौख्यामृतकूपरूपंजिनेन्द्रसेव्यं परमं पवित्रं ।
कर्मारिनाशाय हि वज्रतुल्यं संस्थापये षोडशकारणं सत् ॥
ॐ ह्रीं षोडशकारणानि अत्रावतर २ संवौषट् ॥
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ।

अमलक्षीरसमुद्रसंभव वारिपूरितधारया ।
कनककुंभसमाश्रिताद्भुत पापतापनिवारया ॥

× २९६ कोठा ।

नमामि षोडशभावनां भवनाशहेतु शिवाप्तये ॥
इंद्रचंद्रनरेन्द्रनागखगेन्द्रयतिपतिपूजितं ॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो जलं ॥ १ ॥

सरसकेशरमलयचंदनपरिमलाकुलषट्पदैः ।
भव भयातपभंजकैः शिवसौख्यदानविधायकैः ॥
नमामि षोडश० ॥ चन्दनं० ॥ २ ॥

विशदमौक्तिकमालशालि गगनतारकसदृशैः ।
कमलसम्भवकमलवासितखण्डवर्जिततंदुलैः ॥
नमामि षोडश० ॥ अक्षतान्० ॥ ३ ॥

भ्रमरगुँजतकमलकेतकीजातिचम्पकपुष्पकैः ।
कुंदपारलवंगपाटलगंधगंधितदिग्मुखैः ॥
नमामि षोडश० ॥ पुष्पम्० ॥ ४ ॥

विविधलड्डुकपरमखज्जकपायसाम्रधरोदनैः ।
पूपस्तूपघृतान्वितैर्वरशाकपानसमन्वितैः ॥
नमामि षोडश० ॥ नैवेद्यम ॥ ५ ॥

तिमिरसंचयनाशकारकदीप्रमणिमयभासुरैः ।
घृतवरैर्हि विकारवर्जितज्ञानदीपकदायकैः ॥
नमामि षोडश० ॥ दीपम० ॥ ६ ॥

नविनजलधरपटलमेचकधूम्रसुरभवासितैः ।
यक्षधूपसुदेवकाष्ठमनोज्ञअगुरुविमिश्रितैः ॥
नमामि षोडश० ॥ धूपम्० ॥ ७ ॥

फनसकोच सदा...दाडिमपवी।
बीजपूरपनिबांचर्मबमुखककुचमुकर्कटैः ॥
नमामि षोडश० ॥ फलं० ॥ ८ ॥
जलेन गंधेन शुभाक्षतेन पुष्पेण हव्येन सुदीपकेन।
फलेन धूपेन व्रतं सुखाय श्रीभूषणानां परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

सुगुणभण्डारं विगतविकारं संसारार्णव भयहरणं।
कलिमलनाशण सुपहपयासण, पंचमगइपय सुहकरणं ॥१॥
इह षोडशभावण परम तत्त, इह परभवगमण सहाय मत्त।
इह तित्थेसर पद दाण सार, इह तारह रवि संसार पार ॥२॥
इह भावणदो विजोग होइ, इह भावणदो सेवेसु लोय।
इह भावणदो विहडे कुकम्म, इह भावणदो यह होइ धम्म ॥३॥
इह भावण इंदर पदवी सहाय, इह भावणदो सीयरिसिय राय।
इह भावणदो होउ सफल जम्म, इह भावणदो सवि पुण्ण कम्म॥४
इह भावण जम्मजरा विणास, इह भावण सिवपव धरइ पास।
इह भावण कम्मकलंक दूर, इह भावण सुहसंपति पूर ॥ ५ ॥
इह भावण भवतारण सुणाव, इह भावणदो पद अमरगाव।
इह भावणदो कुलदोसनास, इह भावणदो सविवय पयास॥ ६ ॥
इह भावण तस थावर हरंति, इह भावण सुहसंपय करंति।
इह भावण मयण सु माणभंग, इह भावणदो तुणु कम्मसंग ॥७॥

घत्ता ।

सिरिभूषण कहियं, गुणगण सहियं, चंद्रकीर्ति ममपद कमलं ।
पविकम्म विमद्दं, पापविमुक्कं संपणाण भणियं विमलं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो महार्घ्यं ।

अथ प्रत्येक पूजा ।

अत्रैव द्विकोष्ठकमंडलं शुभं, येषां स्थितं पांडुरलोकमान्यं ।
सदक्षतैः पुष्पचयः क्षिपामि संस्थापये मोक्षसुखाय सारं ॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सम्यक्त्वमूलतो ज्ञेयं पंचविंशमलोज्झितं ।
सत्यशौचाद्योपेतं सर्वज्ञप्रतिपादितं ॥

ॐ ह्रीं अष्टनवतिसांगोपांगसहितदर्शनविशुद्धये जलं, चंदनं, अक्षतं, पुष्पं चरुं, दीपं, धूपं, फलं, अर्घं, निर्वपामीति स्वाहा ।

निःशंकितांगांकितमाद्यमर्घ्यं, मुनींद्रवंद्यं भवतापमुक्तं ।
गंधैः सुपुष्पाक्षतहव्यदीपैर्यजे सदा कर्मकलंकहीनं ॥

ॐ ह्रीं निःशंकितगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ १ ॥

सर्वकांक्षाविनिर्मुक्तं सर्वदोषविवर्जितं ।
निष्कांक्षाव्रतसंपन्नं पूजये तं शुभार्चनैः ॥२॥

ॐ ह्रीं निःकांक्षितगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ २ ॥

सुगंधे चापि दुर्गंधे सन्मुखं न पराङ्मुखं ।
विचिकित्साविनिर्मुक्तं पूजये तं शुभार्चनैः ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सागुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥३॥

संसारे कुत्सिते धर्मे व्रते शास्त्रे विशेषतः ।
मूढता यस्य नास्त्येव पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं निर्मूढत्वगुणसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ४ ॥
सर्वदा सर्वसंघेषु चोपगूहनमाचरेत् ।
मौनधारी व्रती धारी पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं उपगूहनगुणसंयुक्तदर्श-विशुद्धये जलादिकं ॥ ५ ॥
व्रतात्संचलितो धीरस्तस्य तं स्थापनं व्रते दृढः ।
यत्करोति मुनीशं हि पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं स्थितिकरणगुणयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ६ ॥
व्रतयुक्त विशेषेण वात्सल्यपरता मुनिः ।
विष्णुकुमारसदृशं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं वात्सल्यगुणयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ७ ॥
चतुरो यः कलायुक्तः प्रभावनागेषु तत्परः ।
धर्मप्रभावनारतो नित्यं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं प्रभावनांगगुणसंयुक्तदर्श-विशुद्धये जलादिकं ॥ ८ ॥
सूर्यचंद्रादिनां पूजा न करोति कदाचन ।
गंगासिंधुजलैर्दिव्यैः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं सूर्यादिदानमिथ्यात्वरहितदर्श-विशुद्धये जलादिकं ॥ ९ ॥
नवग्रहाणां दानेभ्यो विरतो मुनिसत्तमः ।
त्रिवर्णशुद्धो मोक्षार्थी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं नवग्रहदानरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ १० ॥
संक्रांतिसमये दानं मिथ्यादृष्टिप्रकल्पितं ।
तस्मात्सो रहितः साधुः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं संक्रांतिदानरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ११ ॥

नीचकर्म प्रहर्तारं संध्यावंदनं मुञ्चति ।
विश्वतत्त्वप्रकाशार्क पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गायत्रीमंत्रजाप्यरहिताय दर्शन० जलादिकं ॥१२॥
ध्यानाध्ययनहोमेषु कर्मकष्टाहुतिं क्षिपेत् ।
हिंसाहोमविनिर्मुक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं अग्निसत्कार रहित दर्शन० जलादिकं ॥ १३ ॥
करोति गृहपूजां न दुष्टवाक्यादिदोषतः ।
तत्कर्मरहितः साधुः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गृहपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥ १४ ॥
वपुपूजादिमिथ्यात्वाद्विगतो यो मुनीश्वरः ।
तत्त्वार्थागमचेता यः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं शरीरपूजारहितदर्शन० जलादिकं ॥ १५ ॥
गोमूत्रसेवनं धत्ते नैव गोपृच्छवन्दनं ।
तत्कर्मरहितो योगी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गोपुच्छमूत्रसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥ १६ ॥
अनंतभवसंतानं रत्नपाषाणसेवनं ।
तस्माद्यो विरतो योगी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं रत्नपाषाणसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥ १७ ॥
मुक्ता गजादिसेवातो धर्मध्यानेषु तत्परः ।
रागद्वेषविनिर्मुक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गजादिवाहनसेवारहितदर्शन० जलादिकं० ॥ १८ ॥
क्षमादयातपोयुक्तः पृथ्वीसेवा पराङ्मुखः ।
सावद्यरहितो धीरः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं भूमिसेवारहित दर्शन० जलादिकं ॥ १९ ॥

तरुसेवादिपापेभ्यो विरतो यतिपुंगवः ।
स विवेको विचारज्ञः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं वृक्षसेवा हि दर्शन० जलादिकं ॥ २० ॥
कुशास्त्रानतो शांतः कुशास्त्रपतिदूरगः ।
तत्त्वातत्त्वं विजानाति पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं कुशास्त्रसेवारहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ २१ ॥
अ युधानां महापूजावंदनाविरतो मुनिः ।
कलाविज्ञानपूर्णो यः पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं शस्त्र मा हितदर्शन० जलादिकं ॥ २२ ॥
गंगासिंधु दीस्नाने विरतो व्रतवल्लभः ।
गंगासिंधुजलातोयैः पूजयेत० ॥
ॐ ह्रीं गं दिस्नान हितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ २३ ॥
शिलापूजने योगी विरतो व्रतरक्षकः ।
मोक्षाभिलाषवान विद्वान पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं व लुकादिपूजा हितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ २४ ।
पर्वतादिषु स्थानेषु आरुह्य न पतंति यः ।
तत्पापाद्विरतो वाग्मी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गिरिपातरहितदर्शन० जलादिकं ॥ २५ ॥
अग्निपातादिपापेभ्यो विरतो धर्मतत्परः ॥
ध्यानाग्निकुंडसंपोषी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं अग्निपातरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ २६ ॥
व्रतहीनो दयाहीनो मिथ्यात्वमतपूरितः ।
तस्यसंगविनिर्मुक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं गुरुसेवारहितदर्शन० जलादिकं ॥ २७ ॥

अंकुशाग्रे शिरोछेदो मिथ्यात्वे प्रतिपादितः ।
तद्भव्यानां विनिर्मुक्तं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं अंकुशादिमस्तकछेदरहित... रहितदर्शन० ॥ २८ ॥
शास्त्रज्ञानधरो मूढो ज्ञानाहंकारगर्वितः ।
तद्भावरहितः ज्ञानी पूजये तं० ।
ॐ ह्रीं ज्ञानमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥ २९ ॥
अर्चामदविनाशाय स्वर्गो... विवर्जितं ।
स्वात्मतत्वविलीनं हि पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं पूजामदरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३० ॥
उच्चैस्तरकुले जन्म तस्याहंकारवर्जितः ।
धर्मानुष्ठानसंलीनः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं कुलमदरहितदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ३१ ॥
जातिमदातिगः शांतः सु जातो जातसुलक्षणः ।
दर्शनज्ञानसंपन्नः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं जातिमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३२ ॥
शरीरादौ बलं यस्य तेन गर्वेण पूरितः ।
तत्गर्वरहितः साधुः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं बलमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३३ ॥
रत्नहेमपदार्था ये संसारे लोभकारणं ।
तत्पापाद्रहितो दक्षः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं ऋद्धिमदरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३४ ॥
मासपक्षोपवासादीन् तपः कुर्वंति साधवः ।
तपो गर्व विनिर्मुक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं तपोमदरहित दर्शन० जलादिकं ॥ ३५ ॥

कामदेवसमं रूपं कामदं कामदायकं ।
कायक्लेशकृशीभूतः पूजये तं० ॥
ॐ [illegible] दर्शन० जलादिकं ॥ ३६ ॥

सप्तानां व्यसनानां हि द्यूतव्यसनमग्रिमम् ।
द्यूतव्यसनसंत्यक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ३७ ॥

मांसस्य दर्शने त्रासे भक्षणप्राणनिर्गमः ।
त्यक्तं मांसं सदा येन पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं मांसव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३८ ॥

मद्यपानं महापापं भयभीतो यतीश्वरः ।
तद्गन्धेऽपि मनो नास्ति पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं मद्यपानव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ३९ ॥

गणिकाव्यसनदूरशीलाभरणभूषितः ।
संयम स्त्रीसमाश्लिष्टः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं वेश्याव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ४० ॥

षट्काय रक्षणे दक्षः सर्वसत्त्वाभयप्रदः ।
पापाद्विरतो योगी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं पापर्द्धिव्यसनरहितदर्शन० जलादिकं ॥ ४१ ॥

शीलसन्नाहसंपन्नः परदारा पराङ्मुखः ।
ब्रह्मचारी त्रिशुद्ध्याय पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं परदारागमनविरतिदर्शन० जलादिकं० ॥ ४२ ॥

त्रसजीववधोत्पन्नं मधुजीवशताकुलं ।
तस्य त्यागस्ततो येन पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं मधुत्यागदर्शन० जलादिकं ॥ ४३ ॥

त्रसजीवशतैर्युक्त उदम्बरफलवर्ज्जनं ।
कृत जीवदयाद्यः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं उदम्बरफलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ४५ ॥
अनेकांगिसमाकीर्णं नीचयोग्यं कठुंबरं ।
तस्याहारविनिर्मुक्तं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं कठुंबरफलविरति दर्शन० जलादीकं ॥ ४६ ॥
न्यग्रोधवृक्षसंभूतं फलं जंतुविमिश्रितं ।
तत्फले यो विरक्ताक्षः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं वटफलविरति दर्शन० जलादिकं ॥ ४७ ॥
काकयोग्यं फलाहारं पिप्पलादिफलोज्झनं ।
कृतं येन दयाबुद्ध्या पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं पिप्फलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ४८ ॥
सर्वजीवदयाधारो निष्कषायो दिगम्बरः ।
पिप्पलीफलसंत्यागी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं पीप्फलीफलविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ४९ ॥
त्रसस्थावरपापेभ्यो विरक्तः सर्वदा मनः ।
तस्य चित्तं द्रवीभूतं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं हिंसाविरतिदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ५० ॥
मनसा वचसा चैव सत्यं वदति सर्वदा ।
भाषासमितिसम्पन्नः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं सत्यसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ५१ ॥
विस्मृतं पतितं नष्टं कदाचित्पथिकाजनैः ।
निर्लोभी न तु गृह्णाति पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं चौर्यविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ५२ ॥

ब्रह्मचर्यव्रते धीरो नवभेदपरायणः ।
तुर्ये व्रते सदासक्तः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्येषु दर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ५३ ॥

मनोवचनयोगेन अन्तर्बाह्यान् ग्रहान्
त्यक्त्वा सन्तोषसम्पन्नः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं परिग्रहविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ५४ ॥

पूर्वपश्चिमयोर्नूनं दक्षिणोत्तरागतेः ।
प्रमाणं योजनैर्यस्य पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं दिग्व्रतयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ५५ ॥

आग्नेयनैऋत्यकोणेषु व्रतं दधाति यो मुनिः ।
अहिंसाव्रतरक्षार्थी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं विदिग्व्रतसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ५६ ॥

शुककुक्कुरमार्जारकुठाराणि ह्यनर्थकान् ।
न पुष्णाति कदा साधुः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं अनर्थदण्डविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ५७ ॥

सामायिकव्रतासक्तं द्वात्रिंशद्दोषदूरगं
समताभावसम्पन्नं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं सामायिकसंयुक्तदर्शन० जलादिकं० ॥ ५८ ॥

भूताष्टमीषु पर्वेषु प्रोषधे लीनमानसं ।
सद्धर्मामृतसंतुष्टः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं प्रोषधोपवाससंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ५९ ॥

भोगोपभोगसंख्यानं यः करोति विशुद्धये ।
रत्नत्रयव्रताधारः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं भोगोपभोगविरतिदर्शन० जलादिकं ॥ ६० ॥

अतिथीनां यतीनां च करोत्यादरशुश्रूषां ।
सल्लेखनां करोत्येव पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं अतिथिसंविभागसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ६१ ॥
निर्विकल्पकसमस्तानां हि पापारम्भपराङ्मुखः ।
नैव स्पर्शं करोत्येव पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन०युक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥६२॥
करोति सर्वदा नूनं कायक्लेशतपो महत् ।
अनाहारेण पुण्यांग पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं कायक्लेशसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ६३ ॥
अनेन जायते दोषः पूर्वकर्मानुसारिणः ।
तद्दोषरहितः योगी पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं स्वाध्यायसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ६४ ॥
हस्तपादादिसंचालनवर्जितं काष्ठवत् मुनिः ।
कायोत्सर्गव्रतारूढः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं कायोत्सर्गसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ६५ ॥
पिण्डस्थध्यानयोगेन रूपस्थेन विशेषतः ।
करोति स्वात्मनो ध्यानं पूजये तं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानसंयुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ६६ ॥
त्रसस्थावरजीवेषु कृपाक्रांतमनो वचः ।
रागद्वेषमदाद्धीनः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं समताभावसंयुक्तदर्शनविशुद्धये जलादिकं ॥ ६७ ॥
भव्यसत्त्वहितोद्देशी दर्शनप्रतिमावरा ।
विस्तारयति यो भव्यः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं दर्शनप्रतिमायुक्तदर्शन० जलादिकं ॥ ६८ ॥

प्रथमे भारते क्षेत्रे जिनाः कर्मविनाशकाः ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं प्रथमजिनोद्भ दर्शन० जलादिकं ॥ ८५ ॥
द्वात्रिंशत् विदेहाश्च तेषु जाता जिनोत्तमाः ।
यस्य येषां परा भक्तिः पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रोद्भ दर्शन० जलादिकं ॥ ८६ ॥
येऽत्रसंजाता जिनेन्द्राः क्षेत्रे चैरावतावनौ ।
दर्शनं यस्य तेषां हि पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रोद्भव दर्शन० जलादिकं ॥ ८७ ॥
प्रथमे भारते क्षेत्रे कर्म नष्टा जिनोत्तमाः ।
मानसे दर्शनं येषां पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं धातकी खण्ड प्रथम भारतोद्भव जिनदर्शन० जलादिकं ॥८८
भारते द्वितीये क्षेत्रे ये सन्ति जिनपुंगवाः ।
यस्य तेषां हृदि ध्यानं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वितीय भारतोद्भव जिनदर्शन० जलादिकं ॥८९
धातक्यां च जिनान् सर्वान विदेहे पूर्वपश्चिमे ।
विभावयति सम्यक्त्वं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं धातकी विदेहे जिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥ ९० ॥
धातक्यैरावते क्षेत्रे प्रथमे जिनपुंगवान् ।
यो धारयति सम्यक्त्वं पूजयेतं शुभार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं धातक्यैरावत क्षेत्र प्रणीत जिनदर्शन० जलादिकं ॥ ९१ ॥
धातक्यैरावतक्षेत्रे द्वितीये जिनपुंगवान् ।
यो धारयति सम्यक्त्वं पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं धातक्यैरावतद्वितियजिनप्रणितदर्शन० जलादिकं ॥९२॥

भारते पुष्करे जाता पूर्वमेरुजिनाश्च ये ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करपूर्वभारतेजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥ ९३ ॥

पश्चिमे पुष्करे मेरुजिना द्वितीय भारते ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्विपे द्वितियभारतजिनप्रणितदर्शन० जलादिकं ॥९४॥

विदेहे पूर्वके देवा महाद्वीपे च पुष्करे ।
तेषां सद्दर्शनं यस्य पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्विपपूर्वविदेहजिनप्रणितदर्शन० जलादिकं ॥ ९५ ॥

पुष्करे पश्चिमे सारे विदेहे जिननायकाः ॥
यो बिभ्रति सुसम्यक्त्वं पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपे पश्चिमविदेहेजिनप्रणीतदर्शन जलादिकं ॥९६॥

ऐरावते शुभे क्षेत्रे पूर्वे च मेरुपर्वते ।
यो धारयति सम्यक्त्वं पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करैरावतपूर्वमेरुजिनप्रणीतदर्शन० जलादिकं ॥९७॥

पुष्करैरावते क्षेत्रे पश्चिमे मेरुपर्वते ।
यो धारयति सम्यक्त्वं पूजये तं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करैरावतेपश्चिममेरुजिनप्रणितदर्शन० जलादिकं ॥९८॥

सुनीरगंधैः कुसुमैश्च तंदुलैः हव्यैश्च गंधैर्वरमातुलिंगकैः ।
सद्दर्शनाख्यां परमां पवित्रां श्रीभूषणानां परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला।

त्रिभुवननिर्जित चरणं, भवभय हरणं सन्निपातिक दूरी करणं।
किल शिवसुख करणं भवजलतरणं, हतभय मरणं सुगुणमई॥
दंसण हीण भमइ संसारह, दंसण हीण लहइ अवतारह।
दंसण हीणय कुगइ पामइ, दंसण हीण भमइ संसारह॥
दंसण हीण लहइ अवतारह, दंसण हीण णर दुह गमइ।
दंसण हीण भमइ छट्ठ कालह, दंसण हीण पडइ जंजालह॥
दंसण हीण निगोद जावइ, दंसण हीण भमइ त्रसथावर।
दंसण हीण लहइ महादुःखह, दंसण हीण न पामइ सुखह॥
दंसण होई सुरपद दाता, दंसण सुगति रमणी सुह साता।
दंसण केसरपद धरइ, दंसण इन्द अमर सुह करई॥
दंसण कम्मकलंक विणासण, दंसण धम्मकरण्ड णिवासण।
दंसण भव सायर वर तारण, दंसण अविचल शिवपदकारण॥
भुविदंसण सारह कम्म णिवारण, धम्म रहण शिव सुहभण्डारह।
सिरिभूषण भव्व गतमदगव्व, चन्द्रकीर्ति सिद्धांत कहे॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये पूर्णार्घं।

अथ विनय भावना ।

सर्वज्ञदेवेन निनिर्मितायां भव्यात्मनां कर्मकलंकशांये ।
संस्थापये तां विनयादि जातां चतुर्विधां श्रीजिनधर्मरूपां ॥
ॐ ह्रीं विनयसंपन्नताअत्रवतर२ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

देवशास्त्रगुरूणां च द्विविधां च तपस्विनां ।
तथा च गुणवृद्धानां कर्तव्यो विनयो महान् ॥
ॐ ह्रीं चतुर्विधमार्गसंयुक्तविनयसंपन्नतायै जलादिकं ॥१॥
रोगसंक्रान्तवृद्धाना तथा विद्यावतां मतां ।
करोति विनयं यो हि पूजये तं सुभावनः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनचारित्रसंयुक्तनपस्विविनयसंपन्नतायै जलादिकं ॥२॥
समाचारं करोत्येव आर्यिकाणां विशेषतः ।
जैनधर्मप्रवृद्धयर्थं पूजये तं ।
ॐ ह्रीं आर्यिकासंज्ञा विनयसंपन्नतायै जलादिकं ॥ ३ ॥
अणुव्रताधिकारिणां श्रद्धाना ब्रह्मचारिणाम् ।
करोति विनयं यो वै पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसंयुक्तश्रावकसंज्ञाविनयसंपन्नतायै जलादिकं ॥४॥
श्रावकाचारशुद्धान श्राविकाणाम् विवेकवान ।
करोति विनय यो वै पूजये तं० ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसंयुक्तश्राविकासंज्ञाविनयसंपन्नतायै जलादिकं ॥५॥
सतोयगंधैः कुसुमैः शुभाक्षतैश्चरुप्रदीपैर्वरधूपसत्फलैः ।
सद्भावनां तां विनयादि जातां चर्चे सदा कर्मकलंकशांत्यै ॥
ॐ ह्रीं विनयसंपन्नतायै अर्घं० ॥

अथ जयमाला ।

सिरि जिण धम्मे गुणगण हम्मे, विणय विवेक समुच्चरिय ।
सिरि गायम देवे कुन्द मुणिंदे चउविह संघ समुच्चरियं ॥
विनयेण हवइ संसारकाज, विनयेण लहइ सुरपुरीय राजं ।
विनयेण हवई पंचणाण, विनयेण होसि शीवपुरीय वास ॥
विनयेण होइ सवि अरीयमित्र, विनयेण हवइ वसणिय चित्त ।
विनयेण देव पसण्ण होय, विनयेण मण आनन्द लोय ॥
विनयेण होइ धम्मादि काज, वि·येण पसरइ बहुय लज्ज ।
विनयेण हवइ जिन शुद्ध जाण, विनयेण णासइ जम्म मज्ज ॥
इय विण तिण गुणवंता मुनिजणसंना धम्मखाण मुणिगण कहीयं ।
तं भवसु तारण ताप निवा·ण सहीरि भूषयं सुख लहीयं ॥

ॐ ह्रीं विनयसंपन्नताये जयमाला महार्घं ।



अथ शीलभावना।

शीलाह्वयं कापगजेन्द्रमिदं कायेन वाचा मनसा च नित्यं।
संस्थापये मोक्षप्रदाय सारं त्रिकर्णशुद्ध्या जलचंदनाद्यैः ॥

ॐ ह्रीं शीलभावनाभावना २ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ. ठः ठः, अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टादशसहस्रैश्च भेदैर्भिन्नं महोत्तमं।
पालनीयं सदा सद्भिः समताशीलभावना ॥

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्ताष्टादशसहस्रभेदनतीचाराय जलादिकं ॥

सुररामाविकारघ्नं मदनोद्गारवर्जितं।
शीलरक्षामयापन्नं चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं देवस्त्रीशीलभावनायै जलादिकं ॥ १ ॥

मानुषीरमणीसक्तं शुद्धं शीलसमन्वितं।
विकारो नैव यस्यांगे चर्चये स्वष्टद्रव्यकैः ॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ २ ॥

मनसा वचसा वपुषा विकारो न तु सर्वथा।
पशुस्त्रीविरतिं साधुं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं पशुस्त्रीविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ३ ॥

काष्ठचित्रगता कांता विरत वन वासिनं।
मकरध्वजदर्पघ्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं चित्रकाष्ठविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ४ ॥

मनसा भोगविरतं भीवसंगनिराकृतं।

ब्रह्मचर्यसमापन्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं मनसा भोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ५ ॥

वचसा विरतं साधुं वक्रवाचानिराकृतं ।
धर्माधारं व्रतैर्युक्तं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं वचसा कृतभोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ६ ॥

वपुषा विरतं साधुं कांताकटाक्षवर्जितं ।
मेरुधैर्यं समापन्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं कायभोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ७ ॥

आत्मना विरते भोगे विरतं मुनिपुंगवं ।
शीलभावसमापन्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं आत्मकृतभोगविरतिशीलभावनायै जलादिकं ॥ ८ ॥

अन्यस्यात्मकृतस्यापि भोगकर्मनिषेधनं
शीलभावसमापन्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं आत्मना कारितभोगविरतिशील० जलादिकं ॥ ९ ॥

अन्यस्मिन् विहिते भोगे नानुमोदयति यतिः ।
शीलरत्नसमापन्नं चर्चये० ॥

ॐ ह्रीं भोगानुमोदनविरतिशील० जलादिकं ॥ १० ॥

सर्वार्थसिद्धिपदां लोके धर्मशर्मानुबंधिनीं
चर्चये जलपुष्पाद्यष्टद्रव्यैः श्रीज्ञानसागरं ॥

ॐ ह्रीं शीलभावनायै महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

कृतकर्मविणासं सुगुण पयासं सुरनरपतिसेवित चरणं ।
जरमरणविणासण कुगइ निगासण सारशीलमानव सरणं ॥
शील रयण बहुमूला सार, शीले तरइ संसार पार ।
शीलेन शुद्धणय सद विबोध, शीले हवइ इंदिय निरोध ॥
शीले नमइ सार्दुल पाय, शीले हवइ सुरणर सहाय ।
शीलेन विणासय भव्व दुःख, शीलेन कलह नर मोक्ष सुख ॥
शीलेन खग नित करइ सेव, शीलेन नमइ नित अखिलदेव ।
शीलेन विजय तियलोकमज्ज, शीलेन भरइ मनिगम्म कज्ज ॥
शीलेन भुवन तित्थयरकीर्ति, शीलेन लहइ णर अखय विति ।
शीलेन वन्हि जल रूव होय, शीलेन माणव बहु करइ कोय ॥
शीलेन होइ इह सफल जम्म, शीलेन नरइ मनिपुण कम्म ।
शीलेन मोक्ष पदवि णिवास, शीलेन होइ लीला विलास ॥

घत्ता ।

सुविसार निकंद मुनिवचदंद, कम्म निखंडण भम्म मयं ।
जग जय जय करणं शील सु सरणं संसारांबुधि सुभतरणं ॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचाराय पूर्णार्घं ।

॥ इति शीलभावना ॥

अथ अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना ।

प्रबोधं पापनाशं च चिदानंदं महोदयं ।

स्थापयामि शुचिभक्त्या ब्रह्मज्ञानं सुखास्पदं ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानभावनाऽवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
अत्र मम संनिहितो भव भव वषट् ॥

द्वादशांगं सुसिद्धांतं चतुर्विधसमुद्भवं ।

पठ्यं पाठयते नित्यं ज्ञानोपयोगभावना ॥

ॐ ह्रीं द्वाचत्वारिंशमांगोपांगयुक्ताभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय जलं० ॥

प्रथमानुयोगवेदांगं भेदं जानाति यो मुनिः ।

जलचंदनपुष्पौघैः पूजये त मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १ ॥

करणानुयोगनामानं वेदं यो वेत्ति संयमी ॥ जलचंदन० ॥

ॐ ह्रीं करणानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २ ॥

चरणानुयोगसद्वेदं भेदाभेदेन वेत्ति यः । जल० ॥

ॐ ह्रीं चरणानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं० ॥ ३ ॥

द्रव्यानुयोगवेदं हि सदा यो वेत्ति तत्वतः । जल० ॥

ॐ ह्रीं द्रव्यानुयोगवेदभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ४ ॥

आचारांगमहाज्ञानं यो वेत्ति मुनिपुंगवः ।

जलचन्दनपुष्पौघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं आचारांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ५ ॥

सारं सूत्रकृतांगं यः प्रकाशयति संयमी ॥ जल० ॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ६ ॥

सुस्थानांगं परं पुण्यं भेदभावेन यः स्मरेत् । जल० ॥

ॐ ह्रीं स्थानांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ७ ॥

समवायांगमहत् ज्ञानं यो वेत्ति मुनिसत्तमः। जल० ॥

ॐ ह्रीं समवायांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ८ ॥

वादांगं वेत्ति यो साधुः सर्वसाधनाशकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं विवादांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ९ ॥

ज्ञातृकथांगज्ञातारं धीरवीरमहोदयं । जल० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं० ॥ १० ॥

श्रावकाचारविस्तारदेशकं भव्यबोधकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं श्रावकाचारभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ११ ॥

अन्तःकृद्दशधर्मांगं भेदाभेदविदांवरं । जल० ॥

ॐ ह्रीं अन्तकृतदशांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १२ ॥

अनुत्तरोपपादांग विस्तारं वेत्ति यो मुनिः। जल० ॥

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १३ ॥

विपाकसूत्रांगं सारं विपाककर्मसूचकं। जल० ॥

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १४ ॥

शब्दापशब्दवेत्तारं प्रश्नव्याकरणस्य यः। जल० ॥

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १५ ॥

दृष्टिवादं दयायुक्तं सर्वज्ञवदनोद्भवं । जल० ॥

ॐ ह्रीं दृष्टिवादभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १६ ॥

चंद्रप्रज्ञप्तिज्ञातारं भव्यसचप्रबोधकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १७ ॥

सूर्यप्रज्ञप्तिवेत्तारं भेदाभेदप्रकाशकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं सूर्यप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १८ ॥

द्वीपसागरभेदज्ञं गणनामानकारकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं द्वीपसागरभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १९ ॥

द्वीपपर्वतनद्यादिवेदकं शास्त्रदीपकं । जल० ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जलादीकं ॥ २० ॥

व्याख्याप्रज्ञप्तिवेत्तारं भव्यजीवहितावहं । जल० ॥

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २१ ॥

सूत्रार्थभेदज्ञातारं सर्वजीवदयापरं । जल० ॥

ॐ ह्रीं सूत्रभेदभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २२ ॥

पूर्वगतविचारज्ञं पवित्रं पापभंजकं ।

जलचन्दनपुष्पौघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं पूर्वगतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २३ ॥

नीरागतमहाविद्यां यो वेत्ति भवतारकः । जल० ॥

ॐ ह्रीं नीरागतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २४ ॥

स्थलगामि महाविद्यां प्राप्तये च मुनीश्वरं । जल० ॥

ॐ ह्रीं स्थलगतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २५ ॥

मायागतपराविद्यां तां वेत्ति यो मुनीश्वरः । जल० ॥

ॐ ह्रीं मायागतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २६ ॥

रूपप्राप्तमहाविद्या बहुरूपप्रकाशिकां । जल० ॥

ॐ ह्रीं रूपगतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २७ ॥

आकाशगमने साधुं व्योमविद्याविशारदं । जल० ॥

ॐ ह्रीं आकाशगतभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २८ ॥

उत्पादपूर्वांगशुद्धं यो वेत्ति यतिनायकः । जल० ॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २९ ॥

अग्रायणीयपूर्वे हि गंभीरं धीरमानसं । जल० ॥

ॐ ह्रीं अग्रायणिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३० ॥

वीर्यानुवादं पूर्वं च समर्थः यो यतीश्वरः ॥ जल० ॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३१ ॥

अस्तिनास्तिप्रवादांगं यो वेत्ति धर्मनायकः ।

जलचंदनपुष्पोघैः पूजये तं मुनीश्वरं ॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३२ ॥

ज्ञानप्रवादज्ञातारं संघबोधनतत्परं । जल० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३३ ॥

सत्यप्रवादपूर्वांगं तस्य ध्याने विचक्षणं । जल० ॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३४ ॥

आत्मप्रवादपूर्वांगं यो वेत्ति मुनिसत्तमः । जल० ॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वांगभावना० जलादिकं ॥ ३५ ॥

कर्मप्रवादपूर्वांगं यो जानाति गुणाग्रणी । जल० ॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादभावनाप्राप्त० जलादिकं ॥ ३६ ॥

प्रत्याख्यानमहापूर्वं यो श्रुतिशास्त्रपारगः । जल० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वांगभावना० जलादिकं ॥ ३७ ॥

विद्यानुवादपूर्वांगं येनांगीकृतमद्भुतं । जल० ॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वांगभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥३८॥

कल्याणपूर्वनाम्ना हि ज्ञातं येन मुनीशिना । जल० ॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वांगभावना० जलादिक ॥ ३९ ॥

प्राणानुवादपूर्वांगं धर्मध्यानविशारदं । जल० ॥

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वांगभावना० जलादिकं ॥ ४० ॥

विशालपूर्वसंयुक्तं विदग्धं बोधपारगं । जल० ॥

ॐ ह्रीं विशालपूर्वभावनाप्राप्त० जलादिकं ॥ ४१ ॥

लोकविन्दुश्चपूर्वांगे धातारं धर्मदेशकं । जल० ॥

ॐ ह्रीं लोकविन्दुतापूर्वभावना० जलादिकं० ॥ ४२ ॥

ज्ञानं नराणां सुखदं प्रमाणं तत् साधुनां सौख्यसहायभूतं ।
संपूजये सज्जलचन्दनौघैः कर्मक्षयायापकबोधकाय ॥

ॐ ह्रीं अभिक्ष्णज्ञानोपयोगभावना० महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

जिनवरमुखजातं जगविख्यातं, कुमइभाव दूरीकरणं ।
गणधरवरगणियं मुनिवर भणियं, सकललोय पावण सरणं ॥
णाण भावण भवभय भंजन, णाण तिलोय भविक मनरंजन ।
णाण जरामरणादिक वारण, णाण कषाय कलंक निवारण ॥
णाण मट मद माण णिकंदण, णाण भवनतप पाप निकंदन ।
णाण भावणा शिवगरु दाता, णाण फले तिहुयण वरसाता ॥
णाण जिणंद वदणदो जानं, अंगु उपांग वेद विख्यातं ।
णाण रिसिह णाण उवम्सं, णाण दाण दि जूइ अविछेणं ॥
णाण सदा मद अठ विहंडण, णाण वस इंदिय परिखंडण ।
णाण अपार संसार सुतारण, णाण सदा कल्लाणह कारण ॥

घत्ता ।

शिव संपयकारण भवजलतारण कम्म निवारण णाणवरं ।
सिरिभूषण महियं बहुगुण सहियं बंभणाण भणियं परमं ॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाय पूर्णार्घं ॥

अथ संवेगभावना ।

संसारसारसं त्यक्तं दुःखराशिक्षयंकरं ।
स्थापयामि विशुद्धयाहं आह्वानन तत्पूर्वकं ॥

ॐ ह्रीं वैराग्यभावनात्रावतर२ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

पुत्रमित्रगृहारम्भदारेभ्यो निवृतं मनः ।
सा विरक्तिर्बुधैः ज्ञेया नरस्य बुद्धिदायिनी ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशसांगोपांगयुक्तसंवेगनाय जलादिकं ॥

सप्तलक्षधराकायं कदापि न विराधति ।
वैराग्यभावसम्पन्नं चर्चये जलचन्दनैः ॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायोद्भववैराग्यभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥१॥

सप्तलक्षकुयोनिस्थजलकायनिरस्तधिः । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं जलकायोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ २ ॥

तेयुकायोद्भवं दुःखं सप्तलक्षकुयोनिषु । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं तेयुकायोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ३ ॥

वायुकाये महादुःखे पूर्वसंख्ये कुलक्षणे । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं वायुकायोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ४ ॥

दशलक्षकुयोनौ च छेदे भेदे परे तरौ । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं तरूकायोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ५ ॥

निगोददुःखसंत्रस्तं नित्यनामभयप्रदं ।
वैराग्यभावसंपन्नं चर्चये जलचंदनैः ॥

ॐ ह्रीं नित्यनिगोद्भववैराग्यभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ६ ॥

१—सप्तलक्ष वायुकाय ।

समलक्षपरे भेदे स्वेतरे दुःखदे खले । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं इतरनिगोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ७ ॥

द्वेन्द्रिया बहवो जीवाः कीटकृमिमहीलताः । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं द्वेन्द्रियोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ८ ॥

त्रींद्रियो बहवो जीवा मत्कोटकपिपीलिका । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं त्रींद्रीयोद्भववैराग्यभावना० जलादिकं ॥ ९ ॥

मक्षिकाश्च पतंगादि द्विरेफाश्चतुरिंद्रिया । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं चतुरिंद्रियोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ १० ॥

पंचाक्षा मनुजा लक्षचतुर्दशप्रमेषु च । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं पंचेंद्रियोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ ११ ॥

चतुर्लक्षामरे दुःखे देवयोनौ परान्मुखं । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं देवगतिदुःखोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ १२ ॥

शीतोष्णवदनाजातदुःखानि संति नारके । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं नरकगतिदुःखोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ १३ ॥

तिर्यंचजातिभेदेषु चतुर्लक्षेषु य दुःखं । वैराग्य० ॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिदुःखोद्भववैराग्य० जलादिकं ॥ १४ ॥

चतुराशीतिलक्षेषु दुःखं जातं भवे भवे ।
तं दुःखहानयेऽस्माभिः पूजितं जलचंदनैः ॥

ॐ ह्रीं वैराग्यभावनाप्राप्तमुनये महार्घं० ॥

अथ जयमाला ।

सिरि तित्थेसर भव्वदिणेसर रिसहेसर जिण प्रगट कियं ।
वर बाहुबली भरतेसर सुंदर रिसहसेण मण शुद्धलियं ॥
वैरागेण सफल होई जम्म वैरागेण हवइ पुणकम्म ।
वैरागेण तरइ स्रुति सेत वैराग्य भव दुह छंदण मित्त ॥
वैराग्य मोह माया हरंत, वैराग्य अणुव्रय सुह धरंत ।
वैरागेण उपजई सिद्धि, वैरागेण लहई शिव रिद्धि ॥
वैरागेण णमइ णर पाय, वैरागेण कुपाप पलाय ।
वैरागेण सकल होइ सिद्धि, वैरागेण लहइ शिव रिद्धि ॥
वैरागेण लहइ सुख खाण, शुद्ध वैराग्य दिजइ माण ।
वैराग्ये भव सफल करज्जइ, पुण रवि आवागमण न कीजइ ॥

घत्ता ।

वैराग्यमुणिंदह दुःखनिकंदह भवभयफंदह भयहरणं ।
णिखिलागमनायक शिवपददायक भव्यजनस्स सदा सरणं ॥
ॐ ह्रीं संवेगभावनायै पूर्णार्घं० ॥

अथ शक्तित्याग भावना ।

चतुर्विधजिनेन्द्रस्योद्भूतां पापमलापहां ।
स्वर्गमोक्षवशीभूतां स्थापयामि यथागमं ॥

ॐ ह्रीं दानभावनात्रावतर२ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

भोगभूमिभवं सौख्यं या ददाति सुभावना ।
तदोपदेशनं साधुं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥

ॐ ह्रीं आहारदानभावनोपदेशकायमुनये जलादिकं ॥ १ ॥

श्री जिनेन्द्रमुखोत्पन्नं ज्ञानं यो मुनि भाषते ।
तस्य भावनया रक्तं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानदानभावनारतमुनये जलादिकं ॥ २ ॥

रोगशांतिकरं शुद्धं भेषजं यो ददाति वै । तस्य० ॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धियुक्तमुनये जलादिकं ॥ ३ ॥

स्थावरजंगमजीवेषु दयादानं ददाति यः ।
करुणामृतसंतृप्तं यजे पुष्पवराक्षतैः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अभयदानभावनारतमुनये जलादिकं ॥ ४ ॥

दानेन ज्ञानं च यशस्त्रिलोके, दानेन सौख्यं भुवनोद्भवं च ।
दानेन नाभेय जिनोत्तमोऽभू, त्तस्माद्यजे दानमनल्पपुण्यैः ॥

ॐ ह्रीं दानभावनायै महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

सिरि जिणवर कहियं पाटविरहियं चतुविह दाणमनंत फलं ।
गणधर विछरीयं बहुगुणभरियं चंद्रभासदो अतिविमलं ॥
दाणेन जीव आरज होय, दाणेन न वेर मंडेन कोय ।
दाणेन सुरेंदह भोग सार, दाणेन लहइ संसारं पार ॥
दाणेन णरंदह करइ सेव, दाणेण होइ पसण देव ।
दाणेन रोग णवि अंग होय, दाणेण पसण भुवण लोय ॥
दाणेन भोग धरासु सुख, दाणेन वहई परम सुख ।
दाणेन सु वंतरणमइ पाय, दाणेन सुवर्णय होय काय ॥
दाणेन अट्ठ भोगाधि सार, दाणेन पंच विमाणकार ।
दाणेन होय गृहकणध धार, दाणेण रयण चउदसे सु सार ॥

घत्ता ।

रिसिसर कहिवा तिहुयणमहिया दाण भावणा भय हरणी ।
सिरिभूषण भासि गुणपयासि भणण भणाण भवजलतरणी ।

ॐ ह्रीं दानभावनाय महार्घं० ॥

अथ शक्ति स्तप।

कर्मारिभेदने वज्रं किल्विषमेघमारुतं।
इच्छितार्थप्रदं शुद्धं स्थापये तत् तपोवरं॥

ॐ ह्रीं तपोभावनात्रवतर २ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्॥

दिनैकांतरे शुद्धं वा आहारं भुनक्ति च।
एकांतरे युतं साधुमष्टद्रव्यैः समर्चये॥

ॐ ह्रीं एकांतरतपसायुक्तमुनये जलादिकं॥ १॥

द्विदिनांतरयुक्तेन तपसा यो मुनीश्वरः।
द्विदिनांतरसंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये॥

ॐ ह्रीं द्विदिनांतरतपसायुक्तमुनये जलादिकं॥ २॥

अष्टाह्नंतरं यो वै भुनक्त्याहारपात्रकं।
अष्टान्हांतरसंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये॥

ॐ ह्रीं अष्टपवासतपसायुक्तमुनये जलादिकं॥ ३॥

पक्षोपवाससंयुक्ते तपसा यो मुनीश्वरः।
पक्षोपवाससंयुक्तमष्टद्रव्यैः समर्चये॥

ॐ ह्रीं पक्षोपवासतपसायुक्तमुनये जलादिकं॥ ४॥

प्रतिमासं मुनींद्रो यः पारणं कुरुते वरं।
मासोपवाससंयुक्तमष्ट०॥

ॐ ह्रीं मासोपवासतपसायुक्त मुनये जलादिकं॥ ५॥

षण्मासे पारणं यो व करोति कर्महानये।
षण्मासे तपसायुक्तमष्ट०॥

ॐ ह्रीं षण्मासतपसायुक्तमुनये जलादिकं०॥ ६॥

पोपवाससंयुक्तो यो भक्तियतीश्वरः ।
वर्षोपवाससंयुक्तमष्टद्रव्यै० ॥
ॐ ह्रीं वर्षोपवासतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ ७ ॥
दु:खहानिकरं पुंसां तपो वृद्धि महाबलः ।
स्वाहानि तपसा युक्तमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं दुःखहरणतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ ८ ॥
सदा यो लभ्यते सारं श्रुतज्ञानाभिधस्तपः ।
तस्य भावनया युक्तमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानतपोभावना० जलादिकं ॥ ९ ॥
स्वाध्यानतपे यो वै व्रतानाचरते खलु ।
द्वि॰द्वंद्वतपो युक्तमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं द्व द्वन्द्वतपोभावन युक्तमुनये जलादिकं ॥ १० ॥
ग्रा॰ ॰ ॰ दनपोनाम कुरुते यो जितेन्द्रियः ।
ए॰ ग्रा ॰तपो युक्तमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं ए॰ग्रा॰ पोभा॰न युक्तमुनये जलादिकं ॥ ११ ॥
मा॰मे चिंतनं यो ॰ करोति तपसोद्भवं ।
मनः चिंतनसंयुक्तमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं म चिंतिनतपमायुक्त ॰ये जलादिकं ॥ १२ ॥
त्रिशुद्धय व्र॰संयु॰ ॰तोभद्रनामनि ।
गुणगणना॰युक्त॰ ॰ ॥
ॐ ह्रीं ॰वतो॰द्रत ॰ युक्त ॰ जलादिकं ॥ १३ ॥
सातकुंभाभ्यानय तपसि सर्वदोषघी ।
मनो॰ ॰ायसंयुक्तमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं सातकुंभतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ १४ ॥

सिंहविक्रीडितनामतपसा परिमंडितं ।
कर्माणि खलु नश्यन्ति अष्ट० ॥

ॐ ह्रीं सिंहविक्रमतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ १५ ॥

वज्रमध्याभिधानेऽपि तपसि संस्थितो मुनिः ।
कर्मारिभेदने वज्रमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं वज्रमध्यतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ १६ ॥

तपो मेरुजमध्याख्यं यः करोति मुनीश्वरः ।
तस्यभावनया युक्तमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं मेरुजमध्यतपसा० जलादिकं ॥ १७ ॥

डल्लिनोलीनतपसि संस्थितो यो मुनिसत्तमः ।
कारिकाष्टाभिसादृश्यमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं डल्लिनोलीनतपसायुक्त० जलादिकं ॥ १८ ॥

मृदंगमध्यतपसा संयुक्तं धर्मदेशकं ।
कर्मसन्तानहंतारिमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं मृदंगमध्यतपस युक्तमुनये जलादिकं ॥ १९ ॥

धर्मचक्रव्रतं सारं करोति धर्मसिद्धये ।
अनाकस्यं सुरैः पूज्यमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रतपसायुक्त० जलादिकं० ॥ २० ॥

रौद्रोत्तर वसंताख्यतपो यः कुरुते यमी ।
पापारिकुलहंतारमष्ट० ॥

ॐ ह्रीं रौद्रोत्तरवसंततपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ २१ ॥

यो मुनिः कुरुते नित्यमवमौदर्यतपो महत् ।
पंचेंद्रियमदातीतमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं अवमोदर्यतपसायुक्तमुनये जलादिकं ॥ २२ ॥

करोति व्रतशुद्ध्यर्थं रसत्यागं तपो महत् ।
धर्मध्यानरतं साधुमष्टद्रव्यैः समर्चये ॥
ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपसा युक्त० जलादिकं ॥ २३ ॥

वस्तुसंख्या तपो रम्यं करोति यतिनायकः ।
कषायभटतामैरमष्ट० ॥
ॐ ह्रीं वस्तुसंख्यातपस युक्त० जलादिकं ॥ २४ ॥

कर्मक्षयं संकुरुते प्रशस्यं ह्यनेकसौख्यालयदानदक्षं ।
जलादिद्रव्यैर्वसुभिः सदा त संपूजयामि मुनिं ज्ञानवार्द्धि ॥
ॐ ह्रीं तपोभावनायै महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

तव धम्म विचारह गुण भण्डारह, सह सुखकारह कम्महरं
सिसि हेसर कहियं कम्म विदाहियं, तिहुयण महियं धम्म परं ॥

शुद्धतवेण सुजाण भण्डारह, शुद्धतवेण सुजाण विचारह ।
शुद्धतवेण कषाय निणासह, शुद्धतवेण सकल सद्भावह ॥

शुद्धतवेण अमरपद पावइ, शुद्धतवेण सकल चय मारह ।
शुद्धतवेण तिलोयह सिद्ध, शुद्धतवेण जिनंदह रिद्धि ॥

शुद्धतवेण सुदेव सहाय, शुद्धतवेण णमइ अरि पाय ।
शुद्धतवेण कुयोनि छिज्जइ, अहनिशि शुद्ध तवो इम किज्जइ ॥

कम्मकलंक जलंजलि दिज्जइ, शुद्धतवेण परम पद लिज्जइ।
शुद्धतवेण मयमद खण्डण, शुद्धतवेण परम पद मण्डण॥

घत्ता।

बारह तपमारह कम्म निवारणह मासह सुह संपयकरण।
सिरिभूषण कहियो तिहुयण महियो बंभणाण भवभयहरणो॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागतपसे पूर्णार्घं।

अथ साधु समाधि भावना।

श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्नं शिवशर्मविधायनीं।
स्थापयामि सदा भक्त्या आह्वाननविधायनैः॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधि अत्रावतर२ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्॥

कुष्ठोदरव्यथाशूलैः पीडिता ये मुनीश्वराः।
यः करोति समाधानं यजे तं मुनिनायकं॥
ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं॥ १॥

दुष्टोपसर्गसंप्राप्तं वधबंधादिताडने।
यो निवारयते साधोः यजे तं मुनिनायकं॥
ॐ ह्रीं उपसर्गनिवारकभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं॥ २॥

मनो दुःखं गते यो वै शुश्रूषाभेषजादिभिः
भावेन कुरुते नित्यं यजे तं०॥
ॐ ह्रीं दुःखविनाशभावना० जलादिकं॥ ३॥

किंचिद्दोषसमायाते निर्मले ते सुशासने ।
तन्निवारयते यो हि यजे तं० ॥
ॐ ह्रीं व्रतरक्षणसाधुसमाधिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ४ ॥

सर्वाणि दुःखानि क्षयं व्रजंति सुखानि सर्वाणि भवंति नित्यं ।
यस्याः प्रसादाच्छिवसौख्यमुख्यं यजे जलादिर्मुनिज्ञानवार्द्धिं ॥
ॐ ह्रीं साधुसमाधये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

भवजलतारण शिवसुखकारण साधुसमाधि सुपूरणवरो ।
सविकम्म निवारण धम्म विधारण परमपरा पर सुखःकरो ॥
साधुसमाधि मुणिंदह किज्जइ, साधुसमाधि महाफल लिज्जइ ।
साधुसमाधि सुधम्म सहाय, साधुसमाधि फले सुरराय ॥
साधु०कुरोग निवारण, साधु० अचलपद कारण ।
साधु० महा सुखकारी, साधु० भवोदधि तारी ॥
साधु० दया गुण मंडइ, साधु० महामद छंडइ ।
साधु० विणय संपज्जइ, साधु०करइ दुह वज्जइ ॥
साधु०सुसुह बहुभासिय, साधु० निखिलगुण रासिय ।
साधु०सदा जिण कहिया, साधु०महामुनि महिया ॥

घत्ता ।

सिरिजिण कहिया तिहुयण महिया साहुसमाहि महा फलदा ।
मुणिधम्म विजुत्ता कम्म विखुत्ता बंभणाण भासिय वरदा ॥
ॐ ह्रीं साधुसमाधये पूर्णार्घं० ।

अथ वैयाव्रत भावना ।

धर्मध्यानप्रदां साध्वीं पापाश्रवनिरोधनीं ।
स्थापयामि जिनोदिष्टां वैयावृत्य सुभावनां ॥

ॐ ह्रीं वैयाव्रतभावनात्रावतर२ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ॥

कासादिकषड्रिदेन तैलेनातिसुमर्दनं ।
वैयावृत्तिं करोत्येव यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं तैलमर्दनवैयावृतिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ १ ॥

उष्णेन वारिणा साधोः करोति तनुमार्जनं ।
सदा ज्ञानप्रकाशाय यस्तं चर्चे जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं जलसेवावैयावृतिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ २ ॥

तनुमार्जनपादाब्जक्षालनं पीठिमर्दनं ।
वैयावृत्तिं करोत्येव यस्तं० ॥

ॐ ह्रीं हस्तोपचारवैयावृतिभावनाप्राप्तमुनये जलादिकं ॥ ३ ॥

शैयासनासने साधोः विनयान्वितमानसः । वैयावृत्तिं० ॥

ॐ ह्रीं शयनासनवैयावृतिभावना० जलादिकं ॥ ४ ॥

यशोवुद्धिर्धनं लोके महत्वं स्यान्महातले ।
जलचन्दनपुष्पौघैर्ददाम्यर्घं महोत्तमं ॥

ॐ ह्रीं वैयावृतिकारणभावनायै महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

आइ जिनेसर पदमावि कहिया, वैयाविच्चि तिलोय महिया ।
अमलगुण कलि गणगह भरिया. बाहुबलि मन चक्रम करिया ॥
वैयाविच्चि मुणिसर किज्जइ, वैयाविच्चि महाय बलिज्जइ ।
वैयाविच्चि परम जस पावइ, वैयाविच्चि णिरोस मुवज्जइ ॥
वैयाविच्चि दलिद्द णिवारइ, वैयाविच्चि भवोदधि तारइ ।
वैयाविच्चि अमरपद विज्जइ, वैयाविच्चि सदा फल लिज्जइ ॥
वैयांविच्चि करइ जन सेवा, वैयाविच्चि पसण जु देवा
वैयाविच्चि कुकम्म विणासइ, वैयाविच्चि सुभव पयासइ ॥
वैयाविच्चि गणेंदसु कहिया, वैयाविच्चि मुणिद सु महिया ।
वैयाविच्चि महा तव सिद्धि, वैयाविच्चि अचलपद रिद्धि ॥

घत्ता ।

दिइ वैयाविच्चि गुण संपत्ति, सिरिभूषण मुणिणा कहिया ।
जिनवर मुख जाता भव भय त्राता, बंभणाण मुणिणा कहिया ॥

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिकारणाय पूर्णार्घं ॥

अथ अर्हद्भक्ति भावना ।

अर्हतां परमां भक्तिं संसारांबुधितारिणां ।
स्थापयामि महाभक्त्या मिथ्यांधकारनाशिनां ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनात्रावतर२ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः, अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ।

दर्शनं जिनदेवस्य स्तवीति च करोति यः ।
स्तोत्रेण परया भक्त्या तं यजे मोक्षमार्गगं ॥

ॐ ह्रीं दर्शनस्तोत्रेणार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ १ ॥

आह्वाननं जिनेन्द्रस्य सु पूजासमये सदा ।
यः करोति सदाचारं यजे तं० ॥

ॐ ह्रीं आह्वाननार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ २ ॥

स्थापनं श्रीजिनेन्द्रस्य पूजायां शुद्धभावतः ।
यः करोति सदाचारं यजे तं० ॥

ॐ ह्रीं स्थापनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ३ ॥

सन्निधिकरणसारं जिनेन्द्रस्य जिनागमत । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं सन्निधिकरणार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ४ ॥

अष्टधा श्रीजिनेन्द्रस्य पूजनं परमोत्सवैः । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं पूजनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ५ ॥

स्नपनं सर्वदोषघ्नं घृतदुग्धदधीक्षुभिः । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं पंचामृतस्नानार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ६ ॥

निरन्तरं सुकंठेन सर्वज्ञकीर्तनस्तवं । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं महागीतेनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ७ ॥

निर्घोषवाद्यशब्देन जिनभक्तिं निरन्तरं । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं वाद्येनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ८ ॥

नर्तनं श्रीजिनेन्द्राग्रे हावभावसमन्वितं । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं नर्तनेनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ९ ॥

गंगाकल्लोलसादृश्यैश्चामरैर्भक्तिमात्मवित । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं चामरेणार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ १० ॥

छत्रत्रयेण सद्भक्तिं जिनेन्द्रस्य सुभावतः । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयेणार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ ११ ॥

पंक्ति श्रीजिनराजस्य सिंहपीठेन शोभिना । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं सिंहासनेनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ १२ ॥

चन्द्रोपकेन सद्भक्ति चीनदेशोद्भवैः नवैः । यः करोति० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रोपकेनार्हद्भक्तये जलादिकं ॥ १३ ॥

संसारपीठोधि तरंति भव्या यस्या प्रमादाच्छिवसौख्यमेति ।
तां नीरगन्धैः कुसुमैः शुभाक्षतैश्चरुप्रदीपैरहमर्चये फलैः ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

सिरि जिणवरभत्ति सुह संपत्ति संसारांबुधितरणी ।
जउपाव विणासणि सुगति णिवासिणि बहु सुहरासिणि भयहरणी
जिणवर भक्ति करइ सविभोग, जिणवर भक्ति हरइ सवि रोग ।
जिणवर भक्ति करइ सविकाज, जिणवर० जहइ शिवराज ॥
जिणवर० हरइ कुच्छ दुःख, जिणवर० हरइ महा सुख ।
जिणवर० विणासइ कम्म, जिणवर० करइ जस धम्म ॥
जिणवर० कुविघ्न विणासण, जिणवर० पाप पयासण ।
जिणवर० सु कीर्ति करइ जिणवर० कुदुख हरइ ॥
जिणवर० सुमोख सहाय, जिणवर० णमइ सुर राय ।
जिणवर० जु परम णाण, जिणवर० तिलोय माण ॥

घत्ता ।

इति सिरि जिणभक्ति कम्म विच्छत्ति शिवसंपत्ति सुगईकरं ।
सिरि भूषणभासि सुगुण पयासि बंभणाण भवतापहरं ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये पूर्णार्घं० ।

अथ आचार्य भक्ति भावना।

श्रीमदाचार्यसद्भक्तिं पुण्यदां सुखदां तथा।
स्थापयामि जिनेन्द्रोक्तां मनोवाक्कायशुद्धितः॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति अत्रावतर २ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्॥

प्रशक्तऋद्धिसंयुक्तो मोक्षमार्गोपदेशकः।
संपूज्यते मया साधुः कर्म्मराशिविवर्हिणा॥

ॐ ह्रीं प्रशक्तऋद्धिआचार्य भक्तये जलादिकं॥ १॥

श्रेणियुग्मयुतो धीरो गंभीरगुणसागरः॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं युग्मश्रेणियुताचार्यभक्तये जलादिकं॥ २॥

प्रत्यक्षज्ञानसंयुक्तो मुनिनाथो गुणार्णवः॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानाचार्यभक्तये जलादिकं॥ ३॥

सधर्म्मामृतसंतृप्तो ह्यनगारो जितेंद्रियः॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं अनगाराचार्यभक्तये जलादिकं॥ ४॥

धर्माधर्मप्रकाशाय प्रजानां हितकारकः॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं राजऋष्याचार्यभक्तये जलादिकं॥ ५॥

परमब्रह्मणो रूपं स्वचित्त धारयंति ये॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मऋष्याचार्यभक्तये जलादिकं॥ ६॥

देवर्षिः सुगुणांभोधिः पावनो मलहारकः॥ संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं देवऋष्याचार्यभक्तये जलादिकं॥ ७॥

परमर्षिः परो ध्यानी केवलज्ञानदायकः। संपूज्यते०॥

ॐ ह्रीं परमऋष्याचार्यभक्तये जलादिकं॥ ८॥

पुलाको हितसद्बुद्धिः सर्वशास्त्रविशारदः। संपूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं पुलाकाचार्यभक्तये जलादिकं ॥ ९ ॥

बकुशो बोधने रक्तो भव्यजीवाहितंकरः। संपूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं बकुशाचार्यभक्तये जलादिकं ॥ १० ॥

कुशीलः संयमग्राही शुद्धचारित्रपालकः। संपूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं कुशीलाचार्यभक्तये जलादिकं ॥ ११ ॥

स्नातको मुनिशार्दूलः सर्वग्रंथविवर्जितः। संपूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं स्नातकाचार्यभक्तये जलादिकं ॥ १२ ॥

आचार्याणां पराभक्तिप्रसूने सुखमुल्वणं।
तां यजे जलगंधेन शिवशर्म्मविधायनी ॥
ॐ ह्रीं आचार्यभक्तये जलादिकं ॥

अथ जयमाला।

जो मुनि तारणतरण समच्छहु, भवसायर वरनाव समं।
परभव जण सुहयं पुण समच्छहु, आयरियभत्ति परमं ॥
जो मुणिवर महव्वय पालन्त, जो मुणिवर कम्मइ काटन्त।
जो मुणिवर चारित धरन्त, जो मुणिवर तप बारह करन्त ॥
जो मुणिवर गुत्ति तय रक्खो, जो मुणिवर शिव सायर दक्खो।
जो मुणिवर दह धम्म पयासे, जो मुणिवर निखिलागम भासे ॥
जो मुणिवर जीवदया पाले, जो मुणिवर मिथ्यामद टाले।
जो मुणिवर परीसहा बावीस, जो मुणिवर तप बारह इस ॥
जो मुणिवर कम्मट्ठइ खण्डे, जो मुणिवर शुभ ध्यानह मण्डे।
जो मुणिवर रयणत्तय जुत्ता, जो मुणिवर तिय सल्ल विमुत्ता ॥

घत्ता ।

जे बहुगुणपूरा कम्म विचूरा शिवपद सूरा भवभय हरणं ।
सिरिभूषण कहिया तिहुयण महिया बंभणाण मह सुहकरणं ॥
ॐ ह्रीं आचार्यभक्तये पूर्णार्घं ।

अथ बहुश्रुत भक्ति भावना ।

धर्मोपदेशदातारं त्रातारं भववारिधौ ।
बहुश्रुतं महाभक्त्या स्थापयामि यथागमं ॥
ॐ ह्रीं बहुश्रुतात्रावतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

लोकालोकप्रकाशक्ति जन्मांतरविशूचिका ।
सर्वदोषविनिर्मुक्ता भक्तिर्या सा बहुश्रुता ॥
ॐ ह्रीं द्विषासांगोपांगयुक्तबहुश्रुतभक्तये जलादिकं ॥

बहुश्रुतगुणाधारं धर्मतत्वप्रदीपकं ।
जलचन्दनपुष्पैश्च पूजयामि बहुश्रुतं ॥
ॐ ह्रीं पूजयाश्रुतभक्तये जलादिकं ॥

वपुषा मनसा वाचा वंदनागुणभाजनं । जलचन्दन० ॥
ॐ ह्रीं वंदनाश्रुतभक्तये जलादिकं ॥

तोयचन्दनाक्षतैः प्रसूनहव्यदीपकैः,
धूपधूम्रनालिकेरसंयुतैः सदार्घकैः ।
कर्ममर्मछेदनं सुपापदाह भेदनं,
बहुश्रुतं यजामहे भवार्तिकंदकंदनं ॥
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

बहुश्रुतभावण कम्म विद्रावण मुक्तिलच्छी सुहमं परमं ।
पाव विमोक्खण भवजल सोक्खण धम्म विपोषण शिवचरणं ॥

इह बहुश्रुत भावण भवह पार, इह बहुश्रुत भावण कम्म णास ।
इह बहुश्रुत भावण धम्म रास, इह बहुश्रुत भावण समय सार ॥

इह बहुश्रुत भावण विणय होय, इह बहुश्रुत भावण णमइ लोय ।
इह बहुश्रुत भावण सुफल जाण, इह बहुश्रुत भावण पंच णाण ॥

इह बहुश्रुत भावण कम्म डाह, इह बहुश्रुत भावण लोय माण ।
इह बहुश्रुत भावण अचल गण, इह बहुश्रुत भावण परम धम्म ॥

इह बहुश्रुत भावण गलइ कम्म, इह बहुश्रुत भावण सफल जम्म ।
इह बहुश्रुत भावण मोक्ख मग्ग, इह बहुश्रुत भावण सुह सुमग्ग ॥

घत्ता ।

इह बहुसुद भावण मह सुह दावण शिवसुख पावण गुण लहियं ।
सिरिभूषण महियं जिणवरकहियं बंभणाण मुनि नामनयं ॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तये पूर्णार्घं ॥

अथ प्रवचन भावना ।

ज्ञानं श्री जिनेन्द्रोक्तं स्थापयामि श्रुताप्तये ।
मतिश्रुतावधिश्चेति मनःपर्ययकेवलम् ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्पाण्यष्टौ तथा सप्ततत्व षट्कायभावना ।
विचारः सर्ववेदानां मोक्षो यत्र तदागमं ॥
ॐ ह्रीं पंचांगोपांगश्रुतप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ १ ॥

जिनेन्द्रवक्त्रसंसक्तं मतिज्ञानं प्रदायकं ।
पूजयामि सदा भक्त्या द्रव्यैः शुद्धैरघापहं ॥
ॐ ह्रीं मतिज्ञानप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ १ ॥

द्वादशांगं जिनोद्रोक्तं श्रुतज्ञानं मदापहं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ २ ॥

रूपिद्रव्यप्रकाशायावधिज्ञानं च षड्विधं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं अवधिज्ञानप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ ३ ॥

मनःपर्ययसद्बोधं ऋजुविपुलसंज्ञिकं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं मनःपर्ययप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ ४ ॥

केवलज्ञानसंशुद्धं लोकालोकप्रकाशकं । पूजयामि० ॥
ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रवचनभक्तये जलादिकं ॥ ५ ॥

चक्रित्वं भोगिनाथत्वं शक्रत्वं तीर्थनाथता ।
यस्या प्रसादतो नूनं सदा तां पूजयेऽर्घकैः ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

णाण उदयकर पाप तिमिर हर सुह सानाभर बोधमयं ।
मदि सुदि उहि मण पज्जयमदि केवल णाण महो उदयं ॥
पवयण भत्ति भवोदधि तारण पवयण भत्ति कुकम्म निवारण ।
पवयण भत्ति कषाय विहंडणी, पवयण भत्ति कुकम्म विखंडणी॥

पव० सूद णाण पयासे, पवयण० शिव फल भासे।
पव० कुमग्ग विणासइ, पव० सुमग्ग णिवासइ ॥
पव० परमगइ संचइ, पव० महामद वंचइ।
पव० सुगुण भंडारह, पव० सफल संसारह ॥
पव० कुरूप सुरूपी, पव० अखय सुह कूपी।
पव० कुमति छंडइ, पव० सुगति पद मंडइ ॥

घत्ता।

पवयण भत्ति सदा सुहकारी, पव० पालो वय धारी।
सुरिभूषण जिण णाह पयारी, पवयण वदे बह्म विचारी ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तये पूर्णार्घं ॥

आवश्यकापरिहाणी भावना।

आवश्यकाभिधां रम्यां भावनां स्थापयामि ताम्।
यथापूर्वं मुनींद्राणां चाभवन्मोक्षमार्गगाः ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणीभावना अत्र अवतर २ संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

समता वन्दना यत्र प्रतिक्रमणमेव च।
प्रत्याख्यानं तथा स्तोत्रं कायोत्सर्गं च षड्विधं ॥

ॐ ह्रीं षड्विध सांगोपांगावश्यकपरिहाणीविशुद्धये अर्घं०।

समभावसमादिष्टं स्थितः पूर्वोत्तरे मुखं।
त्रिकालयोगसंचारी मन्यते मोक्षदायकः ॥

ॐ ह्रीं समताभावावश्यकापरीहाणिविशुद्धये जलादिकं ॥ १ ॥

दुरितविनाशाय प्रतिक्रमण शुद्धिदं ।
यत्करोति सदा योगी महाते मोक्षदायकः ॥
ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकापरिहाणिविशुद्धये जलादिकं ॥ २ ॥

जिनेन्द्रस्य गुणांभोधेः वंदनां कुरुते मुनिः ।
जलाद्यैरष्टधा द्रव्यैः महाने० ॥
ॐ ह्रीं वंदनावश्यका० जलादिकं ॥ ३ ॥

अनेकगद्यपद्येन स्तोत्रेणैव जिनोत्तमं ।
स्तूयते यो मुनिः साधुः महाते० ॥
ॐ ह्रीं स्तोत्रैणावश्यका० जलादिकं ॥ ४ ॥

गुणज्ञो गुणवान् साधुः प्रत्याख्यानपरायणः ।
तोयचन्दनपुष्पौघैः । महाते ॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यका० जलादिकं ॥ ५ ॥

कायोत्सर्गं करोत्येव निर्भयः सर्वतो यथा । तोयचन्दन० ॥
ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यका० जलादिकं ॥ ६ ॥

तोयचन्दनपुष्पौघैः प्रसूनैश्चाक्षतैः शुभैः ।
हव्यदीपैश्चधूपैश्च तां यजे वरश्रीफलैः ॥
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिदर्शनविशुद्धये महार्घं ॥

अथ जयमाला ।

आवश्यक परीहाणि विशुद्धि, जाय साय णिम्मल वर बुद्धि ।
अणुकम्म पावइ सुर रिद्धि, मोक्खमग्ग संपज्जइ सिद्धि ॥
आवश्यक दो कम्म विणासइ, आवश्यक दो सुगइ णिवासइ ।
आवश्यक दो णाण उपज्जइ, आवश्यक दो मोक्ख संपज्जइ ॥

आवश्यक दो पावइ खण्ड, आवश्यक दो जाण विमण्ड।
आवश्यक दो दंशण शुद्धि, आवश्यक दो निम्मल बुद्धि॥
आवश्यक दो दुगइ विचूकइ, आवश्यक दो सूगइ उपज्जइ।
आवश्यक दो रोय विलज्जइ, आवश्यक दो सुगते मूरजइ॥
आवश्यक दो षटभेद कहिज्जइ समतावंदण स्तोत्र समज्जइ।
थुदि पडिक्कमण वर स्वाध्याय, आवश्यक पाले मुनिराय॥

घत्ता।

आवश्यक कीजिइ पाव विछिज्जइ धम्म धरिज्जइ सुद्धमणि।
सिरिभूषण भास्यो सुगुणपयास्यो बंभणाण मुणि सार भणे॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिविशुद्धये पूर्णार्घं॥

अथ मार्ग प्रभावना भावना।

मोक्षमार्गप्रदां सारां जैनमार्गप्रभावनां।
स्थापयामि सदा सम्यक् भावपूरेण निश्चयः॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना अत्र अवतर २ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

रथोत्सवं जिनस्नानं नृत्यं गीतं च चर्चनं।
पूजा यत्र जिनेन्द्रस्य कर्तव्यं तत्र सर्वदा॥

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्तमार्गप्रभावनाय जलादिकं॥

श्रुतावधिप्रकाशेन ज्ञानेनैव मुनीश्वरः।
मार्गप्रभावनां सारां करोत्येव यजेतकं॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गप्रभावनायै जलादिकं॥ १॥

पक्षमासोपवासेन तपो ये प्रचरंति हि ।
यजे सर्वे भयातीतां सदा मार्गप्रभावनां ॥
ॐ ह्रीं तपसामार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ २ ॥
गद्यपद्यकवित्वेन शास्त्रसंदर्शनेन च ।
मार्गप्रभावनां सारां करोत्येव यजेतकं ॥
ॐ ह्रीं कवित्वेमार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ३ ॥
सुकंठेन वितर्केण व्याख्यानं वितनोति यः ।
जिनमार्गप्रकाशाय यजे तं धीरमानसं ॥
ॐ ह्रीं व्याख्यानेमार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ४ ॥
समंतभद्रनामानमकलंकं जितेंद्रियं ।
जिनमार्गप्रकाशाय द्रव्याष्टकैर्महाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं वादेनमार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ६ ॥
जिनसेनं जितारातिं रविषेणं महाम्यहं ।
नेमिचंद्रंगुणैः पूर्णं ग्रन्थकर्तारमुत्तमं ॥
ॐ ह्रीं ग्रन्थोद्धारमार्गप्रभावनायै जलादिकं० ॥ ७ ॥
कैलाशपर्वते रम्ये बिंबानि भरतेशिना ।
करापितानि सद्भक्त्या यजे तं भरताभिधं ॥
ॐ ह्रीं जिनप्रतिमामार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ८ ॥
चतुर्विधमहासंघगीतनृत्यमहोत्सवैः ।
मंत्रपूर्व प्रतिष्ठां यः करोत्येव हि तं यजे ॥
ॐ ह्रीं प्रतिमाप्रतिष्ठाकृतमार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ८ ॥
सम्मेदाचलसेत्रुंजोर्जयंतादिनगादिषु ।
संघयात्रा यथा भक्त्या यो करोत्येव तं यजे ॥
ॐ ह्रीं संघयात्रामार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥ ९ ॥

पोडशकारणान्यष्टान्हिदशलक्षणपूजनं ।
सद्द्रव्यैर्नृत्यगीतैश्च यः करोत्यत्र तं यजे ॥
ॐ ह्रीं अनेकपूजाविधानमार्गप्रभावनायै जलादिकं ॥११॥
जलेन गंधेन शुभाक्षतेन हव्येन दीपेन सुधूपकेन ।
फलेन सारेण जिनस्य जातां चर्चामि तां मार्गप्रभावनां हि ।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै महार्घं ।

अथ जयमाला ।

वरकीर्तिपसारण भवजलतारण, वारण कम्मकलंक चयं ।
इह धम्म पहावण परमत वारण, भव भय हारण बंभमयं ॥

जय मग्ग पहावण धम्म थंभ, जय मग्ग पहावण सुगुण रंभ ।
जय मग्ग पहावण दह पयार, जय मग्ग पहावण भवह पार ॥
जय मग्ग पहावण कीत्ति रासि, जय मग्ग पहावण लछि दासि ।
जय मग्ग पहावण कुमत खंड, जय मग्ग पहावण स्वमत मंड ॥
जय मग्ग पहावण तित्थसंघ, जय मग्ग पहावण सिद्धि जंघ ।
जय मग्ग पहावण चैत्य देव, जय मग्ग पहावण मुणिव सेव ॥
जय मग्ग पहावण रामसेन, जय मग्ग पहावण रविषेण ।
जय मग्ग पहावण चंदकीत्ति, जय मग्ग पहावण मूढ संपत्ति ॥

घत्ता ।

इह मग्ग पहावण पाव निवारण, सिरिभूषण णिय वयण धरो ।
सिरि जिणमत पोषण कम्म विशोषण, बंभणाण शिव सुक्ख करो॥
ॐ ह्रीं मार्गप्रभवानायै पूर्णार्घं ।

अथ प्रवचन वात्सल्य भावना।

सर्वज्ञवदनोद्भूतं सारसौख्यकरं नृणां।
स्थापये धर्मसिद्धयर्थं वत्सलत्वं प्रवाचकं ॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यांग अत्रावतर२ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

शीलसंपत्तियुक्तानां चारित्रप्रतिपालिनां।
यत्र संक्रियते मानं तद्वात्सल्यं बुधैः स्मृतं ॥

ॐ ह्रीं द्विविधसांगोपांगयुक्तप्रवचनवात्सल्यांगाय जलादिकं ॥

भरतादिकसद्भूमौ ये तिष्ठंति मुनीश्वराः।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥

ॐ ह्रीं साधुस्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जलादिकं ॥ १ ॥

भरतादिकसद्भूमौ या विहरन्ति चार्जिकाः।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥

ॐ ह्रीं आर्जिकास्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जलादिकं ॥ २ ॥

भरतादिकसद्भूमौ ये संति सुश्रावकाः।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥

ॐ ह्रीं श्रावकस्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जलादिकं ॥ ३ ॥

भरतादिकसद्भूमौ या संति सुश्राविकाः।
श्रुत्वा स्नेहं करोत्येव यजे तं धर्मवत्सलं ॥

ॐ ह्रीं श्राविकास्नेहप्रवचनवत्सलत्वायै जलादिकं ॥ ४ ॥

नीरगंधसुगन्धपुष्पसुभाक्षतौघचरुवरैः।
दीपधूपफलाश्रितैर्व्रतनायकं शिवदायकं ॥

रामसेनमुनींद्रचन्द्रकीर्तिवर्णिभिरर्चितं ।
ज्ञानसागरप्रार्थितं भवभंजकं अघनाशकं ॥
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यत्वाये महार्घं ॥ पूर्णार्घं ।

अथ समुच्चय जयमाला ।

इह भवजल तारण कम्म निवारण सोलहकारण कम्महरं ।
जम्म जरामय चउगइ दुस्सय सव्व दु कम्म खयकरणं ॥
तीत्थयकरणधणु दंसण विशुद्धि, जसभावे पावे अमर रिद्धि ।
मण धरउ विणच संघाधिकार, मुणि अजय भाव वसाधिकार ॥
पुण शील रयण पालो विशाल, णव भेदभाव वर हो दयाल ।
मण धरहु जीव णाणोपयोग, जह भावे करे कम्मारि रोग ॥
णय हृदय धरउ संवेग भाव, जाणौ लगि हो अचल पमाण ।
दिज्जइ अक्खय संपत्त दाण, कीजे तिलोय मजे सुमाण ॥
तव तवो जीव बारह पयार, सब साधु समाहि भवाब्धिपार ।
मण धरहु वैयाविचि सु अंग, अरिहंत भक्त कम्मारि भंग ॥
आयार भक्ति भव दुख छेद, बहु सुयण भक्ति अणाण भेद ।
आवश्यकेन कम्मट्ठ णास, पवयण भक्ति मुत्ति णिवास ॥
जिण मग्ग पहावण धम्म धीर, पवयण पालो भव्व सुवीर ।
जे सोलहकारण पालयंत, ते माणव अविचल पद लहन्त ॥

घत्ता ।

भव दुःहछंडण मोक्खविमण्डण कम्म त्रिखण्डण गधुरीयं ।
चन्दकिचि मुनीवर पद परम धर बंभण अंगीकरीयं ॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो पूर्णार्घं ।

त्रैलोक्ये वरदां शुद्धां जराभयविनाशिनी।
पूजां ते प्रददाम्युच्चैः शांतिधारा त्रयात्मिकां॥
इति शान्ति धारा।

त्रैलोक्योदर संभवासु त्रिसदां लक्ष्मी नयत्यातिकीं।
राज्यकोशयुतं यशः पृथुतरं सौख्यं प्रतापोल्वणं॥
छत्रचामरभूषितं च निजता ज्ञानं च सौख्यास्पद-
मेतद् षोडशकारणव्रतविधौ पूजा प्रसादाद्भवेत्॥
इत्याशीर्वादः।

श्रीमद्ब्रह्मांडभाण्डो प्रकटितसुयशः काष्ठसंघो गुणाद्रि-
स्तस्मिन् श्रीरामसेनो यतिजनविदितः पूर्वमेवाबभूवः॥
वंशेऽनेकशो हि प्रचुरगुणयुताः सूरयो विश्वविद्याः।
संजाता विश्वसेनाभिधजननमिता भावतस्तान् भजेहं॥१॥
विद्यया भूषितं सारं विद्याभूषणमुत्कटं।
तत्पटाचलभास्वंतं श्रीभूषणयतीश्वरं॥ २॥
चन्द्रकीर्तिमहामान्यं तार्किणां हि शिरोमणिं।
तत्पट्टे राजकीर्तिं च वंदे चर्चेति भक्तितः॥ ३॥
सर्वज्ञदेववदनोद्भवमक्षयं च।
नाम्ना व्रतं षोडशकारणं हि॥
तस्याष्टकर्मरिपुखण्डनवज्रतुल्यं।
श्रीज्ञानसागरमुनींद्र मनं चकार॥ ४॥
॥ अथ जाप्य १०८ दीयते॥
जाप्य मंत्र-'ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धादि षोडशकारणेभ्यो नमः'
इति श्रीभूषणकृतषोडशकारण व्रतोद्यापनं।

रत्नत्रय व्रत कथा ।

श्रीमत्सन्मतिं नत्वा गौतमं च गणाधिपं ।
भक्तियुक्तः श्रेणिको राजा विनयान्नतमस्तकः ॥ १ ॥
केनेदं विहितं नाथ रत्नत्रयमिदं व्रतं ।
कीदृक्फलं च तेनाप्तं तद्वृत्तं कथय प्रभो ॥ २ ॥
अथाह गौतमस्वामि दिव्यगंभीरया गिरा ।
भव्यं पृष्टं त्वया राजन् शृणु त्वं कथयामि ते ॥ ३ ॥
जंबूवृक्षांकिते जंबूद्वीपे द्वीपेषु मध्यगे ।
लक्षयोजनविस्तीर्णे क्षेत्रं भारतसंज्ञकं ॥ ४ ॥
तस्यास्ति पूर्वदिग्भागे द्वितीयं क्षेत्रमुत्तमम् ।
नाम्ना पूर्वविदेहं स धर्मिजनैः समाकुलं ॥ ५ ॥
पुष्कलावतिप्रमुखानेकदेशसमन्वितं ।
पवित्रं क्षेत्रमत्यन्तं पुरपत्तनशोभितं ॥ ६ ॥
राजा वैश्रवणस्तत्र सम्यक्त्वालंकृतः सुधीः ।
तेनेदं च कृतं पूर्वं व्रतं रत्नत्रयाभिधं ॥ ७ ॥
तत्फलेनैव संबद्धं तीर्थंकृतकुलमुत्तमम् ।
ततः समाधिना मृत्वाहमिंद्रोऽभूतो भूपतिः ॥ ८ ॥
तस्माच्च्युत्वायुषांते सः बंगदेशे मनोहरे ।
मिथुलाक्षापुरिरम्या तस्यां कुंभाभिधो नृपः ॥ ९ ॥
राज्ञी प्रभावती दक्षा तद्गर्भे सोऽवतीर्णवान् ।
रत्नत्रयप्रभावेन मल्लिनाथो जिनेश्वरः ॥ १० ॥
स जातः कर्मनियोगः पंचकल्याणनायकः ।

इति मत्वा बुधैः कार्यं रत्नत्रयमिदं व्रतं ॥ ११ ॥
तस्य पूजा विधिर्वक्ष्येऽर्हन्नामाष्टसहस्रकं ।
पठित्वा देहशुद्ध्यर्थं सकलीकरणं पठेत् ॥ १२ ॥
पूजयेत् प्रथमं देवं सिद्धादिपंचनायकान् ।
वेदिमण्डपयो शोभां कृत्वा पूजां तयोर्मुदा ॥ १३ ॥
गुर्वाज्ञां च समादाय स्वस्तिकेनास्य भक्तितः ।
रत्नत्रयस्य यद्भित्रं चतुर्विंशतिसंयुतं ॥ १४ ॥
तदग्रे विधिना स्थाप्यं सम्यक् यंत्रत्रयं शुभं ।
संस्नाप्य विधिना तत्र वृत्तानामर्चयेत्पुनः ॥ १५ ॥
स्वस्तिकं सुन्दरं कृत्वा त्रिनवतिसुकोष्ठकैः ।
तद्व्रतोद्यापनं कुर्यात भक्त्या शक्त्या शिवं पदं ॥ १६ ॥
नित्वाज्ञां प्रथमं गुरोरपि ततः पूजां समारभ्यते ।
तत्रादौ च सहस्रनामसकलीकरणं त्रिशुद्धया पठेत ॥
पश्चात श्रीजिनदेवसिद्धकलिकुण्डादिश्रुतार्चा गुरोः ।
कृत्वानुक्रमतोऽर्चनं च विधिना दृग्बोधवृत्तं यजेत् ॥ १७ ॥
अस्योद्यापन सद्विधौ च मण्डपादि स्वस्तिकस्यार्चनं ।
कर्तव्यं स्नपनं पठेत्सुविधिना पंचामृतैर्भक्तितः ॥
कार्या च ध्वजसंघ पूजकरणं ताबूलदानादिकं ।
कुर्यात्रांकुहरोपणादिविविधैर्वाद्यैश्च सन्तोरणैः ॥ १८ ॥
आहाराभयभैषजं च मुनये सच्छास्त्रदानं तथा ।
पात्रेभ्यो विनयाच्चतुर्विधमिदं दानं प्रदेयं बुधैः ॥
नृत्याशावरगीतमंगलरवैः कार्यं व्रतोद्यापनं ।
इत्युद्यापनसद्विधिश्च गणिनोक्तश्रेणिकाग्रे पुरा ॥ १९ ॥

अथ रत्नत्रय उद्यापन ।

अथातः संप्रविक्ष्यामि नेषां सद्गुणपूजनं ।
कर्णिका मध्यभागे च पूजयेत् द्रव्यसत्तमैः ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्मपूजनाय स्वस्तिकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

आह्वाननस्थापनसन्निधानैः संस्थापयाम्यत्र सबीजवर्णैः ।
सद्दर्शनस्यापि सुयंत्रराजं रौप्यं तथा हेममयं च ताम्रं ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन अत्रावतरावतर संवौषट् । स्थापनं ॥ सन्निधि करणं ॥

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च ।
संवर्द्धिताखिलसुमंगलपुण्यवल्लिः ॥
सम्पूजयामि भवतापहरं स्वनर्घं ।
सद्दर्शनं परमधर्मतरोश्च मूलं ॥

ह्रीं ॐ सम्यक्दर्शनाय जलं० ॥

श्रीचंदनैः कनकवर्णसुकुंकुमाद्यैः ।
कृष्णागुरुद्रवयुतैर्घनसारमिश्रैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ अष्टांगविधसम्यक्दर्शनाय चंदनं० ॥

शुभ्रैः सुगंधकलमाक्षतचारुपुंजैः ।
हीरोज्वलैः सुखकरैरिवचंद्रचूर्णैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० अक्षतं० ॥

हेमाभचंपकवरांबुजकेतकीभिः ।

सत्पारिजातकचयैर्बकुलादिपुष्पैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० पुष्पम् ॥

पट्भिःरसैश्चचरुभिर्घृतपूरयुक्तैः ।

शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसान्नैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० नैवेद्यं० ॥

रत्नादिसोमघृतदीपनरैरिवार्कैः ।

ध्वांतहेतुभिरनंतप्रकाशकारैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० दीपं० ॥

कृष्णागुरुप्रमुखचूर्णभवैः सुधूपैः ।

कर्मेंधनाग्निभिरहानिसुशोभनीतैः ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० धूपं० ॥

स्वर्गापवर्गफलदैर्वरपक्वसारैः ।

नारिंगलिंबुकदलीफलसाम्रकैर्वा ॥ संपूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० फलम्० ॥

पूजाविशेषकृतमर्घमतीव भक्त्या मोत्तारयामि भवसागरसेतुकल्पं ।
सम्यक्त्ववरत्नमपि भव्यसहायरूपं शंकादिदोषरहितं शुभधर्मबीजं ॥

ॐ ह्रीं अष्टांग० अर्घ्यं० ॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

क्षयादुपशमान्मिश्रात् सम्यक्त्वं त्रिविधं मतं ।
निसर्गाधिगमाच्चेत तत्वं श्रद्धानमुत्तमं ॥
ॐ ह्रीं स्वस्तिकोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

कर्मोपशमतः सम्यक्‌दर्शनं कर्मछेदकं ।
नाम्नोपशममित्याहुर्यजे नीरादिभिर्वरैः ॥
ॐ ह्रीं उपशमसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ १ ॥

क्रोधमानादिसप्तानां क्षयोपशमतो भवेत ।
वेदकं दर्शनं रम्यं यजे नीरादिभिर्वरैः ॥
ॐ ह्रीं वेदकसम्यक्‌रत्नत्रयाय जलादिकं ॥ २ ॥

सप्तकर्मक्षयाज्जातमुत्तमं क्षायकं परं ।
मुक्तिहेतुशुभं नित्यं यजे नीरादिभिर्वरैः ॥
ॐ ह्रीं क्षायकसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ३ ॥

शुद्ध यन्निश्चयं ज्ञयं निःकर्म्मात्मगुणं स्थिरं ।
निर्वातं च यथा नीरं यजे तत् दृष्टिरत्नकं ॥
ॐ ह्रीं सिद्धगुणनिश्चयसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ४ ॥

जैनागमे सूक्ष्मविचारशंका, नोदेति यत्रैव पवित्ररूपे ।
तोयादिभिः शंकितदोषहीन, तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं निःशंकितसम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ५ ॥

कृत्वा तपोदानसुसंयमानि, सौख्याभिकांक्षां न करोति यत्र ।
निकांक्षिताख्यं सुगुणं जलाद्यैस्तत् दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥
ॐ ह्रीं निःकांक्षितांगाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ६ ॥

संक्लिष्टदेहादिकसाधुवृंदं दृष्ट्वा तदास्यं प्रवदंति चांगे ।
तस्मिन् जुगुप्सा न करोति भव्यः तत्र दृष्टि० ॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सितांगाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ७ ॥

मौढ्यत्रयाद्दूर तरंगदंगं चामूढताख्यं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ।
शुद्धात्मकंमुक्तिकरं जलाद्यैस्तत्र दृष्टि० ॥

ॐ ह्रीं अमूढतासम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ८ ॥

आच्छादनं यत्र गुरुधर्मतीर्थे दोषे कदाचित् क्रियते कुभावात् ।
आहुश्च सोपादिकगूहनाख्यं तत्र दृष्टि० ॥

ॐ ह्रीं उपगूहनाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ९ ॥

पुण्यादिवर्गे चलिते सुधर्मात् स्थिरं तनोति विधिना प्रबोधात् ।
तोयादिभिः सुस्थितिकारनाम तत्र दृष्टिरत्नं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरणाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ १० ॥

आप्तोक्तधर्मव्रतपालकेषु वात्सल्यभावात् विदधाति सेवां ।
अंगं तदाख्यं सुखदं जलाद्यैस्तत्र दृष्टि० ॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यांगाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ ११ ॥

जैनोक्तमार्गस्य तनोति भव्य प्रोत्साहतां दानविद्यादिशक्त्या ।
धर्मार्थमंगं तदहं जलाद्यैस्तत्र दृष्टि० ॥

ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय सम्यक्त्वरत्नत्रयाय जलादिकं ॥ १२ ॥

पूजाविशेषैर्वसुद्रव्यमानैर्यंत्रैः सुमंत्रैः खलु दृष्टिसिद्ध्यैः ।
चोत्तारयाम्यर्घमिदं जलाद्यैर्वादित्रनादैः व्यवहाररूपैः ॥

ॐ ह्रीं अष्टांगविधसम्यक्दर्शनाय महार्घं ॥

अथ दर्शन जयमाला ।

जय जय सद्दर्शन कुमत विखंडन मिथ्यामोह निवारण ।
बुध कमल दिवाकर परम गुणाकर मुक्तिवधू सुखं करण ॥
जय वर निःशंकित गुण विशाल, परहित निखिल शंकादि जाल ।
जय पर निःकांक्षित भोग दूर, शिवगति सुखकारण कुमुदसूर ॥
जय निर्विचिकित्सा गुण गरिष्ट, निर्नाशित विचिकित्सादि कष्ट ।
जय निहित सकल मूढत्व भाव, जय भवनिधि भव्य समूह नाव ॥
जय उपगूहन वर निहित दोष, परिकृत मुनिजन बहु हृदय तोष ।
जय वृष पतनादि निवार धीर, दूरीकृत भव भय दोष धीर ॥
जय वत्सलत्व बहुगुण निधान, परिकल्पित सुरनर अखिल मान ।
जय जिनशासन विख्यातकार, विधि गुण संसार समुद्रतार ॥
जय जिनवर गणधर गुण करंड, संकृत मिथ्यासुख पाप दंड ।
जय सुरनरपति पद जन मूल, मिथ्यातम मोहित हृदयशूल ॥
इति दृगगुण संस्तुति ममला महामति ।रह यः पठति परमभक्त्या ।
रत्नत्रयं समं यातिरखिलभुवनपतिरात्मपाणिगतकृतमुक्तिः ॥

सम्यक् पदांकितसुदर्शनमादिधर्मः ।
स्वर्गापवर्गफलदं गुणरत्नपात्रं ॥
सायुर्धनं शुभगमित्रकलत्रपुत्रं ।
देयाद्विमो भुवि सुदर्शन रत्नमर्च्यं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

अथ ज्ञान पूजा।

आह्वानसंस्थापनसंनिधापनैः संस्थाप्य चाम्यत्र स बीजवर्णैः।
सद्‌ज्ञानरत्नस्य सु यंत्रमंत्रे रौप्येपदे हेममये च ताम्रे ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान अत्रावतरावतर संवौषट्। स्थापनं। सन्निधिकरणं ॥

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च।
शीत स्थूलया सदयधर्मसुवृक्षवृद्ध्यै: ॥
स्वात्मस्थशुद्धमपरं व्यवहाररूपं।
सद्बोधरत्नममलं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय जलं० ॥

श्रीचन्दनैः कनकवर्णसुकुंकुमाद्यैः।
कृष्णागुरुद्रवयुतैर्घनसारमिश्रैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय चंदनं० ॥

स्थूलैः सुगन्धकमलाक्षतचारुपुंजैः।
हीरोज्वलैः शुभतरैरिव पुण्यपुंजैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अक्षतं० ॥

हेमाभचंपकवरांबुजकेतकीभिः।
सत्पारिजातकचयैर्बकुलादिपुष्पैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय पुष्पं० ॥

शाल्योदनैः सुखकरैर्घृतपूरयुक्तैः।
शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसाद्यैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं० ॥

रत्नादिसोमघृतदीपचयैरघघ्नैः ।
ज्ञानैकहेतुभिरलं महतांधकारैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय दीपं० ॥

कृष्णागुरुप्रमुखधूपभरैः सुगन्धैः
कर्मेंधनाग्निभिरहो विबुधोपनीतैः ॥ स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय धूपं० ॥

स्वर्गापवर्गसुखदैर्वरपकवासै-
र्नारिंगलिंबुकदलीफनसाम्रकैर्वा ॥ स्वात्मस्थ० ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय फलं० ॥

वार्गंधशालिजसुपुष्पचयैर्मनोज्ञै-
र्नैवेद्यदीपवरधूपफलादिभिर्वा ॥
एतैः कृतार्थमिह बोधमये सुयंत्रे ।
प्रोच्चारयामि सह वाद्यसुगीतघोषैः ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय अर्घं० ॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

अवग्रहादिभिर्जातं षट्त्रिंशत्रिशतात्मकम् ।
मतिज्ञानं महद्ज्ञानं यजे तोयादिभिर्मुदा ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्मतिज्ञानाय जलादिकं ॥ १ ॥

सर्वार्थावित् क्रियते शास्त्रं द्व्यनेकद्वादशात्मकं ।
मतिपूर्वं श्रुतं ज्ञानं यजे सर्वज्ञवत् श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्श्रुतज्ञानायजलादिकं ॥ २ ॥

आचारो वर्ण्यते यत्र चारित्रं मोक्षसाधकं ।
गम्भीरार्थं तदंगं तत् यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक् आचारांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

सूत्रकृतांगनामा यः सहस्रषट्त्रिंशद् पदं ।
द्वितीयांगं जिनेन्द्रोक्तं, यजे० ॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

स्थानानि तत्वजीवानां कथ्यंते यत्र नश्चकैः ।
भव्यार्थानि तदंगं च, यजे० ॥

ॐ ह्रीं स्थानांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

द्रव्यादीनां च सादृश्यं, कथ्यते समवायसः ।
परस्परैस्तदंगं च, यजे० ॥

ॐ ह्रीं समवायांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

प्रश्नषष्टिसहस्राणि व्याख्याप्रज्ञप्तिकेयतः ।
प्रोच्यंते तैस्तदंगं च, यजे० ॥

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्त्यांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

ज्ञातृधर्मकथांगं तत् यत्र धर्मकथा भवेत् ।
गंभीरार्था तदंगं च, यजे० ॥

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

श्रावकाचारसद्बोधोपासकाध्ययनं यतः ।
नाम्ना तदंगकं रम्यं, यजे० ॥

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

दशमांतकृतो यत्र वर्ण्यते प्रतितीर्थकं ।
तन्नामाहि तदंगं च, यजे० ॥
ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांगाय जलादिकं ॥ १० ॥

प्रति तीर्थं दशोत्पत्ति प्रोच्यते विजयादिषु ।
तदौपपादिकं चांगं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं उपपादिकनामांगाय जलादिकं ॥ ११ ॥

प्रश्नानुसारतः यत्र वाच्यायं ते कथा शुभाः ।
प्रश्नव्याकरणं नाम, यजे० ॥
ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगाय जलादिकं ॥ १२ ॥

नाना कर्मोदयं यत्र वर्ण्यते तीर्थचक्रिणां ।
विपाकसूत्रनामांगं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगाय जलादिकं ॥ १३ ॥

दृष्टिवादांगसम्भूतं श्रीप्रथमानुयोगकं ।
पुराणरचना यत्र यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं प्रथमानुयोगाय जलादिकं ॥ १४ ॥

दृष्टिवादे गतं सूत्रं सूत्रसिद्धांतसंज्ञिकं ।
नानाप्रमेयवाराशिं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं सूत्रसिद्धांताय जलादिकं ॥ १५ ॥

चन्द्रप्रज्ञप्तिकं नाम श्रुतज्ञानं जिनोदितं ।
वर्णनं तत्र चन्द्रस्य, यजे० ॥
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रज्ञप्त्यै जलादिकं ॥ १६ ॥

सूर्यप्रज्ञप्तिस्थज्ञानं सूर्यादिग्रहणादिकं ।
कथ्यते यत्र सर्वज्ञैः, यजे० ॥
ॐ ह्रीं सूर्यप्रज्ञप्त्यै जलादिकं ॥ १७ ॥

जम्बूद्वीपकुलाद्रीणां वर्णनं कथिता यतः ।
तत्प्रज्ञप्ति श्रुतं पुण्यं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं जंबुद्विपप्रज्ञप्त्यै जलादिकं ॥ १८ ॥

द्वीपसागरचैत्यानां वर्णनं यत्र कथ्यते ।
तत्प्रज्ञप्तक भव्यार्थे, यजे० ॥
ॐ ह्रीं द्विपसागरप्रज्ञप्त्यै जलादिकं० ॥ १९ ॥

व्याख्याप्रज्ञप्तिकाख्यं यत जीवाजीवादिवर्णनं
क्रियते यत्र तद्बोधं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुताय जलादिकं ॥ २० ॥

जलादिस्तभनं यत्र चोक्तं मंत्रादिभैषजैः ।
जलादिचूलिकाख्यं तत, यजे० ॥
ॐ ह्रीं जलगतचूलिकाये जलादिकं ॥ २१ ॥

स्थलादिचूलिकाख्यं तत मेरुकुलाद्रिभूभृतां ।
व्याख्यानं क्रियते यत्र, यजे० ॥
ॐ ह्रीं स्थलगतचूलिकायै जलादिकं ॥ २२ ॥

मायादिचूलिकाख्यं तत, मायारूपेंद्रजालकां ।
कथ्यते यत्र सर्वज्ञैर्यजे० ॥
ॐ ह्रीं मायागतचूलिकाये जलादिकं ॥ २३ ॥

आकाशचूलिकां वंदे खे गत्यादिकवर्णनं ।
यत्र भवेत्प्रबोधं तत्, यजे० ॥
ॐ ह्रीं आकाशगतचूलिकायै जलादिकं ॥ २४ ॥

रूपादिचूलिकामात्रं चित्रकर्मादिवर्णनं ।
गजादीनां च तज्ज्ञानं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं रूपगतचूलिकायै जलादिकं ॥ २५ ॥

उत्पादपूर्वमाद्यं स्यात् द्रव्योत्पादादि र्णनं ।
यत्रैतत्पूर्व्वमहं वन्दे, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥
ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय जलादिकं ॥ २६ ॥

अग्रायणीयपूर्वं तत्, यत्र मोक्षप्रकाशनं ।
मुख्यत्वं सर्वशास्त्रेषु, यजे० ॥
ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वश्रुताय जलादिकं ॥ २७ ॥

यत्र वीर्यानुवादाख्यमात्मनः शक्तिवर्णनं ।
एतत्पूर्वमहं वन्दे, यजे० ॥
ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वश्रुताय जलादिकं ॥ २८ ॥

अस्ति नास्ति प्रवादं तत् यत्र स्याद्वादलक्षणं
एतत्पूर्वमहं वन्दे, यजे० ॥
ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय जलादिकं ॥ २९ ॥

ज्ञानप्रवादपूर्वं च वन्दे ज्ञानादिदेशकं ।
ज्ञानप्रमाणसिद्ध्यर्थं, यजे० ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३० ॥

सत्यप्रवादसंज्ञं यत् सत्यादिभेदवाचकं ।
एतत्पूर्वं नमस्यामि, यजे० ॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३१ ॥

आत्मप्ररूपणं यत्र वन्दे तां भारतीं परं ।
आत्मप्रवादपूर्वाख्यं, यजे० ॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३२ ॥

कर्मप्रवादपूर्वं स्यात् यत्र कर्मादिवर्णनं ।
शब्दार्थकं च नानार्थं यजे० ॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३३ ॥

प्रत्याख्यानं च तत्पूर्वं यत्र सावद्यवर्जनं ।
वदेऽहं तद्भवं ज्ञानं, यजे० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वाय जलादिकं ॥ ३४ ॥

यत्र मंत्रगमः प्रायो विद्यौषध्यादिवर्णनं ।
विद्यानुवादपूर्वं तत्, यजे० ॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३५ ॥

कल्याणवादपूर्वं तत् यत्र कल्याणवर्णनं ।
तीर्थंकरादिचक्रिणीं, यजे तोयादिभिः श्रुतं ॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३६ ॥

प्राणवादमिदं पूर्वं चिकित्सादिप्ररूपणं ।
वंदे धर्मफलं यत्र, यजे० ॥

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वाय जलादिकं ॥ ३७ ॥

नृत्यगद्यक्रियागीतं प्रोक्तं च यत्र पावनं ।
क्रियाविशालपूर्वं तत् यजे० ॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वाय जलादिकं ॥ ३८ ॥

त्रैलोक्यरचना यत्र प्रोक्ता श्रीजिननायकैः ।
त्रैलोक्यबिन्दुं सारं तत्, यजे० ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिन्दुसारपूर्वाय जलादिकं ॥ ३९ ॥

अंगबाह्यं श्रुतं वंदे यत्करोत्यघनिर्जरां ।
चतुर्दशविधं तच्च यजे० ॥
ॐ ह्रीं अंगबाह्यचतुर्दशविधश्रुताय जलादिकं ॥ ४० ।

वर्णानं व्यंजनानां च, श्रुतज्ञानं सुलक्षणं ।
स्फुरदर्थं जलाद्यैश्च, तदंगं पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं व्यंजनोर्जिताय जलादिकं ॥ ४१ ॥

अर्थैर्यत्र समग्रं च हीनाधिकार्थवर्जितं ।
विशदार्थं जलाद्यैश्च तदंगं पूजयाम्यहं ॥
ॐ ह्रीं अर्थसमग्राय जलादिकं ॥ ४२ ॥

शब्दार्थैः सुपूर्णांगं, शब्दार्थो भयसंज्ञकं ।
निर्दोषार्थं जलाद्यैश्च, तदंगं० ॥
ॐ ह्रीं शब्दार्थोभयपूर्णाय जलादिकं ॥ ४३ ॥

अकाले पठनं प्रोक्तं सुकालेऽध्ययने मतं ।
तत्कालाध्ययनं ज्ञेयं, तदंगं० ॥
ॐ ह्रीं कालोऽध्ययनोपप्रभावाय जलादिकं ॥ ४४ ॥

उपाधानसमृद्धांगं नियमादि भवं यतः ।
विनयं देवतादीनां, तदंगं० ॥
ॐ ह्रीं उपधानसमृद्धांगाय जलादिकं ॥ ४५ ॥

विनयोन्मुद्रितांगं स्यादधिकविनयादिभिः ।
जलाद्यष्टविधैर्द्रव्यैः, स्तदंग० ॥
ॐ ह्रीं विनयोन्मुद्रितांगाय जलादिकं ॥ ४६ ॥
सम्यग्ज्ञानं च गुर्वाद्यनपह्नं च समेधितं ।
यत्पवित्र जलाद्यैश्च, तदंग० ॥
ॐ ह्रीं गुर्वाद्यनपह्नसमेधितांगाय जलादिकं ॥ ४७ ॥
बहुमानसमृद्धाख्यां मानपूजादिपूर्वकं ।
प्रोक्तं जिनैः जलाद्यैश्च, तदंग० ॥
ॐ ह्रीं बहुमानसमृद्धांगाय जलादिकं ॥ ४८ ॥
पूजाविशेषैर्जनितं महार्घं पंचात्मरूपे वरबोधमूर्ये ।
प्रोत्तारयाम्यत्र महोत्सवे वाद्यप्रघोषैर्वरमंगलाय ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय महार्घं ।

अथ जयमाला ।

स्वर्मोक्षैकनिबंधनं भवहरं चाज्ञानविध्वंसकं ।
मिथ्यामोहतपोपहं निरूपमं तीर्थेश्वराद्धुद्भवं ॥
लोकालोकपदार्थदीपममलं योगीश्वरैरादृतं ।
ज्ञानं ज्ञानधनाय नौमि वसुधा चारान्वितं संस्तुवे ॥

× × × ×

ये पठंति विमलाक्षरसारं, ते प्रयांति सकलागमपारं ।
पूजयंति परमार्थसमग्रं, ते सजंति संसृतिघनदुर्गं ॥
ये पठंति शब्दार्थमनेकं, ते तरंति विद्यार्णवमेकं ।
ये पठंति काले श्रुतपाठं, लंघयंति ते मिथ्याघाटं ॥

ये कुर्वंत्युपधानसमृद्धिं, ते भजंति सर्वातिमहर्द्धि ।
अर्चयंति ये विनयाचारं, ते गच्छंति शिवालयसारं ॥
ये स्तुवंति विद्यागुरुपूज्यं, ते भजंति तीर्थेश्वरराज्यं ।
ये यजंति शास्त्रे बहुमानं, ते पिबंति सिद्धांतसुपानं ॥
ज्ञानं कृत्स्नेंद्रिय मृगपाशं, ज्ञानं महा मोहविष नाशं ।
निस्संदेहं शिवसुखमूलं, अनंतं पापारि विदूरं ॥
अष्टभेदमाचारविशुद्धं, ये पठंति जैनागमशुद्धं ।
येऽर्चयंति भक्त्याखिलभुक्तिं, ते व्रजंति भुक्त्वाखिलमुक्तिं ॥

घत्ता ।

अमपगुणनिधानं चित्तमातंगसिंहं ।
विषयभुजंगमन्त्रं कर्मशत्रुघ्नमेव ॥
नरसुरपतिमान्यं विश्वसिद्धान्तसारं ।
वसुविधियजनाद्यैश्चार्चयेऽर्घेण मुक्त्यै ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घं ।

यः सर्वथैकांतनयांधकारं, ध्वंसत्यवश्यं नयरश्मिजालैः ।
विश्वं प्रकाशं विदधातु नित्यं, पायादनेकांतरविः स युष्मान् ।

इत्याशीर्वादः ।

ज्ञानं पंचविधं सुधारसमयं सौख्याकरं दीपवत् ।
प्रत्यक्षादिपरोक्षभेदममलं स्वान्यप्रकाशात्मकं ॥
धर्माद्येन सुभूषणेन रचितः सद्बोधकल्पद्रुमः ।
कुर्यात् यत्ररमादिभोगसकलं ध्यानं बलं सूरिणां ॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं ।

अथ चारित्र पूजा ।

सद्वृत्तं सर्वसावद्यं योगव्यावृत्तिरात्मनः ।
गौणं स्याद्वृत्तिरानन्दः ज्ञेयं चारित्रभूषणं ॥१॥
अहिंसादीनि पंचैव समितिं पंचकं तथा ।
गुप्तित्रयं च यत्रस्यादेतच्चारित्ररत्नकं ॥ २ ॥

इति यंत्रस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

आह्वाननस्थापनसन्निधानैः,
संस्थापयाम्यत्र स बीजवर्णैः ।
चारित्ररत्नत्रययंत्रमंत्रं,
रौप्यं तथा हेममयं च ताम्रं ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र अत्रावतरावतर संवौषट् । स्थापनं । सन्निधिकरणं ।

गंगादितीर्थभवजीवनधारया च,
सत्सारया सुखदपुण्यसुवल्लिवृद्ध्यै ।
स्वात्मस्थशुद्धमपरं व्यवहाररूपं,
चारित्ररत्नममलं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं० ॥

श्रीचन्दनैर्विशदकुम्कुमहेमवर्णैः,
कृष्णागुरुद्रवयुतैर्घनसारमिश्रैः । स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० चन्दनं० ॥

स्थूलैः सुगन्धकलमाक्षतचारुपुंजैः,

हीरोज्वलैः सुखकरैरिव चन्द्रचूर्णैः। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० अक्षतं ॥

हेमाभचम्पकवरांबुजकेतकीभिः,

सत्पारिजातकचयैर्बकुलादिपुष्पैः। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० पुष्पं० ॥

शाल्योदनैः शुभतरैर्घृतपूरयुक्तैः,

शुद्धैः सुधामधुरमोदकपायसान्नैः। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० नैवेद्यं० ॥

रत्नादिसोमघृतदीपचयैरनर्घैः,

ज्ञानैकहेतुभिरलं महतांधकारैः। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० दीपं० ॥

कृष्णागुरु प्रमुखधूपभरैः सुगन्धैः,

कर्माष्टकाग्निभिरहो विबुधोपनीतैः। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० धूपं० ॥

स्वर्गापवर्गफलदैर्वरपक्ववासै-

र्नारिंगलिम्बुकदलीफनसाम्रकैर्वा। स्वात्मस्थ० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविध० फलम्० ॥

वार्गंधशालिजसुपुष्पचयैर्मनोज्ञै नैवेद्यदीपवरधूपफलादिभिर्वा।

एतैः कृतार्थमिहसंयममंत्ररूपे चोच्चारयामि वरवाद्य सुगीतघोषैः॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं ॥

अथ प्रत्येक पूजा।

मनसापि न कर्तव्या हिंसा दुर्गतिकारणं।
तद्व्रतं च जलाद्यैश्च यजे चारित्ररत्नकं॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतहिंसाविरतिसम्यक्त्वचारित्राय जलादिकं॥

वचनेनापि कर्तव्यं हिंसाकर्मनिवारणं॥ तद्व्रतं च०॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतहिंसाविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥ २॥

कायेन सर्वसावद्यं त्याज्यं निर्ग्रंथनायकैः। तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतहिंसाविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥३॥

मनसापि न कर्तव्यं मऽनोसत्यं कर्पनिष्ठुर। तद्व्रत०॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतासत्यविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥ ४॥

वचनेन हितं सत्यं वाच्यं जीवसुखाकरं। तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं प्रवचनविशुद्धयाकृतासत्यविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥५॥

कायेनापि न कर्तव्यमसत्ये प्रेरणादिकं। तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतासत्यविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥६॥

स्तेयं हेयं दुराचारं मनसापि मुनीश्वरैः। तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतस्तेयविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥ ७॥

वचनेऽपि च तत् त्याज्यं स्तेयं हिंसाकरं यतः। तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतस्येयविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥ ८॥

कायेनापि न कर्तव्यं स्तेयं स्वपरनाशकृत्॥ तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतस्तेयविरतिमहाव्रताय जलादिकं॥ ९॥

मनसापि न चिंतव्यं कुशीलं दुःखदायकं॥ तद्व्रतं०॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतब्रह्मचर्यमहाव्रताय जलादिकं॥ १०॥

ब्रह्म [illegible]रोवाग्भिस्त्रीवार्ता सकलां त्यजेत् ॥ तद्व्रतं० ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतब्रह्मचर्यमहाव्रताय जलादिकं ॥ ११ ॥

कायेन रक्षितं शीलं प्राप्तं तेन शिवालयं ॥ तद्व्रतं० ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतब्रह्मचर्यमहाव्रताय जलादिकं ॥ १२ ॥

परिग्रहः परीहेयः मनसापि मुमुक्षुभिः ॥ तद्व्रतं० ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतपरिग्रहविरतिमहाव्रताय जलादिकं ॥ १३ ॥

परिग्रह सदा त्याज्यः वचसा पापकारणं ॥ तद्व्रतं० ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतपरिग्रहविरतिमहाव्रताय जलादिकं ॥ १४ ॥

साधुर्याति शिवं यस्मात् कायत्यक्तपरिग्रहः । तद्व्रतं० ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतपरिग्रहविरतिमहाव्रताय जलादिकं० ॥ १५ ॥

मनसान्वेषणम् कृत्वा गच्छंति साधवो यतः ।
इर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥

ॐ ह्रीं मनसाकृतैर्यासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥ १६ ॥

वाग्भिर्दर्शितो मार्गो निरवद्यस्तपोभृतेः ।
इर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे चारित्ररत्नकं ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतैर्यासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥ १७ ॥

कायेन क्रियते यत्र गमनं दृष्टिगोचरं ।
इर्यासमितिसंज्ञं तत् यजे० ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतैर्यासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥ १८ ॥

अविष्टुराक्षरं यत्र मनसा कोमलं वचः ।
भाषासमितिसंज्ञं तत् यजे० ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धया[illegible]तभाषासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥ १९ ॥

वाचा मधुरता यत्र वाग्दोषैः रहितं वचः ।
भाषासमितिसंज्ञं तत यजे० ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतभाषासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥२०॥
कायदोषविनिर्मुक्तं यतः सत्यार्थवाचकं ।
तत्समिति जलाद्यैश्च, यजे० ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतभाषासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥२१॥
भुक्तिर्दोषैर्विनिर्मुक्ता नानाशास्त्रार्थसाधिनीं ।
एषणासमितिर्यत्र, यजे० ॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतैषणासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥२२॥
नानाशुद्धिकरा यत्र वचसाहारशुद्धिता ।
एषणासमितिर्ज्ञेया, यजे० ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतैषणासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥२३॥
कायेन शुद्धभावेन विदोषाहार सम्भवा ।
सैषणासमितिर्ज्ञेया, यजे० ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतैषणासमितिमहाव्रताय जलादिकं० ॥२४॥
वस्त्वादानं दयार्द्रेण क्षेपणं मनसा तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र, यजे० ॥
ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रताय जला० ॥२५
आदाननिक्षेपणं यत्र दयार्द्रवचसा तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र यजे० ॥
ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रताय जला०॥२६॥
वस्त्वादानं दयार्द्रेण कायेन क्षेपणं तथा ।
तन्नामा समितिर्यत्र यजे० ॥
ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रताय जलादिकं ॥२७॥

मनसा क्षांतिः दयायुक्ता प्रतिष्ठापनसंज्ञिका ।
तन्नामा समितियत्र, यजे० ॥

ॐ ह्रीं मनोविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रताय जलादिकं ॥२८॥

शुद्ध्या वचसा च युक्ता प्रतिष्ठापनसंज्ञिका ।
समितियत्र नीराद्यैः, यजे० ॥

ॐ ह्रीं वचनविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रताय जलादिकं ॥२९॥

शुद्ध्या युक्ता च कायेन प्रतिष्ठापनसंज्ञिका ।
समितिर्यत्र तोयाद्यैः यजे० ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रताय जलादिकं ॥३०॥

मनसा ध्ययनोद्भूता मनोगुप्तिरघापहा ।
तत्प्राप्त्यैर्यत्र तोयाद्यैः यजे० ॥

ॐ ह्रीं मनसाविशुद्धयाकृतमनोगुप्तिमहाव्रताय जलादिकं ॥ ३१ ॥

यत्र स्वाध्यायतो जाता वचोगुप्तिस्तपोभृतां ।
वाग्विशुद्ध्या जलाद्यैश्च यजे० ॥

ॐ ह्रीं वाग्विशुद्धयाकृत वाक्गुप्तिमहाव्रताय जलादिकं ॥ ३२ ॥

कायोत्सर्गविशुद्ध्या च कायगुप्तिः सुनिश्चला ।
जाता यत्र जलाद्यैश्च यजे० ॥

ॐ ह्रीं कायविशुद्धयाकृतकायगुप्तिमहाव्रताय जलादिकं ॥ ३३ ॥

चारित्ररत्नमनघं परमं पवित्रं ।
प्रोत्तारयामि वरमर्घमहं जलाद्यैः ॥
पूर्णं सुवर्णकृतभाजनसंस्थितं च ।
स्वर्गापवर्गफलदं जयघोषणैश्च ॥

ॐ ह्रीं परमचारित्ररत्नाय महार्घं० ॥

अथ जाप्य: १०८–मालतीकुसुमैः ॥

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः ॥

अथ जयमाला ।

सत्यैवात्र महाव्रतानि सततं गुप्तित्रयं मुक्तिदं ।
पंचैव समितिव्रतानि सुहितं कुर्वंति भव्यात्मनां ॥
तस्मात्पुण्यचरित्ररत्ननिकरं सेव्यं मुदा शंकरं ।
मुक्तेर्मार्गमिदं भवाब्धिशरणं भव्यैरहं संस्तुवे ॥ १ ॥

× × ×

अहिंसाव्रतं विश्वसत्वानुकंपं, यजेऽनंतशर्माकरं निःप्रकंपं ।
असत्यादिदूरं ज्ञानविज्ञानमूलं, सुसत्यं स्तुवे सर्वकर्मानुकूलं ॥२॥
अदत्तातिगं कृत्स्नलोभादिदूरं, महांतं महासद्व्रतं धर्मपूरं ।
परं ब्रह्मचर्यं जगद्धर्म हेतुं, वरं चर्चयेऽनंतकर्माब्धिसेतुं ॥ ३ ॥
व्रतंधर्मशर्माकरं सक्तसंगं, खलैर्लोभतृष्णादिसर्वैरभंगं ।
मनोवाक्यकायत्रयं गुप्तिगुप्तं यजाम्यत्र हिंसादिपापैरमीष्टं ॥४॥
सुवाचां सुभाषेषणां यत्र भूतां किलादाननिक्षेपणां धर्मसुतां ।
प्रतिष्ठापनां चार्चयेऽहं पवित्रां, समित्याख्यकात्वृत्तधात्रिं विचित्रां ॥
परं पावन विश्वभव्यैकबंधुं, महादृष्टि चिद्वृत्तरत्नादि सिंधुं ।
जगत्पूज्यमानदशर्मादिहेतुं, व्यथानिष्टरोगादि दुःखादिसेतुं ॥६॥
सुरेंद्रादिभूतिप्रदं पापदूरं, जिनेन्द्रादिसेव्यं वृषांभोतिपूरं ।
यजे वृत्तसार प्रमादादित्यक्तं, परंपालयामक्षघातेति सक्तं ॥७॥

× × ×

---

१ वृत्ता ।

विविधफलसमूहै दिव्यपक्वान्नवर्गैः ।
ज्वलितबहुसुदीपैश्चार्चये वाद्य सद्भैः ।।
रचितममलमर्घं हेमपात्रेति रम्यं ।
त्रिदशविधचरित्रस्यैव चोत्तारयामि ।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं ।
समस्तार्चनमांगल्यं द्रव्यपूर्णशुभावहं ।
सुदृग्ज्ञानचरित्राणां मर्घमुत्तारयाम्यहम् ।।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररत्नत्रयधर्मेभ्यो पूर्णार्घं ।
धर्मः कल्पतरुसदाफलतरुः सोऽयं महामंगल ।
सोऽयं देवजिनेन्द्रपादजनितः संसारदुखावहः ।।
तस्मात्पुत्रकलत्रशांतिकमला कीर्तिप्रदो वः सतां ।
भूयात् संतति वल्लरी जलधरः वंशान्वयेऽस्मिनिजे ।।
इत्याशीर्वादः ।

दृग्बोधादिकशुद्धवृत्तजनितं रत्नत्रयं सद्व्रतं ।
तत्पूजा रचिता मुनीन्द्रगणिना पुण्यात्मना सूरिणा ।।
सद्भट्टारकधर्मचन्द्रपदभृद् धर्मादिभूषात्मना ।
भव्योपासकशीतलेश विहितं प्रश्नात् जिनार्थात वरं ।।
गच्छे श्री शारदायाः सदतिबलगणे पावने मूलसंघे ।
भव्यो दाक्षिण्यभूषो जनिकुमुदविधोः धर्मचन्द्रो मुनीन्द्रः ।
तत्पट्टाभोजसूर्यो जयति भुविसुखं धर्मभूषो गणेंद्रः ।
तत्कृत्या शंभव यज्जयंतु शिवकरं श्री व्रतोद्यापनं च ।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।
।। इतिश्री रत्नत्रयव्रतोद्यापनं ।।

अथ अनन्त व्रतोद्यापनं ।

श्रीनाभिसूनुचरणाब्जयुगं प्रणम्य देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रपूजितं ।
वक्त्रादनन्तजिनपात् प्रविनिर्गतं यदुद्यापनं बृहदनन्ततपोविधानं॥

सम्यक्त्वशुद्धिपरितं हृदयं नरो यो,
भक्त्या स्वनन्ततपसा परिधार्य नित्यं ।
शृण्वन्तु तस्य तपसो विधिमाहितस्य,
यस्यान्नराः सुखकरं फलमाप्नुवन्ति ॥

मासे भाद्रपदे शुक्ले, पक्षे च दशमी तिथौ ।
एकभुक्तिविधानेन भुक्त्वा गत्वा जिनालयम् ।
जलगन्धादिभिर्द्रव्यैः पूजयित्वा जिनाधिपान् ।
त्रिशुद्धिभक्तिभावेन स्तुत्वा नत्वा पुनः पुनः ॥ ४ ॥
गुरूणां चरणौ नत्वा गृहीत्वा प्रोषधं व्रतं ।
गृहीत्वाद्रव्यसामग्रीं जलगन्धादिशुद्धिकां ॥ ५ ॥
श्रीवृषभाद्यनन्तान्तान् चतुर्दशजिनेश्वरान् ।
स्थापयित्वा महोत्साहैः गीतैश्च मंगलाष्टकैः ॥ ६ ॥
चतुर्दशांकाः सम्यक् ते पूजनीया पृथक् पृथक् ।
आर्तिका जयमालाभिर्गंधपूगादि पूर्वकम् ॥ ७ ॥
एकभुक्तिर्दिने चैकादश्यां त्रिकालपूजया ।
धर्मध्यानेन तत्रैव तिष्ठेव श्रीजिनसद्मतिः ॥ ८ ॥
गृहारंभपरित्यक्तः स्वल्पोपाधिसमाहितः ।
द्वादश्यां जिनपूजांते चैकभुक्तिः प्रजायते ॥ ९ ॥

त्रयोदश्यामेकवारं भोजनं निरवद्यकम् ।
त्रिकालपूजनं तद्वद् गृहव्यापारवर्जितम् ॥ १० ॥
शुद्धत्रयोदशीयोग गंधकूटीस्थवेदिकां ।
चतुप्रस्थप्रमाणे हि पंचचूर्णेन कारयेत ॥ ११ ॥
मण्डलं वर्त्तुलाकारं चतुस्रं वर्गतशोभनं ।
द्रव्यग्रह सु चन्द्रकं सुदकं ध्वज मण्डितं ॥ १२ ॥
श्रीगंधकुट्यां च विधाय मंडले तस्याग्रवेद्यां च विधाय स्वस्तिकं ।
भक्त्या विशुद्धया महतीं सुयज्पां, अनन्तवृत्तस्य तु वैभवेन वा॥ १३
म कोष्ठकान् संप्रविधाय सादरं विविधचंद्रोपकचारुमंडपैः ।
कुर्वंतु सुभव्यजनाः सुयज्ञकं तथा जिनेशा वरदा भवंति वै ॥ १४ ॥
श्रीखंडागरुकर्पूरकाश्मीरैः कुम्कुमादिभिः ।
चित्रितो मृन्मयताम्रधौतकुम्भो विलेपितः ॥ १५ ॥
स्थापनीयोऽर्जुनधौतवस्त्रेणाच्छादितः परः ।
तस्योपरि च संस्थाली स्थापनीया मनोहरा ॥ १६ ॥
तस्यां श्रीजिनबिंबं हि चतुर्दश जिनेशिनां ।
चतुर्विंशतिदेवानां बिंबं वा स्थापयेद्बुधः ॥ १७ ॥
अथवानन्ततीर्थस्य बिम्बं च स्थापयेन्मुदा ।
स्थापनीयं तदग्रे चानंतयंत्रेण मन्वितं ॥ १८ ॥
यंत्राभावे सुगंधेन लेखनीयः शलाकया ।
यो यंत्रोऽनंतनाथेन दर्शितो दिव्यभाषया ॥ १९ ॥
यंत्रोपरि विधातव्यं शुद्धमनंतमंडलं ।
प्रतिष्ठादिविधानेन प्रतिष्ठया सुमुक्षुभिः ॥ २० ॥

यंत्राद्योऽपि सर्वेषु पदार्था विकुर्वरे ।
जपनीयं ततो मंत्रं वनस्पति सुपुष्पकैः ॥ २१ ।
पंचामृतेन संस्नाप्य क्षालनीयो जलैर्वरैः ।
पूर्ववदर्चनं कृत्वा रात्रौ जागरणं चरेत ॥ २२ ॥
चतुर्दश्यां विधातव्यं चतुराहारवर्जनं ।
महासंस्थापनं कृत्वा पूजनं च त्रिकालजं ॥ २३ ॥
पौर्णिमायां प्रभाते च पूजयित्वा जिनेश्वरान् ।
प्रोषधं पारयित्वा च क्षयं कृत्वा परस्परं ॥ २४ ॥
साधर्मिजनैः सार्द्धं स्वगृहे भोजनं व्रजेत ।
मानवोऽस्य भवो येन जायते सफलो नृणाम् ॥ २५ ॥

एवं विधानेन मयोदितं शुभं कृत्वा तपोऽनंतव्रताभिधानम् ।
उद्यापनं श्री जिनयज्ञकल्पं कुर्वंतु यस्मात् सफलं तपो भवत् ॥

एतत् पठित्वा वेदिकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्रीमंतं देवदेवौघैः, पूजितं यस्य पंकजं ।
वृषभं वृषदातारं, स्तुवेहं जगदुत्तमं ॥ १ ॥

मदननाग विदारण केशरी, घनभवोदधितारण नौसमः ।
नरवरेंद्र सुरेंद्रसुपूजित स्मभवतुश्च जगत्स्थजितोव्रतात ॥२॥

स्तुवे शंभवं यस्य पादारविंदं, सुरैः पूजितं पूज्यपादारविंदं ।
स्फुरन्फुल्लराजीव पादारविंदं, चरच्चारनैरूप्य पादरविंदं ॥३॥

विविधदुःखदवानलकंदकं, विबुधहृत्कमलांतरनंदकं ।
खचरनागनरामरवंद्यकं, समभिनंदनदेवमहं स्तुवे ॥ ४ ॥

देवेन्द्रवृन्दमुकुटोत्करघृष्टपादो
दिव्यध्वनिप्रकटितामृतमेघनादः ॥
तत्वानुशासनपराजित दुष्टवादः ।
संस्तूयते जिनपतिः सुमतिः सुभव्यः ॥ ५ ॥

कमलांचितसुक्रमलेऽपि परैः कमलेऽपि जनाश्रितहृत्कमलं ।
कमलां कमलोज्जितसद्वपुषे कमलप्रभदेव नमो भवते ॥ ६ ॥

नीलरत्नभास्सपद्मभांचितोग्रविग्रहो ।
ध्यानवन्हिसन्निशानकर्मकक्षनिग्रहः ॥
अस्तबाह्यमध्यवर्तितुर्यविंशतिग्रहो ।
नूयते सुपार्श्वकोऽस्तकुत्सवाक्कदाग्रहः ॥ ७ ॥

शीतरश्मिरश्मिजालगौरकांतिदेहभाक् ।
सप्ततत्वदेशनैकसप्तभंगगर्भवाक् ॥
शीतदीधितीद्धलक्ष्मणार्च्यचन्द्रमः प्रभः ।
स्तूयते मनोवचः सुकाययोगशुद्धितः ॥ ८ ॥

कुन्दपुष्पशुभ्रदेवैवत्तया प्रसिद्धिता
आगमप्रमाणयुक्तियुक्तधर्म्यनव्यवाक् ॥
पुष्पदन्तइत्यभूत्समस्तदेव देवराट् ।
यः ममेस्तु बुद्धये समृद्धये जिनेश्वरः ॥ ९ ॥

शीतरश्मिचन्दनौघगांगवारिशीतता ।
धर्मदेशनांशुगर्भशीतवाक्यरश्मिभिः ॥
यस्य शीतलस्य तं नमाम्यहं गिरस्तुता ।
वेदनीयकर्मधर्मनाशनाय वं जिनं ॥ १० ॥

श्रेयांसं देवदेवं सुरपतिमहितं पूज्यपादं जिनेन्द्रं ।
भक्तिप्रह्वेन्द्रनम्रोन्मुकुटमकरिकोद् घृष्टपादारविंदं ॥
केवलज्ञानभानु त्रिदशनरजनैर्गीतकीर्तिसुमूर्तिं ।
शांतं गम्भीरनादं निरुपमसुखदं भावतोऽहं नमामि ॥ ११ ॥

श्रीवासुपूज्यमनघं जगतां दयानं ।
[illegible]गमनाकचरिञ्चवानं ॥
[illegible]कुलकलितानिमादहान ।
सुज्ञानरूढ [illegible]लक्षणमादधानं ॥ १२ ॥

विमलेशमलं जिनराजवरः ।
सव [illegible] दवनाहरु लक्षमरः ॥
[illegible]मोहनिनभञ्जनरः ।
[illegible] भवतु सदोऽतिहरः ॥ १३ ॥

अनन्तमपारपरं पराणं ।
विनयनकं सौख्यकरं नराणां ॥
अनन्तनाथं करुणानिधानं ।
वन्देऽहमष्टापदमानमाप ॥ १४ ॥

इति चतुर्दशतीर्थकरस्तुतिं पठित्वा मण्डलकोपरि पुष्पाक्षतान् क्षिपेत् ।

अथ वृषभादि चतुर्दशतीर्थकराष्टकं ।

श्री पञ्चाशीतिमेकजान् वृषादिन् वृषनायकान् ।
संस्थापयामि सद्भक्त्या वृषभाद्यांश्चतुर्दश ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशतीर्थंकराः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

गंगादितीर्थोद्भववारिपूरैः ।
शीतैः सुगन्धैः प्रयजे जिनेन्द्रान् ॥
द्विः सप्तसंख्यादिजिनान् सुभक्त्या ।
नार्हद्गणाधिपादपद्मान् ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो [illegible] निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीचन्दनैर्हिमभृङ्गकूरैः शीतसुगन्धमलयाद्रिजातैः ।
द्विः सप्त संख्यादि० ॥ चन्दनम्० ॥
सन्मौक्तिकैर्वा कलमाक्षतौघैः ।
शुभ्रैः सुदीर्घैः कमलादिवा हि ॥ द्विसप्त० ॥ अक्षतान्० ॥
मल्लीजपाकुन्दकदम्बजाती ।
सच्चंपकैः पद्म सुपारिजातैः ॥ द्विसप्त० ॥ पुष्पम्० ॥
सन्मोदकैः खज्जकशर्कराघैः ।
सद्राजनम्र्यश्चरुभिर्मनोज्ञैः । द्विसप्त० ॥ नैवेद्यम्० ॥
सद्रत्नकर्पूरघृतादिभवैः सुदीपैः ।
दीपैस्तमोनाशकरैर्वरिष्ठैः ॥ द्विसप्त० ॥ दीपं० ॥
धूपैः सुगन्धैरगुरुद्भवैर्वा संधूपिताशैर्बहुलुब्धभृंगैः । द्वि० ॥ धूपं० ॥
सन्नालिकेराम्रसुदाडिमौघैः फलैः सुनारिंगकपित्थपुंगैः ।
द्विः सप्त० ॥ फलं० ॥

सद्वारिचन्दनशुभाक्षतकुन्दपुष्पै-
र्नैवेद्यकैर्वरसुदीपसुधूपपुंगैः ॥
नारायणो यजति देवनरेन्द्रपूज्यान् ।
द्विःसप्तसंख्यजिनपान् वरपात्रसंस्थैः ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येक पूजा।

सद्दर्शनावगमचारुचरित्रयुक्तं ।
विश्वामरार्चितपदांबुजसन्निरुक्तं ॥
नाभेयनंदनमहं वसुकर्ममुक्तं ।
शुद्धोदकादिभिरिमैर्जिनमर्चयामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सद्धर्मप्रवर्तकाय वृषभतीर्थंकराय जलादि अर्घं० ॥ १ ॥

मिथ्यांधकारविनिवारणपद्ममित्रं ।
भव्यांगिपद्मवरबोधनपद्ममित्रं ॥
कर्मोद्भटैरजितसज्जितशत्रुपुत्रं ।
वारादिभिर्जिनमहं प्रयजे सुभक्त्या ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं कर्माष्टकरहिताय श्री अजितजिनदेवाय अर्घं० ॥ २ ॥

शैवं सौख्यं संभवत्यस्य लोके ।
भक्त्या स्तुत्या चंदनेनार्चया च ॥
तत्संप्राप्तं संभवाख्यं जिनेंद्रं ।
जेतारेयं पूजयाम्यंबुमुख्यैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं शिवंकराय श्री संभवतीर्थंकराय अर्घं० ॥ ३ ॥

यश्च दर्शनादिभिः सुनंदयत्यनुद्धतान् ।
पन्नगाधिपामरेंद्रनाकिनः समुत्सुकान् ।
मोहनीयकर्मधर्मघातनैकदक्षकं ॥
तं सदाभिनंदनं यजेऽष्टधोदकादिभिः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं लोकाभिनंदकाय श्री अभिनंदनजिनाय अर्घं० ॥ ४ ॥

क्रोधलोभमानमोहमारसारमल्लको-
माथनैकमल्लतुल्यदोषहारकं सदा ॥
क्षीरनीरदिव्यहीरनीरचंदनादिभिः ।
संयजे जिनेश्वरं सु पंचमं सुभक्तितः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं क्रोधाद्युन्मथकाय श्री सुमतितीर्थंकराय अर्घं० ॥ ५ ॥

नीलकंजपत्रनेत्ररक्तकंजचक्रभं ।
रक्तपंकजातगात्रसत्सुसीममातृकं ॥
रक्तपंकजोज्वलक्षकर्मकक्षहंतृकं ।
वारिचन्दनादिभिर्यजे सुषष्टमं जिनं ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकराय अर्घं० ॥ ६ ॥

कंदर्पसिन्धुरविदारणपंचवक्त्रः ।
सन्नीलरत्नसमभांचितपुण्यगात्रः ॥
सद्द्रव्यपकजविकस्वरबालमित्रः ।
संपूज्यते वनसुगन्धमुखैः सुपार्श्वः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं कंदर्पोन्मथकाय श्रीसुपार्श्वतीर्थंकराय अर्घं० ॥ ७ ॥

सम्पूर्णचन्द्रोज्वलदिव्यगात्रं ।
सम्पूर्णचन्द्रांकसुबोधपात्रं ॥
चन्द्रप्रभं चन्द्रमिवद्वितीयं ।
द्रव्यैर्वनादिप्रमुखैर्यजेऽहं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घं० ॥ ८ ॥

भूरिभव्यचित्तहारि सौख्यकारिवाग्भिरं ।
पुष्पदन्तनामधर्मपंकमं दिगम्बरं ॥

भुक्तिमुक्तिसारसौख्यसम्पदाकरं परं ।
पूजयामि भक्तितोष्टधोदकादिभिर्जिनं ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकराय अर्घं० ॥ ९ ॥

त्रैकाल्यवस्तु निचयं स चराचरं च ।
जानाति पश्यति सदा युगपज्जिनो यः ॥
दिव्याविचित्रशुभशक्तिधरं प्रभुं तं ।
चर्चे जलादिकचयैर्जिनशीतलेशं ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥ १० ॥

श्रेयान् जिनः परमसंततसौख्यकारी ।
रूपप्रभृत्यककराष्टमदापहारी ॥
सम्पूज्यते जिनवरोऽष्टजलादिसारैः ।
द्रव्यैर्मनोवचनकायविशुद्धिभाजः ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसतीर्थंकराय अर्घं० ॥ ११ ॥

श्री वासुपूज्यं वसुनाथपूज्यं
तत्वार्थसार्थं प्रतिबोधदक्षं ॥
सद्बोधनिर्भर्त्सितवादिपक्षं ।
चर्चाम्यहं वारिसुचन्दनाद्यैः ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घं० ॥ १२ ॥

विमलं मलवर्जितगात्रधरं ।
कमलापतिसेवित पत्कमलं ॥
वरशूकरलांछनमर्तिहरं ।
प्रयजे कमलप्रमुखैः सुजिनं ॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥ १३ ॥

मव्यांभोरुहबोधनैकतरणिं सेधांकविभ्राजितं ।
कंदर्पोद्भटकुंभिकुंभदलने सत्यं च वक्रोपमं ॥
अज्ञानभुविभेदनैकपरशुं दुर्वादिगर्वापहं ।
चर्चेऽनन्तमनन्तसद्गुणमणिव्रातास्पदं वार्मुखैः ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथतीर्थंकराय अर्घं० ॥ १४ ॥
देवेन्द्रवृन्दमुनिवंदितपादपद्मान ।
आदीश्वरप्रमुखधर्ममुतीर्थनाथान् ॥
द्रव्यैश्चतुर्दशजलादिवसुप्रमैस्तान् ।
अर्घेण संयजतिवर्णिनरायणाख्यः ।
ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

घत्ता ।

नतकल्पमहेन्द्रा नमितमुनीद्राश्चंद्रार्चित पदकमलवरा ।
नुतबुद्धिगणींद्रा दीप्तिदनेंद्रास्तेजयंतु जिनवरनिकरा ॥
जय वृषभ वृषभ मुनि सेव्यपाद, जय नमित सुरासुर दिव्य नाद ।
जय अमलकमलदल नयनसार, जय अजित जिनेश्वर तरणतार ॥
जय शंभव शंकर सुख निधान, जय अजरामर पद धर विमान ।
जय अभिनंदन नंदित मुनींद्र, जय सुरनर खेचर मही वितंद्र ॥
जय सुमति जिनेश्वर सुमतिकार, जय सुमनोमल गुणगण सुधार ।
जय रक्त कमलसम गात्र देव, जय कमलापति यति विहित सेव ॥
जय शोभन पार्श्व सुपार्श्वराज, स्वस्तिक लांछन सुजिनपराज ।
जय चंद्रप्रभ वर चंद्र गात्र, जय चंद्रेंदित जिन परम पात्र ॥४॥

जय पुष्पदंत सित पुष्प दंत, जय मकर सुलांछन परम शांत ।
जय शीतल शीतल वचन भंग, जय द्रुत कनकाभ शरीर चंग ॥
जय श्रेयो जिनवर परम धाम, जय विजित सुदुर्जय विकटकाम ।
जय वासुपुज्य वर महिष लक्ष, जय विजित सुदुर्जय मोह पक्ष ॥
जय विमल विमल गुण निर्विकार, जय प्रवर वराह सु ऋक्ष धार ।
जय अनंत परम गुण गण गरिष्ट,जय त्रिभुवनपति नुत पद वरिष्ट॥

घत्ता ।

सकलगुण गरिष्टान्निर्जितानंगदुष्टान् -
र्नमितसुरमहिष्टान् क्षिप्तकर्मारिकष्टान् ॥
वसुसुगुणवरिष्टानर्घयामीह शिष्टान् ।
मनसि परमनिष्टो वर्णि नारायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्दशजिनेभ्यः जयमाला महार्घं ।

आनन्दाब्धिविवर्धनैकविधवः संसारविध्वंसकाः ।
अज्ञानांधविभेदनेन सदृशास्त्रैलोक्यलोकार्चिताः ॥
कंदर्पोत्कटकुम्भिदारुणहरिप्रायाः सुशांतिप्रदाः ।
श्रीमंतो वृषभादयो जिनवराः कुर्वंतु मे मंगलं ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्तुति ।

छप्पा ।

वृषभाजित जिनदेव सम्भव अभिनन्दन जाणो ।
सुमति पद्म पहपास विधुपह सुविधि वखाणो ॥
शीतल ने श्रेयंस द्वादश वासुपुजेसर ।
विमल कमल दलनेन अनन्तगुणअनन्त जिनेश्वर ॥

एह चतुर्दश जिनवरा, धर्मतीर्थपद उद्धरण ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, सकल संघ मंगलकरण ॥

इति चतुर्दश तीर्थंकर प्रत्येक पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश प्रकीर्णक गुणपूजा ।

सामायिकादिसुचतुर्दशभेदभांजि ।
प्रकीर्णकानि जिनदेवमुखोद्भवानि ॥
वैराग्यभावजनकानि सुनिर्मलानि ।
संस्थापयामि सुविधिपूर्वकमाह्वयेऽहं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णा अत्रावतरावतर संवौषट् स्वाहा । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

सर्वभूतसमाकारं सामायिकयुतं मुनिं ।
जलाद्यष्टविधैर्द्रव्यैः पूजयामि तमुत्तमं ॥

ॐ ह्रीं सामायिकक्रियायुक्तमुनये जलादिकं ॥ १ ॥

१–व्रत कथाओंमें और कोई कोई जगह १४ प्रकीर्णककी जगह सिद्धोंके १४ गुणोंकी पूजा की है, सो उसी माफिक नीचे सिद्धोंके १४ गुणोंकी पूजा दीजाती है ।

सिद्धके चतुर्दश गुण पूजा ।

त्रिकालसंभवाः सिद्धाः चतुर्दशगुणोज्वलाः ।
अत्रैवानन्तसंस्थाने सम्यक्तिष्ठंतु सादरात् ॥

इति पठित्वा आह्वानन स्थापनं सन्निधिकरणं ।

चतुर्विंशतिदेवानां स्तवनं प्रतिपादकं ।
पूजयाम्यष्टधा द्रव्यैर्जलादिभिरहं मुनिं ॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनस्तुतिप्रतिपादकाय मुनये जलादिकं ॥२॥

सिद्धस्य चतुर्दशगुणाः ।

ये सिद्धाः कर्मनिकृत्य तपोभिर्द्वादशात्मकैः ।
यजेऽहं जलगंधाद्यैः सिद्धान्तान् तत्पदाप्तये ॥
ॐ ह्रीं तपसिद्धेभ्य नमः जलादिकं ॥ १ ॥

ये विनयादिभिः सिद्धाः पंचसज्ज्ञानसत्तमाः ।
यजेऽहं जलगन्धाद्यैः सिद्धान्तान्तत्पदाप्तये ॥
ॐ ह्रीं विनयसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ २ ॥

कर्मनिर्मूलनं कृत्वा संयमे सिद्धतां गताः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं संयमसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ३ ॥

चारित्रादिगुणैः सम्यक् कर्मनिर्मूल्यसिद्धिगाः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं चारित्रसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ४ ॥

श्रुतज्ञानेन संसिद्धाः कर्मनिर्मूल्य सिद्धिपाः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं श्रुताभ्याससिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ५ ॥

निश्चयात्मकभावेन सिद्धाः कर्मविघातकाः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं निश्चयात्मकभावसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ६ ॥

नष्टशरीरिणः सिद्धाः ज्ञानदेहविजृंभिताः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ७ ॥

अनन्तबलसंबाधाः क्षयाति कर्मजालिनः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं बलगुणसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ८ ॥

प्रातर्मध्यान्ह संध्यासु देवानां पूजने रतं ।
पूजयाम्यष्टधाद्रव्यैर्मुनींद्रं विधिपूर्वकं ।
ॐ ह्रीं त्रिकालदेववंदनायुक्तमुनये जलादिकं ॥ ३ ॥

अनन्तदर्शनोपेताः पश्यंति ये चराचरं । यजेऽहं ॥
ॐ ह्रीं दर्शनगुणसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ९ ॥
अन्तरायक्षयात् सिद्धा वीर्यानन्तविवर्धिताः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यसम्पन्नसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ १० ॥
शुद्धशूक्ष्मगुणोपेताः क्षयाच्च नामकर्मणः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणोपेतसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ ११ ॥
अवगाहनेन संसिद्धाः मिलिता ये परस्परं । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं अवगाहनगुणोपेतसिद्धेभ्यो जलादिकं ॥ १२ ॥
अगुरुलघुसद्भावात निराश्रयास्तपः श्रिताः । यजेऽहं० ॥
ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणगरिष्ठसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ १३ ॥
वेदनीयक्षयादव्याबाधसंगुणगोचराः । यजेऽहं ॥
ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसमृद्धिसिद्धेभ्यो नमः जलादिकं ॥ १४ ॥

नवसुलक्षसरातपयोजनैः परमितं वरलोकसुमूर्धकं ।
यममवाप्य सुसिद्धगुणस्थितं वरमहार्घमहं वितरामितं ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणपूरितसिद्धेभ्यो पूर्णार्घं ।

वृषभादिवर्धमानन्ताः षोडशचाष्टसंयुताः
देवादिचक्रवादीनां तस्मै पुष्पांजलिं क्षिपेत ॥
पुष्पांजलिः ।

आश्रवानां निरोद्धारं प्रतिक्रमणकारकं ।
पूजयाम्यष्टधाद्रव्यैर्मुनींद्रं विधिपूर्वकं ॥
ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणक्रियायुक्तमुनये जलादिकं ॥ ४ ॥
गुर्वादियेतिवृद्धेषु विनयक्रियया युतं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं गुर्वादिकधर्मवृद्धविनयक्रियायुक्तमुनये जलादिकं ॥ ५ ॥
दीक्षाग्रहणशिक्षादि कृतिकर्मपरं वरं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं दीक्षाग्रहणशिक्षादियुक्तमुनये जलादिकं ॥ ६ ॥
यत्याचारोपदेष्टारं दशवैकालिकं परं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं दशवैकालिकोपदेशकायमुनये जलादिकं ॥ ७ ॥
उपसर्गाः सहे धीरमुत्तराध्ययने रतं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनरतमुनये जलादिकं ॥ ८ ॥
कल्पादिव्यवहारेण युतं दोषविघातकं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं कल्पव्यवहारयुक्तयुनये जलादिकं० ॥ ९ ॥
कल्पाकल्परतं काले योग्यवस्तुग्रहे परं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं कल्पाकल्पयुक्तमुनये जलादिकं० ॥ १० ॥
षट्कालाचरणोद्युक्तं प्राणपोषकदेशकं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं महाकल्पोपदेशकायमुनये जलादिकं० ॥ ११ ॥

दुर्वारावारुणेन्द्राजितपवनजवा वाजिनश्चेन्द्रनोद्या ।
लीलास्वस्रोस युक्तयः कृतकरचमरोद्भासिताराज्यलक्ष्मीः ॥
उच्चैश्चातापपत्रं नवनिधिसहितं मेदनी सागरान्ताः ।
प्राप्यंते त्वत्प्रसादात त्रिभुवनमहिता शाश्वती धर्मवृद्धिः ॥
इत्याशीर्वादः ।

१ धर्म ।

पुण्डरीकपरं देवं सुचिकित्सोत्पत्युपदेशकं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं पुण्डरीकोपदेशकाय मुनये जलादिकं० ॥ १२ ॥
महादि पुण्डरीकाख्य देष्टारं करुणाकरं । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं महापुण्डरीकोपदेशकाय मुनये जलादिकं० ॥ १३ ॥
अशीतिकोपदेष्टारं व्यवहारनये परे । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं अशीतिकोपदेशकाय मुनये जलादिकं० ॥ १४ ॥
प्रकीर्णकान्यंगबहिर्भवानि सामायिकादीनि चतुर्दशानि ।
संपूजयाम्यर्घवरेण भक्त्या जलादिभिर्वर्णिनरायणाख्यः ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णकेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

नतपरम सुरेन्द्रा, नमित नरेन्द्रा, कीर्ति कांतिवर दीप्तिधराः ।
वरऋक्ष दिनेन्द्रा, बुद्धि गणेन्द्रास्तेजयंतु मुनिवरनिकराः ॥
श्री सामायिक गुणसहित नमो, वर त्रिविध दूषण रहित नमो ।
स्तुत चौविस जिनवर पाय नमो, जिन क्रोधादिक कुकषाय नमो ॥

जिनवन्दनशुभकृतकाय नमो, पद नमित सुरासुर राय नमो ।
प्रतिक्रमणप्रकाशितबोध नमो, कृत पंच दुराश्रवरोध नमो ॥
कृत गुरु मुनीवर जन विनय नमो, वर तत्व प्रकाशित सुनय नमो ।
निरुपम शुभ संयम सहित नमो, नरवर सुख रंजनमहित नमो ॥

उपदिष्ट यती जन चरण नमो, नव नय कलितागम धरण नमो ।
उपसर्ग सहन महाधीर नमो, दोइविंशति परिषह वीर नमो ॥
व्यवहार क्रिया गुण कथित नमो, अष्ट मदरहित मुनि नयित नमो ।
हेयाहेय विचार सुधरण नमो, कमलापति सेवित चरण नमो ॥

गुणिजन गण पोषण सहित नमो सुरनर विद्याधर महित नमो।
वर द्वादश विधि तप चरण नमो, सुरनर खेचर पद धरण नमो ॥
षट् द्रव्य दरसावन वीर नमो, सम तत्व प्रकाशन धीर नमो।
पचास्ति काय गुण धरण नमो, विकार प्रमाद दूरीकरण नमो ॥

घत्ता।

परम गुणांबुज दुरित तिमिरहर, ज्ञानादि शासन कुमत ने हरो।
गुणगण कमलाकर नमित सुरासुर, नारायण ब्रह्म सौख्य करो ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशप्रकीर्णकेभ्यो पूर्णार्घं।

शांति वृद्धि सुनरेन्द्रऋद्धि।
स्फूर्ति सुकीर्ति वरस्तु प्रलब्धि ॥
सत्कर्म सिद्धि धृतिमातिशंतु।
प्रकीर्णकज्ञानदरास्त्वकं वः ॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पय।

सामायिक जिनस्तववन्दन जिन पूजनि हि जाणो।
प्रतिक्रमण मुनि विनय सुनय कृति कर्म वखाणो ॥
दशवैकालि नाम उत्तराध्ययन मन आणो।
कल्पव्यवहार सु नवम कल्पाकल्प वखाणो ॥
महापुण्डरीक सु महा-पुण्डरीक अशीति लह्या।
नारायण एवं वदंतं चौदप्रकीर्णक जिन कह्या ॥

इति चतुर्दश प्रकीर्णक पूजा समाप्तम्।

अथ चतुर्दश कुलकर पूजा ।

मतिज्ञानप्रगल्भांगान सुमनून् परमायुषः ।
संस्थापयामि सद्बुद्ध्यै प्रतिश्रुतिपूर्वकान ॥

ॐ ह्रीं प्रतिश्रुतिप्रमुखचतुर्दशकुलकराः अत्रावतरतावतरत । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा ।

यात्रं मन्दशृणोत्स्वमाञ्चन्द्रार्कज्योतिषां प्रभां ।
प्रतिश्रुतिः समाख्यातः पूज्यतेऽसौ गुणाग्रणीः ॥

ॐ ह्रीं प्रतिश्रुतिकुलकराय अर्घं० ॥ १ ॥

नक्षत्रांकितशुभ्राभ्रदर्शनाज्ज्योतिषां प्रभां ।
भीतिं न प्राप सन्मत्या सन्मतिः पूज्यते मया ॥२॥

ॐ ह्रीं सन्मतिकुलकराय अर्घं० ॥ २ ॥

क्षेमं चकार यो लोके प्रजानां भोगभुज्जुषां ।
क्षेमंकरत्वमाप्तोऽसौ पूज्यते पुण्यभाजनः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं क्षेमंकरकुलकराय अर्घं० ॥ ३ ॥

क्षेमंधरो सदा लोके प्रजानां क्षेमधारणात् ।
जलाद्यष्टविधैर्द्रव्यैः पूज्यतेऽसौ प्रगल्भवाक् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं क्षेमंकरकुलकराय अर्घं० ॥ ४ ॥

भोगभूमिजुषां नृणां सीमकृत्वा नरोत्तमः ।
सीमंकर इति ख्यातिं गतोऽसौ पूज्यते गुणी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सीमंकरकुलकराय अर्घं० ॥ ५ ॥

तरुभिः क्षेत्रमर्यादां यो करोद्भोगभुज्जुषां ।
सीमंधर इति ख्यातिं प्राप्तो सः चर्च्यते गुणी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सीमंधरकुलकराय अर्घं ॥ ६ ॥

वाहोप-देशकाकेऽस्मिन् ख्यातो विमलवाहनः ।
कमलाद्यष्टधाद्रव्यैः पूज्यते कमलापतिः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं वाहनोपदेशकाय विमलवाहनकुलकराय अर्घं० ॥ ७ ॥

पुत्रास्यलोकसंदानाच्चक्षुष्मान् भवद्भुवि ।
भोगभूमिभवां योऽसौ पूज्यते गुणवान् प्रभुः ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं चक्षुष्मान् कुलकराय अर्घं० ॥ ८ ॥

भोगभूमिभवार्याणां संस्तुवात्परमादरात् ।
यशस्वदाख्यतां प्राप्तः पूज्यतेऽसौ मनोहरः ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं यशस्वान् कुलकराय अर्घं० ॥ ९ ॥

चंद्रेणाक्रीडयद्बालान् भोगभूमिभुवां मुदा ।
अभिचंद्राख्यतां प्राप्तः पूज्यते चंद्रमप्रभः ॥
ॐ ह्रीं अभिचंद्रकुलकराय अर्घं० ॥ १० ॥

हायनान्यजीवन्यस्मिन् राज्यं कुर्वंति भूतले ।
चंद्राभकोऽर्च्यते नित्यं भोगभूमिभुवांप्रजा ॥
ॐ ह्रीं चंद्राभकुलकराय अर्घं ॥ ११ ॥

राज्यं कुर्वंति सापत्या जीवंतिस्म चिरंप्रजाः ।
यस्मिन्मरुं वसुद्रव्यैः पूज्यते कमलादिभिः ॥
ॐ ह्रीं मरुदेवकुलकराय अर्घं० ॥ १२ ॥

भोगभूमिभुवामपत्यानां गर्भमलापहा ।
प्रसेनदितिति आख्या प्राप्तो सः चर्च्यते मया ॥
ॐ ह्रीं प्रसेनजित कुलकराय अर्घं० ॥ १३ ॥

नाभिरित्या प्रसंख्याति र्नाभिनालनिवर्तनात् ।
प्रजानां यो महाबुद्धिः पूज्यतेऽसौ मया मुदा ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं नाभिरायकुलकराय अर्घं ॥ १४ ॥

सद्वारिचंदनशुभाक्षतपुण्यपुष्प-
-नैवेद्यरत्नवरदीपसुधूपपुंगैः ।
अर्घं ददाति विजयार्द्दसुकीर्तिशिष्यो ।
नारायणः कुलकरेभ्य इह प्रमोदात् ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यः पूर्णार्घं० ।

अथ जयमाला ।

घत्ता ।

कमलाननरुचिरा गुणगणनिचिता नीलोत्पलदलनयनवरा ।
शुभमार्गविवर विभवा रतिपति समवा एते जयंतु कुलकरा पुरुषाः ॥
प्रतिश्रुति कुलकर गुणगण निधान. शुभ भोग भरांकृत परम मान ।
शुभ तारकिताभ्र समार्य भीत, विनिवारण सन्मति सरल चित्त ॥
वरभोग धराज मनुष्य लोक, कृत भावुक गत मल विगत शोक ।
कृत भोग धराज सु भव्यकार वर निर्मल भावुक नाम धार ॥३॥
सकलार्य महानग सीमकार, जगती जसु सीम कृत निहार ।
वर वृक्ष लता कृत सीम धार, धृत सीमंधर वर नाम भार ॥४
वर वाहन दर्शित विभव सार, विमलादि सु वाहन नाम धार ।
वर पुत्रानन लोकन सुदेश, विधि दानजु चक्षुष्मदाभिधेश ।५॥

सुयशस्वदिति प्रथिताभिधान, परमार्थानुति स्तुति धृत वितान ।
रमयन् सु प्रजावर चंद्रकेण, स्वभिचंद्र इति श्रुति मायतेन ॥६॥
वर चन्द्राभक इति नाम धार, सकलामल विधु सम कांतिभार ।
सुर राज समान मरु सु देव, चिरजीवन संततिकृत सु सेव ॥
सु प्रसेन विजिद्वर नाम धार, कृत बालक गर्भ पलापहार ।
वर नाभिराज नत नर समाज, कृत नाभि निवर्तन सुखसमाज॥

घत्ता ।

कुलकर वर देवा सुरकृत सेवा, भांतु वरिष्टसुगुणानिकरा ।
सु चतुर्दश संख्या मन बहु कांक्षा, भोगधराज सु सौख्य करा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यो ऽर्घ्यमात्रा महार्घं ।

शांति समृद्धिं वरसौख्यवृद्धिं, बुद्धिं सुलब्धिं परमार्थसिद्धिं ।
स्फूर्तिं सुकीर्तिं वरपूजकानां, करोति नित्यं कुलभृत्समूहः ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

प्रति श्रुति सन्मति नाम क्षेमंकर क्षेमंधर जाणो ।
सीमंकर सुख धाम सीमंधर बहु बखाणो ॥
विमलवाह वर चक्षु यशस्वदभिचन्द्र मनोहर ।
चन्द्राभक मरुदेव प्रसेनजित नाभि नरवर ॥
एह चतुर्दश कुलकरा भोगभूमिज कुल उद्धरण ।
नागादण एवं वदत आर्लोक बहु सुखकरण ॥

इतिश्री चतुर्दशकुलकर पूजा सम्पूर्ण ।

अथ चतुर्दश अतिशय प्रत्येक पूजा।

द्विसप्तसंख्यान्वरदेवनिर्मितान्,
सद्द्रव्यपूज्यातिशयान्मनोहरान् ।
आह्वाननस्थापनसन्निधापनै-
र्भक्त्या यजेऽहं विधिपूर्वकं प्रभो ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयात्रावतरावतर संवौषट् स्वाहा। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

सर्वार्द्धमागधीया वै भाषा यस्य प्रवर्तते।
पूज्यते परया भक्त्या पूजया परमादरात् ॥
ॐ ह्रीं सर्वार्द्धमागधीभाषावर्तभगवते अर्घ्यं ॥ १ ॥

मैत्रीह सर्वजनना विषया यस्य विद्यते।
पूज्यते परया भक्त्या पूजया परमादरात् ॥
ॐ ह्रीं मैत्रीयुक्ताय भगवते अर्घ्यं ॥ २ ॥

सर्वर्तुफलपुष्पाद्या भवेयुर्यस्य पादपाः। पूज्यते०।
ॐ ह्रीं सर्वऋतुफलपुष्पाद्यपादपाय जिनाय अर्घ्यं ॥ ३ ॥

आदर्शतलसंकाशं रत्नं यस्य प्रजायते। पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं आदर्शतलसन्निभरत्नोभूयुक्ताय भगवते अर्घ्यं ॥ ४ ॥

शीतो मंदः सुगंधिश्च वायुरन्वेति यं जिनं ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं सुगंधिवायुयुक्ताय जिनाय अर्घ्यं० ॥ ५ ॥

यस्मिन्विहरतीळायां जनानंदोऽभवत्सदा ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं सर्वजनानंदकराय जिनाय अर्घ्यं० ॥ ६ ॥

योजनांतरभूभागं देवाः कुर्वंति निर्मळं ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं निर्मळभूभागयुक्ताय जिनाय अर्घ्यं० ॥ ७ ॥

मेघाः कुर्वंति यस्योच्चैर्वृष्टिं गंधोदकात्मिकां ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं दिव्यगंधोदकवृष्टियुक्ताय जिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

सप्ताग्रे पृष्ठतः सप्तपद्मानि यत्पदे पदे ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं पद्मोपरि पादन्यासाय जिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

यस्य व्रीह्यादि युक्ताभूरभवद्यत्रभावतः ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं व्रीह्यादि यस्यसंपत्तियुक्ताय जिनाय अर्घं० ॥ १० ॥

यस्मिन्विहरतीहाभूद्गगनं मलवर्जितं ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं निर्मलगगनातिशययुक्ताय जिनाय अर्घं० ॥ ११ ॥

आह्वयंतिस्म चान्येऽन्यान् देवादेवान् सुभक्तितः ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं अन्यदेवाह्वाननयुक्ताय जिनाय अर्घं० ॥ १२ ॥

धर्मचक्रं भवेद्यस्य सहस्रारं सुसूर्यभं ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रयुक्ताय जिनाय अर्घं० ॥ १३ ॥

भृंगाराद्यष्टधा यस्य मंगलं चाभवत्सदा ॥ पूज्यते० ॥
ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्ययुक्तायजिनाय अर्घं० ॥ १४ ॥

जलादिगंधाक्षतपुष्पकाद्यै नैवेद्यकैर्दीपशतैः सधूपैः ।
फलैर्महार्घं प्रददाति शिष्यो नारायणः श्री विजयादिकीर्तेः ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशअतिशयप्राप्तेभ्यो जिनाय महार्घं० ॥

अथ जयमाला ।

सकलविबुधवंद्या देवदेवाभिनंद्याः ।
कृतदुरितनिकंदा भव्यपद्माभिनन्दाः ॥
अतिशयगुणवृंदा नष्टकर्मारिकंदा-
स्त्रिभुवनजनवंदास्ते जिनेंद्रा जयंतु ॥ १ ॥

शुद्धसर्वार्थसन्मागधी वागवादा ।
विश्वकर्मापहा निर्मळा निर्मदादा ॥
सर्वविद्याधिपा धर्मबुद्धिश्वरा ।
सत्वबाधातिगा मित्रता मंदिरा ॥ २ ॥

सर्वपुष्पांचितांगस्थितेः षट्पदैः ।
संस्तुता वा मुदुत्कर्षगैः स्वास्पदैः ॥
निर्मळादर्शतुल्याध्वभूमीश्वराः ।
सर्व भव्यार्च्यपादाब्ज देवेश्वराः ॥ ३ ॥

वायुरन्वेति यान् सद्विहारेश्वरां–
स्तानहं संस्तुवे सिद्धिगामीश्वरान् ॥
सर्वभव्यार्चितान् भव्यमुक्तारिणो ।
दर्शनज्ञानचारित्रसद्धारिणः ॥ ४ ॥

देवदेवाशुभं कुर्वते भूतले ।
शांतधूळी तृणं शांतकीटोपलं ॥
देवदेवाज्ञया कुर्वते निर्मळा ।
मंदगंधोदकां वृष्टिमामोदकां ॥ ५ ॥

देवदेवाधिपाः पद्मसंचारिणः ।
शुद्धभावं गताः सर्वशंकारिणः ॥
भूश्च येषामभूभव्यशाल्यन्विता ।
देवदेवीभभृत्यंगिभिः संस्तुता ॥ ६ ॥
निर्मळं खं सरोवासरं जळामयं ।
यद्विहारे भवत्सर्वदिग्मंडलं ॥

देवदेवीगणा व्यंतराः किन्नरा ।
यद्विहारेऽग्रगामि नः सन्पुत्सुकाः ॥ ७ ॥
दर्पणाद्यष्टधामंगलैर्भक्तितः ।
पूजिता देवदेवीगणैः शक्तितः ॥ ८ ॥

घत्ता ।

श्रीजिनवरदेवाः सुरकृतसेवा अतिविशेषगुणगणनिकराः ।
विकथादिसुकीर्तैरनुपममूर्तैः शिष्यनरायणसौख्यकराः ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयेभ्यो महार्घं० ॥

सकलदेवमनुष्यगणार्चिताः सकलकर्ममदोद्धति वर्जिताः ।
सकलसत्वदयानिधिसंस्तुता सकलसंघसुखाय भवंतु ते ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

मागधी भाषा मित्री ऋतुफलमही मनोहर ।
अनुगत अलि आनंद सुरनर कृत भूमि सुंदर ॥
गंधोदक वर पद्म शालि सुक्षेत्र अनोपम ।
निर्मल गगन सुदेव सेव वर चक्र अनोपम ॥
मंगलाष्ट दर्पण प्रमुख एव अपूर्व वखाणीए ।
नारायण एवं वदति अतिशय चउद वखाणीए ॥

इति चतुर्दशातिशय पूजा संपूर्ण ।

अथ चतुर्दश पूर्वाणाम् प्रत्येक पूजा।

देवदेववक्त्रपद्मनिर्गतानि संवदे।
संस्तुतानि चन्द्रवेन्द्रनागमानुषेन्द्रकैः॥
भुक्तिमुक्तिसारसौख्यदायि पूर्वकाणि च।
स्थापयामि मोदतः सुभक्तितश्चतुर्दश॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवचतुर्दशपूर्वाणि अत्रावतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्॥

आद्यमुत्पादपूर्वं वैचैककोटी प्रमाणकं।
यजेऽहमष्टधाद्रव्यैर्जलचन्दनमुख्यकैः॥

ॐ ह्रीं एककोटीपदप्रमाणाय उत्पादपूर्वांगाय जलादिकं०॥ १॥

अग्रायणीयपूर्वं वै लक्षपणमति प्रभं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं षणवतिलक्षपदप्रमाणाय अग्रायणी पूर्वाय जलादिकं०॥२॥

वीर्यानु सुप्रवादं च प्रोक्तं सप्ततिलक्षकं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं सप्ततिलक्षपदप्रमाणवीर्यानुवादपूर्वाय जलादिकं०॥३॥

अस्तिनास्तिप्रवादं वै षष्टिलक्षप्रमाणकं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं षष्टीलक्षपदप्रमाण अस्तिनास्ति पूर्वाय जलादिकं॥४॥

ज्ञानप्रवादसत्पूर्वं व्येककोटीप्रमाणकं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं एकोनकोटीपदप्रमिताय ज्ञानप्रवादपूर्वाय जलादिकं०॥५॥

षड्भिः संयुक्तकोट्योक्तं सत्यप्रवादपूर्वकं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं षडधिककोटीपदप्रमाणा सत्यप्रवादपूर्वाय जलादिकं॥६॥

आत्मप्रवादपूर्वं वै कोटीषड्विंशतिः स्मृतं। यजेऽहं०॥

ॐ ह्रीं षडविंशति कोटीपदप्रमाण आत्मप्रवादपूर्वाय जल०॥७॥

कर्मप्रवादपूर्वं चाशीतिलक्षाधिककोटिकं । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं अशीतिलक्षाधिककोटीपदप्रमाणकर्मप्रवादपूर्वाय जला०॥८

प्रत्याख्यानं हि पूर्वं च चतुरशीतिलक्षकं । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षपदप्रमाण प्रत्याख्यानपूर्वाय जलादिकं०॥९

पृथुविद्यानुप्रवादं षष्ठीलक्षद्विकोटिकं । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं षष्ठीलक्षद्विकाधिकद्विकोटीपदप्रमाणविर्यानुवादपूर्वाय जलादिकं ॥ १० ॥

कल्याणनामधेयं च षड्विंशति हि कोटिकं । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं षड् विंशतिकोटीपदप्रमाणकल्याणवादपूर्वाय जलादिकं०॥

प्राणानुवादसत्पूर्वं कोटयस्ति हि त्रयोदशं । यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशकोटीपदप्रमाणप्राणानुवादपूर्वाय जलादिकं० ॥

क्रियाविशालपूर्वं च नवकोटीप्रमाणकं ॥ यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं नवकोटीपदप्रमाणक्रियाविशालपूर्वाय जलादिकं० ॥१३॥

लोकबिंदुसुपं पूर्वं सार्द्धद्वादशकोटिकं ॥ यजेऽहं० ॥

ॐ ह्रीं सार्द्ध द्वादशकोटीपदप्रमाणलोकबिंदुपूर्वाय जलादिकं० ॥

अतिसुरभिजलौघैश्चंदनैरक्षतौघै-
र्बकुलचरुसुदीपैर्धूपकैर्नालिकेरैः ॥
मुनिविजयसुकीर्तेः पादसेवाभिशक्तो ।
यजति सकलपूर्वाणीह नारायणाख्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यः पूर्णार्घं ॥

अथ जयमाला।

श्री जिनवरवाणी गुणगणखाणी, अमीय समान सोहामणिय।
मिथ्यामत रहिता बहुगुणसहिता, गंभीर मधुररलीयरमणिय॥
सुउठविकंठवि रहित अभंग, सुअंग विवेदवि सहित सु चंग।
सुमतिपूर्वक आगम सुविशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु एक अनेक अरथ गुण खाण, सु एक मना थई सुण हो सुजाण।
सु शीतळ चंद्र कळासु विशाळ, ते पूजो चउदह पूरव गुणमाळ॥
सुद्रव्यप्रकाशन निर्मल तेज, सु भवियण जन मन उपजे हेज।
कुज्ञान तिमिर नाशन सुविशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु पहेलो उपपाद पूर्व सु जाण, सु दुजो अग्रायणीय वखाण।
सु त्रीजो वीर्यानुवाद विशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु चोथो अस्ति नास्ति सुचंग, सु पांचमो ज्ञान प्रवाद अभंग।
सु छट्ठो सत्य प्रवाद विशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु सातमो आत्म प्रवाद सुसंत, सु आठमो कर्मप्रवाद अनंत।
सु नवमो प्रत्याख्यान विशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु दशमो पृथु विद्यानुप्रवाद, सु अग्यारमो कल्याण नाम सुवाद।
सु बारमो प्राणानुवाद विशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥
सु तेरमो क्रियाविशाळ आख्येय, सु चौदमो लोकबिंदु वरध्येय।
सु जिनवर गणधर कथित विशाळ, ते पूजो चउद पूरव गुणमाळ॥

घत्ता ।

मिथ्यात्व तिमिर हर बोध दिवाकर पढे गणे जे भाव धरी।
नारायण भासे तत्व प्रकाशे मनवांछित फल लछी घणी ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यो जयमाला महार्घं० ॥

श्रीमज्जिनेंद्रमुखपंकजनिर्गतानि ।
धर्मार्थकामफलदानि सुपूर्वकानि ॥
सत्पूजकं प्रमुखसंघजनस्य नित्यं
देवेंद्र मानुष नुतानि भवंतु लोके ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

छप्पा ।

उत्पाद अग्रायणी नाम त्रिजोवीर्यानुवादह ।
अस्तिनास्ति सुखधाम ज्ञान सु सत्य प्रवादह ॥
आतमकर्म प्रवाद नवम सु प्रत्याख्या यह ।
पृथु विद्यानुप्रवाद कल्याण सु पाणावायह ॥
क्रिया विशाल सु लोकबिंदु चउद पूरवह जाणीए ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, जिन सिद्धांत वखांणीए ॥

इति चतुर्दश पूर्वाणां पूजा समाप्त।

अथ चतुर्दश गुणस्थान पूजा ।

गुणस्थानानि पूर्वाणि भाषितानि जिनेश्वरैः ।
संस्थापयामि सद्बुद्ध्या विधिनाहं चतुर्दशं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानानि अत्र अवतरावतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ॥

मिथ्यात्वेनं तता प्राप्ता ये जीवा भव्यतां गता । ?
पूजयामीह सद्भक्त्या जलादिभिरमैः शुभैः ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वगुणस्थानस्थितानंत भव्य जीवराशये जलादिकं० ॥ १ ॥

षडावलिसमायुष्का ये च सासादना स्मृताः । पूजयामी० ॥

ॐ ह्रीं सासादनगुणस्थानवर्तिसम्यग्दृष्टिजीवराशये जलादिकं० ॥

ये जीवाः श्रीजिनैः प्रोक्तास्तृतीयस्थानवर्तिनः । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं मिश्रगुणस्थानस्थितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥३॥

तत्वार्थश्रद्धया युक्ता ये सम्यग्दृष्टयो मताः । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं अविरतगुणस्थानस्थितसम्यग्दृष्टि भव्यराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ४ ॥

देशव्रतसमायुक्ता ये जीवाः शुद्धमानसाः । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं देशव्रतगुणस्थानस्थितभव्यराशिभ्यो जलादिकं० ॥५॥

प्रमत्तमुनयो ये वै दृगविद्याचारित्रधारकाः पूजया० ॥

ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ६ ॥

प्रमादरहिता ये चाप्रमत्तामुनिपुंगवाः । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं अप्रमत्तगु[illegible]भ्यो जलादिकं० ॥ ७ ॥

अपूर्वकरणा ये वै मच्छ्रेणिद्वयसुस्थिताः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं अपूर्वकरणगुणस्थानश्रेणिद्वयमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ८ ॥
करणानाप निवृत्तेस्त्वनिवृत्ताश्च ये स्मृताः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरणगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जलादिकं० ॥९॥
मत्सूक्ष्मसांपरायस्था ये लिंगत्रयवर्जिताः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायस्थितमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ १० ॥
उपशांतकषायस्था ये नराः कश्मलोभिताः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं उपशांतकषायस्थितमुनिराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ११ ॥
क्षीणाः कषाया येषां वै द्वादशस्थानवर्तिनः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं क्षीणकषायगुणस्थानस्थितमुनिराशये जलादिकं० ॥१२॥
घातिकर्मक्षयाद्ये च केवलज्ञानधारकाः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं सयोगकेवलीगुणस्थानस्थितमुनिभ्यो जलादिकं० ॥१३॥
अ इ उ ऋ ऌ स्वायुष्काश्चतुर्दशगुणाधिपाः । पूजया० ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानवर्तिमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ १४ ॥

जलादिचन्दनमवक्षतपुष्पचारु ।
नैवेद्यदीपवरधूपफलैर्महार्घं ॥
नारायणो विजयकीर्तिगुणप्रसादात् ।
यच्छ्यनर्घममलं मुनिपुंगवेभ्यः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानस्थितभव्यजीवेभ्यो महार्घं० ॥

अथ जयमाला ।

सिरि गुणगण ठाणा अमिय समाणा भवियण मुनिवर बोधकरा।
अइ सुमइ णिहाणा मुणिपणमाणा कुमइविणासण दुरियहरा ॥१॥
पठम मिथ्यातह ठाण यहिं भव्व राशि अणंत।
जिणेसर देव कहा।
चउदसि बावण गणहर मुणिवर भव्व कहा ते वदामि य निम्मल
निस्सय सिद्ध पहा ॥ २ ॥
सासादण वर दिट्ठि भणा एक सम कोडि चार।
जिणेसर देव कहा।
चउदसि बावण गणहर मुनिवर भव्व कहा—ते वंदामिय निम्मल
निस्सय सिद्ध पहा ॥ ३ ॥
तिदिय ठाणे णाण मणवरा दो पंचासय कोडि—
जिणेसर देव कहा। चउदसि बावण० ॥ ४ ॥
अविरदथि सय सत्त कोडि समकितवंत पहन्न जिणेसर देव कहा।
चउदसि बावण० ॥ ५ ॥
देस विरद वर सावयए तेरइ कोडपमाण जिणेसर देव कहा।
चउदसि बावण० ॥ ६ ॥
रस खदु अठंकर यणंकड बाण सराण पमत्त जिणे सर देव कहा।
चउदसे बावण० ॥ ७ ॥
रयणख चंदण वइरसहि णवदोसत्तम ठाण जिणेसर देव कहा।
चउदसे बावण० ॥ ८ ॥
अठय ठाणे मुणिव सहा, पूजंता भयहाणि जिणेसर देव कहा।
चउदसे बावण० ॥ ९ ॥

अणियट्टिवर गणयहि मुणिवर गुणगण ठाण जिणेसर देव कह्या।
चउदसे बावण ॥ १० ॥

सुहुमे ठाणे मय रहिता जाण अणुवयपाप जिणेसर देव कह्या।
चउदसे बावण० ॥ ११ ॥

एकादह वर ठाणम्मियें उवसम पच्च कसाय जिणेसर देव कह्या।
चउदसे बावण० ॥ १२ ॥

क्षीण कसाय सु द्वादसवें पंच महव्वय धार जिणेसरदेव कह्या।
चउदसे बावण० ॥ १३ ॥

सयोगेवर केवलीए परम पयत्थ पकास जिणेसर देव कह्या।
चउदसे बावण० ॥ १४ ॥

पंच लहु खर ठिदि धरए कम्म रहिन जिणदेव जिणेसरदेव कह्या
चउदसे बावण० ॥ १५ ॥

घत्ता।

इह चउदह गणे मुणिकयजाणे तत्तपमाणे दुरिय हरे।
सिरि विजय सुकीत्ति अविचल तुत्ति सिहम नरायण सुमइकरे ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानस्थित भव्यराशिभ्यो जलादिकं०।

लक्षाण्यष्टतथाष्टभिर्नवतिरुक्तासा सहस्राहताः।
पंचाव्येकशतानि चोत्तरय मन्येते जिनाः कीर्तिताः॥

सांयांताष्टमुख्याश्च षड्क नवकामध्ये सदंक त्रिताः।
सर्वे ते मुनयो दिशंतु भवतां भूरिश्रियं वंदिताः॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

छप्पा ।

मिछा सासादय दिठि मिस्स अविरय गुण ठाणइ ।
देसविरय परमत्त सत्तम उपमत्त बषाणइ ॥
अपूव्वकरण अनिवत्त सुहम सांपराय सु जाणइ ।
उवसंतइ खीण कसाय जोग अजोग पमाणइ ॥
चउदह ठाणा णामसु जिणवर मणहर मुणिमण्या ।
नारायण ब्रह्मचारी कहिं भव्य जीव श्रवणे सुण्या ॥

इति चतुर्दश गुणस्थान पूजा समाप्त ।

अथ चतुर्दश मार्गणा पूजा ।

गत्यादिभेदतः संति चतुर्दश सुमार्गणाः ।
आह्वानयामि सद्भक्त्या जैनसिद्धान्तमार्गतः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणात्रावतरावतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ॥

स्वर्गादिगतिहेतूनां देशको ये गतस्मयाः ।
यजेऽहमष्टधा द्रव्यैर्मार्गणाश्रितमानसान् ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गादिगतिहेतूपदेशकेभ्यो जलादिकं० ॥ १ ॥

एकेन्द्रियादिजीवानां ये वै रक्षणतत्पराः । यजे० ॥

ॐ ह्रीं एकेंद्रियादिजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ २ ॥

पृथिवीकायिकादीनां रक्षणे लुब्धमानसाः । यजे० ॥

ॐ ह्रीं षट्कायरक्षकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ३ ॥

मनोवाक्काययोगानां हेयाहेयप्रकाशकान् । यजे० ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणाप्रकाशकेभ्यो जलादिकं ॥ ४ ॥

वेदत्रयविमुक्तानां पूर्णसंयमशालिनः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं वेदत्रयरहितमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ५ ॥

कर्महेतुकषायाणां ये नरा भेदने वराः । यजे० ॥
ॐ ह्रीं कषायविध्वंसकेभ्यो जलादिकं० ॥ ६ ॥

ज्ञानोपयोगयुक्ता ये मुनींद्रा मानवर्जिताः । यजे० ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगयुक्तजिनेभ्यो जलादिकं० ॥ ७ ॥

संयमोद्धरणे दक्षाः संयमानां प्रकाशकाः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं सामायिकसंयमोद्धारकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ८ ॥

चक्षुर्णां दर्शनानां ये ज्ञायका मुनयो वराः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं चक्षुरादिदर्शनज्ञापकेभ्यो मुनिभ्यो जलादिकं० ॥ ९ ॥

शुक्ललेश्यारता ये च लेश्याषट्कोपदेशकाः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं षट्लेश्योपदेशकेभ्यो जिनेभ्यो जलादिकं० ॥ १० ॥

भव्याभव्यप्रभेदज्ञाः ज्ञानध्यानधनाश्च ये ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं भव्याभव्यमार्गणाप्रकाशकेभ्यो जलादिकं० ॥ ११ ॥

सम्यक्त्वादि गुणोपेता ये सम्यक्त्वप्रकाशकाः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वोपदेशकेभ्यो जलादिकं० ॥ १२ ॥

संज्ञासंज्ञिप्रभेदानां मार्गणा ये रताः सदा ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं संज्ञासंज्ञिमार्गणाभेदकथकेभ्यो जलादिकं० ॥ १३ ॥

आहारमार्गणोद्युक्ता ये तद्भेदप्रकाशकाः ॥ यजे० ॥
ॐ ह्रीं आहारकमार्गणोपदेशकेभ्यो जलादिकं० ॥ १४ ॥

गत्यादिवेदपृथिवीमित मार्गणाश्रिताः ।
संसारसागरसमुत्तरणैकनिष्ठिताः ॥

अर्घेण रत्नवरभाजनसुस्थितेन तान्।
नारायणो यजति भक्तिभरेण सन्मुनीन् ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

पणविवि जिणदेवा, सुरकयसेवा, पुणु पणविवि मुणिणाण घणा।
चउदश वर मगणा, जिण गणहरभणा, ता कहामि सुणु भव्वजणा।

सुरगइ णरगइ तिरिय णाय गइ णायहरा।
इन्द नरिंद फणिंद सुचन्द तिलोय वरा॥
ते वंदामिय सामिय णिम्मल भावधरा।
पुणु पणमामिय सत्तिय भत्तिय भाव मुदा॥ २॥

फासण रासण, घाण णयण, वरकणमया।
सत्ताविसदि माणाविजय इन्दिय विसया॥ ते वंदामि० ॥३॥
पुढवी आइसु थावर तस्स दया विमला।
इरिया जुमंतर दिठिम सुछिय पय कमला॥ ते वंदामि० ॥४॥
मणवय काय तिण्णिमित जोग सुभेय करा।
अणुभय भासयमासिय तचाय मणहरा॥ ते वंदामि० ॥५॥
पुरुस चेयथीवेय नपुंसयवेय वहा।
झाणवणासिय कम्मपभासिय मुत्ते पहा॥ ते वंदामि० ॥६॥
कुछिय कोह कुपाण कुमाया लोह जया।
णिज्जिय हासरदीरदिसाकहु मत्त भया॥ ते वंदामि० ॥७॥
कुमइ सुमइ मणपज्जय णाणुवदेमवरा।
केवलणाण पकासिय भासिय अट्ठवरा॥ ते वंदामि० ॥८॥

सामाइयादिय संजम खयकय कम्मगणा ।
दीव धुणी पयिबोहिय सोहिय भव्व जणा ॥ ते वंदामि० ॥९॥
वर कुस्मादिय दंसण भेय पकास करा ।
केवल दंसण पेक्खिय लोय अलोय वरा ॥ ते वंदामि० ॥१० ॥
सुक्क सुपउपक वोत .... ।
लेस्सा छक्खयभेय पभासण भव्व हिदा ॥ ते वंदामि० ॥११॥
भव्व सु मग्गण मग्गिय भव्व सु जीव जणा ।
भव्व भवोदहि तारण णाव समाण मणा ॥ ते वंदामि० ॥ १२॥
मिच्छत्तादि सम्मत्त पयार पयास बुहा ।
जिय मय जिय उठ सग्ग पमाद खुहाय मुहा । ते वंदामि० ॥१३
सणमग्गण दरिसय सणिय जीव पहा ।
दुट्ठ कम्मट्ठ गयट्ठ विहट्टण सिंह जहा ॥ ते वंदामि० ॥१४॥
आहारय मग्गण दरिसय आहारह जीव पहा ।
विग्गहगइ अणाहारय संसण वोहवहा ॥ ते वंदामि० ॥१५॥

घत्ता ।

सिरि जिण मुणि वन्दा, णयणाणन्दा भव्वकुमुयवर बोहकरा ।
सिरि विजय मुणिंदा पापणिकन्दा, सिस्स नरायण दुरिय हरा॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणोपदेशकेभ्यो पूर्णार्घं० ।

तीर्थंकरा गणधरा मुनीपुंगवा नः ।
श्रीमज्जिनेन्द्र वरयज्ञ विधिप्रणिष्ठाः ॥
कारुण्यबुद्धिकलिताशयभव्यसार्था ।
नरायणेन महिताः प्रदिशंतु भव्यं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

छप्पय ।

चउगइ इंद्रिय पंच काय फुनि छक्क भणिजे ।
पणदस जोग पमाण वेय फुनि तीन्ह गणीजे ॥
चउकसाय फुनि णाण संयम फुनि दंसण चउक्कह ।
लेस्सा छक्क वखाण भव्व फुनि सम्मक वन्तह ॥
सणि आहारय णायसे चउदस मग्गण जाणीए ।
नारायण वाणी वदन्त जिन सिद्धांत वखाणीए ॥

इति चतुर्दशमार्गणा पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश जीवसमास पूजा ।

द्विसप्तसंख्यत्वरजीवसमासरक्षा-
नेकेन्द्रियप्रमुखजीवविवेकदक्षान् ॥
नागेन्द्रचन्द्रमनुजेन्द्रसुरेन्द्रवक्षान् ।
संस्थापयामि विधिना वृषतीर्थनाथान् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनिगणा अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

पर्याप्तपार्थिवानां ये जीवानां रक्षणोद्यताः ।
संपूजयामि तान् भक्त्या सद्द्रव्यैः कमलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तपृथ्वीकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ १ ॥

अपर्याप्तकजीवानां पार्थिवानामहिंसकाः ।
संपूजयामि तान् भक्त्या सद्द्रव्यैः कमलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकअपकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ २ ॥

अप्कायिकाख्यपर्याप्तसत्त्वरक्षणतत्पराः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तकअपकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ ३ ॥
अपर्याप्ताख्य जीवानां जलानां ये प्ररक्षकाः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकाप्कायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥४॥
तैजस्कायिकजीवानां पर्याप्तानां दयापराः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तकतैजस्कायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥५॥
तैजसानामपर्याप्तसत्वानां ये दयान्विताः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकतैजस्कायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥६॥
पर्याप्तकाख्यवायूनां रक्षणे ये हि तत्पराः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तकवायुकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ ७ ॥
अपर्याप्तकवायूनां रक्षा संसक्तमानसाः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकवायुकायिकजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥८॥
वनस्पतिसमुद्भुत पर्याप्तांगिप्रपालकान् । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तकवनस्पतिजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥ ९ ॥
वनस्पतिसमुत्पन्नापर्याप्तांग्यप्रपालकान् संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकवनस्पतिजीवरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥१०॥
द्वींद्रियादि त्रयाणां ये पर्याप्तानां प्रपालकाः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तद्विंद्रीयादिविकलत्रयरक्षकेभ्यो जलादिकं० ॥११॥
अपर्याप्तकभेदानां रक्षका विकलात्मनां । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्विन्द्रीयादिविकलत्रयजीवरक्षकेभ्यो जला० ॥१२
ये प्ररक्षंति पंचाक्षान् पर्याप्तभेदभाजिनः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्तकपंचेन्द्रीयजीवरक्षकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥१३॥
अपर्याप्तक पंचाक्षप्राणरक्षणवर्तिनः । संपूज० ॥
ॐ ह्रीं अपर्याप्तकपंचेन्द्रियजीवरक्षकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥१४

द्विसप्तसंख्यवरजीवसमासरक्षा-
नेकेन्द्रीयप्रमुखसत्त्वविवेकदक्षान् ।
संपूजयामि कमलप्रमुखैर्मुनींद्रान्-
द्रव्यैरहं विजयकीर्तिमुनींद्रशिष्यः ।

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकेभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

णासियमय ठाणे, चउविहणाणे, झाणट्ठिय णियमय कमले ।
जीव चउद्द समासे, विविह पकासे, णिम्मल भासे मुणि विमले ॥

पुढवी पज्जय भेय विवेय करं सुकरं ।
तह अपज्जय भेय विवेय करं पवरं ॥
तं वन्दे सिरणामिय सामिय पापहरं ।
पुणु पणमामिय गणहर मुणिवर साहु भरं ॥ १ ॥

अपसु पज्जय जीय विणीयमणो विमळं ।
तह अपज्जय सत्तय सत्त मणो कमळं ॥ तं वंदे० ॥ २ ॥

तेउ सुभेउ पभायि पज्जय भेय वरं ।
तह अपज्जय तेउ सुभेउ उपमाणकरं ॥ तं वंदे० ॥ ३ ॥

पज्जय वायु सुभाउ अमेय पमेय धरं ।
तह अपज्जय वाउ सुकाउविदेशहरं ॥ तं वंदे० ॥ ४ ॥

वणप्फदि पज्जय जीव समासय भीदिहरं ।
तह अपज्जय वणप्फदिसत्तय संतिकरं ॥ तं० वंदे० ॥ ५ ॥

पज्जय छिंदिय तिदिय चउरिंदि भेय वयं ।
तह अपज्जय छिति चउरिंदिय सत्त दयं ॥तं वंदे०॥६॥
पज्जय पंचवि इंदिय जीउवि भेदहरं ।
तह अपज्जय सणि असणिय संतिकरं ॥ तं वंदे०॥७॥

घत्ता ।

सिरि गणहर मुणिवर, साहु सयमधर जीउ समास पयास करा।
सिरि विजय सुरीसा गुणगणइसा सिस्स नारायण दुरिय हरा॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनिभ्यो महार्घं ।

श्रीमद्गणाधिपतयो यतयो मुनीशाः ।
सत्साधवो विबुधवृन्दविवन्द्यधीशाः ॥
सच्छास्त्रपाठपठनोद्यतपाठकेशाः ।
क्षेमं दिशन्तु यजते भजते गिरीशाः ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

छप्पय ।

पुढवी अप्पह तेज वायु फुनि तरुकय भेयह ।
एक विइंदिय भेय गोय फुनि तिंदिय वे यह ॥
चउरिंदिय फुनि जात खात विकलत्तय णामह ।
सणि असणि गणभात पञ्च इंदिय सुधामह ॥
सत्तह पज्जय भेयस्सु सत्त अपज्जय जाणीये ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, चउदह जीव वखाणीये ॥

इति चतुर्दश जीवसमास पूजा समाप्तम् ।

अथ चतुर्दश नदी पूजा ।

जम्बूपलक्षिते द्वीपे नद्यश्चतुर्दशस्मृताः ।

आह्वानयामि ताः सर्वा गंगाद्या मंगलप्रदाः ॥

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनद्योऽत्रावतरावतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ॥

गंगा हिमवदुद्भूतां जिनबिंबसमन्वितां ।

सलिलाद्यष्टधाद्रव्यैः पूजयामि प्रभक्तितः ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वित गंगानद्यै जलादिकं० ॥ १ ॥

सिन्धुहिमवदुद्भूतां जिनबिम्बसमन्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसिन्धुनद्यै जलादिकं० ॥ २ ॥

रोहित हिमवद्जातां जिनबिम्बसमन्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरोहितायै जलादिकं० ॥ ३ ॥

महाहिमवदुद्भूतां रोहितास्यां जिनान्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितरोहितास्यायै जलादिकं० ॥ ४ ॥

महाहिमदुद्भूतां हरितां जिनसंयुतां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितहरिते जलादिकं० ॥ ५ ॥

निषधाचलसम्भूतां हरिकांतां जिनांकितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितहरिकांतायै जलादिकं० ॥ ६ ॥

निषधाचलसम्भूतां सीतां श्रीजिनसंश्रितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसीतानद्यै जलादिकं० ॥ ७ ॥

नीलभूभृत्समुत्पन्नां सीतोदां प्रतिमान्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितसीतोदानद्यै जलादिकं० ॥ ८ ॥

नीलभूभृत्समुत्पन्नां नारीं प्रतिममांकितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बसमन्वितनारीनद्यै जलादिकं० ॥ ९ ॥

रुक्म्यद्रिप्रोत्थितां रम्यां नरकांतां जिनान्वितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वितनरकांतानद्यै जलादिकं० ॥१०॥

रुक्मिपर्वतसंभूतां सुवर्णकूलसंज्ञिका । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वितसुवर्णकुलानद्यै जलादिकं० ॥ ११ ॥

शिखरिप्रोत्थितां रम्यां रौप्यकूलां जिनांकितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वितरौप्यकुलायै जलादिकं० ॥ १२ ॥

शिखरिप्रोत्थितां रक्तां श्रीजिनप्रतिमांकितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वितरक्तानद्यै जलादिकं० ॥ १३ ॥

शिखरिप्रोत्थितां रम्यां रक्तोदां श्रीजिनांकितां । सलिला० ॥

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्वितरक्तोदानद्यै जलादिकं० ॥ १४ ॥

गंगादिवाहिनि सुमध्य जिनेन्द्रबिंबा–
नर्चाम्यहं प्रवरभक्तिभरेण युक्ताः ॥
अर्घेण सज्जलसुचन्दनपुष्पचारु-
नैवेद्यदीपवरधूपफलैः कृतेन ॥

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनद्यै महार्घं० ॥

अथ जयमाला।

णिम्मलवर सरिया गुणगणभरिया चउदह णिम्मल जलभरिया।
कुलाचल धरिया द्रह उद्धरिया जिण अणुसरिया मल हरिया॥१
भरह सरासण उवमय जाणो, गंगा सिन्धु नदीय बखाणो।
तिहांपण श्रीजिनवर सुविशाल, ते पूजो भविपण गुणमाल॥२
जह णह भोय भूमि गुण भरिया, रोहिद रोहिदासा दोइ सरिया।
तिहांपण श्रीजिनवर सु विशाल, ते पूजो भवियण गुणमाल॥२॥
मध्यम भोय धरा अणुसरिआ,
हरिय हरिकांता मणो हरिया। तिहां० ॥ ४ ॥
दाहिण उत्तर कुरु परसरिया,
सीता सीतोदा सुइ मरिया। तिहां० ॥ ५ ॥
हिमवद अज्जगरा परिसरीया,
णारी णरकांता दुइ हरिया। तिहां० ॥ ६ ॥
हिरणवदइ वर खेत्त पसारा,
सुवणइ रुव्वकुला जुय धारा। तिहां० ॥ ७ ॥
एरावद पुणु खेत्त विशाल,
रत्ता रत्तोदा गुण पाल। तिहां० ॥ ८ ॥
क्षेमकीर्तिसुरि पट्टमुणिन्दा, नरेन्दकीर्ति गुरु कुवलयचंदा।
तसपट पंकज सुर सोहाय, विजयकीर्ति भट्टारक राय॥९॥
तसपद पंकज भृंग कहाया, नारायण यतिवर गुण गाया।
जे नर पूजें जिण समुदाया, ते नर अजरअमरपद पाया॥१०

घत्ता ।

सिरिसरिय जिणन्दा कुवळय चंदा इंद नरिंद सुगुण कहिया।
सूरि विजय मुणिंदा पापणिकन्दा सिस्स नरायण यति महिया ॥

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनदीस्थितजिनेभ्यो महार्घं ॥

सरित्सुस्थिता श्रीजिनानां सुबिंबा ।
द्विसप्तादिसंख्यानमन्नाकिमुख्याः ॥
सदा पूजिताः संस्तुताः पूजकानां ।
मनोऽभीष्टसत्कार्यदास्ते भवन्तु ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

गंगासिंधु आद्य रोहिता रोहितासा जाणह ।
हरिद हरिकांता णाम सीता सीतोदा माणह ॥
नारी नरकांता सरिद सुवर्ण रुपकुळ वखाणह ।
रक्ता रक्तोदा सरिद खेत एरावत धामह ॥
नदीयचउदस जिणवरा, शुद्धसरुपे जाणीये ।
नारायणवर्णी कहे, जिनसिद्धांत वखाणीये ॥

इति चतुर्दश नदी पूजा संपूर्ण ।

अथ चतुर्दशभुवन भव्यजीव पूजा।

द्विगुणमुनिसमाना लोकभेदा समुत्थाः।
जिनवर गणिदिष्टा ये स्थितास्तत्र जीवाः।
निरुपमवरभक्त्या भाविनो मुक्तिनाथान्।
सकलगुणगरिष्ठान् स्थापयेऽहं प्रमोदात्॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशभुवस्थभव्यजीवाः अत्रावतरावतरसंवौषट्। अत्र तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा॥

निगोदेषु स्थिता जीवाः भविष्यन्मुक्तिनायकाः।
अर्चाम्यहं सुद्रव्येण जलाद्यष्टविधेन तान्॥

ॐ ह्रीं निगोदस्थभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ १ ॥

महातमःप्रमोद्भूता ये जीवभव्यतां गताः। अर्चाम्यहं०॥

ॐ ह्रीं महातमःप्रमोद्भूतभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥२॥

तमः प्रभासमुत्पन्ना भव्यराश्यभिधेयकाः। अर्चाम्यहं०॥

ॐ ह्रीं तमःप्रभोद्भूतभव्यराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ३ ॥

धूम प्रभाश्रिताः सत्वा मोक्षसूत्रोपधारिणः। अर्चाम्यहं०॥

ॐ ह्रीं धूपः प्रभाद्भूतभव्यराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ४ ॥

पंकप्रभासामुत्पन्ना भव्या मानविवर्जिताः। अर्चा०॥

ॐ ह्रीं पंकप्रभाश्रितभव्यराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ५ ॥

वालुकास्थितयो ये वै जीवानां राशयो मताः। अर्चा०॥

ॐ ह्रीं वालुकास्थितभव्यजीवराशिभ्योः जलादिकं० ॥ ६ ॥

ये जीवा भव्य भावाग्राः शर्कराप्रभवाः स्मृताः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं शर्कराप्रभाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ७ ॥

रत्नप्रभाश्रिता जीवाः भव्या ये जिनमार्गगाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं रत्नप्रभाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ८ ॥

तिर्यग् लोकगता जीवा ये भव्या भव्यभावुकाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्लोकस्थितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ९ ॥

ज्योतिपटलधामानो ये भव्याः जीवराशयः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिपटलाश्रितभव्यजीवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ १० ॥

ये कल्पवासिनो देवाः सौधर्माद्यच्युतांतकाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं कल्पवासिभव्यदेवराशिभ्यो जलादिकं० ॥ ११ ॥

अधो मध्योर्ध्वग्रैवेयकोद्भवा भव्यराशयः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं ग्रैवेयकाश्रितभव्याहमिंद्रेभ्यो जलादिकं० ॥ १२ ॥

नवानुदिशधामानो ये देवा निर्मलाशयाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थाहमिंद्रेभ्यो जलादिकं० ॥ १३ ॥

येऽहमींद्रा हि भव्याश्च पंचानुत्तरवासिनः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं विजयादिपञ्चविमानस्थाहमिंद्रेभ्यो जलादिकं० ॥ १४ ॥

त्रिलोकाश्रिताभव्यजीवा सुभावा ।
भविष्यात्सुमुक्तिस्त्रियोनायकास्तान् ॥
जलाद्यष्टधार्घेण नारायणाख्यो ।
यजामि प्रभक्त्या त्रिशुद्ध्या नमामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशभुवनस्थितभव्यजीराशिभ्यो महार्घं० ॥

अथ जयमाला।

इय भव्व सु सत्ता, गुणगणमत्ता, सत्ता मुत्ति जुवइ सुसया।
दंसण वरणाणा, चरिय णिहाणा, डहिय कुकम्म सुधम्म रया॥
जे छत्तिम कारण वरुत गया, णिगोय कु भूमिय ऊद्ध पया।
ते चउदह भुवण सु भव्व लरा, वंदामिय भाविय मुत्तिवरा॥
जे सत्तम माधवी पुढवी धरा, वर तेतीस सायर आउ लरा।
ते चउदह भुवण सु भव्य लरा. वंदामिय भाविय मुत्तिवरा॥

जे मघवी णायसु जीव घणा।
दोइ वंसदि सायर आउ भणा। ते चउ० ॥ ४ ॥
जे धूम यहां वर भूमि सधा।
दस सत्त सु सायर आउ जुया। ते चउ० ॥ ५ ॥
जे पंक यहां पुढवी सुजणा।
दस सायर आउ जिणेस भणा। ते चउ० ॥ ६ ॥
जे मेघा भूमिय वास करा।
वर सत्तसु सायर आउ धरा। ते चउ० ॥ ७ ॥
जे वंसा पुढवी कयप सरा।
वर तिन्हसु सायर आउ धरा। ते चउ० ॥ ८ ॥
रयणप्पह पुढवीसु वास करा।
वर एकसु सप्पर आउ धरा। ते चउ० ॥ ९ ॥
जे मज्झह कोयसु उयधरा।
वर तिरिय गइसुद्ध वासकरा। ते चउ० ॥ १० ॥

जे पचह भेदहिं जोइ गणा।
जिण देवगणिंदहिं भव्य भणा। ते चउ० ॥ ११ ॥
जे सुहमादिय वर कप्पसुरा।
वरभव्व सुरामिय मंख धुरा। ते चउ० ॥ १२ ॥
जे अधो मध्य सु उर्द्ध कहा।
ग्रैवेयकदेव जिणंद लहा। ते चउ० ॥ १३ ॥
जे अणुदिस णाम विमाण हुण्या।
जिण णाह गणिंदहि भव्व गुण्या। ते चउ० ॥ १४ ॥
जे पंचाणुत्तर वास भणा।
अहमिंद अपुव्व णाम घणा ॥ ते चउ० ॥ १५ ॥

घत्ता।

इय चउदह लोया गुणगुण उया भवीण मुत्ति णयरी वसहा।
सुगि विजय मुणींदा तिहुमण चंदा सिस्स नरायण विबुध कहा ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशलोकभव्यजंवराशिभ्यो महार्घं०।

श्रीमच्चतुर्दशसुलोकभवाः सुभव्याः।
जीवा अनन्तवरराशिमिता गुणाढ्याः।
सत्पूजक प्रमुखसंघजनाय नित्यं।
देया सुरुत्तमसुभक्ति विमुक्तिसौख्यं ॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पा।

घमावंसामेघा अंजण अरिट्ठा फुनि दोयह।
मघवी माघवी णाम अट्ठमि फुनि जाण णिगोयह ॥

तिरियलोय जो इस सगा फुनि सोलगिवेय ।

... ...

एह चउदह लोकमें भव्य अणंता जाणीये ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे जिनसिद्धांत वखाणीये ॥

अथ चतुर्दशभुवनस्थित भव्यजीव पूजा समाप्तम् ।

चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्तिपूजा ।

सेनापतिस्थपतिहर्म्यपतिद्विपाश्च,
स्त्रीचक्रचर्ममणिकाकिणी कापुरोधः ।
छत्रासिदण्डवररत्नपतीन्मनोज्ञान,
संस्थापयामि विधिना गुणरत्नलब्धैः ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तिनोऽत्रावतरावतर संवौषट् । तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

सेनापतिमहारत्ननमिताखिलभूभृतः ।
अर्चाम्यहं सुद्रव्येण नानभक्त्या चक्रवर्तीनः ॥

ॐ ह्रीं सेनापतिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ १ ॥

स्थपत्याख्याः सुरत्नेन ये सं वित पंकजाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं स्थपतिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ २ ॥

हर्म्यपत्यभिधानेन रत्नेन श्रितपंकजाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं हर्म्यपतिरत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ३ ॥

द्विपाख्यरत्नसंश्रिताः वरिष्ठाभिर्मितासनाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं द्विपरत्नेकृतासनेभ्यश्चक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ४ ॥

विजयार्द्धोपपन्नस्याश्वस्यारोहिणतत्पराः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपपन्नाश्वाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥५॥

दशांगभोगभोक्तारो ये सुस्त्रीपतयो नराः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं स्त्रीरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ६ ॥

बुद्धिरत्नप्रभाभासिपादानतपुरोध सः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं पुरोहितरत्नसंसेवितचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ७ ॥

चक्ररत्नप्रभावेन दण्डो नाराति मण्डलाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं चक्ररत्नधिपति चक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ८ ॥

चर्मरत्न प्रतापेन रक्षितस्वप्रसैनिकाः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं चर्मरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ९ ॥

स्फुरद्रत्नप्रभाजाला धिपतिमणिभासितः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं मणिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ १० ॥

काकिण्याख्या सुरत्नेन लिखितस्वाभिधानका । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं काकिणीरत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ ११ ॥

चंद्रबिंबसमाकार छत्ररत्नाधिभासिनः ः अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं छत्ररत्न धिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ १२ ॥

समुल्लसद्भ्रबिंब प्रभाभ पन्महासयः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं असिरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं० ॥ १३ ॥

प्रचंडदंडरत्नेन प्रोध्वारितगुहारशः । अर्चा० ॥

ॐ ह्रीं दंडरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो जलादिकं ॥ १४ ॥

श्रीमच्चतुर्दश सुरत्नमहाप्रभावं ।
चक्राधिपेभ्य इह संपत्प्रदामनर्घं ॥
नारायणो विजयकीर्तिमुनींद्रशिष्यो ।
वाश्रंद्रनादिकृतमर्घमहं प्रभक्त्या ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो महार्घं ।

अथ जयमाला ।

इह पुण्य पवित्ता गुणगणचित्ता, छित्तापिछा पइणिपुणा ।
चउद्दह रयणना दिज्जयपत्ता चक्कवट्टि पयपत्त गुणा ॥
पुंणेण रयणपइपद लहंति, पुंणेण सु णरयइ गुण कहंति ।
पुंणेण मणाणइ रयण सार, पुंणेण ठहइ गुणगण भंडार ॥१॥
पुंणेण सुणरसुर णवइ सिरस, पुंणेग सुगयवर भमइ दीस ।
पुंणेणह सारवोहय करंति, पुंणेग सु जुवइ रयण वरंत ॥२
पुंणेण सुचक्कह कवइ सेव, पुंणेण सुचम्मह रयण हेव ।
पुंणेण सुरहसम मणि विशाल, पुंणेणसु काकिणी गुणहपाल ॥३
पुंणेण पुरोधह करइ सेव, पुंणेण सुछत्तह धरइ देव ।
पुंणेण असिय वर रयण पत्ति, पुंणेण सुदंड रयण पसत्ति ॥
पुंणेण सुजलणिहि थल हवंति, पुंणेण अगणिमयसुर अवंति ।
पुंणेण कुरोग दलिद्द णाम, पुंणेण धरणपइ पय विलाम ॥५॥
पुंणेण सुकुल णा लहइ जम्म, पुंणेण सु जिणवर लहइ धम्म ।
पुंणेण सु मुणिवर खवइ कम्म, पुंणेण सुभोयह भूमि सुसम्म ॥
पुंणेण सु अगणिय लच्छि सार, पुंणेण सुकुलपइ चतुर णार ।
पुंणेण हवंति सुपुत्त पुत्त, पुंणेण पराभव इणहि भुत्त ॥ ७ ॥

पुंणेण कुडायणी ण रहे पास, पुंणेण कु साइणी हवइ दास ।
पुंणेण कुदेव पिसाय जाय, पुंणेण लहइ णरपइ पसाय ॥ ८ ॥
पुंणेण सुणर लहइ सुहगसग्ग, पुंणेण सुलहइ णर सु अपवग्ग ।
पुंणेण सुतिहुयण जस अभंग, पुंणेण सुणर लहइ सुयण संग ॥
पुंणेण णिरय गइ विलय जाइ, पुंणेण तिरिय गइ दूर धाय ।
पुंणेण कुपक्खुह हवइ मित्त, पुंणेण सगुरुजण धरइ चित्त ॥ १० ॥

घत्ता ।

चउदह वर रयणा अणुछयपयणा, पुणय सु सिरिणार विभत्ता ।
सिरि विजयसूरिसा मुणि जणइसा सिरस नरायण कयसु तत्ता

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्तिभ्यो महार्घं० ।

सेनापतिप्रमुखरत्नमहाप्रभावा-
श्चक्राधिपा विमलबुद्धिमहस्वभावाः ॥
संपूजकप्रमुखभव्यजनानसु पूज्याः ।
कीर्तिसुबुद्धिविभवं सततं दिशन्तु ॥

इत्याशीर्वादः ।

छप्पा ।

सेनापति वर रयणय पति गृहपति वरख्यातह ।
गयवर हय वर रयण युवति सुचक्र विभातह ॥
चर्म नाम मणि रयण काकिणी फुनि रयण पुरोधह ।
छत्र खड्ग फुनि रयण दंड फुनि रयण प्रबोधह ॥
एह चउदह रयण धर, चक्रवर्ति नायक हरा ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, सकल संघ मंगलकरा ॥

इति चतुर्दशरत्नाधिपतिपूजा समाप्तम् ।

....

अथ चतुर्दश स्वराणां पूजा ।

अकारादि स्वराणां ये वक्तारो विश्वदीपकाः ।
आह्वाननादि सद्भक्त्या विधिना प्रयजे जिनान् ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकजिना अत्रावतरावतर संवौषट् स्वाहा
अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

युगादौ वृषदातारमकारस्वरमादिमं ।
यजामहेऽष्टधा द्रव्यैर्वृषभं वृषलांछनं ॥
ॐ ह्रीं अकारस्वरवादिने वृषभाय जलादिकं० ॥ १ ॥

आकारस्वरवक्तारं प्रकाशितमहागमं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं आकारस्वरवादिनेवृषभाय जलादिकं० ॥ २ ॥

इकारं यो विजानाति तमिना रहितं परं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं इकारस्वरवादिने वृषभाय जलादिकं० ॥ ३ ॥

ईकारस्य प्रवक्तारं भावीगजितमत्मतं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं ईकारस्वरवक्त्रे वृषभाय जलादिकं० ॥ ४ ॥

उकारस्य प्रभेदज्ञं सर्वज्ञं विमलप्रभं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं उकारस्वरभेदकथकाय जलादिकं० ॥ ५ ॥

ऊकारस्यापि वेत्तारमनुद्धतमयं जिनं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं ऊकारस्वरभेदज्ञायकेभ्यो जलादिकं० ॥ ६ ॥

ऋकारस्योपदेष्टारमर्त्तिहंतारमादिमं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं ऋकारस्वरोपदेष्टृवृषभाय जलादिकं० ॥ ७ ॥

ॠकारस्योपदेष्टारमानन्दितजगज्जनं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं ॠकारस्वरोपदेशकाय वृषभाय जल.दिकं० ॥ ८ ॥

प्रकाशितलृस्वरस्यो वै सवर्णपृस्वरस्यतं यजा० ॥
ॐ ह्रीं लृकारस्वरस्य प्रवक्तारवृषभाय जलादिकं० ॥ ९ ॥
लृकारोच्चारदक्षो यो देवार्चितांघ्रिपंकजः यजा० ॥
ॐ ह्रीं लृकारस्वरोच्चारकायवृषभाय जलादिकं० ॥ १० ॥
एकारस्वरनामश्रमेकारस्वरदेशिनं । यजा ॥
ॐ ह्रीं एकारस्वरदेशने वृषभाय जल दिकं० ॥ ११ ॥
ऐकारस्वरजानान मेकारस्योपदेशकं । यजा० ॥
ॐ ह्रीं ऐकारस्वरप्रकाशकाय वृषभाय जलादिकं० ॥ १२ ॥
ओकारस्योपदेष्टारमोकारस्थानवादिनं ॥ यजा० ॥
ॐ ह्रीं ओकारस्वरदेशकाय जलादिकं० ॥ १३ ॥
औकारोच्चारणे शक्तं विश्वविद्याप्रकाशकं ॥ यजा० ॥
ॐ ह्रीं औकारस्वरकथकाय जिनाय जलादिकं० ॥ १४ ॥

अकारप्रभृत्यन्यशुद्धस्वराणां वराणां प्रवक्तारमाद्यं जिनेंद्रं ।
वरैरौप्यपात्रस्थितैः सज्जलाद्यैर्यजे ब्रह्मनारायणो भक्तियुक्तः॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रवक्तारं जिनाय महार्घं० ।

अथ जयमाला ।

आदि जिनेसर परम दिनेसर भविय कमल परकास करु ।
तिहुयर परमेसर ज्ञान दिवाकर सेवक जन मन दुरिय हरु॥
जय जय नाथ नीरंजन योगी, जय जय शांति सकल भोगी ।
जय जय त्रिभुवन जन हितकारी, जय जय मुक्ति रमा अधिकारी ॥
जय जय काम गियंद विहंडन, जय जय मुक्ति नयरि वर मंडन ।
जय जय मान महा मद भंजन, जय जय क्रोध महाभट गंजन ॥

जय जय दिव्यधुनी मुख राजे, जय जय सकल घनाघन छाजे।
जय जय त्रिभुवनना दुःख भाजे, जय जय देव दुंदुभी वाजे ॥
जय जय त्रिभुवन जनमन राचे, जय जय सूत्र एकावन वाचे।
जय जय तत्त्व पदारथ माखे, जय जय तप संजम भेद याखे ॥
जय जय भवियण कर्म विहंता, जय जय धर्मरथांग नियंता।
जय जय तोरण ध्वज लहकंता, जय जय सुरनर साद करंता ॥
जय जय दंसण णाण चरित्ता, जय जय निर्मळ नित्य पवित्ता।
जय जय अधरीकृत मन राजा, जय जय इंद्र विकट भय छाजा ॥
जय जय आम्रोपल्लवकृत छाया जय जय धृत चामर देवगाया।
जय जय सुंदर फल महकारा, जय जय कोयल करे टहुकारा ॥
जय जय चंपकना पन सोहे, जय जय त्रिभुवनना मन मोहे।
जय जय सप्तच्छदकृत शोभा, जय जग निर्जित दुर्द्धर लोभा ॥
जय जय निर्जित दुर्जय माया, जय जय हरिहर पाय लगाया।
जय जय सिद्ध निरञ्जन धाया, जय जय अजर अमर पद पाया ॥
जय जय अरहंत भगवंत देवा, जय जय सुरनर करतुजु सेवा।
जय जय अजर अमर पद दाता, जय जय संसार सागर त्राता ॥
जय जय एक अनेक कहाया, जय जय गणधर देव पढाया।
जय जय दर्शनसे दुख नाशे, जय जय सेव करे तुम पासे ॥
जय जय जे नर हृदय धरन्ता, जय जय मन गुप्ति ते हरंता।
जय जय वयणे स्तवन करंता, जय जय वचन गुप्ति परिहंता ॥
जय जय अष्टांगे जे नमन्ता, जय जय काय गुप्ति निगमंता।
जय जय धर्म धुरंधर देवा, जय जय जनम जनम करू सेवा ॥

जय जय क्षेमकीरती पद धारी, जय२ नरेंद्रकीर्ति मनोहारी।
जय२ तसपर विजय मुनींद्रा, जय२ सरसति गुच्छ सु चंदा॥
जय जय तस पद पंकज भृंगा, जय जय नित्य सेव सुरंगा।
जय जय सेवक जन साधारी, जय जय कहे नारायण ब्रह्मचारी॥

घत्ता।

सिरि जिणवर देवह सुरकृत सेवह, जनम जनम तुव चरण नमूं।
करूं पूजा भावीय अष्ट प्रकारिय अर्घ उतारिय दुःख गमूं॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकवृषभाय जिनाय महार्घं०।

दयादानदाता जगज्जंतु पाता।
महामोहजेता च नेता जिनाना॥
सुमुद्घात भेता चहु कर्महंता।
जिनो नाभि पुत्रो भवं शं करोतु॥

इत्याशिर्वादः।

छप्पा।

वृषभ जिनेश्वर देव देव करे बहु सेवह।
गावे गीत रसाल भमरि वर करे सेवह॥
नाभिराय कुलचन्द मात मरु देवी नन्दह।
इन्द्र नमे तस पास नमे राय धरणिंदह॥
सेवा मनवांछित फले, जुग आदि जग वासीया।
नारायण ब्रह्मचारी कहे जाणे चौद स्वर प्रकाशिया॥

इति चतुर्दश स्वर पूजा समाप्तम्।

अथ चतुर्दश तिथी पूजा।

मुख्या चतुर्दशाद्याय:स्तिथयो मुनिनिर्मिता: ।
आह्वनन स्थापनादि विधिना तासमर्चये ॥
ॐ ह्रीं धर्माद्यर्थप्रसिद्ध चतुर्दशतिथ्यं ऽत्रावतरावतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ ठ: ठ: । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

मुख्या प्रतिपदं बुध्वा मुख्यदेवं जिनेश्वरं ।
दोषनिर्मुक्तसत्पूज्यमर्चयामि जलादिभिः ॥
ॐ ह्रीं प्रतिपदिस्वरूपनिरूपक अष्टादशदोषरहिताय जिनाद जला० ॥१॥

द्वितीयां तिथिमाश्रियदयामूलं जिनोदितं ।
सागारमुनिभेदाख्यं द्विधाधर्मं समर्चये ॥
ॐ ह्रीं द्वितीयतिथिमाश्रित्यसागारानगारधर्माय जलादिकं० ॥२॥

तृतीयां तिथिमाध्यायदर्शनादिप्रभेदत: ।
रत्नत्रयंजिनै: प्रोक्तं प्रार्चयेऽहं जलादिभिः ॥
ॐ ह्रीं तृतीयातिथिमाश्रित्यदर्शनादिरत्नत्रयाय जलादिकं० ॥३॥

चतुर्थीतिथिमाश्रित्य वेदाश्चत्वार ईशिना ।
ये प्रोक्तास्तानहं यजिम कमलाद्यष्टधार्चनै: ॥
ॐ ह्रीं चतुर्थितिथिमाश्रित्य प्रथमानुयोगादिवेदेभ्यो जलादिकं० ।४।

पंचमींतिथिमुद्दिश्य ये पंचपरमेष्ठिन: ।
जलादिभिरिमैद्रव्यैरर्चयामि प्रभक्तित: ॥
ॐ ह्रीं पंचमीतिथिमुद्दिश्य पंचपरमेष्ठिभ्यो जलादिकं० ॥५॥

षष्ठीमाश्रित्य द्रव्याणि सर्वज्ञ: कथितानि वै: ।
षडिमतानि जेतानि जलाद्यष्टविधार्चनै: ॥
ॐ ह्रीं षष्ठीतिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोदितषट्द्रव्येभ्यो जलादिकं ॥६॥

सप्तमीतिथिमुद्दिश्य संयमाः सप्तसंख्यया ।
प्रोक्ता जिनैर्मुनीन्द्राणां यायज्मि तानहं मुदा ॥
ॐ ह्रीं सप्तमीतिथिमुद्दिश्य सामायिकादिसप्तसंयमेभ्यो जला-
दिकं० ॥ ७ ॥

अष्टमीचाष्टकर्माणिमाश्रिताष्टगुणान्मताः ।
सिद्धानां तानहं यज्मि जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं अष्टमीतिथिमाश्रित्य सिद्धाष्टगुणेभ्यो जलादिकं० ॥८॥

उद्दिश्य नवमी सद्भिर्नया नवमता जिनैः ।
गंभीरार्थाऽविरुद्धार्था दूरगास्तानहं यजे ॥
ॐ ह्रीं नवमीतिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्तनवनयेभ्यो जलादिकं० ॥९॥

दशमीतिथिमाश्रित्य यो धर्मो दशधास्मृतः ।
दयामूलो हि सर्वज्ञैरर्चयाम्यहमष्टधा ॥
ॐ ह्रीं दशमीतिथिमाश्रित्य दशलक्षणिकधर्मेभ्यो जलादिकं० ॥१०॥

अङ्गान्येकादशोक्तान्येकादशी तिथिसंज्ञया ।
तान्यहं प्रयजे नित्यं जलाद्यष्टविधार्चनैः ॥
ॐ ह्रीं एकादशमीतिथिमाश्रित्य एकादशांगेभ्यो जलादिकं० ॥११॥

आश्रित्य द्वादशीं प्राज्ञरुक्तानि परमार्थतः ।
तपांसि द्वादशोद्देशानि यजे तानीह भक्तितः ॥
ॐ ह्रीं द्वादशीतिथिमुद्दिश्य द्वादशविधतपेभ्यो जलादिकं० ॥१२॥

त्रयोदशीं समाश्रित्य त्रयोदशविधं स्मृतं ।
चारित्रं श्री जैनेन्द्रैस्तैः यायज्मि शुद्ध्यान्वितः ॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशीतिथिमाश्रित्य त्रयोदशप्रकारचारित्रेभ्यो जला-
दिकं० ॥ १३ ॥

चतुर्दशीतिथि प्रोक्तानन्तचतुर्दशं जिनं ।
पूजया परया भक्त्या पूजयामि प्रवुद्धये ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशी तिथमाश्रित्य अनन्ततीर्थङ्काराय जलादिकं ॥१४॥

धर्मप्रधानास्तिथयश्चतुर्दशः प्रोक्ता जिनेन्द्रैः परमार्थज्ञातृभिः ।
अर्घेण वारादिकृतेन संकृताः सद्बुद्धये संयजतां भवन्तु ताः ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशतिथिभ्यः महार्घं० ।

अथ जयमाला ।

चतुदहवर तिथि हो, परम अतिथि हो, धम्मह कारण मुमण धरी ।
भवियण जण रंजण कम्म निभंजण काम विगंजण जिणउ धरी ॥

छंद ...की चालमें ।

प्रथम तिथि समकित साधो, ए संसार अपार अगाधो ।
मनमें अरहंत देव आराधो, भमतां भमतां मानव भव लाधो ॥
बीजे धर्म द्विधा जिन भाख्यो, अनागार सागारह दाख्यो ।
मनमें अरहंत देव आराधो, भमतां भमतां मानव भव लाधो ॥
त्रीजे दंसण णाण चरित्र, पूजो अष्ट प्रकार पवित्र । मन० ॥
चोथे वेद चतुष्टय जाणी, पूजो निम्मल भवियण प्राणी । मन० ॥
पूजो पांचम पंच परमेष्ट, टाले जनम जनमनां कष्ट । मन० ॥
छट्ठे छद्रव्य कह्या जिनदेवा, पूजा नित्य करो बहुसेवा मन० ॥
सेवो संजम सातमे सात, सु सामायिक करो परभात मन० ॥
शुभ कर्म दहन पूजा कीजे, आठमे आठ कर्म हणीजे । मन० ॥
नवमें नव नय अर्थ गंभीरा, मनमें जे धरसे तेह धीरा । मन० ॥

दशमी दश लाक्षणीक पूजो, उत्तम क्षमयादिक गुण बूझो। मन० ॥
अगीयारसें अङ्ग अग्यार, पूजो पाप तणो परिहार। मन० ॥
बारे व्रत बारसें पालो, सुधो श्रावकाचार संभालो मन० ॥
पूजें तेरसि चारित्र तेर, देव अभिषेक करें तम मेर। मन० ॥
जे नर चउदशे पूजे अनंत, तेहनि आश पूरे भगवंत मन० ॥

घत्ता।

तिथि चउदह जाणो धर्म वखाणो सहु मन आणो भाव धरी।
श्री विजय सुकीर्ति शिष्य सुमूर्ति नारायण जयमाल करी॥

ॐ ह्रीं धर्मकार्यप्रसिद्धचतुर्दशतिथिभ्यो महार्घं० ॥

तिथयो तिथिभिः सुकृताय कृताः।
शुभकर्म सुखधा जगत्प्रथिताः॥
शुभमर्चकधर्मजिनाय सदा।
सु दिशं त्विह शं जगति प्रथितं॥

इत्याशीर्वादः।

छप्पा।

प्रतिपद बीज सु त्रीज समकित धर्म सुदंसण।
चौथा पंचमी वर छठि वेद परमेष्ठि द्रवांचण॥
सातिम आठिम तुम संजक्रम यहन नया नव।
दशम अग्यारस द्वादशी धर्म अंग तप संभव॥
तेरसे चारित्र पुजिये चउदशे अनन्त जिनेसरु।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, चउदश तिथि मंगल करु॥

इति चतुर्दश तिथि पूजा समाप्तम्।

अथ चतुर्दश मलत्यक्ताहार मुनि-पूजा।

पूयादिकद्विगुणसप्तमलापहारा।
ये त्यजंति तान्कुमलान् वरशुद्धिभाजः॥
भद्रादशव्रतविधानविधौ समर्थाः।
संस्थापयेऽहमधुना विधिना मुनींद्रान्॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलोज्झिताहारग्राहकमुनयोऽत्रावतरतावतरत संवौषट् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

पूयदोषपरित्यक्तमाहारं विष्वणंति ये।
पूजयामीह सद्भक्त्या कमलाद्यष्टधार्चनैः॥

ॐ ह्रीं पूयमलातिरिक्ताहारग्राहकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥१॥

अस्राख्यमलसंत्यागाद्यन्नमश्नंति शुद्धितः॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं अस्रमलरहिताहारग्राहकमुनिभ्यो जलादिकं० ॥२॥

पलाख्यमलसंत्यागाद्यन्नमश्नंति शुद्धिभाक्॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं पलमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ३ ॥

अस्थिरिक्तं च भोज्यं ये भुजंति परमार्थतः॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं अस्थिरिक्तमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ४ ॥

चर्म्माख्यमलसंत्यागाच्छुद्धमन्नमदंति ये॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं चर्ममलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ५ ॥

भोजनं नख संत्यक्तं ये वल्भंति निरंतराः॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं नखमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ६ ॥

कचपश्लेषनिर्मुक्तं ये भुजंत्यन्नमुत्तमाः ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं कचमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ७ ॥

विकलत्रिकजीवेभ्यः त्यक्तमन्नमदंति ये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं मृतविकलत्रिकमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥८॥

सूरणादिमलत्यागाद्विशुद्धान्नमदंति ये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं सूरणादिकंदमूलत्यक्तपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ९ ॥

येऽश्नंति यवगोधूमबीजसंत्यक्तमन्नकं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं यवगोधूमादिबीजमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥१०॥

येऽन्नं भुंजंति निर्विघ्ना मूलाख्यमलवर्जितं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं मूलमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ ११ ॥

बदर्यादिफलत्यागाच्छुद्धमन्नं भुजंति ये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं बदर्यादिफलमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥१२॥

तुषादिमलसंत्यक्तं भुजंति येऽन्नमुत्तमं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं तुषकणमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ १३ ॥

कुंडाद्यंतमलैस्त्यक्तमाहारं च भुंजंति ये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं कुंडमलरहितपिंडविशुद्धये जलादिकं० ॥ १४ ॥

पूयादिदुर्मलविमुक्तमनुत्तमान्नं ।
भुंजंति ये विपुलमानमदोज्झितांगाः ॥
वार्गंधतंदुलसुपुष्पचरुप्रदीपैः ।
धूपैः फलैः कृतमहार्घमहं ददामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलरहितपिंडविशुद्धये महार्घं ।

अथ जयमाला ।

मदनमदविहंता दुष्टकर्माष्टभेत्ता ।
अगमनिगमवेत्ता सप्ततत्त्वैकचेता ॥
मदननृपनिजेता भव्यसार्थप्रणेता ।
जयति जगत्पूज्यः सन्मुनीनां प्रसंघः ॥

विराग विमोह विरोग विभोग, विशोक विरोष विदोष वियोग ।
दिनेश समेश मुनीश निकाय, जय प्रणताखिल लोक कृताय ॥
दिनेश निशेश सुरेश नरेश, खगेश दिनेश विवंदित सेस ।
दिनेश समेश मुनीश निकाय, जय प्रणताखिल लोक कृताय ॥

विमान विनान विदंभ विलोभ,
विमाय विजाय विजृंभ विसोभ । दिनेश० ॥ ३ ॥
विकंतु विजंतु विराजन वीस,
विहास विज्ञास विवर्जित दोस । दिनेश० ॥ ४ ॥
विसंक विमुक्त विकर्म कलंक,
निरामय निर्भय निर्गत पंक । दिनेश० ॥ ५ ॥
विबाध विकासित विश्व निरास,
विदूरित संसृति संसय पास । दिनेश० ॥ ६ ॥
अचिंत्य चरित्र पवित्र सुनेत्र,
विलोकित जीवनिकाय सुमित्र । दिनेश० ॥ ७ ॥
घनाघन दुंदुभि धीर निनाद,
निराकृत दुर्मतवादि कुवाद । दिनेश० ॥ ८ ॥

दिगम्बर वेष विकुंचित केश,
विहार पवित्रित देश विदेश । दिनेश० ॥ ९ ॥
निराभरणांकित निर्मल गात्र,
निरायुध निर्भय सोभित गात्र । दिनेश० ॥ १० ॥
कुकर्ममहीरुह भेद कुठार,
सुमंधनगो धरणामृतधार । दिनेश० ॥ ११ ॥
विशल्य विशूल्य निरीह विदंड,
विखण्डित दुर्मद बुद्धि करंड । दिनेश० ॥ १२ ॥
कषाय निकायरज प्रसमीर,
दुरास्रव निर्जय दुर्जय धीर । दिनेश० ॥ १३ ॥
सुरासुर भासुर किन्नर देव,
खगाधिप मानुष निर्मित सेव । दिनेश० ॥ १४ ॥
विनिर्गत दुर्मल भुक्त विमुक्त,
परिग्रह दुर्गह दोष विमुक्त । दिनेश० ॥ १५ ॥

घत्ता ।

अखिलगुणनिधाना निर्जितक्रोधमाना ।
विरहितकुनिदानाः सप्ततत्वैकतानाः ॥
सुमुनिविजयकीर्त्तेः शिष्य नारायणाख्यो ।
दुरितनिवहहान्यै तान्मुनीनर्घयामि ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलत्यक्ताहारग्राहकमुनिभ्यो महार्घं० ।

यो नित्यप्रणिधानसंश्रितमना संसारनिर्विणह ।
यो रत्नत्रयधारणां चितमतिः कायारिविध्वंसकः ॥

योे विज्ञानरसायनामृतधयस्फीतांगसंगातिगः ।
श्रीमुसंघजन (?) मुनीश्वरमहासंघो वर्ता सर्वदा ॥
इत्याशीर्वादः ।

छप्पय ।

पूय अस्रपलनाम अस्थि अजिनमल जाणह ।
नख केश मल दोय एक विकलत्रय मानह ॥
सूरण आद्य कुकंद बीज फुनिमूल अनेकह ।
फल बदरी फळ आदि कण फुनि कुंड विवेकह ॥
एह चतुर्दश मल रहित, शुद्ध आहार मुनिवर कह्यो ।
नारायण ब्रह्मचारी कहे, जिन सिद्धांते संग्रह्यो ॥
इति चतुर्दशमलरहिताहारग्राहकमुनि पूजा ।
॥ अत्र षण्णवत्यधिकैकशत परिमितान् जाप्यान् देयात् ॥
॥ जाप्य (१४×१४)=१९६ ॥ देयात् ॥
॥ जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं हंसः अनंत केवलिने नमः ॥

अथ समुच्चय जयमाला ।

सिरि अणंत जिणेयरु दुरिय, तिमिरहरु तत्त्व पदारथ भासणु ।
भवि कमल दिणेसर वसु विहमय इरु सयल सुणाण पयासणु ॥

सुहग कर्पूर मय कुंद वासिय जलं ।
कणयमणि घडिय भृंगार धारोज्वलं ॥
इन्दु आरत्तियं करइ विकसिय मण ।
अमरदेवी गणा णच्चइ सुभासणं ॥ १ ॥

विमळ कर्पूर सुगंधि चन्दण भरं ।
घसिय केसर वरं जनम पातक हरं ॥ इन्दु० ॥ २ ॥
अमल तन्दुलगण कमलवासियघणं ।
नयण मोहण करं हसिय सज्जण जणं ॥ इन्दु० ॥ ३ ॥
कमल मचकुन्द जाइ जुइ चम्पकं ।
मालती मोगरा तिलक कुन्दबकं ॥ इन्दु० ॥ ४ ॥
खज्जया मोदया घेवरा फेणया ।
सेव सुंहालया लेहु वर मडयो ॥ इन्दु० ॥ ५ ॥
मोतीया पायसा पूरी लापसी गणा ।
सूपे अपुनय वटप पुडा घणा ॥ इन्दु० ॥ ६ ॥
सुहग व्यंजनघणा तलिय मुद्दा चणा ।
शालि भक्तोत्करा सयण जण रञ्जना ॥ इन्दु० ॥ ७ ॥
रयण दीपोज्वला कपूर अति उज्वला ।
दुरिय तिमिर हरा मदि सुदि अबहि फला ॥ इन्दु० ॥८॥
सिंहल असित गरु हरिय चन्दण भरा ।
धूप धूमांचिया गयण माणुम धरा ॥ इन्दु० ॥ ९ ॥
नालिकेरैः फलैः पूंगीसुकदंबकैः ।
आम्र जंबीरनारिंगदाडीमकैः ॥ इन्दु० ॥ १० ॥
कर्वटीचिर्भटैः कोमलैः कर्मदैः ।
फोफलैः फालसैर्मुक्तिवरशर्मदैः ॥ इन्दु० ॥ ११ ॥

१–रोटी, २–दाल, ३–खाखरा माखरी, ४–शाकभाजी-तरकारी ।

जंबुरायणफलैः कोमलकुममांडकैः ।
पिस्ताबदामफलैरखोडपरकांडकैः ॥ इन्दु० ॥ १२ ॥
कुसुमवर संति सुगंधी सुरमव्वयं ।
णायकुमार धरणिंद सुर सव्वयं ॥ इन्दु० ॥ १३ ॥
जय जय सुदेव उचरंति जिण मंदिरं ।
पुरयंतिह पंचायणं मणुहरं ॥ इन्दु० ॥ १४ ॥
अमलवर कमलदल नयण सुरकामणी ।
चमर ढोलंति अति सुहग गय गामिणी ॥ इन्दु० ॥ १५ ॥
कणय भृंगार वर ताल कंसालयं
कमल मुह कलस धय दंड सोहालयं ॥ इन्दु० ॥ १६ ॥
सुहमुपरंतिक वरछत्तत्तय संयुतं ।
रयण सम कंतयं दप्पणं सुरणुतं ॥ इन्दु० ॥ १७ ॥
एकमम अट्ठवरं चामरं उज्वलं ।
अमरघुर्णा णीझ रंजण सुमुत्ताहलं ॥ इन्दु० ॥ १८ ॥
जण मुहांरावली क्षीर मचकुन्दयं ।
क्षीर जलणिहि सम कमल वरकंदय ॥ इन्दु० ॥ १९ ॥
वंदतय संणिहं छत्तनय सुंदरं ।
प्रातिहार्याष्टकं सयल मगलकरं ॥ इन्दु० ॥ २० ॥
पंच वर वरण धज भेय लहकंतयं ।
रयण वर तोरणं धूमघटमालयं ॥ इन्दु० ॥ २१ ॥
कणयमणि किंकिणी मुख झणकारयं ।
तोरया घण्टया रचिय विज्ञानय ॥ इन्दु० ॥ २२ ॥

दीपवरमालया सुहग मंदारया ।
भमर झंकारया कणयमणि जालया ॥ इन्दु० ॥ २३ ॥
व्यंतरी खेचरी किन्नरीय भूचरी ।
सुहग पुरन्दरी स्वर्ग देवामरी ॥ इन्दु० ॥ २४ ॥
तत्ताथइ तत्ताथइ तत्ताथइय थोगिणी ।
णच्चए अच्छरा हंस गय गामणी ॥ इन्दु० ॥ २५ ॥
वज्जये घुघरा घमक घमकारए
पयकमलणे ठरं ठमक चमकारए ॥ इन्दु० ॥ २६ ॥
छमकछम पाय झंझरीय झमकारए ।
कडिय तह मेखला वर खलकारए ॥ इन्दु० ॥ २७ ॥
वीणा वज्जंति छलछपक कंसालए ।
भेरी गज्जंति अडयाल बहुतालए ॥ इन्दु० ॥ २८ ॥
धपमय धपमय दों दों दों वज्जए ।
जण सु घण जण सु घण अम्बर गज्जए ॥ इन्दु० ॥२९॥
ढोल बहुदुन्दुभीय णाद बहु सज्जए
जण सु घण गज्जणं मोरमद णच्चए ॥ इन्दु० ॥ ३० ॥
हाव भाव कला णयण सु विसालए ।
भमइ वर भमरी देयंति कर तालए ॥ इन्दु० ॥ ३१ ॥
राग सारंग तह देव गंधारए
पंचमो भैरव राग मल्हारए ॥ इन्दु० ॥ ३१ ॥
कुणइ कल्लाण सिन्धाम आसावरी ।
हलीइ बहु पात्र पुरुजन भंते करी ॥ इन्दु० ॥ ३२ ॥

कुणइ आरत्तियं इन्दु जिणमंदिरे।
सयल वर संघ आणन्द मंगल करे॥ इन्दु० ॥ १४ ॥

घत्ता।

सिरि अणंत जिणेसर दुरिय तिमिर हर भवियण जण कल्लाणकर।
सुरि विजयमुणिंदो तिहुयण चंदो नारायण ब्रह्म यजति वर॥

ॐ ह्रीं अनन्तव्रतोद्यापनाय जयमाला पूर्णार्घं।

घंटा तोरण दाम दर्पण महाश्री चामराणां चयाः।
सद्भृंगारकतारनालकलशस्फूर्यध्वजानां गणाः॥
येषां ते विलसंति नित्य महमां श्वेतातपत्रत्रयाः।
श्रीमंतो वृषभादयो जिनवराः कुर्वंतु मे मंगलम्॥

इत्याशीर्वादः।

कीर्तिं स्फूर्तिं सुबुद्धिं विमलमतिचयं श्लाघ्यदीप्तिं च शुद्धिं।
चारोग्यवृद्धिमृद्धिं गजतुरगरथाद्युत्करं संतनोति॥
लक्ष्मीं रामां प्रकामं तनयपरिकरं सारभुक्तिं च मुक्तिं।
सम्यग् बुद्ध्या कृताया प्रभवतु यजतो श्रेयसेऽनंतपूजा॥

॥ इति पूजाफलं॥

श्रीमत्सूर्यपुरेऽर्णवांगहयचंद्रेष्टनमस्य सिते।
पक्षे रामतिथौ बुधयुते पूर्वकृतार्चाविधैः॥
श्री नारायणस्येहकृति र्विजयतां लोकेकृताऽसौ चिरं।
सत्पुत्रोत्तमधीमनोहरमहा संघाधिपस्यादरात्॥

इति श्री भट्टारक श्री विजयकीर्ति शिष्य ब्रह्म श्री नारायण विरचित अनंतव्रतोद्यापनं समाप्तम्।

संवत १७८४।

महावासुपूज्यालये मूलसंघे,
स्फुरद्दिव्यसारस्वताख्यादिगच्छे ।
गणेसद्बलात्कारनाम्नि प्रकृष्टे,
समुत्फुल्लसकुन्दकुन्दाख्यवंशे ॥ १ ॥
मुनिपद्मनन्दी सुरेंद्रादिकीर्तिः-
स्फुरद्दिव्यमूर्तिः मुनिक्षेमकीर्तिः ।
गुरो पट्टधारीनरेंद्रादिकीर्तिः,
सदा सौख्यकारी महाभव्यमूर्तिः ॥ २ ॥
तत्पट्टपंकजविकासनभानुमूर्तिः ।
सद्बोधपंडितजनंडितशुद्धकीर्तिः ॥
सत्कांतिनिर्जितसमुज्वलचन्द्रमूर्तिः ।
भट्टारको विजयकीर्तिरसौ प्रजीयात् ॥ ३ ॥
तदीयांघ्रियुग्मांबुजाधारभाजा ।
कृतं भक्तितो वर्णिनारायणेन ॥
अनंतव्रतोद्योतनं पूजकानां ।
सदानंदचन्द्रोदयं तत्करोतु ॥ ४ ॥

सूर्यपूर्या (सूरत) मनंताख्य व्रतस्योद्यापनं मया ।
नारायणेन भव्यानां कृतं सद्बोध हेतवे ॥ ५ ॥

॥ इति श्री अनंतव्रतस्योद्यापनं समाप्तम् ॥

अथ पुण्याहवाचनं।

श्री निर्जरेशाधिपचक्रपूर्वं श्रीपादपंकेरुहयुग्ममीशं ।
श्री वर्धमानं प्रणिपत्य भक्त्या संकल्पमेनं कथयामि सिद्ध्यै ॥

ॐ स्वस्ति श्रीयजमानाचार्यप्रभृतिसमस्तभव्यजनानां सद्धर्मे श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु ।

अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मते त्रैलोक्यमध्यमध्यासीने मध्यलोके श्रीमदनावृतयक्षसंसेव्यमाने दिव्यजम्बूवृक्षोपलक्षितजंबूद्वीपे, महनीयमहामेरोर्दक्षिणभागे, अनादिकालसंसिद्धभरतनामधेयप्रविराजितषट्खण्डमण्डितभरतक्षेत्रे, सकलशलाकापुरुषसंभूतिसम्बन्धविराजितार्यखंडे, परमधर्मसमाचरणगुर्ज्जरदेशे, अस्मिन् विनेयजनताभिरामे, ईडरग्रामे, श्रीदिगंबरजैनकाष्ठासंघे नंदीगच्छे आदि श्रीमद्भट्टारक श्रीरामसेनाम्नाये महाशांतिकर्मणोचित्ते, अत्र वृषभेनाथस्य (आदिनाथस्य) दिव्यमहा चैत्यालयप्रदेशे; एतदवसर्पिणीकालावसाने प्रवृत्तसुवृत्तचतुर्दशमनूपमान्वितसकललोकव्यवहारे, श्रीवृषभस्वामिपौरस्त्यमंगलमहापुरुषपरिषत्प्रतिपादितपरमोपशमपर्वक्रमे, वृषभसेनसिंहसेनचारुसेनादिगणधरस्वामिनिरूपित-

---

१–जहां पूजन होता हो उस ग्रामका नाम लेवें, २–मंदिरमें जो मूलनायक हो उनका नाम लेवें ।

विशिष्टधर्मोपदेशे। दुःखमसुखमानंतरप्रवर्तमानकलियुगापरनामधेयदुःखमाभिधान पंचमकालप्रथमपादे, महर्तिमहावीरवर्धमानतीर्थङ्करोपदिष्टसद्धर्मव्यतिकरे,श्रीगौतमस्वामिप्रतिपादितसन्मार्गप्रवर्त्तमाने, श्रेणिकमहामंडलेश्वरसमाचरितसन्मार्गाविशेषे, विक्रमांकनृपालपालितप्रवर्त्तमानानुकूलशकनृपकाले, १९[1]१३ वर्षसंमिते, प्रवर्तमान आनंद[2]नाम संवत्सरे, अमु[3]कमासे शुक्ल[4]पक्षे, अष्ट[5]मितिथौ अमु[6]कवासरे (...) प्रशस्ततारकायोगकरणद्रेकाणहोरामुहूर्तलग्नयुक्तायां, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभितश्रीमदर्हत्परमेश्वरसन्निधौ, श्री शारदासन्निधौ, राजर्षिपरमर्षिब्रह्मर्षिसन्निधौ, विद्वत्समाजसन्निधौ, अनादिश्रोतृसन्निधौ, देवब्राह्मणसन्निधौ सुब्राह्मण सन्निधौ, यागमंडलभूमिशुद्ध्यर्थं द्रव्यशुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं क्रियाशुद्ध्यर्थं मंत्रशुद्ध्यर्थं महाशांति कर्मसिद्धिसाधनयंत्रमंत्रतंत्रविद्याप्रभावसंसिद्धिनिमित्तविधीयमानस्य अमुँक (.......) क्रियामहोत्सवसमये पुण्याहवाचनं करिष्ये। सर्वैःसभाजनैरनुज्ञायतां, विद्वाद्विशिष्टजनैरनुज्ञायतां, महाजनैरनुज्ञायतां तद्यथा।

प्रस्थमात्रतंदुलस्योपरि ह्रींकारसंवेष्टितस्वस्तिकयंत्रे मंत्रपरिपूजितमणिमयमंगलकलशं संस्थाप्य, यजमानाचार्योऽपसव्यहस्तेन धृत्वा पुण्याहमंत्रमुच्चारयन् सिंचेत्। ॐ स्वस्तिककलशस्थापनं करोमि।

१—वर्तमान संवतका नाम लेवें, २—संवत्सर जो चलता हो उनका नाम लेवें, ३—चालू मासका नाम, ४—चालू पक्षका नाम लेवें, ५—चालू तीथीका नाम लेवें, ६—जो वार हो उसका नाम लेवें, ७-जिस स्थापन क्रियामें पुण्याहवाचन होता हो उस क्रियाका नाम लेवें।

(पासमें छपे हुए यंत्र अनुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीन पर यंत्र बनावें, फिर उसके ऊपर जलसे भरा हुआ कलश रखकर उसमें नागरवेलका पत्ता रखें और पुण्याहवाचन पढने जावे और कलशका पानी उस पत्तेसे दाहने हाथसे छिडकते जावे ।)

अथ पुण्याहमंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्तगंगासिन्ध्वादिनदीनदतीर्थजलं भवतु स्वाहा। जलपवित्रीकरणं ॥

अभ्यर्च्य कलशं तोयपवाहैश्चंदनैः शुभैः ।
अक्षतैः कुसुमैरन्नैर्दीपधूपफलैरपि ॥

ॐ ह्रीं पुण्याहकलशार्चनं करोमि स्वाहा ।

(साथियाके ऊपरके कलशको अर्घ चढावें ।)

॥ कलशार्चनं ॥

आर्या—

जयतु जिनेश्वरशासनमखिलसुखं मे भवतु जगति जनानां।
देशे भवतु सुभिक्षं पांतु चिरं वसुमतिं राज्ञः ॥

ॐ अर्हद्भ्यो नमः। ॐ सिद्धेभ्यो नमः। ॐ सूरिभ्यो नमः। ॐ पाठकेभ्यो नमः। ॐ सर्वसाधुभ्यो नमः।

ॐ अतीतानागतवर्तमानत्रिकालगोचरानन्तद्रव्यगुणपर्याया-त्मकवस्तुपरिच्छेदकसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राद्यनेकगुणगणाधार-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः। ॐ पुण्याहं २ प्रीयंतां २ भगवं-तोऽर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सकलसुखाः त्रिलो-

केशाः त्रिलोकेश्वरपूजिताः त्रिलोकनाथाः त्रिलोकमहिताः त्रिलोकप्रद्योतनकराः। ॐ श्रीमद् भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठि-परमपवित्रशांतिभट्टारकपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मश्रीबलायुरारो-ग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ वृषभादयो महतिमहावीरवर्धमानपर्यंताः परमतीर्थंकर-देवाश्चतुर्विंशत्यर्हंतो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः संभिन्नतम-स्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकप्रद्यो-तनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ताः सकलभव्यजनसमूहकमल-वनसम्बोधदिनकराः देवाधिदेवाः। अनेकगुणगणशतसहस्रा-लंकृतदिव्यदेहधराः। पंचमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिं-शदतिशयविशेषसंप्राप्ताः। इन्द्रचक्रधरबलदेववासुदेवप्रभृति-दिव्यसमानभव्यवरपुण्डरीकपरमपुरुषवरमकुटतटनिबिड नवद्ध-मणिगणकरनिकरवारिधाराभिषिक्तचारुचरणकमलयुगलाः। स्वशिष्यपरशिष्यवर्गं प्रसीदंतु वः परममांगल्यनामधेयाः सद्धर्मकार्येष्विहामुत्र च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः

अतीतकालसंजातविविधविबुधनिवहप्रार्थितार्थप्रदानस-द्धर्मपारिजातपादपप्रभावोद्भूतसंपत्समेताः। निखिलभुवनकु-हरविश्रुतयशोराशिधवलितहरित्क्रयनिलयनिलिंपानंतविनीज-नमनोवितर्क्यमानकल्याणपरम्पराः। अनवरतविनमदखिलसुर-नरोरगखेचरपतिमुकुटतटताटितमाणिक्यमयूखमालालंकृतक्रम-कमलयुगलाः।

ॐ निर्वाण सागर, महासाधु, विमलप्रभ, श्रीधर, सुदत्त, अमलप्रभ, उद्धर, अंगिर, सन्मति, सिंधु, कुसुमांजलि, शिवगण,

उत्साह, ज्ञानेश्वर, परमेश्वर, विमलेश्वर, यशोधर, कृष्ण, ज्ञानमति, शुद्धमति, श्रीभद्र, अतिक्रांत, शांताश्चेति चतुर्विंशत्य-तीतकालतीर्थंकर परमजिनदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

ॐ संप्रतिकालश्रावकश्रेयस्कर स्वर्गावतरण जन्माभि-षवणपरिनिष्क्रमणकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणविभूतिभूषितमहा-भ्युदयाः । सिद्धविद्याधरराजमहाराजमण्डलीकमहामण्डलीकमु-कुटबद्धबलकेशवसार्वभौमादिविजयदानवोरगेन्द्रकिरीटप्रभाम-णिगणप्रभाप्ररूढ़नि जलप्रवाहप्रक्षालितचारुचरणनखकिरणच-न्द्रचन्द्रिकाप्रतिहतपापांधकाराः ।

ॐ वृषभ, अजित, शंभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शांति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, श्रीवीर वर्धमानाश्चेति चतुर्विंशतिवर्तमानकालतीर्थंकरपरम जिनदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

ॐ भविष्यत्कालभव्याभ्युदयनिमित्तनिखिलकल्याण-रमणीयकत्रिभुवनैश्वर्यशोभितमहाप्रभावाः । सहर्षसंभ्रमप्रणुत-चतुर्निकायामरपतिनिकरमौलिविलम्बितरत्नरंजितानेकमणिग-णखचितसुवर्णसिंहासनालंकृत सहस्रदलकमल विष्टराधिष्ठित पादपद्मयुगुलाः ।

ॐ महापद्म, सुरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रभ, सर्वात्मभूत, देवपुत्र, कुलपुत्र, उदंक, प्रौष्ठिल, जयकीर्ति, मुनिसुव्रत, अर, निःपाप, निष्कषाय, विपुल, निर्मल, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, स्वयभू, अनि-

वर्तिक, जय, विमल, देवपाल, अनन्तवीर्यश्चेति चतुर्विंशति अनागतकालतीर्थंकरपरमजिनदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ॥

ॐ अनाद्यविद्याविलासदुस्तरतमःपटलपटावगुण्ठितजगदूर्जितज्योतिः स्वरूपयथावस्थितसमस्तवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणादिब्रह्मवदनकंजसंजातद्वादशांगचतुर्दशपूर्वप्रपंचप्रवचनपारावारपारीणाः ।

ॐ वृषभसेन, कुम्भ, दृढरथ, शतधनु, देवशर्म, धनदेव, नन्दन, सोमदत्त, सूरदत्त, वायुशर्म, यशोबाहु, मार्गदेव अग्नि, अग्निदेव, अग्निगुप्त, चित्राग्नि, हलधर, महीधर, माहेन्द्र, वासुदेव, वसुन्धर, अचल, मेरुधर, मरुभूति, सर्वयश, सर्वयज्ञ, सर्वगुप्त, सर्वप्रिय, सर्वदेव, सर्वविजय, विजयगुप्त, विजयमित्र, विजयदल, अपराजित, वसुमित्र, विश्वसेन, सुसेन सत्यदेव, देवसत्य, सत्यगुप्त, सत्यमित्र, शर्मद, विनत, शंबर, मुनिगुप्त, मुनियज्ञ, मुनिदेव, गुप्तयज्ञ, मित्रयज्ञ, स्वयंभू, भगदेव, भगदत्त, भगफल्गु, मित्रफल्गु, प्रजापति, सवसह, वरुण, धनपाल, मघव, तेजोराशि, महावीर, महारथ, विशाल, महाज्वाल, सुविशाल वज्र, वज्रशाल, चन्द्र, चन्द्रचूल, मेघेश्वर, कच्छ, महाकच्छ, नमि, विनमि बल, अतिबल, वज्रबल, नंदी, महानुभोगी, नंदिमित्र, महानुभाव, कामदेवानुपमाश्चेति आदिब्रह्म समवशरण प्रवर्त्तमान चतुरशीतिगणधरदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ॥

ॐ वृषभसेन, सिंहसेन, चारुसेन, वज्रनाभि, चमर, वज्रचमर, बलदत्त, विदर्भ, अनगार, कुन्थु, धर्म, मंदर, जयार्य, अरिष्टसेन, चक्रायुध, स्वयंभू, कुंभार्य, विशाख, मल्लि, सुप्रभ,

वरदत्त, स्वयंभू, गौतमाश्चेति चतुर्विंशतितीर्थंकरसभाभासमानगणधर मुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

ब्राह्मी, आत्मगुप्ता, धर्मश्री, मेरुषेणा, अनंतमति, रतिषेणा, मीनश्री, वरुणश्री, घोषावती, धरणश्री, धारणा, वरसेना, पद्मश्री, सर्वश्री, सुव्रता, हरिषेणा, भावश्री, कूर्पश्री, अमरसेना, पुष्पदंता, मार्गश्री, यक्षश्री, सुलोचना, चन्दनाश्चेति चतुर्विंशतिगणिनीमुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रेयांस, ब्रह्मदत्त, सुरेन्द्रदत्त, इन्द्रदत्त, पद्मदत्त, सोमदत्त, महेन्द्रदत्त पुष्पमित्र, पुनर्वसु, नन्दन, सौंदर, जय, विशाख, धान्यसेन, धर्ममित्र, सुमित्र, अपराजित, नंदी, नंदिसेन, वृषभसेन, दत्त, वरदत्त, धान्य, नंदनाश्चेति चतुर्विंशतिदातृमुख्याश्च वः प्रीयंतां२ ।

भरत, सत्यभाव, सत्यवीर्य, मित्रभाव, मित्रवीय, धर्मवीर्य, दानवीर्य, मघव, युद्धवीर्य, श्रीमन्दर, त्रिपिष्ठ, द्विपिष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषवर, पुण्डरीक, दत्त कुनाल, नारायण, सुभौम, अजितंजय, उग्रसेन, अजित, श्रेणिकाश्चेति चतुर्विंशतिश्रोतृमुख्याश्च वः प्रीयंतां २ ॥

गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षेश्वर तुम्बुरु, कुसुम, वरनंदी, विजय, अजित, ब्रह्मेश्वरकुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व, महेन्द्र, कुबेर, वरुण, विद्युत्प्रभ, सर्वाण्ह, धरणीन्द्र, मातंगनामानश्चेति चतुर्विंशतियक्षेन्द्राश्च वः प्रीयंतां २।

चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्रशृंखला पुरुषदत्ता, मनोवेगा, काली, ज्वालामालिनी, महाकाली, मानवी गौरी गांधारी, वैरोटी, अनन्तमति, मानसी, महामानसी, जया विजया, अपराजिता, बहुरूपिणी, चामुण्डी, कूष्माण्डी, पद्मावती, सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिशासनदेवताश्च वः प्रीयंतां २ ॥

नाभिराज, जितशत्रु दृढराज, स्वयंवर, मेघरथ, धरणराज, सुप्रतिष्ठ, महासेन, सुग्रीव, दृढरथ विष्णुराज, वसुपूज्य, कृतवर्म, सिंहसेन भानुराज, विश्वसेन, सुरसेन, सुदर्शन, कुम्भराज, सुमित्र, विजयराज, समुद्रविजय, विश्वसेन, सिद्धार्थाश्चेति चतुर्विंशति जिनजनकाश्च वः प्रीयंतां२ ।

मरुदेवी विजया, सुषेणा, सिद्धार्था, सुमंगला, सुषीमा, पृथ्वी, लक्ष्मणा, जयरामा, सुनन्दा नन्दा, जयावती आर्यश्यामा, लक्ष्मीमती, सुप्रभा, एरादेवी, श्रीकांता, मित्रसेना, प्रभावती, सोमा, वर्मिला, शिवदेवी, ब्राह्मी, प्रियकारिण्यश्चेति चतुर्विंशतिजिनमातृकाश्च वः प्रीयंतां२ ।

प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमल, वाहन, चक्षुष्म, यशस्वि, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, प्रसेनजित, नाभिराजाश्चेति वर्तमानचतुर्दशकुलधराश्च वः प्रीयंतां२ ।

कनक, कनकप्रभ, कनकराज, कनकध्वज, कनकपुंगव, नलिन, नलिनप्रभ, नलिनराज, नलिनध्वज, नलिनपुंगव, पद्म, पद्मप्रभ, पद्मराज, पद्मध्वज, पद्मपुंगव, महापद्माश्चेति भविष्यत्कुलधराश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रीषेण, पुंडरीक, वज्रनाभि, वज्रदन्त, वज्रघोष, चारुदत्त, श्रीदत्त, सुवर्णप्रभ, भूवल्लभ, गुणपाल, धर्मसेन कीर्त्योघाश्चेति अतीतद्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयंतां२ ।

भरत, सगर, मघव सनत्कुमार, शांति कुन्थु, अर, सुभौम, महापद्म, हरिषेण, जयसेन पद्मदत्ताश्चेति वर्तमानद्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयंतां२

भरत, दीर्घदन्त, मुक्तदन्त, गूढदन्त, श्रीषेण, श्रीभूति, श्रीकांत, पद्म, महापद्म चित्रवाहन, विमलवाहन, अरिष्टसेनाश्चेति अनागतद्वादशचक्रवर्तिनश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रीकांत, शांतचित्त, वरबुद्धि, मनोरथ, दयामूर्ति, विपुलकीर्ति, श्रीराम, प्रभाकर, संजयंनाश्चेति अतीतनवबलदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ।

विजय अचल, सुधर्म, सुप्रभ सुदर्शन, नंदि, नंदिमित्र, राम, पद्माश्चेति वर्तमान नवबलदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

चन्द्र महाचन्द्र चन्द्रधर, हरिचन्द्र, सिंहचन्द्र, वरचन्द्र, पूर्णचन्द्र, शुभचन्द्र, श्रीचन्द्राश्चेति अनागतनवबलदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

काकुत्स, वरभद्र, सुभद्र सुश्लिष्ट, नरवीर, शत्रुँजय, अमितारि प्रियदत्त, विमलवाहनाश्चेति अतीतनववासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

त्रिपिष्ट, द्विपिष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम पुरुषसिंह, पुरुषवर, पुण्डरीक, लक्ष्मीधर, कृष्णाश्चेति वर्तमाननववासुदेवाश्च वः प्रीयंतां २ ॥

नन्दि, नन्दिमित्र, नंदिषेण, नंदिभूति, बल, महाबल, अतिबल, त्रिपिष्ट, द्विपिष्टाश्चेति अनागतनववासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

निशुंभ, विद्युत्प्रभ, रणरसिक, मनोवेग, चित्रवेग, दृढरथ, वज्रजंघ, विद्युज्जंघ, प्रल्हादाश्चेति अतीतनवप्रतिवासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

अश्वग्रीव तारक, मेरुक निशुंभ, कैटभ, बलि, प्रहरण, रावण, जरासंघाश्चेति वर्तमाननवप्रतिवासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

श्रीकण्ठ, हरिकण्ठ, नीलकण्ठ, अश्वकण्ठ, सुकण्ठ शिखिकण्ठ, अश्वग्रीव, हयग्रीव, मयूरग्रीवाश्चेति अनागतनवप्रतिवासुदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

भीम महाभीम, रुद्र, महारुद्र, काल, महाकाल, दुर्मुख, निर्मुख, अधोमुखाश्चेति वर्तमाननवनारदाश्च वः प्रीयंतां२ ।

भीमावली, जितशत्रु, रुद्र, महारुद्र, विश्वानल, सुप्रतिष्ठा, अचल, पुंडरीक, अजितधर, जितनाभि, पीठ, सत्यकीपुत्राश्चेति वर्तमानएकादशरुद्राश्च वः प्रीयंतां२ ।

प्रमद, संमद, प्रकाम, कामद, भवहर, मनोहर, मनोभव, मार, काम, रुद्र, अंगजाश्चेति, अनागत एकादशरुद्राश्च वः प्रीयंतां २ ।

असुर, नाग, सुपर्ण, द्वीपर्ण, द्वीपोदधि, स्तनित, विद्युत्, अग्नि, वात दिक्कुमाराश्चेति दशविधभवनेन्द्राश्च वः प्रीयंतां२ ।

चमर, वैरोचन, धरण, भूतनाद, वेणुदेव, वेणुधारि, पूर्णवशिष्ठ, जलप्रभ, जलकांत, घोष, महाघोष, हरिषेण, हरिकांत, अमितगति, अमितवाहन, अग्निशिखि, अग्निवाहन, वैलम्ब, प्रलम्ब प्रभंजनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयंतां२।

किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व, यक्ष, राक्षस भूत, पिशाचाश्चेति अष्टविधव्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयंतां२॥

किन्नर, किंपुरुष, सत्पुरुष, महापुरुष, महाकाय, अतिकाय, गीतरति, गीतयशः, पूर्णभद्र, मणिभद्र, भीम, महाभीम, सुरूप, प्रतिरूप काल महाकालाभिधानाश्चेति षोडश व्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयंतां २॥

चन्द्रादित्यग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारकाश्चेति पंचविध ज्योतिष्केंद्राश्च व प्रीयंतां २।

सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेंद्र, ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लांतव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण अच्युतेंद्राश्चेति षोडशकल्पेंद्राश्च वः प्रीयंतां२।

हिट्ठिमहिट्ठिम हिट्ठिममज्झिम हिट्ठिमोपरिम मज्झिमहिट्ठिम मज्झिममज्झिमोपरिम उपरिमहिट्ठिम उपरिममज्झिम उपरिमोपरिमाख्य नवग्रैवेयकनिवासिनोऽहमिंद्रदेवाश्च वः प्रीयंतां१।

त्रिलोकाविषयलोकालोकवर्तिसर्वद्रव्यपर्यायक्रमकरणव्यवधानातिक्रमसाक्षात्करणकेवलाख्यपरंज्योतिप्रमुखस्वाभाविकानंतगुणविशेषविभूपिताः सकलचक्रिकुरुभवार्यफणींद्राहमिंद्रत्रिकालसंभावितसुखानंतगुणित खराभावितक्षीणपर्यायमर्वकालशाश्वतपरमोत्कृष्टसुखानन्दमंदिरायमाणाः।

वीतरागद्वेषमोहाः जातिजरामरणविप्रमुक्ताः देवाधिदेवाः परमनिर्वाणसंप्राप्ताः परममांगल्यनामधेयाः अष्टकर्ममलविलय-स्पष्टीभूतपरमावगाढसम्यक्त्वाद्यष्टगुणविशिष्टसकलसिद्धसमूहाश्च वः प्रीयंतां२ ॥

रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्रशृंखला, वज्रांकुशा अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गांधारी, ज्वालामालिनी, मानवी, वैरोटी, अच्युता, मानसी, महामानस्यश्चेते षोडश-विद्यादेवताश्च वः प्रीयंतां२ ॥

जया, विजया, अजिता, अपराजिता जंभा, मोहा, स्तंभा, स्तंभिन्यश्चेति अष्ट महादेवताश्च वः प्रीयंतां२ ॥

श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, शांति पुष्टयश्चेति अष्ट दिक्कन्यकाश्च वः प्रीयंतां२ ।

नित्यप्रवृत्ततारकायोगकरणाद्युपेतपक्षतिप्रभृतिसमस्त-तिथिप्रभावप्रयोजनप्रधानाः यक्ष, वैश्वानर, राक्षस, नधृत, पन्नग, असुरकुमार, पितृ, विश्वमालिनी, चमर, वैरोचन, महाविद्युमार, विश्वेश्वर, पिण्डाशिनश्चेति पंचदशतिथिदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ॥

अनन्त, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, तक्षक, पद्म, महापद्म, कर्कोटक जयविजयादि अष्ट महानागाश्च वः प्रीयंतां२ ।

इंद्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, धर-णींद्र, चन्द्राश्चेति दशदिक्पालदेवाश्च वः प्रीयंतां२ ।

आदित्य, सोम, मंगळ, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु केतु, नाम नवग्रहाश्च वः प्रीयंतां २।

काळ, निकाळ, लोहित, कनक, कनकस्थान, अन्तरद, कच, यव, दुंदुभि, रत्ननिभ, रूप, निर्मास, नीलनीलभास, अश्व, अश्वस्थान, कोश, कंशवर्ण, शंख, शंखपरिमाण, शंखवर्ण, उदय, पंचवर्ण, तिल, तळपुच्छ, क्षारराश, धूम, धूमकेतु, एकसंस्थान, अक्ष, कलेवर, वकट, अभिन्नसंधि, ग्रंथिमान चतुः, पाद, विद्युज्जिह्व, नभ, सदृश, निलय, काळ, काळकेतु, अनय, सिंहायु, विपुलकाल, महाकाळ, रुद्र, सन्तान, सम्भव, सर्वार्थीश, शांति, वस्तून, निश्चळ, प्रलंभ, निमंत्र, ज्योतिष्मत, स्वयंप्रभ, भासुर, विरज, निर्दुःख, वीतशोक, सीमंकर, क्षेमंकर, अभयंकर, विजय, वैजयंत, अपराजित, विमाळ, त्रस्त, विजयिष्णु, विकस, करिकाष्ठ, एकजटि, अग्निज्वाल, ज्वाळकेतु, क्षीररस, अघ, श्रवण, राहु, महाग्रह, भावग्रह, कुज, शनि, बुध शुक्र गुरवश्चेति अष्टाशीति ग्रहाश्च वः प्रीयंतां२।

ग्राम नगर खेड खर्वड मडंब पत्तन द्रोणामुख संवाहन घोष, राजधानी, जिनधाम, प्रासाद, गोपुर, गृहमण्डप, समस्त, वास्तु वास्तव्यास्ताः समर्चनीयाः। ब्रह्म, इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, आर्य, विवस्वत भूधर, सविन्द्र, साविन्द्र, इन्द्र, इन्द्रराज, रुद्र, रुद्रराज, अप, अपवत्स, पर्जन्य, जयन्त, भास्कर, सत्यक, भृश, अन्तरिक्ष, पुष, वितथ, राक्षस गन्धर्व भृंगराज, मृष, दौवारिक, सुग्रीव, पुष्पदन्त, असुर, शोष, रोग, नाग मुख्य भल्लाट, मृगदेव, अदिति,

उद्दिति, विचारी, पूतना, पाप राक्षसी, चरकीनामधेया वास्तु-देवताः वः प्रीयंतां २ ।

सर्वे गुरुभक्ता अक्षीणकोशकोष्ठागारा भवेयुः । दानतपोवीर्यधर्मानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रगुरुसुहृतस्वजनसम्बंधिबन्धुवर्गसहितस्य अस्य यजमानस्य धनधान्यैश्वर्यद्युतिबलायुयशस्कीर्तिवृद्धिवर्धनं भवतु । समोद प्रमदा भवंतु । ग्रामदेवता प्रसीदंतु, गृहदेवताः प्रसीदंतु, कुलदेवता प्रसीदंतु दीक्षागुरुवः प्रसीदंतु, शिक्षागुरुवः प्रसीदंतु, विद्यागुरुव प्रसीदंतु, चातुर्वर्णसंघाः प्रसीदंतु । शांतिर्भवतु, कांतिर्भवतु, तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु सिद्धिर्भवतु, वृद्धिर्भवतु । अविघ्नमस्तु, आरोग्यमस्तु, आयुष्यमस्तु, शिवकर्मास्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, शास्त्रसमृद्धिरस्तु, इष्टसम्पदस्तु, अरिष्टनिरसनमस्तु, धनधान्यसमृद्धिरस्तु । काममांगल्योत्सवाः संतु । शाम्यंतु घोराणि, शाम्यंतु पापानि । पुण्यं वर्धतां, धर्मो वर्धतां, श्रीवर्धतां, आयुवर्धतां, कुलं गोत्रं चाभिवर्धतां । स्वस्ति भद्रं चास्तु नः, हस्तास्ते परिपंथिनः, शत्रवो निधनं यांतु, निःप्रतिघमलमस्तु शिवमलमस्तु

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जितं ।

अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥ १ ॥

श्रीशांतिरस्तु शिवमस्तु, जयोऽस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव पुष्टिसमृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु, कुलगोत्रधनं सदास्तु ॥ १ ॥

भूता भवंतो भव्याश्च जिनाधीशागणाधिपाः ।
गणिन्योदातृमुख्याश्च श्रोतारो यक्षनायकाः ॥ ३ ॥
यक्ष्यो जिनानां पितरो मातरो मनवस्तथा ।
चक्रिणो बलदेवाश्च केशवाः प्रतिकेशवाः ॥ ४ ॥
नारदाश्च ततो रुद्राश्चतुर्विधसुराधिपाः ।
रोहिण्याद्या जयाद्याश्च श्र्यादयस्तिथिदेवताः ॥ ५ ॥
महानागाश्च दिक्पाला ग्रहाः वास्तु सुरास्तथा ।
ग्रामाधिदेवता क्षेत्रदेवताः कुलदेवताः ॥ ६ ॥
एते देवगणाः सर्वे भण्याः पुण्याहवाचने ।
ततो देवाः प्रसीदंतु विघ्ना नश्यंतु सर्वथा ॥ ७ ॥
महायज्ञसमारम्भे गंधाबुस्नपने तथा ।
गन्धोदकप्रदाने च शांतिपुष्ट्याद्युपक्रमे ॥ ८ ॥
आधानादिक्रियारम्भे ग्रहवक्रत्वसंभवे ।
परमंत्रप्रयोगे च महोत्पाते महारुजि ॥ ९ ॥
सर्वेष्वपि च होमेषु बीजानां सेचने तथा ।
पुण्याहवाचना पुण्या भण्या संकल्पपूर्विका ॥ १० ॥

॥ इतिश्री पुण्याहवाचनम् ॥

अथ मंगलाष्टक ।

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधौ व्यवस्थायिनां ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधव-
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ।
मुक्तिश्रीनगराधिपजिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदं ॥
धर्मं सूक्तिसुधावचैत्यमखिलं जैनालयं स्वालयं ।
प्रोक्तं तत्त्रिविधं चतुर्विधमिमं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ २ ॥

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिका विंशतिः ।
त्रैलोक्याभयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ३ ॥

ये पंचौषधिरिद्धयः श्रुततपोरिद्धिं गताः पंच ये ।
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टौ विधाश्चारणः ॥
पंचज्ञानधराश्च येऽपि बलिनो ये बुद्धिरिद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलाश्च ते गणधराः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ४ ॥

देव्यश्चाष्ट जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता ।
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः ॥
द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा ।
दिक्पाला दश इत्यमी सुरगणाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ५ ॥

ज्योतिर्व्यंतरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररौप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुषोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ६ ॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृति महावीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ॥
शेषाणामपि चोर्ज्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ७ ॥

ब्राह्मीचन्दनबालिका भगवति राजीमती द्रौपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ॥
कुन्तीशीलवती नलस्य दुहिता चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मावत्यपि सुन्दरी च प्रमुखाः कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ८ ॥

यो गर्भावतरेऽर्हतामनु तथा जन्माभिषेकोत्सवे ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण सततं यः केवलज्ञान भाक् ॥
यै कैवल्यपुरः प्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च पंच सप्त सततं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ९ ॥

इत्थं श्रीजिन मंगलाष्टकमिदं कल्याणकालेऽर्हतां ।
पूर्वाह्ने च महोत्सवे च सततं श्रीसौख्य सम्पत्प्रदं ॥
ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्वितैः ।
लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिता कुर्वंतु वो मंगलं ॥१०॥

॥ इति मंगलाष्टकं ॥

शांतिमंत्रः।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय, अनंतसंसार-चक्रपरिमर्दनाय, अनंतदर्शनाय, अनंतवीर्याय, अनंतसुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमंडिताय, ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाप्रमुख-चतुस्संघोपसर्गविनाशाय, घातिकर्मविनाशाय, अघातिकर्म विनाशाय। अपवादं अस्माकं छिंद छिंद, भिंद भिंद। मृत्युं छिंद२, भिंद२। अतिकामं छिंद२, भिंद२। रतिकामं छिंद२, भिंद २। क्रोधं छिंद २, भिंद २। अग्निं छिंद २, भिंद २। सर्वशत्रुं छिंद २, भिंद २। सर्वोपसर्गं छिंद २, भिंद २। सर्वविघ्नं छिंद २, भिंद २। सर्वभयं छिंद २, भिंद २। सर्व राजभयं छिंद २, भिंद २। सर्वचोरभयं छिंद २, भिंद २। सर्वदुष्टभयं छिंद २ भिंद २। सर्वमृगभयं छिंद २, भिंद २। सर्वपरमंत्रं छिंद २, भिंद २। सर्वमात्मकभयं छिंद२, भिंद२। सर्वशूलभयं छिंद २, भिंद २। सर्वक्षयरोगं छिंद २, भिंद २।

सर्वकुष्टरोगं छिंद २, भिंद २। सर्व ज्वरमारिं छिंद२, भिंद२। सर्वगजमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्वाश्वमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्वगोमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्वं महिषमारिं छिन्द २, भिन्द। सर्व धान्यमारिं छिन्द २। भिन्द २, सर्व वृक्षमारिं छिन्द२, भिन्द २। सवगुल्ममारिं छिन्द २, भिन्द२। सर्वपत्रमारिं छिन्द २, भिन्द। सर्वपुष्पमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्वफलमारिं छिन्द २, भिन्द, २। सर्वराष्ट्रमारिं छिन्द २, भिन्द२। सर्व देशमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्व-विषमारिं छिन्द २, भिन्द २। सर्वक्रूररोगं छिन्द २, भिन्द२। सर्ववेतालशाकिनीभयं छिन्द२, भिन्द२। सर्ववेदनीयं छिन्द२, भिन्द २। सर्वमोहनीयं छिन्द २, भिन्द। ॐ सुदर्शनमहा-राजचक्रविक्रमतेजोबलशौर्यशांतिं कुरु कुरु। सर्वजनानन्दनं कुरु २। सर्वभव्यानन्दनं कुरु २। सर्वगोकुलानंदनं कुरु २। सर्वग्रामनगरखेटखर्वटमडम्बपत्तनद्रोणामुखसहानन्दनं कुरु २। सर्वलोकानन्दनं कुरु २। सर्वदेशानन्दनं कुरु २। सर्वयजमा-नानन्दनं कुरु २। हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं व्याधिव्यसनवर्जितं अभयक्षेमारोग्यं स्वस्तिरस्तु। शांतिरस्तु शिवमस्तु कुलगोत्रधनं धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य, मल्लि, वर्द्धमान, पुष्पदन्त शीतल, मुनिसुव्रत, नेमि-नाथ, पार्श्वनाथ, इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहार्थं गंधोदकधारावर्षणम्॥

॥ इति शांतिमंत्र सम्पूर्णः ॥

श्री १०८ आचार्य श्री शांतिसागर दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला कमीटीके

मेम्बरोंकी नामावलि ।

१–क्षुल्लक आदिसागरजी महाराज (भीलोडा)

२–दोशी फूलचन्द सुरचन्द–ईडर (मंत्री)

३–दोशी कस्तूरचन्द अमथालाल–ईडर (केशियर)

४–शाह चुनीलाल मलुकचन्द–भीलोडा (मेम्बर)

५–गांडिया पानाचन्द गुलाबचन्द–वांकानेर (मेम्बर)

* श्रीवीतरागायनमः *

व्रतोद्यापनसंग्रहे

अष्टाह्निकव्रतोद्यापनम् ।

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं सर्वज्ञं सर्वपूजितम् ।
वीतरागं जगन्नेत्रं धर्मचक्रप्रवर्तकम् ॥१॥
जिनास्यजां सदावन्दे शारदां मम सारदाम् ।
चतुरशीतिलक्षाणां जन्तूनामुपकारिणीम् ॥२॥
गुरूणां चरणौ नत्वा प्रणम्याष्टविधार्चनम् ।
नन्दीश्वराभिधे द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालये ॥३॥
आदौ गंधकुटीपूजां पश्चात् सर्वं समाचरेत् ।
यंत्रस्य सिद्धचक्रस्य चतुर्मुखजिनस्य वा ॥४॥
एकैकस्य च दिग्भागे त्रयोदश हि पर्वताः ।
तत्र प्रत्येकचैत्यस्य पूजां कुर्वे शुभाप्तये ॥५॥
पूजनीयो जिनाधीशो नन्दीश्वरस्यस्वस्तिके ।
द्वापञ्चाशत्सुपद्मेषु विमलेषु शिवाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनपूजनप्रतिज्ञानाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नन्दीश्वराष्टमविशालमनोज्ञरूपे
द्वीपे जिनेश्वरगृहाश्च भवन्ति युग्मम् ।
पंचाशदिन्द्रमहितान् प्रयजामि सिद्ध्यै
देवेन्द्रनागपतिचर्चितचारुविम्बान् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् स्वाहा । (आह्वाननं) ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । (स्थापनं)

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा । (सन्निधापनं)

अथाष्टक ।

कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीर
धाराभिराभिरभितः श्रमहारिणीभिः ।
नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयजिनविम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ जलं ॥ १ ॥

हृद्घ्राणतर्पणपरैः परितर्पसर्पै-
र्गन्धैः सुचन्दनरसैर्घनकुंकुमाद्यैः ।
नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपानां
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० । चन्दनं ॥ २ ॥

उभिद्रचन्द्रविलसत्किरणावदातैः
सत्कुन्दकोरकनिभैः कलमाक्षतोघैः ।
नन्दीश्वराष्टदिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० अक्षतान्० ॥ ३ ॥

मन्दारचारुहरिचन्दनपारिजात
सन्तानभूरुहभवैः कुसुमैर्विचित्रैः ।
नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपानां
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पं० ॥ ४ ॥

सिद्धैर्विशुद्धनवकांचनभाजनस्थैः
पीयूषमिष्टललितैश्चरुभिर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्वराष्ट०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे० चरु० ॥ ५ ॥

ध्वस्तान्धकारनिकरैः कनकावदातै
र्दीपैः प्रदीपितसमस्तदिगन्तरालैः । नन्दी०

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥ ६ ॥

धूपैरमन्दतरसौरभजालगुञ्जद्-
भृङ्गाकुलैरगुरुचन्दनचन्द्रमिश्रैः । नन्दी०

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे० धूपं० ॥ ७ ॥

कम्राम्रदाड़िममनोहरमातुलिङ्ग—
जातीफलप्रभृतिसौरभसत्फलाद्यैः । नन्दी०

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे० फलं० ॥ ८ ॥

द्वीपेनन्दीश्वरेऽस्मिन् विविधमणिगणाक्रान्तकान्ताङ्गकान्ति-
प्राग्भारभास्तचंद्रद्युतिकरनिकरध्वस्तमिथ्यान्धकारम् ॥
चैत्यं चैत्यालयाँश्चोज्वलकुसुमफलाद्यैरनिन्द्यप्रभावैः ।
भक्त्या येऽभ्यर्चयन्ति स्फुटमसमसुखां ते लभन्ते विमुक्तिं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये जिनबिम्बेभ्यः अर्घं निर्पपामिति स्वाहा ॥ अर्घं ॥

अथ प्रत्येकपूजा ।

अष्टम्यां क्रियते साधो नन्दीश्वरोहि शोषकः ।
दशलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये नंदीश्वरोपवासाय दशलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ॥ १ ॥

नवम्यामेक भुक्तं हि महाविभूतिनामभाक् ।
दशसहस्रोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये महाविभूतिनामोपवासाय दशसहस्रोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ॥ २ ॥

दशम्यां कंजिकाहारस्त्रिलोकसारसंज्ञकः ।
षष्टिलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये त्रिलोकसारनाम शोषकाय षष्टिलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ॥ ३ ॥

एकादश्यां तिथौ प्रोक्तं मवमौदर्यचतुर्मुखं ।
पंचलक्षोपवासस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये चतुर्मुखनामशोषकाय पंचलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ॥ ४ ॥

द्वादश्यामनगारस्य पंचलक्षणनामकः ।
चतुरशीतिलक्षस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये पंचलक्षणनाम शोषकायपंचाशल्लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं ॥ ५ ॥

त्रयोदश्यामाम्लरसः स्वर्गसोपानसंज्ञकः ।
चत्वारिंशल्लक्षस्य फलं चाये जिनाधिपं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेद्वापंचाशज्जिनालये स्वर्गसोपाननाम शोषकाय चत्वारिंशल्लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं ॥ ६ ॥

श्रीमत्सुसप्तमदिने वरसर्वसंज्ञः
शाकत्रयेण सहितो वरशुद्ध एषः ।
लक्षोपवासफलदो भवति प्रसिद्धः
चाये जिनं सकलबोधनिधानपात्रम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये सर्वसम्पन्ननामोपवासाय लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनायअर्घं ॥८॥

एकादिने १ हीन्द्रध्वजाभिधान
उपोषको यः क्रियते मनुष्यैः ।

तिस्रोह्निकोट्योत्तर पंचलक्षं
चाये जिनं तस्य फलप्रदाय ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेद्वापंचाशज्जिनालये इन्द्रध्वजनामोपवासाय त्रिकोटिपंचलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जलगंधाक्षतैः पुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपकैः ।
फलैरर्घान्वितैश्चाये श्रीजिनं सुधये नृणां ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय पूर्णार्घं ॥ १० ॥

प्राच्यां दिशि श्रीगिरिरंजनंस्यात्
तत्रस्थितं श्रीजिन चैत्यवृन्दं ।
चाये जलाद्यैः सुरराजवंद्यं
सदा पवित्रं सुखदं सुगात्रं ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिस्थितांजनगिरौ जिनबिम्बाय अष्टान्हिक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥ १ ॥

श्रीमत्प्राचीसुदिग्भागे गिरिदधि मुखोमतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चायेऽहं श्रीसुखाप्तये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितदधिमुखगिरि श्री जिनाय अष्टान्हिक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥ २ ॥

श्रीपूर्वदिग् सुखवराश? सुशोभमानो
नाम्नायुतो दधिमुखो गिरिराजतुल्यः ।
तत्रस्थितं सुरनुतं जिननाथबिम्बं
चाये सदा सकलकर्मविमुक्तरूपं ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितद्धि- [illegible] श्रीजि-
नाय० जलादिकं ॥ ३ ॥

श्रीपूर्वस्यां दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं जिनचैत्यं च चाये पापप्रशान्तये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितत्तृतीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० जलादिकं ॥ ४ ॥

तत्र प्राचीदिशायां च चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्राश्रितं जिनंचैत्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितचतुर्थदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ ५ ॥

श्रीमदिन्द्रस्य संबंधिदिशायां यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥ ६ ॥

त्रिदशेन्द्रस्य संबंधि दिशायां यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं पूजयेऽहं सुखप्रदम् ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ७ ॥

श्रीदेवेन्द्रस्य संबंधो दिग्भागे यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनबिम्बं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित तृ[illegible]गिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ ८ ॥

इन्द्राधिष्ठित दिग्भागे वर्तते यो रतिकरः ।
तत्रस्थं पूज्यपादं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥९॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ९ ॥

देवदेवस्य दिग्भागे सुखदेऽस्ति रतिकरः ।
तत्रस्थमकलङ्कं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१०॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितपंचमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ १० ॥

प्राचीन बहिर्दिग्भागे संस्थितो यो रतिकरः ।
तत्रस्थंजिनचंद्रं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥११॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थतो षष्ठरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ ११ ॥

इन्द्राणीपतिदिग्भागे संस्थितो यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनबिम्बं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१२॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १२ ॥

त्रिदशेन्द्रस्य दिग्भागे विद्यते यो रतिकरः ।
तत्रस्थं जिनसूर्यं च पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥१३॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थताष्टमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥ १३ ॥

तद्बीजं परमं सर्वं यजूज्ञानेन सुवासिने ।
अनेनमूलमंत्राय तस्मै पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥१॥

आशीर्वादः ।

कल्याणं विजयो भद्रं चिन्तितार्थं मनोरथाः ।
श्रीनन्दीश्वरप्रसादेन सर्वेऽर्था हि भवन्तु ते ॥२॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अथ जयमाला ।

घत्ता ।

सुरणर पणमियपयगुण हर भवभय ।
सांतिपयासण शांतिजिणा ॥
तुवचरणणमिवर उवसम इवर ।
अक्खमि अग्घु समुवयण ॥ १ ॥

छन्द ।

वाणवितरवरा कप्पवासीसुरा ।
मिलियजोइसियगणा अमरासुरगणा ॥
शए मनिरंग रमयन्ति णंदीसरे ।
अठ्ठविय पूय णिम्मविय वसु वासरे ॥ १ ॥

गाथा ।

वसुवासरम्मिपूया णिम्माविय पढमसग्गइन्देण ।
कणयमय थाल सज्जिय पज्जलिय रयण आरतिओ ॥२॥
पज्जलिय रयण आरतिओ भासुरो ।
इंदु णच्चइ सुरा संजुओ सुंदरो ।

देव अप्सरगणा जय जय सद्दयं ।
कुणइ आरतियो वासओ सुहरयं ॥ ३ ॥
आरतिओ कुण्णंता । अट्ठमदीवेहिं वासओ भायं ।
अच्छुरय णच्चमाणा । देवाणां जयजय सद्दं ॥ ४ ॥

जय जणाह गुण गहिरमई सायरा ।
वीयसो यांति जय लोपतुं भायरा ॥
कुणइ आरतिओ विग्ध अवहारिणो ।
सग्ग अपवग्ग मग्गमि जो देसणो ॥ ५ ॥

गाथा—अट्ठमदीव पहाणो । चउदिसि चत्तारिवावि सुखणाए ।
जोयण लक्ख पमाणा । व्यमेयं पयं पीयाविरे ॥ ६ ॥

वावि कुंडंमि दह तिणिच्चेइहरा ।
दिसिहिं दिसि एव जाणेहिं महं सुन्दरा ॥
एय एयम्मि वसु अहिए सउ पडिमय ।
उद्धसय पंच धुणुहाइ तणु वपुमयं ॥ ७ ॥

गाथा—अट्ठसहस्समाला । णाणा रयण मणोण लंबमाणाए ।
पत्तेया पत्तेया । अणाइ णिहिणामयं सिद्धा ॥ ८ ॥
जोयण सत्तरि पंच अहियं परं ।
उच्चमाणंवि आयाम सहु णिब्भरं ॥
विच्छउरा होति पंणास मनोहारिणो ।
चारिदारं वरं मणोहारिणो ॥ ६ ॥

गाथा—सिंहादार वरम्मिय । धवल मणोहर सोहणाए ॥
आविसरा प्रयंडा ॥ चत्तारि माण थंभाए ॥ १० ॥
अट्ठवर पाडिह एसथा सोहिया ।
वसुविहा दव्व मंगल सुरे संसया ॥

तालकंसाल भरभेरि बीणाकुला।
तवलि झल्लरीय वज्जंति बहु मद्दला ॥ ११ ॥
गाथा—वज्जंति वायबहुला । इंदो णच्चंतु अप्सराजुत्तो ॥
अषाढकातिकाय। फाल्गुण मासम्मि सव अट्ठमिदिणे ॥१२॥
तावकुव्वंति जावंति पुण्णिमद्दिणो।
दिव्यवर सोलसाभरण मंडियतणो ॥
दिव्यमणि जडिय आरति ओकर तले।
उत्तरेविय एवं हिणंदीसरे ॥ १३ ॥
धुगिणधों धुगिणधों वज्जंतिए मद्दलं।
त्रिगिणेत्रे त्रिणिणेत्रे सद्दए भुंगलं ॥
दिव्यमणि जडिय आरतिआं करतले।
उत्तरेवीय एवं हिणंदीसरे ॥ १४ ॥
झिमिगझं झिमिगझं सद्दकंसालया।
णच्चमाणं वि दीसंति बहुपाडया ॥
दिव्यमणि जडिय आरति ओ करतले।
उत्तरेवीयं एवं हिणंदीसरे ॥ १५ ॥
घत्ता—एवं दिव्वसहा मणिप्पकिरता इंदेण संजोइया।
उत्तरेवि जिणणस्स अट्ठयदिणे णंदीसरे संकरे ॥
पूया भक्तिकरे विझति विवुहा पत्ताणिए गण्णए।
जे कुव्वेति सुशुद्ध भावणकरा सिद्धपदेणभव्वए ॥१६॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्षित जिन चैत्पालयेभ्यो महार्घं० पूर्णार्घं० ॥

इति श्री पूर्वदिक् चैत्यालय पूजा।

अथ दक्षिण दिक्पूजा प्रारभ्यते।

तीर्थोदकैर्मणिसुवर्णघटोपनीतैः
पीठे पवित्रवपुषि प्रविकल्पितार्थैः ॥
लक्ष्मीसुतागमनवीर्य विदर्भगर्भैः।
संस्थापयामि भुवनाधिपतिं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिग् स्थितत्रयोदशजिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (सन्निधीकरणं) अथाष्टकं।

क्षीरोदतोयैः स्नपयन्ति देवाः।
याँस्तान् जिनेशान् मणि हेम बिम्बान् ॥
यजामि गङ्गादि भवैर्जलौघैः।
नंदीश्वरेऽप्यष्ट दिनानि भक्त्या ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिण दिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

विलेपनैर्दिव्यसुगन्ध द्रव्यैः येषां प्रकुर्वन्त्यमराश्च तेषाम्।
कुर्वेऽहमङ्गे वरचन्दनाद्यैः नन्दीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे० चंदनं ॥ २ ॥

मुक्तामयै रक्षतपुण्यपुञ्जैः या प्रार्चिता देव गणैर्जिनार्चा।
तां शालिजातैर्विमलैर्यजेऽहं नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥ ३ ॥

यान्यार्चितान्येवनिनेन्द्रविम्बान्येवामरेन्द्रैः सुर वृक्षपुष्पैः ।
तान्यर्चयेऽहं वर चम्पकाद्यैः नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० पुष्पं० ॥ ४ ॥

पीयूष जातैश्चरुभिः सुरेशैः या पूजिता सत्प्रतिमा जिनेशां ।
तां पूजयेऽहं चरुमोदकाद्यैः नन्दीश्वरेऽप्यष्ट० ॥५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० चरु० ॥ ५ ॥

महं प्रकुर्वन्ति सुरत्नदीपैः येषां जिनानां विदधामि तेषाम् ।
घृतादिकपूर्रभवैः प्रदीपैः नन्दीश्वरे० ॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥ ६ ॥

स्वर्गोद्भवैश्चारुघटस्थधूपैर्यानदेवदेवैर्महितान् सुमूर्तिन् ।
तान्संयजे दिव्यसुगन्धधूपैः नन्दीश्वरे० ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० धूपं ॥ ७ ॥

फलैः सुकल्पद्रुमजै सुरेशैः या चर्चिता सत्कृतिभिर्महेशान् ।
तान् नारिकेलादि चयैर्यजेऽहं नन्दीश्वरे० ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वद्वीपे० फलं ॥ ८ ॥

विमलजलसुगन्धैरक्षतैश्चारुपुष्पैः
वरचरुबहुदीपैः सारधूपैः फलैश्च ।
जयजय वरवाद्यैर्हेमपात्रस्थ मंत्रैः
जिनवरशुभबिम्बायार्घमुत्तारयामि ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं ॥ ९ ॥

अथ प्रत्येक पूजा ।

दक्षिणस्यां दिशियोऽसाऽबंजनोनाम पर्वतः ।
तत्रस्थं जिनविम्वं च चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितांजनगिरौ श्रीजिनाय अष्टान्हिक व्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं ॥ १ ॥

श्रीमद्दक्षिणदिग्भागे नाम्ना दधिमुखोमतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मे चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥२॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित प्रथमदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ २ ॥

दक्षिणस्यां दिशायां च द्वितोयो योदधिमुखः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मे चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥३॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित द्वितीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ३ ॥

यमाश्रित दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥४॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित तृतीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ४ ॥

दक्षिणस्यां दिशायां च चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्रस्थं वीतरागं च चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥५॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थ दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

दक्षिणस्यां दिशायां च रतिकरो वै पर्वतः ।
तत्रस्थं श्री जिनं पद्मे चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥६॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ ६ ॥

श्रीमद्दक्षिण दिग्भागे रतिकरो द्वितीयकः ।
तत्रस्थं जिनचंद्रं च चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥७॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितद्वितीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ ७ ॥

दक्षिणायां दिशायांच रतिकरस्तृतीयकः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥८॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थिततृतीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ ८ ॥

तत्र दक्षिणदिग्भागे तुर्योनाम्ना रतिकरः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्त्या चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥९॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थ रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ ९ ॥

देवाश्रितसुदिग्भागे नाम्ना रतिकरो मतः ।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्त्या चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१०॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितपंचमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ १० ॥

श्रीमद्दक्षिण दिग्भागे षष्ठो नाम्ना रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥११॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितषष्ठरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ ११ ॥

दक्षिणायां दिशायां च सप्तमो यो रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥१२॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितसप्तमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ १२ ॥

तत्र दक्षिण दिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥१३॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितअष्टमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं० ॥ १३ ॥

जिनेन्द्रः शंकरः श्रीदः परमेष्ठी सनातनः ।
अलक्षः सुगतोविष्णुरुन्नतां वः श्रियं क्रियात् ॥१४॥

इत्याशीर्वादः ॥

जयमाला

नन्दीश्वर वरदिवहिंए बावन चैत्यगाय
जिनेश्वरपयकमलो बहु कुसुमाञ्जलि देहिं ।
सुरिंदा जे लहिया अट्टविह पूजकरेयि
सुभत्तिय शुभ जाणिया ॥ १ ॥
पंचह मेरु हेममय असिय जिणंदह
धामजिणेसर पयकमलो ॥ २ ॥
सत्तरसो विजयारधहिं कुलगिर
तीस जिणेसर पयकमलो ॥ ३ ॥

असिय वखारिं जिण भवणिं,
वीसमहा गयंदत जिणेसर पयकमलो ॥ ४ ॥
माणुस उत्तर चारि जिण,
दसकुरु जिणगेह जिणेसर पयकमलो ॥ ५ ॥
इष्वाकारि चारि जिणगेह कुण्डलगिर
चत्तारि जिणेसर पयकमलो ॥ ६ ॥
रुचकगिर च्यारि पिंडकया,
चउसइ अट्ठावन जिणेसर० ॥ ७ ॥
व्यंतरमांहि असंख जिण,
जोइससंख विहीण जिणेसर० ॥ ८ ॥
सग्गि जिणंदह मणि भुवणं,
लक्ख चउरासि होय जिणेसर० ॥ ९ ॥
लक्ख बहत्तरि सात कोडि,
भुवनालय जिण संख जिणेसर० ॥१०॥
अधिक सत्ताणु सहस्स पुण,
तेवीसा सविजाण जिणेसर० ॥ ११ ॥
कैलास सत्रुंजय गिर सिहरे,
सत्रुंजय गिरनारि जिणेसर० ॥ १२ ॥
गोमट्टसामि आदीकरी,
किट्टिम सव चेइत्थाल जिणेसर० ॥ १३ ॥

अढाईय दीवहं भवियकया,

जिण मंदिरसु बिम्ब--जिणेसर० ॥ १४ ॥

माणुस खेतहं माहिजिण,

मुणिवर णिरवाण भूमि जिणेसर० ॥१५॥

नंदीसर पुहुपांजलि,

जोइस भक्ति करेण जिणेसर० ॥१६॥

सोणर भुंजवि सग्ग सुह,

मुक्ति हि तिण हवेहिं जिणेसर० ॥१७॥

श्री सकल कीरति मुणिवर,

भणइ छोड़ो भवणापास जिणेसर० ॥१८॥

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।

तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥१९ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेदक्षिणदिक्स्थितजिनमन्दिरेभ्यः महार्घं० ॥ १९ ॥

इति दक्षिणदिक् पूजा ।

अथ पश्चिमदिक्स्थित चैत्यालय पूजा ।

द्वापंचाशज्जिनागाराः प्रतिमापरमप्रभाः ।

आह्वानयामि नंदीशं द्विपंचाष्टकवासरान् ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिक्भागे त्रयोदश जिनालय अत्र अवतर अवतर ॥ संवौषट्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

सत्सौरभादिवरगन्धविशुद्ध हस्तैः
कर्पूरधूलिपरिमिश्रिततीर्थतोयैः ।
नन्दीश्वराख्यवरपर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम् ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिक्स्थित जिनालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सत्कुंकुमागरुसुवर्त्तिकचंदनानां
गन्धैर्वरैः सुखकरैः कृतिनां सुगन्धैः ।
नन्दीश्वराख्यवर पर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम् ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे० चंदनं ॥ २ ॥

चंद्रांशुजालविशदैरमलैर्मनोज्ञैः
सद्गन्धशालिविशदाक्षतपूतपुंजैः । नन्दी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० अक्षतान् ॥ ३ ॥

पंकेजकुन्दवकुलोत्पलमालतीनां
पुष्पैर्द्विरेफनिनदैः परिपूरिताशैः । नन्दीश्वराख्य० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० पुष्पं० ॥ ४ ॥

सद्धेमभाजनकरैरमृतोपमानैः
हव्येनचान्नदधिभक्ष्यसुशर्कराढ्यैः । नन्दी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० चरु० ॥ ५ ॥

ध्वस्तप्रमोहतिमिरै रसवृद्धराणां
सत्सोमदीपनिकरैर्मणिभाजनस्थैः ॥ नन्दी० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥ ६ ॥

कृजोंगकप्रवरचन्दनचन्द्रगंध

द्रव्योद्भवैरनुपमैः सुरसेव्यधूपैः ॥ नन्दी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० धूपं ॥ ७ ॥

मोचासुचोचवरपूगरसालकाद्यैः

नारिंगदाडिमविराजितमञ्जुद्रव्यैः ॥ नन्दीश्वराष्ट० ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वद्वीपे० फलं ॥ ८ ॥

इत्थं नन्दीश्वराख्यो वरशिवसुखजे पर्वणीन्द्रादि लोके।

संस्तुत्याष्टौ दिनानि प्रवरगुणयुतं भव्यलोका यजन्तः ॥

ये विद्यानन्दिसूरिप्रणतपदयुगं श्रीजिनानां सदर्चां।

श्रीभूत्वा नागसौख्यं निरुपम मनघं यांतु मोक्षाय सौख्यं ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं ॥ ९ ॥

अथ प्रत्येक पूजा।

श्रीमत्पश्चिम दिक्देशे वाह्यांजनो गिरिर्मतः

तत्रस्थं च गतद्वेषं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थितांजनगिरौ श्रीजिनाय अष्टान्हिकव्रतोद्योतनाय जलादिक० ॥ अर्घं ॥ १ ॥

पश्चिमायां दिशायां च नाम्ना दधिमुखोगिरिः ।

तत्रस्थं च गतद्वेषं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थितप्रथमदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्थं० ॥ २ ॥

वरुणश्रितदिग्भागे द्वितीयो यो दधिमुखः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतद्वितीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ३ ॥

पश्चिमायां दिशायां च तृतीयो यो दधिमुखः ।
तत्र स्थं श्रीजिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वराद्वीपे पश्चिमदिक्स्थततृतीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ४ ॥

तत्र पश्चिमदिग्भागे चतुर्थो यो दधिमुखः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतचतुर्थदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ५ ॥

दशाननारिदिग्देशे नाम्ना रतिकरो मतः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतप्रथमरतिकरगिरौ-श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ६ ॥

रामारिशत्रुदिग्भागे द्वितीयो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जगन्नाथं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥७॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतद्वितीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ७ ॥

पश्चिमायां दिशायां च तृतीयो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थततृतीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ८ ॥

वारुण्यायां दिशायां च चतुर्थो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतचतुर्थरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ९ ॥

पश्चिमायां दिशायां च पंचमो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतपञ्चमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १० ॥

वरुणाश्रितदिग्भागे षष्ठोनाम्ना रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतषष्टमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ११ ॥

सीतारिशत्रुदिग्भागे सप्तमो हि रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतसप्तमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १२ ॥

श्रीमत्पश्चिमदिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतअष्टमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १३ ॥

सकलकुसुमवल्लीपुष्कलावर्तमेघो
दुरिततिमिरभानुःकल्पवृक्षोपमानः ॥
भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः ।
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

अथ जयमाला ।

कंपिला णयरि मंडस्से । विमलस्से विमलणाणस्से ॥
आरतिवर समये णच्चंति, अमररमणीओ ॥ १ ॥

अमर रमणीउ णच्चंति जिणमंदिरं ।
विविह वर तूर तालेहिं वग्गिनूपुरं ॥
जडिय बहु रयण चामीकरं पत्तियं ।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥

मोतियंदाम

रुणझुणंकार णउरघचलणुत्तियं ।
कमलदल णयण जिण बिम्ब पेखंतिया ।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुदरं ॥ ३ ॥
इंदु धरणेंदु जखेंदु वो सहृतिया ।
मिलियसुर असुरघण रास खेलंतिया ॥
केचि सिर चमर जिणबिम्ब ढोलंतिया । जि० ॥४॥
केसभरि कुसुम भर सिर ढोलंतिया ।
वयण छुणिइंदु चमकंति विहसंहृतिया ॥
कमलदलणयणजिण विंव पेखंतिया । जिणंद० ॥५॥

गाथा—णंदीसरम्मि दीवे बावण जिणालयासु पडिमाणं ।
अट्ठाइं वरपव्वे इंदु आरतिओ कुणइ ॥ ६ ॥

इन्दु आरतिओ कुणइ जिण मन्दिरं ।
रयणमणिकिरणकमलेहिं वर सुन्दरं ॥
गीउ गाइयन्ति णच्चन्ति वरणारया ।
तूर वज्जन्ति णाणाविह पाडया ॥ ७ ॥

गाथा—एक्कम मिहजिणहरे चौ चौ सोलह वावीओ ।
जोयण लक्खपमाणं अट्ठमणंदीसरे दीवे ॥ ८ ॥

अट्ठमं दीव णंदीसरं भासुरं ।
चैत्य चैत्यालयं वन्दि अमरासुरं ॥
देव देवी जहां धम्म संतोसिया ।
पञ्चमं गीय गायन्ति रस पोसिया ॥ ९ ॥

गाथा—दिव्वे हिं खीरनीर-हिं गंधे हिं कुसुम मालाइं ।
सव्वसुरलोय सहिये पूजा आरंभये इन्दु ॥ १० ॥

इन्दु सोहम्मि संभाइ वेजोसयं ।
आयवो सज्जिएरावयं वर गयं ॥
सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा ।
मिलिय पढमवफया तासु तइ देसिहा ॥ ११ ॥

गाथा—कंसाल तालतिविली झल्लरी भरिह भेरि वीणाउ
वज्जन्ति भावसहिया भावेहिं णम्मिया सव्वे ॥ १२ ॥

सव्वदव्वेहिं भव्वेहिं करताडया ।
सद्दये संसि झिगिणिणीणाडया ॥
झिगिणिझां झिगिणिझां वजये झल्लरी ।
णच्चई इन्दु इन्दायणी सुन्दरी ॥ १३ ॥
णयणकज्जल सुसीलामयं दीणयं ।
हेम हीराल कुण्डलकयं कण्णयं ॥
झझणं झंकरं वज्जपणूपुरं ।
जिणंद आरतिअं जोइयं सुन्दरं ॥ १४ ॥

दिट्ठीणा सव्व अंगुलिय दावंतिया।
खिणिहिं खिणि खिणिहिं जिणविंव जोवंतिया।
णारि णच्चन्ति गायन्ति कोमलसरं। जिणंद०॥ १५॥
रुणु भुणुकारेण उरधकरं कंकणं।
णारि जप्पंति जिणणाहवे बहुगुणं॥
जुवइ णच्चन्ति समरंतिणो जिणवरं।
जिणद आरतिओ०॥ १६॥
कण्ठ कद्लेहिं मणिहार झलकंतिया।
जिणइ थुणि थुणिहि सवणाइ संतुट्ठया॥
विविह कोतुहलं कुणहि णारीणरं। जिणंद० ॥१७॥
अत्ता—आरतिह पढेहिं कम्मह धोवहिं सग्ग अपवग्ग लहइं॥
जं जं मणि झावे तं सुखपावे सग्ग मोक्ख हेला तरहिं॥
ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थतचैत्यालयेभ्यो महार्घं० ॥ १८॥
इति पश्चिमदिक्स्थतचैत्यालय पूजा॥

अथ उत्तरदिक्चैत्यालय पूजा।

आषाढकार्तिकसुफाल्गुनशुक्लपक्षे।
चातुर्निकायसुरवृन्दसुभक्तिपूर्वम्॥
नन्दीश्वराख्यवरपर्वणि संयजेऽस्मि।
नाह्वाननादिभिर्यजे शुभवस्तुयुक्तैः॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थतजिनालय अत्र अवतर अवतर संपौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा (सन्निधिकरणं)

सत्सिन्धुपाथोभिरमन्दवासैः ।
सत्स्वर्णभृङ्गारभृतैर्जलौघैः ॥
चाये शतार्धाभ्रिककाम्रवासा-
नाषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो: जल० ॥ १ ॥

शक्रार्चितान् भव्यसरोजपूष्णः ।
कोदण्डसत्पञ्चशतार्धमूर्तीन् ॥
लेपामि सद्गंधविलेपनैस्तान् ।
आषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थितत्रयोदशचैत्यालयेभ्यः चंदनं ॥ २ ॥

नन्दीश्वरद्वीपविशालवापी-
स्थाद्रीन् सुबिम्बान् वरकांचनाभान् ॥
चर्चेऽक्षतैः कल्पितभावपासान् ।
आषाढसत्कार्तिकफाल्गुणेषु ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे अक्षतान्० ॥ ३ ॥

कंदर्पसर्वावहतात्तरूपान् ।
भव्याऽटवीवन्हिप्रसिद्धलोकान् ॥
यजाम्यहं पुष्पव्रजैः जिनेशान् । आषाढ० ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० पुष्पम्० ॥ ४ ॥

अत्यक्षसौख्यास्पदलब्धकामान् ।
भव्यामरौघानतकान् गरिष्ठान् ॥
संपूजयेहं वरभक्षकैस्तान् । आषाढ० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० चरु०॥ ५ ॥

सत्केवलालोकितकृत्स्नलोकान् ।
घातिक्षयानन्तचतुष्टयाप्तान् ॥
यायज्मि तान् कर्पूररत्नदीपैः । आषाढ० ॥६॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० दीपं० ॥ ६ ॥

कर्माष्टकाष्ठालघुपावकाभान् ।
कैवल्यसौख्यान् परमर्द्धियुक्तान् ॥
अर्चामि कृष्णागरुधूपधूम्रैः । आषाढ० ॥७॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर० धूपं० ॥ ७ ॥

यजे फलैर्मुक्तगणाप्रमादान् ।
प्रबुद्धबोधान् भुवनत्रयाप्तान् ॥
देवेन्द्रसत्कीर्तितवांच्छिताप्तान् । आषाढ० ॥८॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर० फलं ॥ ८ ॥

वार्श्चंदनाक्षतसुपुष्पचरुप्रदीपैः ।
धूपैः फलैश्च रचितैः शुभहेमपात्रैः ॥
अर्घं ददामि दमितारिपते ! जिनाय ।
देवेन्द्रकीर्तिमहिताय मनोज्ञकाय ॥९॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे० अर्घं० ॥

उत्तरस्यां दिशायां च नाम्ना ह्यंजनपर्वतः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितां अंजनगिरौश्रीजिनाय अष्टान्हिक व्रतोद्योतनाय अर्घं ॥ १ ॥

श्रीमदुत्तरदिग्देशे नाम्ना दधिमुखो गिरिः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितप्रथमदधिमुखगिरौ-श्रीजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

उदीच्यां हि दिशायां च नाम्नादधिमुखः पृथुः ।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितद्वितोयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ ३ ॥

उदग्दिशिस्थितस्तत्र गिरिर्दधिमुखाधिपः ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहं गुणाप्तये ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थिततृतीयदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं ॥ ४ ॥

उत्तरायां दिशायां च तुर्यो दधिमुखो गिरिः ।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं चायेऽहं तद्गुणाप्तये ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितचतुर्थदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ५ ॥

श्रीमदुत्तरदिग्भागे आद्यो रतिकराभिधः ।
तत्रस्थितं लोकनाथं पूजयेऽहं गुणाप्तये ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं० ॥ ६ ॥

कुबेराश्रितदिग्भागे गिरौ रतिकराधिपः ।
तत्रस्थितं जिनेन्द्रं हि चर्चेऽहं तद्गुणाप्तये ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थितद्वितीयरतिकरगिरौ-श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ७ ॥

उत्तरस्यां सुकाष्ठायां नाम्ना रतिकरोगिरिः ।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थिततृतीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ८ ॥

धनदाश्रितदिग्भागे तुर्यो रतिकरः खलु ।
तत्रस्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थितचतुर्थरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ९ ॥

नैगमाश्रितदिग्भागे पंचमो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं चार्येऽहं तद्गुणाप्तये ॥ १० ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थितपंचमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १० ॥

वित्ताधिपस्य काष्ठायां षष्ठो रतिकरो गिरिः ।
तत्र स्थितं जगत्पूज्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थितषष्ठमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ ११ ॥

राजराजस्य ककुभि सप्तमो यो रतिकरः ।
तत्र स्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थतसप्तमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं० ॥ १२ ॥

वैश्रवणस्यदिग्भागे अष्टमो हि रतिकरः ।
तत्र स्थितं जगत्पूज्यं पूजयेऽहं सुखाप्तये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थतअष्टमरतिकरगिरौ श्री-जिनाय० अर्घं० ॥ १३ ॥

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैर्दीपधूपकैः ।
फलैरर्घ्यं जिनं चार्ये दधिदूर्वांकुशैस्तथा ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेउत्तरदिक्स्थतत्रयोदशजिनचैत्यालये-भ्यः महार्घं ॥ पू० र्घं

अथ जाप्यदीयते—जाप्य मन्त्र—

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो नमः ॥

यावज्जैनेन्द्रवाणी विलसतिभुवने सर्वसत्वानुकम्पा ।
यावज्जैनेन्द्रधर्मं दशगुणसहितं साधवो योजयन्तः ॥
यावच्चन्द्रार्कतारा गगनपरिचरा रामकीर्तिश्च यावत् ।
तावत्त्वं पौत्रपुत्रस्वजनपरिवृतो धर्मवृध्याभिवन्द्यः ॥ १ ॥

इत्याशिर्वादः ।

जयमाला

श्रीमन्नेमिजिनं जयत्रयगुरुं नत्वा सुरैः सविदं ।
वक्ष्येऽहं स्तवनं द्वीपाष्टकभवं कोटीशतं सुन्दरं ॥

षष्ठित्र्यैक सुयोजनस्य सुपयः शीतं शुभं लक्षकं।
चत्वारांजन भूधराः प्रगुणका नीलेन्द्ररत्नत्विषः ॥१॥
छन्द–उन्नतचतुराशीतिसहस्राः। भाति पटहाकारविमिश्राः ॥
सहस्र चतुराशीतिविष्कंभाः। शशिशून्यत्रयकन्दसुदंभाः ॥२॥
हित्वा लक्षयोजनगिरिरागं। प्रत्या संवरवापि सुभाज्यं ॥
प्रागंजनगिरि प्राच्यसुनन्दा। नन्दावति दक्षिणदिशिह्नन्दा ॥३॥
पश्चिमनंदोत्तरतरशुभनामा। नन्दखेणिका भाति सुरामा ॥
दक्षिणांजन पर्वत प्राच्या। प्राग्वदराज्या वापि सुराच्या ॥४॥
दक्षिणतो विरजागतशोका। राजति वापीविगतशोका ॥
पश्चिमदिश्यंजनवरभूध्रं। त्यक्त्वा योजनशतसहस्रं ॥५॥
पूर्वविधिवद्विरजा वापी। वैजयंति जयंति सु वापी ॥
राजत्यपराजितगुणधामा। उत्तर काशांजनगिरि रामा ॥६॥
रमणी नयना सुप्रभ विमला। सर्वतोभद्रा सरवर सकला ॥
सहस्रदेवयोजन अगाधा। लक्षयोजनविश्रितवनसिद्धा ॥७॥
दीर्घिका मध्ये देशगिरि साराः। संति षोडश दध्याकाराः ॥
पटहसमं योजन उन्मानं। व्यासादया? तावन्मानं ॥८॥
व्यासो द्विकोणयो रत्याकाराः। द्वात्रिंशत्सुराज्याकाराः।
संति सहस्रोत्सेधविदेहाः। मूलयोजनतुर्यांशसुगेहाः ॥९॥
वापीनां परितोवनसारं। भात्यशोकं सप्तच्छदतारं ॥
चंपककेतकिहंसमरालं। अष्टवर्गप्रमाणविशालं ॥१०॥
वनमध्ये चैत्यादिकवृक्षं। दिक्षु भातिसुजिनवरदक्षं।
पल्यंकासनस्थितसुर पूज्यं। शुभ रत्नं प्रभनतसुरराजं ॥११॥
अंजनदधिमुखरतिकरसकले। भ्राजंते जिनगृहविपुले।
योजनशतकाया महिमाभाः। पंचाशद्व्यासा मणि शोभाः ॥१२॥
पंचसप्ततितुंगविशालाः। प्रद्योतितदिङ्मुखपरशालाः।
षोडशयोजनद्वारोत्सेधं। विस्तृतवरवसुयोजनसिद्धं ॥१३॥

तोरण पार्श्वं रस्थो भांति । अष्टयोजनकामा सुकांति ।
चतुर्विंशतिप्रोक्तापरमा । मानस्तंभे अग्रे कामा ॥१४॥
भांति गोपुरतोरणत्रिशाला । स्तूपधूपघट ध्वजसमराला ।
तेमध्ये जिनप्रतिमातुंगा । चाप पंचशतमूर्ति विभंगा ॥१५॥
अष्टागृहशतसंख्या गेहं । प्रतिभाति गतकलिमलरेहं ।
सिंहासनप्रकीर्णकवरछत्रं । प्रातिहार्यभृंगादिकपात्रं ॥१६॥
धवले बाहुलमासितपक्षे । आषाढे शुक्लाष्टमिदिवसे ।
तत्रागच्छंति सुरनाथाः । साप्सरा वाहनारूढकपंथाः ॥१७॥
जिनपूजां रचयंति सुधीराः । अष्टविधार्चनकृतविधिसाराः ।
प्राङ् मूर्तेर्जलस्नपनं कृत्वा । किल्विषदूरमनेनेति मत्वा ॥१८॥
यामद्वय प्रत्यासमनेन । विधिनाखण्डल प्रतिमातेन ।
स्तुवंति प्रतिमा विबुधेशाः । गानतानगंधर्वसुरेशाः ॥१९॥

अथ प्राकृते

व्यन्तरा जोतिसा सग्गसोहाकुला ।
किन्नरा गाय कामिनीसंगाकुला ॥
धौं धौं धपमय वज्जये मद्दला ।
णच्चए इन्दु इंदाणी संगाकुला ॥ २० ॥
तिं तिं तिं तिणि सद्द सोहाकुला ।
झिगि झिगि झल्लरि ढोल रसाकुला ॥
तैं तैं ताल कंसाल वीणाकुला ।
णच्चए इन्दु इन्दाणी संगाकुला ॥ २१ ॥
थैं थैं जम्पए नारयो तम्बुरो ।
रुणुझुणु झंकरो किंकिणी सुन्दरो ॥
ओइ सानन्द सुराव रसाकुला ।
णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला ॥ २२ ॥

पस्सइ कामिणी वर मणोमोहणी ।
हस्सइ हासविलास गजगामिणी ।
सो हि आहार मन्दार मुक्ताकला ।
णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला ॥ २३ ॥
कुणइ अट्ठ दिवसेंहि पूय विहवरं ।
जन्ति णियवासयं णिम्मलं भाधरं ।
पुण्ण उपावइ देव देवी गणा ।
णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला ॥ २४ ॥
घत्ता—सुदीप्यभासुरं हि द्वीपनन्दीश्वरम्—
जिनेन्द्रचन्द्रंधरं कलाधरं परम् ।
सुभक्तितो हि पूजये परापरं जिनालयम्
सुधर्मभूषसायरं सुरेन्द्रकीर्तिचर्चितं ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणेद्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यः जयमाला महार्घं निर्वमामीति स्वाहा ।

इति नन्दीश्वरपूजा उद्यापन सम्पूर्णम् ॥

* ॐ नमः सिद्धेभ्यः *

* व्रतोद्यापनसंग्रहे *

॥ अथ दशलाक्षणिक उद्यापन पूजा लिख्यते ॥

दशलाक्षणिकव्रतोद्यापनम् ।

विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्धं
अभयवनसमुद्रं चिन्मयूखप्रचण्डं ।
व्रतदशविधधारं संयजे श्रीविपारं
प्रथमजिनविदक्षं सद्व्रताढ्यं जिनेशम् ॥१॥
दशलक्षणकं सारं व्रतं सद्व्रतमुत्तमम् ।
प्रसंक्षेपोद्यापनं वक्ष्ये यथा जातं जिनेश्वरात् ॥२॥
आदौ गर्भगृहे पूजा क्रियते सद्बुधोत्तमैः ।
[1]जिननामावलिं शुद्धां सकीलकरणादिकं ॥३॥
सन्मंडपप्रतिष्ठा च पठ्यते पण्डितोत्तमैः ।
नानाशास्त्रान्वितैः धीरैः कलागुणविराजितैः ॥४॥
शतकमलसमूहं वर्तुलाकारचक्रं
भवशतभजनाशं सर्वमोक्षप्रचक्रं ।

---

१ सहस्रनाम ।

परमगुणनिधानं सद्व्रतौघप्रधानं
विविधकुसुमवृन्दैः शुद्धयंत्रे क्षिपामि ॥५॥

ॐ ह्रीं भाविकसद्यसान्निध्य शतकमलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

स्तोत्रं ॥

सुव्रताय नमो लोके दशधाय जिनोदिते ।
व्रतेशिने गुणौघाय मोक्षसाधनहेतवे ॥१॥
उत्तमक्षमाधीशाय मार्दवांगाय नमोनमः ।
आर्जवांगाय महांगाय जिनाधीशप्रमोदिते ॥२॥
शुशौचाय गुणौघाय विविधर्द्धिप्रदायिने ।
प्रसत्याय सुदान्ताय षट्खंडपददायिने ॥३॥
संयमाय दयांगाय पापतापविनाशिने ।
कायक्लेशप्रयुक्ताय द्विषड्भेदप्रकाशिने ॥४॥
महात्यागप्रयुक्ताय सदंगाय नमोनमः ।
लसद्गुणसमूहाय पापध्वंसनहेतवे ॥५॥
सर्वसंगविमुक्ताय स्वाकिंचन्यपरात्मने ।
विश्वसौख्यप्रदानाय नमः स्वर्गप्रदायिने ॥६॥
ब्रह्मचर्याय स्वांगाय विश्वधर्मगुणेशिने ।
प्रभवमारध्वंसाय दशधर्मप्रकाशिने ॥७॥
महादुःखप्रहंतारं मुक्तिसंगमकारिणं ।
स्थापयामि वृषाधीशं चक्रवर्तिपुराकृतं ॥८॥

अकलंकं गुणभद्रं समन्तभद्रं परं तु जिनचंद्रं ।
विद्यानन्दमुनीन्द्रं सुमतिसमुद्रं जिनं नौमि ॥६॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकाग्रेपुष्पाक्षतं क्षिपेत् ॥

अर्हंतमीशमनवद्यमनन्तबोध
मक्रोधमानमनसं शिरसा प्रणम्य ।
आह्वाननं स्थितिसमीपकृतादिपूर्वं
धर्मं शिवाय दशलाक्षणिकं यजामि ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुधृतदशलाक्षणिकधर्मं अत्र अवतर अवतर संपौषट् (आह्वाननं) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमल समुधृत दशलाक्षणिकधर्मं अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः (स्थापनं) ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुधृत दशलाक्षणीकधर्मं अत्र मम सन्निहितो भव भवव षट्—(सन्निधिकरणं) ॥

सोमोद्भवां सुरसरित्प्रमुखश्रवन्तीं
पद्मादिनिर्मलसरःशुचिवारिधारां ।
सारां तुषारकिरणायमुद्दु ददेऽहं
धर्माय शर्मनिधये दशलक्षणाय ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख समुधृताय दशलाक्षणिकधर्माय जलं ॥१॥

श्रीचंदनेन कृमिजग्धयुतेन चन्द्र
मिश्रेण सारतरलोहितचन्दनेन ।
भ्रूविभ्रमभ्रमरभारभरेण भक्त्या
धर्मं सुखाय दशलक्षणमर्चयामि ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखसमुधृताय दशलाक्षणिकधर्माय चन्दनं० ॥२॥

एयप्ररोहानिवहैरिव शुक्लसारैः
स्फारस्फुरित्परिमलैरिव कुन्दवृन्दैः ।
गाल्यक्षतान्ततचयैर्दशधा जिनोक्तं
धर्मं विमुक्तिपदशर्मकृतेऽर्चयामि ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० अक्षतान् ॥ ३ ॥

सच्छीतपुष्पसुभगैः सुमनःसुगन्धैः
सत्केतकीसुरभिगंधयुतप्रधानैः ।
पद्मोत्पलादिभिरपि प्रवरप्रसूनैः
श्रीजिनधर्ममद्य भर्मभिदं भजामि ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० पुष्पं ॥ ४ ॥

सोमालिकासघृवफेनकस्वादखाद्यैः
सन्मोदकै र्वटकभंडकघार्तपूरैः ।
अन्यैरनेकरचनैश्चरुभिर्जिनोक्तं
सूक्तामृतैरिव वृषं मधुरैर्महामि ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० चरुं ॥ ५ ॥

[illegible]मरश्मिसुगंधतैल
माणिक्यमएयरुचिभूरितरप्रदीपैः ।
मिथ्याकुबोधकुचरित्रतमोविनाशं
धर्मं यजे जगदनिंद्यपदेऽर्चयामि ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० दीपं ॥ ६ ॥

गोशीर्षकृमिजगन्धसुरेन्द्रदारु
कर्पूरयावनलवंगजटादिमिश्रं ।
धूपं ददामि मदनारिविनाशहेतोः
धर्माय कर्मकरिकेसरिणे शुभाप्त्यै ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० धूपं ॥ ७ ॥

श्रीमत्कपित्थकरकक्रमुकाम्रजंबु
जंबीरकंटकीफलोतमनालिकेरैः ।
कुष्माण्डकाम्रकदली वरबीजपूरैः
संपूजयामि जिनधर्ममनल्पसिद्धैः ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख० फलं ॥ ८ ॥

अमलकमलगन्धैस्तन्दुलैः पाण्डुखण्डैः
प्रसवचरुभिरुच्चैर्दीपधूपप्रसूनैः ।
अथकृत (थ) शत ? पत्रैस्वस्तिकाद्यैर्ददेऽहं
रचितमुचितमस्मै जैनधर्माय वार्घं ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मु० अर्घं ॥ ९ ॥

अथ जयमाला

घत्ता – धम्मालयसारं लक्खणभारं
दहलक्खण लक्खण सहियं ।
दह दिणसुहकारणामविपारं
अक्खमिजइ जिणवर कहियं ॥१॥

पंचमोदिण जिणणाम सुकहियं
सुज्झकिरण उत्तमखमसहियं ।
छुट्टिदिणचंद किरणगुण भरियं
मद्दवसहियसुपोसह महियं ॥२॥

सत्तमीदिणमणिकिरण विसालं
अज्जव सहपण सुहुसह भालं ।
अट्ठमि धम्मरयण गुणमालं
सव्ववयाण लहियं जगपालं ॥ ३ ॥

णममी वोहरयण पुज्जिज्जइ
सौचसंगसिरि जिणवर गिज्जई ।
दहमी अभयरयण जाणिज्जइ
संयमसहियजिणिंद भणिज्जइ ॥ ४ ॥

एकादहीमणिकुण्डल णिम्मल
परतव सहकिज्जइतप विमल ।
बारसि चिंतारयणसमुज्जल
दाण सुपत्तहं दिज्जइ सुहजल ॥ ५ ॥

तेरसि लोयतिलय महिमायर
आकिंचणगुण सहियं गुणभरं ।
चौदसिबंभ तिलयमहि मणोहर
बंभचेरगुण भरिओ सुहकर ॥ ६ ॥

णाम सहिय सुदिण दह लक्खण
पुव्वंकिय अरहेण सुलक्खण ।
बाहुबलेण सुकीय सुविचक्षण
सिरिजयकुमर लहियफलदक्खण ॥७॥

महाबल लोहजंग वयधारी
रयणं गदरथणप्पहकारी ।
अजितं जय जय विजयमणोहर
ललियंगउ वज्जंगउ वयकर ॥ ८ ॥

चिंतागइण होइ मणोगइ
अमितगइ तह किथउ चपलगइ ।
मणोवेग वय धरिउ चपलगइ
विज्जकुमर चितंगकुमरवइ ॥ ९ ॥

भाण सुभाणकिय उवयमुत्तम
पयापाल महीपाल सुसत्तम ।
कियउ अणंतपाल पुरुसोत्तम
धणवइ धणपालेण मणोत्तम ॥ १० ॥

भविसकुमर सिरिकुमर सुसारं
वज्जकुमर श्रीपाल सुधारं ।
कंठ सुकंठ णरिंद भारं
घोस सुघोस गमा वयपारं ॥ ११ ॥

एवं णरणारी वय सुंदर
पळिवकिय गय मोक्खसुमंदिर ।
कहिय जिणिंद दिव्वधुणि मंदिर
भविय सणाण लहइ सोमंदिर ॥१२॥

जेणरणारी भणइ जयमाला
लहुते पावइ सुह परिमाला ।
मुक्ति रमणी गल कंदल माला
णासइ भवभय दुक्खह माला ॥१३॥

अभय चंद मुणि जय मणोहार।
वंदित अभयनन्दि जयकारा।

घत्ता-वंदित सुरसागर, मुणिगण सागर, सागरसुख तरंगभर।
सिरि सुमइ सुसागर, जिणगुणसागर, सागरकेवल परमपद (८)

ॐ ह्रीं दशलाक्षणिक धर्मेभ्यः महार्घं०—

अथ प्रत्येक पूजा

मसुरीदशमहीकायरक्षणे शुद्धमानसः।
सचित्तधरण्यां पादं न ददात्यर्चते सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं सप्तलक्षमहाकायरक्षणोत्तमक्षमाय जलादिकं० ॥१॥

सर्वजीवहितागारं मुनीन्द्रं गुणशालिनं।
क्षमासद्धर्मगेहं वा चर्चे वीतपरिग्रहं ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वजीव रक्षणोत्तम क्षमायजलं ॥२॥

अंबुबिन्दुसमं गात्रं जलकायसुरक्षकं।
वसुद्रव्यपरैः शुद्धैः संयजामि दमीश्वरं ॥३॥

ॐ ह्रीं जलकायरक्षणोत्तमक्षमाय जलादिकं ॥३॥

सूचिकाग्रसमंकायं वह्निजीवसुरक्षकं।
महासिद्धान्तवेत्तारं संयजे ऋषिपं मुदा ॥४॥

ॐ ह्रीं अग्निजीवरक्षणोत्तम क्षमाय जलादिकं ॥४॥

ध्वजाकायसमं देहं वातकायसुरक्षकं।
ज्ञानविज्ञानवाराशिं महामि यतिनायकं ॥५॥

ॐ ह्रीं वातकायरक्षणोत्तमक्षमाय जलादिकं ॥५॥

अनेकवृक्षजीवानां दशलक्षविशारदं ।
अनेककायजीवानां वै पालकं तं यजाम्यहं ॥६॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिकाय रक्षणोत्तम क्षमाय अर्घं ॥६॥

नित्यनिकोतजीवानां मेकरज्जुप्रपालकं ।
तं क्षमागारकं चर्चे जलचंदनतंदुलैः ॥७॥

ॐ ह्रीं नित्यनिकोतरक्षणोत्तमक्षमाय अर्घं ॥७॥

इतरनिकोतजीवसमूहप्रतिपालकं ।
मुनीन्द्रं गुणवाराशिं पूजयामि दमीश्वरं ॥८॥

ॐ ह्रीं इतरनिकोतभव्यजीवरक्षणोत्तमक्षमाय अर्घं ॥८॥

विकलेन्द्रियत्रयोभेदं जीवराशिप्रपालकं ।
स्वंभः चन्दनशालीयैः महामि भवघातकं ॥९॥

ॐ ह्रीं विकलेन्द्रियत्रयभेदजीवरक्षणोत्तमक्षमायजलादिकं ।

गर्भोद्भवजीवानां पालकं सुयतीश्वरं ।
पंचेन्द्रियमतान्तंवा रक्षकं प्रयजे सदा ॥१०॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजीवरक्षणोत्तमक्षमाय जलादिकं ॥१०॥

जलचंदन शालीयैः पुष्पनैवेद्यदीपकैः ।
धूपफलभरैश्चाये प्रथमांगं क्षमाधिकं ॥११॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमायमहार्घं निर्वाणति स्वाहा ।

जयमाला

उत्तमक्षमासुआदिजिनेश्वर, भरतेश्वर वर बाहुबली ।
अनन्तवीर्य श्रीवृषभसेनधरि, उत्तम पुरुष सौभाग्यकरी ॥१॥
दया सहित गुणवंत क्षमालय, क्षमाजल क्रोधाग्नि सर्वटालय ।
जीवभेद क्षमागुण करिपालय, शील सुलक्षणक्षमा सुखालय ॥
ध्यानधरे क्षमारक्षणशुद्धा, ज्ञानवंतमुनि क्षमा प्रसिद्धा ।
प्रथम क्षमा श्रीचरणभूषण, क्षमाबल मुनिवर गतबहु दूषण ॥३॥
क्षमाथकी क्रोधवैरी निबला, क्षमाथकी धर्मध्यान सु सबला ।
क्षमामान मोडेमान रिपुभर, क्षमायोग योगीश्वर शुभपर ॥४॥
क्षमा करे माया गुणफलहर, क्षमा लौभवैरी विषविषहर ।
क्षमा ऋद्धिदाता मुनि जसकर, क्षमाबीजकरि भव्य सुभवपर ॥५॥
क्षमा मोक्ष राणी सु सहेली, क्षमा सिद्ध नर-सती महेली ।
क्षमा कर्मनर भक्षण देवी, क्षमा सु मुनिवर चरण सुसेवी ॥६॥
क्षमा क्रियाणक देशविशाले, क्षमाक्रियाणक हृदमाले ।
श्री जिण गणधर णर मुनिवर, विक्रयकरइसुलेइ भव्यवर ॥७॥

घत्ता क्षमाधर्म जिनपुत्र धुरंधर मोक्षनगर व्यापार करे ।
श्रीअभयनन्दि जिन क्षमा मनोहर सुमतिसागर जिन धर्म धरे॥८॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमाय महार्घं ।

॥ इति प्रथम क्षमांगपूजा ॥

अथ द्वितीयांग पूजा—

त्यक्तमानं सुखागारं मार्दवं क्रिययान्वितं ।
पूजया परया भक्त्या आह्वानादि विधानतः ॥१॥

ॐ ह्रीं मार्दवांग अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्र मम सन्निहितो भवभवव-षट् स्वाहा ।

पापगर्वप्रहंतारं रागद्वेषविनाशकं ।
मार्दव गुणसंयुक्तं पूजयामि गुणोत्करं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं मार्दवांगाय जलादिकं ॥ १ ॥

जातिगर्व प्रहंतारं दुखदं सौख्यदूरगं ।
गर्वनाशकरं साधुं पूजयामि जलादिकैः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं जातिगर्वरहितमार्दवांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

रूपगर्वं न जानाति वैराग्यसहितो महान् ।
महाध्यानयुतो नित्यं मह्यतेऽसौ विशारदः ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं रूपगर्व रहित मार्दवांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

कुलगर्वविधातारं मुनिलोकप्रबोधकं ।
धर्मध्यानरतं नित्यं यजामि गुणशालिनं ॥४॥
ॐ ह्रीं कुलगर्वरहितमार्दवांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

ज्ञानगर्वविजेतारं मुनिं वीतपरिग्रहं ।
चित्स्वरूपं चिदानंदं यजेऽहं जलमोदकैः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानगर्वरहितमार्दवांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

बलमदबलार्जितं लोकोद्धारसमर्थकं ।
वीतमत्सरकं चर्चे ध्यानगम्यं मुनिं सदा ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं बलमदरहितमार्दवांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

पत्त्रादितपसा युक्तो गर्वं न कुरुते कदा ।
भुवनगन्धशालीयैः पूज्यते गुरुसप्तमः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं तपगर्वरहित मार्दवांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

भामापुत्रसुबन्धूनां महागर्वविनाशकं ।
स्वंभचंदनशालीयैः पूजयामि ऋषिपरं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं भामापुत्रादिगर्वरहितमार्दवांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

धनधान्यसुवस्तूनाम् ममताभावदूरगं ।
संसारतारकं देवं महामि सुतपोनिधिं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं धनधान्यगर्व रहित मार्दवांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

गोमहिषीगजाश्वानां पापगर्वविदूरगं ।
मुनिं सुमृदुतायुक्तं महामि जलमोदकैः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं चतुष्पदादिगर्व रहित मार्दवांगाय जलादिकं ॥१०॥

जलगंधादिकैः पुष्पैः दीपधूपफलोत्तमैः ।
मार्दवांगवरं चर्चे शुद्ध धर्मोपदेशकं ॥

ॐ ह्रीं मार्दवांगाय महार्घं निर्वपामीतीति स्वाहा—

अथ जयमाला ।

घत्ता – गर्व विनाशक, मदपरिनाशक, धर्मासन वर शुद्ध मुनि ।
बहुकर्म निराकर, मार्दव शुभकर, जिनशासन गृहकथितमुनि॥ १॥

जय मार्दव अंग विशाल रूप ।
जय मार्दव सेवित सुमुनि भूप ॥

वर जाति मद न करोति मुनि ।
वर भव्य संबोधन धर्म गुणी ॥ २ ॥
जाति गर्व बहु पाप भयंकर ।
जाति गर्व कुत्सित नर दुखधर ॥
जाति गर्व कुलहीन सुभवपर ।
जातिगर्व न विकार सुमतिपर ॥ ३ ॥
रूपगर्व गुणगण सबटाले ।
रूपगर्व अपकीर्ति सुभाले ॥
रूपगर्व अवकुरूप सुघरपर ।
रूपगर्व निंदागृह परनर ॥ ४ ॥
वर कुलगर्व नीच कुलदाता ।
वर कुलगर्व सुदुर्गति भ्राता ॥
वर कुलगर्व सुधर्म निराकर ।
वर कुलगर्व सुपाप भयंकर ॥ ५ ॥
ज्ञानगर्व मुनिवर विभासे ।
वर उपदेश बोध सुविभासे ॥
ज्ञानगर्व मूर्खपद पामे ।
अक्षर अर्थ भाव पर वामे ॥ ६ ॥
वरतप बिमल सुगति बहुसाधक ।
तपबल कर्मसमूह बिबाधक ॥
मुनिवर जिनवर तप गुण धारक ।
सुतप करोति कुधर्म बिदारक ॥ ७ ॥
शीत भट सह ससूर लक्षाकर ।
कोटी भट संख्या न बिभाकर ॥
धर्मवंत पाण्डव नर गुणधर ।
सुतप गर्व नहिं कीधा मुनिवर ॥ ८ ॥

लक्ष्मीगर्व करीने गुत्ता।
पाप गर्व धरि ते नर भूत्ता ॥
मान विमान कदानहि जाने।
मुनिवर वसुमद कदा न माने ॥
घत्ता—वर मार्दव साधे, दुख न बाधे,
अभयचंद्र दयनन्दि वर ।
श्रीसुमतिसागर, जिनबोध दिवाकर,
भाकर मार्दव शुद्धकर ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं मार्दवांगाय जयमाला महार्घं निर्वयामिति स्वाहा ।

अथ आर्जवांग पूजा।

स्थापयामि परमांगं धर्महेतुविवर्धकं।
शासनोद्योतकं चर्चे वीतरागं सुवल्लभं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जवांग अत्र अवतर अवतर संवौषट (आह्वाननं) अत्रतिष्ट तिष्ट ठः ठः (स्थापनं) अत्र मम सन्नि-हितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणं)

मनसि कुटिलतांयो न करोति कदा मुनिः।
विशुद्धहृदयं देवं महामि यतिनायकं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मनसि कुटिलता रहित आर्जवांगाय जलादिकं (अष्ट द्रव्यका अर्घ देना) ॥ १ ॥

सत्यवाक्ययुतं धीरं सत्योपदेशदायकं।
दुःखदारिद्रहंत्तारं यजे साधुं निरंतरं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सत्यवाक्य युक्ताय आर्जवांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

असत्ये च महादुखदायके न रतो मुनिः ।
चर्च्यतेऽसौ परोवेत्ता जिनशासनरक्षकः ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं असत्यकार्यरहित आर्जवांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

सत्यासत्यद्वयं कार्यं हिताहितविचारकः ।
परहितचिंतकोऽसौ मह्यते गुणसागरः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं उभयकार्य विचारसहितार्जवांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

त्रिकरणयोगधरं युधिष्ठमिव वै मुनिं ।
परोपसर्गजेत्तारं पूजयामि शिवंकरं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं परोपसर्ग सहनार्जवांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

मुनीन्द्रं गुणवाराशिं कुमिथ्यामतखण्डकं ।
क्षुत्पिपासासहं धीरं संयजामि दयाधिकं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं परिषह सहनार्जवांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

हितमितमधुश्रेष्टं वाक्यसंसारतारकं ।
सदुपदेशकं साधुं चर्चे तं धर्मनायकं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं मधुरोपदेशार्जवांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

वीतरागमहाध्यानधारकं चित्तवारकं ।
ऋजुपरिणामागारं तं महामि यतीश्वरं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं ऋजुपरिणामार्जवांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

षडावश्यकसंधारं चिद्रूपं ध्यानतत्परं ।
कायोत्सर्गमहायोगं धारकं तं यजे मुदा ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं षडावश्यकार्जवांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

व-[illegible]ाक्याद्विरक्तं हि प्रमाण नयदेशकं ।
कामस्य मद हंतारं भावयामि यतीश्वरं ।। १० ।।
ॐ ह्रीं वक्र वचनरहितार्जवांगाय जलादिकं ।। १० ।।

वनचंदन शालीयैः जतांतचरुदीपकैः ।
धूपफल भरैश्चाये आर्जवं सुधर्मोदधिं ।। ११ ।।
ॐ ह्रीं आर्जवांगाय महार्घं निर्वयामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

घत्ता—आर्जव सुखमंदिर, त्रिभुवनसुखसुन्दर,
मुनिवर बंधव सुगुण सही ।
[illegible]चेत्ता, परगुणनेत्ता
विधनं दुर्गति गमन सही ।। १ ।।
कुटिल विचार, करे न मुनिवर ।
शुद्धाचरण विचरण, सुयतिवर ।।
सत्य असत्य उभय अनुभव मन !
तथा मुनीन्द्र सुकथन वचनगण ।। २ ।।
तनु विचरण त्रयभेद सुसंख्या ।
मनवचकाय गुप्ति परिरक्षा ।।
कथित धर्मदयापरशासन ।
सकलजीव हितकरण सुभाषण ।। ३ ।।
ऋजुपरिणाम विविध जणमंडण ।
सम मन भाव कुमत मत खंडन ।।
परम विचार स्वमन परिरक्षण ।
भेद भाव स्तुति वितत विचक्षण ।। ४ ।।

वीतराग गुण मनगत सुंदर ।
बोध विचार परमपद मन्दिर ॥
शुद्धाचार सु आर्जव गुणधर ।
पर दुख सहन सुमन सुघनवर ॥ ५ ॥
विकट कथानहि भाषित यतिवर ।
शीतल वचन मधुरधन सुन्दर ॥
कालत्रय धृतयोग सुकन्दर ।
सर्व जीव समता जय मंदर ॥ ६ ॥
घत्ता—ए गुणधरि आर्जव, मुनिवर आर्जव,
आर्जव अंग सुजिनवर वचन ।
सूरि अभययतींदा जिन मुनिवंदा,
सुमति सागर जिनगुण कथन ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं आर्जवांगाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ सत्यांग पूजा —

स्थापयामि सदा चित्ते सत्यधर्मांगकं मुदा ।
धर्मसिद्धिकरं लोके सर्वकल्याणकारकम् ॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यांग अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा (स्थापनं) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणं) ।

सत्यशीलगुणाधारं स्पष्टसंख्याविवेदकं ।
चर्चामि वरपानीयैः श्रीमुनिं मदहिंसकं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणोद्धारकसत्यांगाय जलादिकं (अष्ट द्रव्य का अर्घ) ॥ १ ॥

जिनेन्द्रवचनाधारं वेदवेदांगपारगं ।
असत्यांगविधातारं पूजयामि महामुनिं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रवचनधृत सत्यांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

द्वादशांगश्रुताधारं जिनसंघप्रबोधकं ।
असत्यांगसुधाब्धिं वा तं महामि यतीश्वरं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुत सत्यांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

महासाधुं गुणोपेतं सद्ध्याननिरतं सदा ।
जलचन्दन शालीयैश्चर्चेहं श्रीमुनिपरं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं साधुगुणरत सत्यांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

सत्यव्रतधरं साधुं पापतापनिवारकं ।
सत्यक्रियादयाधारं सुमुनिं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं व्रतक्रियायुक्त सत्यांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

सत्यपंचमहामेरुं भेदज्ञानप्रकाशकं ।
सत्यधर्मगुणाधारं पूजयामि गणाधिपं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं मेरुपृथ्वीसत्यांगाय जलादिक ॥ ६ ॥

अष्टभूमिजिनेन्द्रोक्तं भेदभावप्रभावकं ।
सुमुनि र्महते नित्यमम्भचंदनस्वक्षतैः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं अष्टभूमिज्ञान सत्यांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

चतुर्दशगुणस्थान सत्यभावविचारकं ।
यजामि मुनिपं धीरं शुद्धबुद्धिप्रदायकं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं सत्यसिद्धान्त सत्यांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

जिनदेवे जिनगुरौ जिनसूत्रे विशारदः ।
जिनवृषे महाज्ञानी भाष्यते मुनिपुंगवः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं गुरुप्रतीति सत्यांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

तत्त्वप्रतीतिसत्यांगं कामध्वंसन कोविदं ।
यथाख्यात चरित्राढ्यं पूजयामि जलादिकैः ॥१०॥
ॐ ह्रीं यथाख्यात चारित्र सत्यांगाय जलादिकं ॥ १० ॥

धर्मं देवगुरुं दयाप्रहसितं बोधं जिनेन्द्रोदितं ।
त्रैलोक्यं सकलं सुदेवविततं चारित्र रत्नं महत् ॥
सत्यं द्रव्य सुतत्व बोध निचयं सत्यं विना चान्यथा ।
सत्यं श्रीजिनदेव भाषितवरं चार्घं ददे भावतः ॥
ॐ ह्रीं सत्यांगाय महार्घं निर्वयामिति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

घत्ता— सत्यांगं जिनधर्मं प्रकाशं,
कुरुते यतिपति विगतमला ।
जिनदेव सुवाणी गुणनिधिजाणी,
पठित सुधर्म कथा विमला ॥ १ ॥
सत्य सिद्ध गुण जिनवर वेत्ता ।
सत्य जिनेश्वर धर्म सुगेत्ता ॥
सत्य सुदर्शन प्रथम सु तारण ।
सत्य सुबोध परम गुण कारण ॥ २ ॥
सत्यसुव्रत भर मुनिवर भूषण ।
सत्य सुगेहो दर्शन पोषण ॥

सत्य सुवृषवर जिन मुख भाषण।
सत्य सुजीव दया मुनि शासन ॥ ३ ॥
सत्य परम गुरु पंच सु सारं।
सत्य पंच गुरु प्रतिमा तारं॥
सत्य सूरि स्वामी वरहारं।
सत्य पाठक गुणनिधि संकारं ॥ ४ ॥
सत्य सुत्रेषठि पुरुष महागण।
सत्य सुलोकालोक सुधिषण ॥
सत्य परम गुरु वचन सुतारण।
सत्य अणंताजिन रिपु वारण ॥ ५ ॥
सत्य सुतत्व सप्त जिन वचना।
सत्य सुद्रव्य जिनेश्वर वचना ॥
सत्य पदारथ केवल ज्ञानी।
सत्य अंग श्रीद्वादश वाणी ॥ ६ ॥
घत्ता—सत्य सुमेरु मही जिन शासन,
सत्य स्वर्ग अपवर्ग मही।
श्रीअभयनन्दी गुरुचरण सेवक,
सुमतिसागर जिन कथित सही ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्यांगधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ शौचांग पूजा

विश्वजीवहितागारं शौचांगं सुखमोक्षदं।
स्थापयामि त्रिवारं तं पूजयामि पृथक् पृथक् ॥

ॐ ह्रीं शौचांग अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वानन) अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः (स्थापनं) अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् स्वाहा (सन्निधिकरणं)

धर्मप्रतीतिशौचांगं भव्यजीवहितावहं ।
पालकं सुमुनिं चाये धर्मदेशनतत्परं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं धर्मप्रतीति शौचांगाय जलादिकं (अष्टद्रव्य से अर्घ) ॥१॥

वाक्यशौचं परं प्रोक्तं श्रीजिनेन्द्रस्तवादिकं ।
मनः शौचं विधातारं यजेऽहं मुनिधर्मदं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं पवित्रवाक्य शौचांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

श्रीचारित्रपरं साधुं श्रीशौचांगविनायकं ।
वनगन्धाक्षतैश्चर्चे वीतमोहं विशारदं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं चारित्रस्नान शौचांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

अन्तरात्ममहाभेदभेदकमघछेदकं ।
शौचांगस्य धरधीरं तं यजामि गुणोदधिं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं आत्मध्यान शौचांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

गुप्तिगोपनशौचांगधारकं भवतारकं ।
महामि तत्ववेत्तारं महाधर्म विधायकं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं गुप्तित्रयरक्षण शौचांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

क्रोधोत्पत्तिनिहंत्तारं वीतरागं महामुनिं ।
यजामि कामहंतारं जलचंदनसाक्षतैः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं क्रोधादि रहित शौचांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

चैत्योपदेशकर्त्तारं सर्वजीवहितेशिनं ।
जलाद्यष्टमहाद्रव्यैः महामि जयदं परं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं जिनचैत्योपदेश शौचांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

पंचाचारविचारज्ञं श्रीमुनिं शौचधारकं ।
समित्यादिव्रतस्नानधारकं तं यजे मुदा ॥ ८ ।
ॐ ह्रीं व्रतमित्यादि शौचांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

व्यवहारशौचसंधारं जिनपूजाकरं परं ।
स्वर्गादिगतिदं सारं तं महाम्यघघातकं ॥ ६ ।
ॐ ह्रीं जिनपूजोपदेश शौचांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

परब्रह्मजपारंगं जिन शासन पोषकं ।
इहाशौचधरं देवं संयजामि जलादिकैः ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं परब्रह्मजपादि शौचांगाय जलादिकं ॥ १० ॥

चर्मास्थिमांस चांडालमृतस्पर्शात्सुनिर्मलः ।
विष्टास्पर्शाज्जलस्नान माचरेन्महामुनिः ॥
ॐ ह्रीं शौच धर्मांगाय महार्घं ।

अथ जयमाला—

घत्ता—शौचधर्म परमार्थवेत्ता
श्रीजिननेत्ता धर्मधुरा ।
जिनशासन परमारथ धर्त्ता
कर्त्ता मुक्तिवधू मधुरा ॥ १ ॥

शौच परमजन मुनिवर पामो ।
शौच सुबाहुबलि भव स्वामी ॥
शौच जिनेंद्र वचन परिपूजित ।
शौच सुदर्शनजल अघ धूजित ॥ २ ॥

शौच सुदर्शन शेठ महाजन ।
परम सुशील व्रत ते धन धन ॥
शौचधर्म पाले जन शुद्धा ।
शौच विश्वहित चिंतन बुद्धा ॥ ३ ॥
शौच सुपरधन मन नहि सूरा ।
शौच धर्म गणधरनिसुपुरा ॥
शौच वक्र वचनावलि नाशक ।
शौच शुद्ध वचन प्रकाशक ॥ ४ ॥
शौच आदि जिन आदि प्रकाशी ।
शौच सुसन्मति अन्तिम भाशी ॥
शौचकायगुणरक्षक धीरा ।
शौच सुसंयम द्वादश वीरा ॥ ५ ॥
शौच परम व्यवहार लहिज्जइ ।
शौचापरकृत जिनपूजिज्जइ ॥
शौच विमनवृत ततपरकाया ।
शौच रक्षण कृत मुनिराया ॥ ६ ॥
घत्ता—जलशौच सुकृतगृह
घरनिपुनातु श्रीजिनपूजपरा ।
श्रीअभयनंदी गुरुचरण सुसेवक
सुमतिसागर जिनकथितपरा ॥
ॐ ह्रीं शौच धर्मांगाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ संयम पूजा—

दयाढ्यं संयमं चोक्तं सुंदरमिन्द्रियातिगं ।
पूजयापरयाभक्त्या पूजयामि तदाप्तये ॥

एकेन्द्रिया पराजीवा द्वापंचाशत्प्रमाणकाः ।
लक्ष्यसंख्या दयागारं संयजामि दमाधिकं ॥१॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय रक्षणसंयमांगाय जलादिकं ॥१॥

द्वीन्द्रियादिपराजीवालक्ष्यद्वयप्रपालकं ।
स्वात्मवस्तुविभेदज्ञं तं यजाम्यभयान्वितं ॥२॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियरक्षणसंयमांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

त्रीन्द्रियरक्षकं साधुं लक्ष्यद्वयप्रपालकं ।
यजामि संयमनिधिं जलादिवसुद्रव्यकैः ॥३॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिरक्षण संयमांगाय जलादिकं ॥३॥

चतुरिन्द्रियजीवौघरक्षकं वनवासिनं ।
लक्ष्यद्वयविचारज्ञं यजामि भव्यबांधवं ॥४॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिरक्षण संयमांगाय जलादिकं ॥४॥

पंचेन्द्रियबहुभेददायकं मुनिनायकं ।
जलनभभूमिभेदज्ञं पूजयामि शमोदधिं ॥५॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजातिरक्षणसंयमांगाय जलादिकं ॥५॥

स्पर्शनविषयातीतं योगभावविचारकं ।
नग्नरूपं परं साधुं महामि भवभेदकं ॥६॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियविषय रहित संयमांगाय जलादिकं ॥६॥

रसनेन्द्रियवंचकज्ञानध्यानविपारज्ञं ।
यजामि संयमागारं जलगंधसुतन्दुलैः ॥७॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय विषयरहित संयमांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

घ्राणेन्द्रियरक्षकं वै विषयविषनाशकं ।
संयमागारकं चर्चे जिनधर्मविवर्द्धकं ॥८॥

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विषयरहित संयमांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

नेत्रेन्द्रियरक्षकं सूरं भामासंगविवर्जितं ।
शीलाशीलविचारज्ञं चर्चे शीलसरित्पतिं ॥९ ।

ॐ ह्रीं नेत्रेन्द्रिय विषयरहित संयमांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

कर्णेन्द्रियसाधकं धीरं सुस्वरादिविवर्जितं ।
वरयोगगृहं चाये स्वष्टभेदविधार्चनैः ॥१०॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय विषयरहित संयमांगाय जलादिकं ॥१०॥

गाथा—सयमसूरं यतीन्द्र ज्ञानाब्धि धर्मदं परं ।
साधु जलचंदनशालियै पुष्पोधैः पूजयामि दयाधारं ॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयमांगाय महार्घं ।

जयमाला ।

घत्ता—संयम मुनितारकं कर्मविदारकं
वारककाम त्रिशल्य सदा ।
त्रिभुवनपरिसुन्दर गणधर विरचित
वदति जिनेन्द्र विगतपदा ॥ १ ॥
संयम जिन आदिजिनेन्द्र वुक्त ।
संयम गुण चित्त सुबोध सुत्त ॥
संयम गुणकष्ट विपाक सहन ।
संयम गुण वह्नि सुकर्म दहन ॥ २ ॥

संयमगुण ध्यान धरंति धीर।
संयमगुण समताभाव वीर॥
संयमगुण शुद्धचारित्र धार।
संयमगुण जीव स्वरूप पार ॥ ३ ॥
संयमगुण सीतानारि पार।
संयमगुण जीव न दोषसार॥
संयमगुण अनन्तमती विचार।
संयमगुण सामायिक सुसार ॥ ४ ॥
संयमगुण कोमल रति न संति।
संयमगुण दश दोष हरंति॥
संयमगुण नयगुण ते धरंति।
संयमगुण मनवचकाय करंति ॥ ५ ॥
संयमगुण न हरति पापबुद्धि।
संयमगुण मौन धरंति शुद्ध॥
संयम गुण शुद्धसुध्यानपूर।
संयम गुण परहितकरण पूर ॥ ६ ॥

घत्ता—संयम पालंता, मुनि जयवंता, संता सुरनर पूजकरे।
श्रीअभयनन्दी, गुरुसंयम पारग, सुमतिसागर जिन धर्म धरे ॥७॥

ॐ ह्री उत्तम संयम धर्मांगाय महार्घं—

अथ तपः पूजा।

कामेन्द्रियदमं सारं तपःकर्मारिनाशनं।
पूजया परया भक्त्या पूजयामि तदाप्तये॥

ॐ ह्रीं तपोधर्मांग अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा (स्थापनं) अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनं)

अष्टमीप्रोषधागारं वसुकर्मविनाशकं ।
सुरनरैः सदा पूज्यं महामि जलद्रव्यकैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं अष्टमोप्रोषधोतपोगाय जलादिकं ॥ १ ॥

चतुर्दशीदमयुक्तं परकष्टनिवारकं ।
महामि तं नृपाराध्यं वसुद्रव्यसमूहकैः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशीप्रोषधतपोगाय जलादिकं ॥ २ ॥

पंचमोप्रोषधागारं केवलज्ञानभावदं ।
महामि यतिपं धीरं वनचंदनपावनैः ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं पंचमी प्रोषधतपोगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

एकांतरतपोगारं वधबंधनभंजकं ।
महामि व्रतसंधारं परातीचारवर्जितं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं एकांतरकृततपोगाय जलादिकं ॥ ४ ॥

द्व्यन्तरादितपाधारं परदेशनतत्परं ।
जयदं जायते पूतं वीतमोहं महीतले ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं द्विदिनानन्तर तपोगाय जलादिकं ॥ ५ ॥

पक्षप्रोषधकर्त्तारं शुभतत्व विधायकं ।
पूजयामि महाद्रव्यैः भावदं च विदांवरं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं पक्षप्रोषध तपोगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

वर्षोपवासिनं वीरं कायोत्सर्गधृतं वरं ।
वृषभेशं जिनं चाये चादि धर्म प्रकाशकं ॥ ७ ।
ॐ ह्रीं वर्षोपवास तपोगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

बाहुबलिमुनिं चाये कायोत्सर्गधरं परं ।
वर्षोपवासिनं धीरं पापनाशन शुद्धिदं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं बाहुबलि वर्षोपवास तपोंगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

अहोरात्रिश्रुताभ्यासकरं ध्यानविपारगं ।
चर्चामि बोधकूपारं स्वष्टद्रव्यसमुच्चयैः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाभ्यास तपोंगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

मनोवाक्कायवश्यार्थे धर्मध्यानपरायणं ।
पूजयामि महाभाग मनेकान्त दिगम्बरं ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण शुद्धि तपोंगाय जलादिकं ॥ १० ॥

महातपोगृहं साधु मम्भचन्दन साक्षतैः ।
लतांतचरु दीपोघैः चाये कामरिपुं परं ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपोंग धर्माय जलादिकं ॥ ११ ॥

जयमाला

घत्ता—दर्शन शुद्धि, तपवरकरि, वृषभ जिनेश्वर, प्रथमधरी ।
दर्शन विन न तप, जिन भाषित, असित मिथ्या बोधकरी ॥१॥

आदिदेव तप कृत पर कारित ।
मास सु अय अय तप धारित ॥
पर तपवंत मुनीश्वर सुंदर ।
परतपवंत सुशान्ति सु मन्दिर ॥ १ ॥
परतपवंत गणधर देवसु शंकर ।
परतपवंत चारणमुनि नभ संचर ॥
परतपवंत सु इन्द्र पदाधिप ।
परतपवंत फणेन्द्र सुराधिप ॥ ३ ॥

परतपवंत सुजयंत सुगामि ।
परतपवंत चक्रधर स्वामी ॥
परतपवंत परीषह सूरी ।
परतपवंत सुशील सुपूरी ॥ ४ ॥
परतपवंत सु एक दिनांतर ।
परतपवंत सुपक्ष मासकर ॥
परतपवंत सु एक कवल पर ।
परतपवंत परीषह जिन पर ॥ ५ ॥
परतपवंत कुन्द मुनि सुरा ।
परतप जिनवर गणधर तीरा ॥
परतप गति सुरपद धारी ।
परतपगतां सुमति पदकारी ॥ ६ ॥
परतपवंत मुनिवर सन्ता ।
गंता ते मुनि मुक्ति महा श्री ॥
अभय नन्दीश्वर तपजय सुन्दर ।
सुमति सागर जिन शुद्ध सही ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम तपोंगाय महार्घं ।

अथ त्याग पूजा —

श्रीमन्नाभि सुतं नत्वा त्यागं सर्वसुखाकरं ।
पूजयामि महाभागं तमेकान्त दिगंबरं ॥

ॐ ह्रीं त्यागधर्म अत्र अवतर अवतर सवौषट् (अह्वाननं) अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्वाहा (स्थापनं) अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणं)

चतुर्विधं जिनेद्रोक्तं दान लक्षणसंयुतं।
समुपदेशकं कांतं पूजयामि जलादिकैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं चतुर्विधदानत्यागाय जलादिकं ॥ १ ॥

श्रीजिनेन्द्रश्रुतागारं भव्यजीवप्रपादकं।
सुज्ञानदायकं लोके महामि भवभंजकं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञान त्यागाय जलादिकं ॥ २ ॥

आहारदानोपदेशदायकं यतिनायकं।
महापुण्याकरं चर्चे वीतकामं सुशीलकं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं अन्नदानोपदेशत्यागाय जलादिकं ॥ ३ ॥

महाबाधाप्रक्रान्तानां मिथ्यारोगनिवारकं।
सदोपदेशदात्तारं महामि भवत्रासकं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं औषधदानत्यागाय जलादिकं ॥ ४ ॥

परिग्रहमहादोषजेतारं कामतापकं।
चाये घनरसैः शुद्धैः शुद्धबोधप्रकाशकं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागाय जलादिकं ॥ ५ ॥

दर्शनवित्तसंधारं मिथ्यावित्तनिवारकं।
परोपदेशविस्तारकरं चाये जलादिकैः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनरक्षण मिथ्या त्यागाय अर्घं ॥ ६ ॥

मोहत्यागकरं साधुं समताधनविपारगं।
शुद्धध्यानाप्तविस्तारं करं चाये जलादिकैः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं मोहत्यागाय जलादिकं ॥ ७ ॥

क्रोधत्यागकरं सिद्धं क्षमापारगतं वरं ।
मानमर्दनकं सूरं चाये विश्वहितेशिनं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं क्रोधरहित त्यागाय जलादिकं ॥ ८ ॥

मायाकुण्डलिनीत्यागकरं परोपदेशकं ।
मूर्च्छाछेदकरं नित्यं पूजयामि शिवंकरं ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं मायारहितत्यागाय जलादिकं ॥ ९ ॥

महालोभप्रहंतारं जिनशासनरक्षकं ।
पूजयामि सुत्यागेशं स्वष्टद्रव्यसमुच्चयैः ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं लोभरहितत्यागाय जलादिकं ॥ १० ॥

जीवनचंदन तन्दुललतातं चरुदीपधूपफल निकरैः ।
त्यागजलधि मुनिवीरं समताधीरं यजे नित्यं ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्माय महार्घं ।

जयमाला—

घत्ता-त्याग सुलक्षण, मुनिजन लक्षण, लक्षणपात्र, विचारकरी ।
दानसुदात्ता, श्रीमुनित्रात्ता, त्रिभुवन जीवन, सुभावधरी ॥१॥

शुद्ध त्याग एकेन्द्रिय रक्षण ।
शुद्ध त्याग दुतिचार सुलक्षण ॥
शुद्ध त्याग पंचेन्द्रिय रक्षण ।
शुद्ध त्याग समता गुणपक्षण ॥ २ ॥
शुद्ध त्याग मिथ्यामत निरीक्षण ।
शुद्ध त्याग पर वस्तु विरतण ॥

शुद्ध त्याग परिपालन त्यागी।
शुद्ध त्याग वृषभेश्वर भागी ॥ ३ ॥
शुद्ध त्याग परबोध सुदाता ।
शुद्ध त्याग दर्शन परिभ्राता ॥
शुद्ध त्याग कंदर्पविदारण ।
शुद्ध त्याग शीलाधिप तारण ॥ ४ ॥
शुद्ध त्याग परक्रोध निवारण ।
शुद्ध त्याग परमान विदारण ॥
शुद्ध त्याग मायागुण दारण ।
शुद्ध त्याग रिपुमोह विदारण ॥ ५ ॥
शुद्ध त्याग गृहमोहविनाशक ।
शुद्ध त्याग परहितकृत भापक ॥
शुद्ध त्याग जिनसूत्र सुपाठक ।
शुद्ध त्याग जिनसमय प्रकाशक ॥ ६ ॥

घत्ता—गृहपति पदत्याग, गतमुनिभागी, कृत वैराग्य, सुपरमपदं ।
श्रीअभयनंदी, गुरु समता भाजन सुमतिसागर जिनुधर्मपदं ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आकिंचन पूजा—

आकिंचनं ममतादिदूरं कृत्स्नसुखाकरं ।
पूजया परया भक्त्या पूजयामि तदाप्तये ॥

ॐ ह्रीं आकिंचनधर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्रमम सन्निहितो भव-भव वषट् (सन्निधापनं)

चिद्रूपचिंतनपरं ममभावविवर्जितं ।
आकिंचन्य परं लोके यजे साधुं सुपूजनैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं ममताभावविवर्जितआकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥१॥

परं वैराग्यभावज्ञं परपाखण्डवर्जितं ।
सामायिकरतं नित्यं संयजामि सुगृहातिगं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं वैराग्यपरताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ २ ॥

अनित्यभवनागारं भामामोहविदूरगं ।
एकत्वभावमालीनं सौख्यदं तं यजे मुदा ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं अनित्यभावनाकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥

पुत्रपौत्रादिकमोहध्वंशकं रतिनाशकं ।
संयजामि सुपानीयैः चन्दनादिसुद्रव्यकैः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं पुत्रपौत्रादिमोहरहिताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥४॥

गोमहिषाश्वहस्त्यादिदुर्गदेशनमामकं ।
महावैराग्यभावज्ञं यजेऽहं तं वनादिकैः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं गोमहिष्यादिममतारहिताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥५॥

कर्मबन्धक्रियाहीनं महाश्रवविनाशकं ।
धर्मध्यानरतं नित्यं महामितं तपोनिधिं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं पापक्रियारहिताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥

जिनपूजारतं नित्यं जिनस्नपनदेशकं ।
धर्मस्नेह परं चाये स्वाकिंचन्य विसारदं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं जिनपूजारताकिंचन्यांगाय जलादिक ॥ ७ ॥

धनधान्य सुहृद्दादिममभावविभावगं ।
पूजयामि गणाधीश माकिंचन्यपरं यतिं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं नगरग्रामगृहसुहृद्दादिविरक्ताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

परीषहसहं धीरं द्वाविंशतिभेदगं ।
चर्चे वीतगृहं सूरं भव्यजीवप्रपालकं ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं परीषहसहनाकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

त्रिगुणयुक्तवाक्येशं मधुरादिविपारगं ।
चर्चे कामजितं सूरं शुद्धं भावविमोहकं ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं हितमितमिष्टत्रिगुणसहिताकिंचन्यांगाय जलादिकं ॥ १० ॥

जलगंधाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैर्दीपधूपकैः ।
फलजातिसमूहैश्च संयजेऽर्घकैर्वरैः ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं आकिंचन्यांगाय महार्घं ॥ ११ ॥

अथ जयमाला—

घत्ता—आकिंचन्य अंगं, तत्त्वमुनिसंगं, भंगं कृतमदमोह तरं ।
संसारेसारं, समगुणधारं, ध्यानाध्ययन, विचार परं ॥१॥

आकिंचन ममताहीन धीर ।
आकिंचन समता शुद्ध वीर ॥
आकिंचन धर्म सुधरण शक्ति ।
आकिंचन भूषण दूरि संति ॥ २ ॥
आकिंचन ममता नारी न सार ।

आकिंचन नहि पुत्रभार ॥
आकिंचन मन विसुधन धार ।
आकिंचन मम नहि गोत्र भार ॥ ३ ॥
आकिंचन मम नहि गृह भंडार ।
आकिंचन मम नहिं रथसार ॥
आकिंचन पर वैराग्य धार ।
आकिंचन वैरि न मित्र पार ॥ ४ ॥
आकिंचन छत्र चमर न धरण ।
आकिंचन भूपतिपद न तरण ॥
आकिंचन मम न विषय पास ।
आकिंचन मुनितत्त विषयत्रास ॥ ५ ॥
आकिंचन धरणी शयन शुद्ध ।
आकिंचन मम नहि शयन शुद्ध ॥
आकिंचन सज्जन तरहु नेद ।
आकिंचन मुनि नहि करहु खेद ॥ ६ ॥

घत्ता—आकिंचन श्रीमुनिसुधन, भण्डार रत्नत्रय भूषणविमल ।
श्रीअभयनन्दी, यतिवरगत दूषण, सुमतिसार हृदिजिनकमल ॥७॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचनधर्माय महार्घं ॥

अथ ब्रह्मचर्य पूजा—

स्त्रीविरक्तं जगत्पूज्यं ब्रह्मचर्य महाव्रतं ।
पूजया परया भक्त्या यूजयामि तदाप्तये ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्यधर्मअत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् (सन्निधिकरणं)

शुद्धव्रतधरं धीरं श्रीभरताधिपसुन्दरं ।
ब्रह्मचर्यं व्रतागारं पूजयामि शिवंकरं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीभरताधिपब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ १ ॥
महाबलयुतं धीरं बाहुबलि महामुनिं ।
ब्रह्मचर्य सु भण्डारं पूजयामि शिवंकरं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ २ ॥
अनन्तवीर्यं वीरेशं ब्रह्मचर्य व्रताधिकं ।
आदिमोक्षगतं धीरं पूजयामि शिवंकरं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तवीर्यब्रह्म चर्यांगाय जलादिकं ॥ ३ ॥
सुदर्शनं सुदर्शनं धर्मध्यान विपारगं ।
ब्रह्मचर्यमकूपारं पूजयामि शिवंकरं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ४ ॥
सुरेन्द्रदत्तं कृपाब्धि ब्रह्मागारं जिनार्चकं ।
सुशीलसंयमापारं पूजयामि शिवंकरं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं सुरेन्द्रदत्त ब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ५ ॥
श्रीरामब्रह्मधामं ब्रह्मभूषण व्रतादरं ।
दानपूजा कृपापारं पूजयामि शिवंकरं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीरामब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ६ ॥
कुन्दकुन्दगुरुं चर्चे सद्ब्रह्मव्रतपारगं ।
दशधर्मसुधांभोधिं पूजयामि शिवंकरं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं कुन्दकुन्दगुरुब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ७ ॥

अकलंकं गुरुं चाये दशधर्मसुधांबुधिं ।
महाशास्त्रकरं सूरिं पूजयामि शिवंकरं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं अकलंक गुरु ब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ८ ॥

सुपात्रकेशरीं सूरिं वीतरागोक्तभावगं ।
स्वष्टसहस्री कर्त्तारं पूजयामि शिवंकरं ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं पात्रकेशरीब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ ९ ॥

गोमट्टसार सिद्धान्त कर्त्तारं भव्यदेशकं ।
नेमिचन्द्रं सुबुद्धीशं पूजयामि शिवंकरं ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं नेमिचंद्रब्रह्मचर्यांगाय जलादिकं ॥ १० ॥

भुवनमल यजाक्षत सरजमोदकदीपधूपमोचफलैः ।
दश कमलेभ्योऽर्घं दयाम्यहं शुद्धभावेन ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशकमलेभ्यो महार्घं ॥ ११ ॥

जयमाला—

घत्ता—महाभरण मुनिजनहृदिकीधा, दर्शन बोध चरित्र धरी ।
ब्रह्मचर्यव्रतपालन, सहस्रअष्टादश, श्रीजिनभाषित, भेदकरी ॥१॥

मुनि वनितारूप विकार रहित ।
मुनि वनिता संगति नहिं करंत ॥
मुनि वनिता गोष्टि न मनधरंति ।
मुनि पंथि वनिता संग न चरंति ॥ २ ॥
मुनि देवनारि निश्चय त्यजंति ।
मुनिय सुभामा संग न भजंति ॥

मुनि चित्र काष्ठ भामा न संति ।
मुनि मातवनारि दूरि त्यजंति ॥ ३ ॥
ए च्यार नारी जिनगुरु वदंति ।
ते पि संग मुनि नहि गदंति ॥
एक नारि एक मुनि नहि सरंति ।
... कपोन संग न करति ॥ ४ ॥
ब्रह्मचर्य व्रत पद इन्द्रदेव ।
ब्रह्मचर्य सुव्रत नागदेव ॥
ब्रह्मचर्य व्रत सु चक्रधार ।
ब्रह्मचर्य सुव्रत देवतार ॥ ५ ॥
ब्रह्मचर्य सुव्रत श्रीविष्णुराज ।
ब्रह्मचर्य सुव्रत प्रति विष्णुभाज ॥
ब्रह्मचर्य सुव्रत गणधर सुबुद्धि ।
ब्रह्मचर्य श्री जिनय ऋद्धि ॥ ६ ॥

घत्ता-ब्रह्मचर्य सुव्रतपरं ब्राह्मी सुंदर प्रथम, वृषभजिन सुतारण ।
श्रीअभयनन्दीगुरु शीलसुसागर सुमतिसागर जिनधर्मधुरा ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्यांगाय महार्घं ॥

॥ इति श्री दशलाक्षणिक उद्यापन संपूर्णं ॥

सांगवेद विद्यालय प्रेस, रामघाट काशी ।